missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Under CSR Support by
ipca | Foundation

कक्षा-12

राजनीति विज्ञान

QUESTION BANK



RECORDED VIDEOS | LIVE CLASSES | PDF NOTES | e-BOOKS | QUIZ | TEST SERIES

GET IT ON Google Play DOWNLOAD MISSION GYAN MOBILE APP

विषय-सूची

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
समकालीन विश्व राजनीति		
1.	दो ध्रुवीयता का अंत	1-14
2.	सत्ता के समकालीन केंद्र	15-26
3.	समकालीन दक्षिण एशिया	27-39
4.	अंतर्राष्ट्रीय संगठन	40-48
5.	समकालीन विश्व में सुरक्षा	49-59
6.	पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधन	60-69
7.	वैश्वीकरण	70-78
स्वतंत्र भारत में राजनीति		
1.	राष्ट्र–निर्माण की चुनौतियाँ	79-88
2.	एक दल के प्रभुत्व का दौर	89-97
3.	नियोजित विकास की राजनीति	98-106
4.	भारत के विदेश संबंध	107-116
5.	कांग्रेस प्रणालीरू चुनौतियाँ और पुनस्थ	117-127
6.	लोकतांत्रिक व्यवस्था का संकट	128-137
7.	क्षेत्रीय आकांक्षाएँ	138-148
8.	भारतीय राजनीतिरू नए बदलाव	149-156

समकालीन विश्व राजनीति (राजनीति विज्ञान)

1 दो ध्रुवीयता का अंत

सोवियत प्रणाली क्या थी?

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. सोवियत राजनीतिक प्रणाली की धुरी क्या थी?

(अ) संसद (ब) कम्युनिस्ट पार्टी

(स) न्यायपालिका (द) निजी उद्योग **(ब)**

2. सोवियत संघ की अर्थव्यवस्था किस प्रकार की थी?

(अ) पूर्णतः निजी

(ब) योजनाबद्ध और राज्य के नियंत्रण में

(स) केवल कृषि आधारित

(द) विदेशी कंपनियों के नियंत्रण में **(ब)**

3. सोवियत संघ में मिल्कियत का प्रमुख रूप क्या था?

(अ) निजी स्वामित्व

(ब) विदेशी स्वामित्व

(स) राज्य का स्वामित्व

(द) सामुदायिक निजी स्वामित्व **(स)**

4. सोवियत संघ कितने गणराज्यों को मिलाकर बनाया गया था?

(अ) 10 (ब) 12

(स) 15 (द) 18 **(स)**

5. रूस में समाजवादी क्रांति किस वर्ष हुई?

(Model Paper-2023, Model Paper-2024)

(अ) 1915 (ब) 1916

(स) 1917 (द) 1918 **(स)**

6. सोवियत राजनीतिक प्रणाली किस विचारधारा पर आधारित थी? *(Model Paper-2025)*

(अ) समाजवाद

(ब) पूँजीवाद

(स) समाजवाद एवं पूँजीवाद

(द) इनमें से कोई नहीं **(अ)**

रिक्तस्थान –

1. सोवियत सरकार स्वास्थ्य–सुविधा और ..... जैसी बुनियादी जरूरतें रियायती दर पर उपलब्ध कराती थी।

उत्तर : शिक्षा

6. समाजवादी सोवियत गणराज्य 1917 की ..... के बाद अस्तित्व में आया। *(RBSE-2025)*

उत्तर : समाजवादी क्रांति

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. सोवियत संघ में विपक्षी दलों की क्या स्थिति थी?

उत्तर : किसी अन्य राजनीतिक दल या विपक्ष के लिए जगह नहीं थी।

2. सोवियत अर्थव्यवस्था पर किसका नियंत्रण था?

उत्तर : राज्य का।

3. सोवियत संघ में रूस की क्या स्थिति थी?

उत्तर : रूस का लगभग हर मामले में प्रभुत्व था।

4. सोवियत संघ ने 1979 में किस देश में हस्तक्षेप किया?

उत्तर : अफ़गानिस्तान में।

5. किन देशों को 'दूसरी दुनिया के देश' कहा जाता था?

(Model Paper-2023)

उत्तर : सोवियत संघ की समाजवादी प्रणाली पर आधारित पूर्वी यूरोप के देशों को 'दूसरी दुनिया' कहा जाता था।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. सोवियत राजनीतिक प्रणाली की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर :
- राजनीतिक व्यवस्था की धुरी कम्युनिस्ट पार्टी थी।
- किसी अन्य राजनीतिक दल या विपक्ष के लिए जगह नहीं थी।
- अर्थव्यवस्था योजनाबद्ध थी।
- अर्थव्यवस्था और उत्पादक संपदाओं पर राज्य का नियंत्रण था।

2. सोवियत संघ की लोक–कल्याणकारी व्यवस्था की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर :
- सरकार ने नागरिकों के लिए न्यूनतम जीवन स्तर सुनिश्चित किया।
- स्वास्थ्य–सुविधाएँ रियायती दर पर उपलब्ध कराई जाती थीं।
- शिक्षा और बच्चों की देखभाल की व्यवस्था थी।
- अन्य लोक–कल्याणकारी सुविधाएँ भी राज्य उपलब्ध कराता था।

मिशन ज्ञान
बढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

3. सोवियत अर्थव्यवस्था की विकसित स्थिति के चार पक्ष बताइए।

उत्तर :
- सोवियत संघ की संचार प्रणाली उन्नत थी।
- उसके पास विशाल ऊर्जा–संसाधन थे।
- आवागमन की सुव्यवस्थित और विशाल प्रणाली थी।
- घरेलू उपभोक्ता उद्योग भी काफी विकसित था।

4. सोवियत प्रणाली के सत्तावादी स्वरूप की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर :
- व्यवस्था पर नौकरशाही का शिकंजा बढ़ता गया।
- राजनीतिक प्रणाली अधिक सत्तावादी होती गई।
- लोकतंत्र और अभिव्यक्ति की आजादी का अभाव था।
- कम्युनिस्ट पार्टी जनता के प्रति जवाबदेह नहीं थी।

5. सोवियत संघ के अन्य गणराज्यों में असंतोष क्यों बढ़ा?

उत्तर :
- सोवियत संघ में रूस का प्रभुत्व था।
- अन्य क्षेत्रों की जनता स्वयं को उपेक्षित महसूस करती थी।
- कई लोग स्वयं को दमित महसूस करते थे।
- पार्टी ने गणराज्यों की अपनी संस्कृति और मामलों की साज–संभाल की इच्छा को पर्याप्त महत्त्व नहीं दिया।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. 1970 के दशक के अंत तक सोवियत व्यवस्था के कमजोर पड़ने के कारण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- हथियारों की होड़ ने सोवियत संघ पर भारी आर्थिक बोझ डाला।
- प्रौद्योगिकी के मामले में वह पश्चिमी देशों से पीछे रह गया।
- बुनियादी ढाँचे के क्षेत्र में भी अपेक्षित प्रगति नहीं हुई।
- नागरिकों की राजनीतिक और आर्थिक आकांक्षाएँ पूरी नहीं हुईं।
- उपभोक्ता वस्तुओं की कमी बढ़ती गई।
- खाद्यान्न का आयात लगातार बढ़ता गया।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. सोवियत प्रणाली की प्रकृति और प्रमुख विशेषताओं की विवेचना कीजिए।

उत्तर :
- सोवियत प्रणाली 1917 की समाजवादी क्रांति के बाद अस्तित्व में आई।
- इसका आधार समाजवाद और समतामूलक समाज की धारणा थी।
- राज्य और पार्टी की संस्था को विशेष महत्त्व दिया गया।
- राजनीतिक प्रणाली की धुरी कम्युनिस्ट पार्टी थी।
- अन्य राजनीतिक दल या विपक्ष के लिए स्थान नहीं था।
- अर्थव्यवस्था योजनाबद्ध और राज्य नियंत्रित थी।
- भूमि और अन्य उत्पादक संपदाओं पर राज्य का स्वामित्व था।
- सरकार ने स्वास्थ्य, शिक्षा और लोक–कल्याण द्वारा न्यूनतम जीवन स्तर सुनिश्चित किया।

2. सोवियत प्रणाली की शक्तियों तथा आंतरिक कमजोरियों का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर :
- सोवियत संघ एक शक्तिशाली औद्योगिक अर्थव्यवस्था के रूप में विकसित हुआ।
- उसकी संचार और परिवहन व्यवस्था उन्नत थी।
- उसके पास विशाल ऊर्जा संसाधन थे।
- राज्य ने नागरिकों को लोक–कल्याणकारी सुविधाएँ प्रदान कीं।
- समय के साथ व्यवस्था पर नौकरशाही का शिकंजा बढ़ा।
- लोकतंत्र और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अभाव रहा।
- कम्युनिस्ट पार्टी जनता के प्रति जवाबदेह नहीं रही।
- रूस के प्रभुत्व के कारण अन्य गणराज्यों में उपेक्षा और दमन की भावना बढ़ी।

3. 'दूसरी दुनिया' के निर्माण में सोवियत संघ की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- दूसरे विश्वयुद्ध के बाद पूर्वी यूरोप के देश सोवियत संघ के अंकुश में आए।
- सोवियत सेना ने इन्हें फासीवादी ताकतों से मुक्त कराया था।
- इन देशों की राजनीतिक व्यवस्था को सोवियत समाजवादी प्रणाली की तर्ज पर ढाला गया।
- उनकी सामाजिक व्यवस्था पर भी सोवियत मॉडल का प्रभाव पड़ा।
- इन देशों को समाजवादी खेमे के देश कहा गया।
- यही देश सामूहिक रूप से 'दूसरी दुनिया' कहलाए।
- इस खेमे का नेतृत्व समाजवादी सोवियत गणराज्य ने किया।
- इस प्रकार सोवियत संघ एक व्यापक समाजवादी राजनीतिक–आर्थिक खेमे का केंद्र बना।

पंजाब चाहे, जहाँ चाहे, वहाँ चाहें!

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

गोर्बाचेव और सोवियत संघ का विघटन

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. मिख़ाइल गोर्बाचेव सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव कब बने?

(अ) मार्च 1985 (ब) जून 1988
(स) अगस्त 1991 (द) दिसंबर 1991 **(अ)**

2. गोर्बाचेव द्वारा आरंभ किए गए 'पुनर्रचना' के सुधार को क्या कहा गया?

(अ) ग्लासनोस्त (ब) पेरेस्त्रोइका
(स) शॉक थेरेपी (द) राष्ट्रकुल **(ब)**

3. गोर्बाचेव द्वारा शुरू किए गए 'खुलापन' के सुधार को क्या कहा गया?

(अ) ग्लासनोस्त (ब) राष्ट्रवाद
(स) पेरेस्त्रोइका (द) सामूहिकीकरण **(अ)**

4. 1991 के असफल तख़्तापलट को किसने बढ़ावा दिया था?

(अ) बाल्टिक गणराज्यों ने
(ब) कम्युनिस्ट पार्टी के गरमपंथियों ने
(स) मध्य एशियाई गणराज्यों ने
(द) पश्चिमी देशों ने **(ब)**

5. गोर्बाचेव ने सोवियत संघ के राष्ट्रपति पद से कब इस्तीफा दिया?

(अ) 9 नवंबर 1989 (ब) 25 दिसंबर 1991
(स) जून 1990 (द) अगस्त 1991 **(ब)**

6. बर्लिन की दीवार खड़ी की गई थी– *(Model Paper-2023)*

(अ) 1961 में (ब) 1971 में
(स) 1951 में (द) 1981 में **(अ)**

7. शीतयुद्ध के सबसे बड़े प्रतीक के रूप में किसे जाना जाता था? *(RBSE-2025)*

(अ) चीन की दीवार (ब) बर्लिन की दीवार
(स) रूस के पहाड़ (द) भारत के पठार **(ब)**

8. बर्लिन की दीवार कब गिराई गई? *(Model Paper-2026)*

(अ) 1969 (ब) 1989
(स) 1961 (द) 1991 **(ब)**

9. सोवियत संघ का उत्तराधिकारी राज्य किसे स्वीकार किया गया? *(RBSE-2022)*

(अ) यूक्रेन (ब) रूस
(स) बेलारूस (द) लिथुआनिया **(ब)**

10. सोवियत संघ के विघटन में किस नेता ने केंद्रीय भूमिका निभाई? *(RBSE-2024)*

(अ) स्टालिन (ब) बोरिस येल्तसिन
(स) ख्रुश्चेव (द) ब्रेझनेव **(ब)**

11. बोरिस येल्तसिन के नेतृत्व में सोवियत संघ के तीन बड़े गणराज्यों ने सोवियत संघ को कब भंग किया *(RBSE-2026)*

(अ) 1989 (ब) 1991
(स) 1993 (द) 1995 **(ब)**

12. बाल्टिक गणराज्यों का सही समूह कौन–सा है? *(RBSE-2026)*

(अ) एस्टोनिया, यूक्रेन, जॉर्जिया
(ब) एस्टोनिया, लातविया, जॉर्जिया
(स) एस्टोनिया, लातविया, लिथुआनिया
(द) एस्टोनिया, यूक्रेन, लिथुआनिया **(स)**

रिक्तस्थान –

1. पूर्वी जर्मनी की जनता ने सन् ..... में बर्लिन की दीवार गिरा दी। *(RBSE-2024)*

उत्तर : 1989

2. दिसंबर 1991 में ..... के नेतृत्व में सोवियत संघ के तीन गणराज्यों ने उसकी समाप्ति की घोषणा की। *(Model Paper-2026)*

उत्तर : बोरिस येल्तसिन

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. गोर्बाचेव ने किस दिशा में सुधारों की नीति अपनाई?

उत्तर : आर्थिक–राजनीतिक सुधारों और लोकतंत्रीकरण की दिशा में।

2. 1991 के तख़्तापलट के विरोध में किसने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई?

उत्तर : बोरिस येल्तसिन ने।

3. रूसी गणराज्य ने किस नियंत्रण को मानने से इंकार किया?

उत्तर : केंद्रीकृत नियंत्रण को।

4. सोवियत संघ के तीन बड़े गणराज्य कौन–से थे जिन्होंने उसकी समाप्ति की घोषणा की?

उत्तर : रूस, यूक्रेन और बेलारूस।

5. संयुक्त राष्ट्रसंघ में सोवियत संघ की सीट किसे मिली?

उत्तर : रूस को।

6. स्वतंत्र राज्यों के राष्ट्रकुल में कौन–से देश शामिल हुए? *(Model Paper-2023)*

पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

उत्तर : रूस, बेलारूस, यूक्रेन तथा अध्याय में उल्लिखित अन्य पूर्व सोवियत गणराज्य राष्ट्रकुल में शामिल हुए।

7. जर्मनी का एकीकरण कब हुआ? *(RBSE-2024)*

उत्तर : 1991

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. गोर्बाचेव ने सोवियत संघ में सुधार क्यों शुरू किए?

उत्तर :
- पश्चिम में सूचना और प्रौद्योगिकी की क्रांति हो रही थी।
- सोवियत संघ को पश्चिम की बराबरी में लाना आवश्यक था।
- आर्थिक–राजनीतिक व्यवस्था में सुधार की जरूरत थी।
- सोवियत संघ को अधिक लोकतांत्रिक बनाने का प्रयास किया गया।

2. गोर्बाचेव की नीति का पूर्वी यूरोप पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर :
- जनता ने अपनी सरकारों के विरुद्ध विरोध शुरू किया।
- सोवियत नियंत्रण के विरुद्ध भी आंदोलन बढ़े।
- सोवियत संघ ने पहले की तरह हस्तक्षेप नहीं किया।
- पूर्वी यूरोप की साम्यवादी सरकारें एक–एक करके गिर गईं।

3. 1991 के तख़्तापलट का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- तख़्तापलट को कम्युनिस्ट पार्टी के गरमपंथियों ने बढ़ावा दिया।
- जनता पुरानी रंगत वाले शासन में वापस नहीं जाना चाहती थी।
- येल्तसिन ने विरोध में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- तख़्तापलट असफल रहा।

4. सोवियत संघ में सत्ता के विकेंद्रीकरण की प्रक्रिया कैसे बढ़ी?

उत्तर :
- रूसी गणराज्य ने केंद्रीकृत नियंत्रण मानने से इंकार किया।
- सत्ता मास्को से गणराज्यों की ओर खिसकने लगी।
- अनेक गणराज्यों में संप्रभुता की भावना बढ़ी।
- यूरोपीकृत क्षेत्रों में स्वतंत्र राज्य बनने की आकांक्षा मजबूत हुई।

5. सोवियत संघ के विघटन के समय वहाँ के राष्ट्रपति कौन थे? *(RBSE-2023)*

उत्तर :
- सोवियत संघ के अंतिम राष्ट्रपति मिख़ाइल गोर्बाचेव थे।
- उनका कार्यकाल 1985–1991 बताया गया है।
- उन्होंने पेरेस्त्रोइका और ग्लासनोस्त के सुधार शुरू किए।
- उन्होंने 25 दिसंबर 1991 को राष्ट्रपति पद से इस्तीफा दिया।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. गोर्बाचेव के सुधारों और उनके प्रभावों का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- गोर्बाचेव ने सोवियत संघ को पश्चिम की बराबरी पर लाने का प्रयास किया।
- उन्होंने पश्चिम के देशों से संबंध सामान्य बनाने का निर्णय लिया।
- आर्थिक और राजनीतिक सुधारों की शुरुआत की।
- देश को लोकतांत्रिक रूप देने का प्रयास किया।
- पूर्वी यूरोप में सोवियत हस्तक्षेप कम होने से साम्यवादी सरकारें गिरने लगीं।
- देश के अंदर सुधारों के विरोध और बढ़ते संकट ने विघटन की गति तेज कर दी।

2. 1991 में सोवियत संघ के विघटन की प्रक्रिया समझाइए।

उत्तर :
- कम्युनिस्ट पार्टी के गरमपंथियों ने तख़्तापलट का प्रयास किया।
- येल्तसिन इसके विरोध के कारण नायक के रूप में उभरे।
- रूसी गणराज्य ने केंद्रीकृत नियंत्रण स्वीकार करने से इंकार किया।
- सत्ता मास्को से विभिन्न गणराज्यों की ओर खिसकने लगी।
- रूस, यूक्रेन और बेलारूस ने दिसंबर 1991 में सोवियत संघ की समाप्ति की घोषणा की।
- 25 दिसंबर 1991 को गोर्बाचेव के इस्तीफे के साथ सोवियत संघ का अंत हुआ।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. गोर्बाचेव से सोवियत संघ के अंत तक की घटनाओं का क्रमबद्ध विवरण दीजिए।

उत्तर :
- मार्च 1985 में मिख़ाइल गोर्बाचेव कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव बने।
- उन्होंने सोवियत व्यवस्था में सुधारों की श्रृंखला शुरू की।
- पूर्वी यूरोप के देशों में जनता ने सोवियत नियंत्रण का विरोध किया।
- नवंबर 1989 में बर्लिन की दीवार गिर गई।
- फरवरी 1990 में बहुदलीय राजनीति से कम्युनिस्ट पार्टी का एकाधिकार समाप्त हुआ।

पढ़ना चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

- अगस्त 1991 में गरमपंथियों का तख्तापलट असफल हुआ।
- दिसंबर 1991 में रूस, बेलारूस और यूक्रेन ने स्वतंत्र राष्ट्रों का राष्ट्रकुल बनाया।
- 25 दिसंबर 1991 को गोर्बाचेव के इस्तीफे के साथ सोवियत संघ समाप्त हो गया।

2. सोवियत संघ के विघटन में बोरिस येल्तसिन की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- येल्तसिन को रूस की कम्युनिस्ट पार्टी का प्रमुख बनाया गया था।
- बाद में वे गोर्बाचेव के आलोचक बने।
- उन्होंने कम्युनिस्ट पार्टी से इस्तीफा दिया।
- जून 1991 में वे रूस के राष्ट्रपति बने।
- 1991 के तख्तापलट के विरुद्ध उन्होंने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- रूसी गणराज्य ने उनके नेतृत्व में केंद्रीकृत नियंत्रण को अस्वीकार किया।
- दिसंबर 1991 में रूस, यूक्रेन और बेलारूस ने सोवियत संघ की समाप्ति की घोषणा की।
- इस प्रकार येल्तसिन ने विघटन में केंद्रीय भूमिका निभाई।

3. सोवियत संघ के विघटन के बाद रूस की स्थिति का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- रूस को सोवियत संघ का उत्तराधिकारी राज्य स्वीकार किया गया।
- संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् में सोवियत संघ की सीट रूस को मिली।
- अंतर्राष्ट्रीय करारों और संधियों को निभाने का उत्तरदायित्व रूस पर आया।
- रूस पूर्ववर्ती गणराज्यों में एकमात्र परमाणु शक्ति संपन्न देश बना।
- उसने अमरीका के साथ परमाणु निरस्त्रीकरण की दिशा में कदम उठाए।
- सोवियत संघ के स्थान पर नए स्वतंत्र गणराज्य अस्तित्व में आए।
- स्वतंत्र राज्यों का राष्ट्रकुल बनाया गया।
- सोवियत संघ एक राजनीतिक इकाई के रूप में समाप्त हो गया।

सोवियत संघ का विघटन क्यों हुआ?

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. सोवियत संघ के पतन का मूल कारण क्या बताया गया है?
(अ) प्राकृतिक संसाधनों की कमी
(ब) राजनीतिक–आर्थिक संस्थाओं की अंदरूनी कमजोरी
(स) जनसंख्या की कमी
(द) कृषि भूमि की कमी **(ब)**

2. सोवियत संघ के संसाधनों का बड़ा भाग किस पर खर्च हुआ?
(अ) पर्यटन पर
(ब) परमाणु हथियार और सैन्य साजो–सामान पर
(स) खेलों पर
(द) निजी उद्योगों पर **(ब)**

3. सोवियत प्रशासन की प्रमुख समस्या क्या थी?
(अ) अत्यधिक विकेंद्रीकरण
(ब) भारी भ्रष्टाचार और केंद्रीकरण
(स) निजीकरण
(द) मुक्त व्यापार **(ब)**

4. राष्ट्रवादी असंतोष सबसे प्रबल कहाँ दिखाई दिया?
(अ) केवल मध्य एशिया में
(ब) रूस, यूक्रेन, जार्जिया और बाल्टिक क्षेत्र में
(स) केवल अफगानिस्तान में
(द) केवल पूर्वी जर्मनी में **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. कई वर्षों तक सोवियत अर्थव्यवस्था ..... रही।

उत्तर : गतिरुद्ध

2. कम्युनिस्ट पार्टी लगभग ..... वर्षों तक सोवियत संघ पर शासन करती रही।

उत्तर : 70

3. सोवियत शासन में भारी ..... ने जनता को व्यवस्था से अलग–थलग किया।

उत्तर : भ्रष्टाचार

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. सोवियत नागरिक किस व्यवस्था की प्रगति से अपनी व्यवस्था की तुलना करने लगे थे?

उत्तर : पश्चिमी देशों की व्यवस्था से।

2. पार्टी अधिकारियों को आम नागरिकों की तुलना में क्या प्राप्त था?

उत्तर : अधिक विशेषाधिकार।

3. गोर्बाचेव के सुधारों के बाद जनता में क्या तेजी से बढ़ा?

उत्तर : आकांक्षाएँ और अपेक्षाएँ।

4. सोवियत संघ के विघटन का अंतिम और सर्वाधिक तात्कालिक कारण क्या था? *(Model Paper-2023)*

उत्तर : राष्ट्रवादी भावनाओं और संप्रभुता की इच्छा का उभार।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. प्रशासनिक कमजोरियों ने सोवियत व्यवस्था को कैसे प्रभावित किया?

उत्तर :
- प्रशासन लंबे समय से गतिरुद्ध था।
- व्यवस्था में भारी भ्रष्टाचार था।
- अपनी गलतियों को सुधारने की क्षमता कमजोर थी।
- अत्यधिक केंद्रीकरण ने जनता को व्यवस्था से अलग कर दिया।

2. कम्युनिस्ट पार्टी के प्रति जनता का विश्वास क्यों घटा?

उत्तर :
- पार्टी जनता के प्रति जवाबदेह नहीं रही।
- पार्टी अधिकारियों को अधिक विशेषाधिकार प्राप्त थे।
- शासन में अधिक खुलापन लाने की अनिच्छा थी।
- जनता स्वयं को शासकों और राजव्यवस्था से जोड़कर नहीं देख पा रही थी।

3. गोर्बाचेव के सुधारों ने राजनीतिक संकट को कैसे बढ़ाया?

उत्तर :
- सुधारों से जनता की अपेक्षाएँ तेजी से बढ़ीं।
- कुछ लोग सुधारों को बहुत धीमा मानते थे।
- विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग सुधारों को बहुत तेज मानता था।
- इस खींचतान में गोर्बाचेव का समर्थन घटता गया।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. सोवियत संघ के आर्थिक पतन के प्रमुख कारण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- अर्थव्यवस्था कई वर्षों तक गतिरुद्ध रही।
- परमाणु हथियारों और सैन्य साजो–सामान पर भारी खर्च हुआ।
- पूर्वी यूरोप के पिछलग्गू देशों पर भी संसाधन खर्च किए गए।
- पश्चिम की तुलना में प्रौद्योगिकी और उत्पादकता पिछड़ गई।
- उपभोक्ता वस्तुओं की कमी बढ़ती गई।
- नागरिकों में राजव्यवस्था के प्रति अविश्वास बढ़ा।

2. सोवियत संघ के राजनीतिक और प्रशासनिक संकट का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- कम्युनिस्ट पार्टी ने लगभग 70 वर्षों तक शासन किया।
- पार्टी जनता के प्रति जवाबदेह नहीं रही।
- प्रशासन गतिरुद्ध और भ्रष्ट हो चुका था।
- सत्ता अत्यधिक केंद्रीकृत थी।
- पार्टी अधिकारियों को आम लोगों से अधिक विशेषाधिकार मिले थे।
- सरकार का जनाधार लगातार खिसकता गया।

3. गोर्बाचेव के सुधारों और राष्ट्रवादी उभार ने विघटन की प्रक्रिया को कैसे तेज किया?

उत्तर :
- सुधारों ने व्यवस्था में ढील दी।
- जनता की आकांक्षाओं और अपेक्षाओं का तेज उभार हुआ।
- सुधारों की गति को लेकर समाज में मतभेद बढ़े।
- गोर्बाचेव का विभिन्न समूहों में समर्थन घटा।
- विभिन्न गणराज्यों में राष्ट्रवादी भावनाएँ प्रबल हुईं।
- संप्रभुता की इच्छा विघटन का तात्कालिक कारण बनी।

4. सोवियत संघ के विघटन के तीन प्रमुख कारण बताइए। *(RBSE-2022)*

उत्तर :
- सोवियत अर्थव्यवस्था लंबे समय तक गतिरुद्ध रही।
- परमाणु हथियारों और सैन्य साजो–सामान पर भारी संसाधन खर्च हुए।
- प्रशासन में भ्रष्टाचार और अत्यधिक केंद्रीकरण था।
- कम्युनिस्ट पार्टी जनता के प्रति जवाबदेह नहीं रही।
- जनता में पश्चिम की तुलना में अपने पिछड़ेपन का बोध बढ़ा।
- राष्ट्रवादी भावनाओं और संप्रभुता की इच्छा का उभार हुआ।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. सोवियत संघ के विघटन में आर्थिक गतिरोध और प्रशासनिक संकट की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- अर्थव्यवस्था कई वर्षों से ठहरी हुई थी।
- उपभोक्ता वस्तुओं की भारी कमी हो गई थी।
- सैन्य व्यय ने अर्थव्यवस्था पर गहरा दबाव बनाया।
- प्रौद्योगिकी और उत्पादकता में सोवियत संघ पश्चिम से पिछड़ गया।
- प्रशासन गतिरुद्ध और भ्रष्ट हो चुका था।
- सत्ता का अत्यधिक केंद्रीकरण जनता को दूर कर रहा था।
- पार्टी अधिकारियों के विशेषाधिकार असंतोष बढ़ा रहे थे।
- इन परिस्थितियों से सरकार का जनाधार कमजोर होता गया।

पढ़ जब चाहे, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

2. सोवियत संघ के विघटन में राष्ट्रवाद और संप्रभुता की इच्छा की भूमिका का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- विभिन्न गणराज्यों में राष्ट्रीयता की भावना लंबे समय से मौजूद थी।
- गोर्बाचेव के सुधारों के बाद यह भावना अधिक प्रकट हुई।
- अनेक गणराज्यों में संप्रभुता की माँग बढ़ी।
- रूस और बाल्टिक गणराज्यों में असंतोष विशेष रूप से प्रबल था।
- यूक्रेन और जार्जिया में भी राष्ट्रवादी भावनाएँ मजबूत हुईं।
- अपेक्षाकृत समृद्ध गणराज्य पिछड़े इलाकों को साथ रखने की कीमत महसूस करने लगे।
- इससे सोवियत संघ की एकता कमजोर हुई।
- राष्ट्रीयता और संप्रभुता का उभार विघटन का अंतिम और सर्वाधिक तात्कालिक कारण बना।

3. सोवियत संघ के विघटन के प्रमुख कारणों का वर्णन कीजिए। *(Model Paper-2024)*

उत्तर :
- सोवियत अर्थव्यवस्था लंबे समय से गतिरुद्ध थी।
- परमाणु हथियारों और सैन्य साजो–सामान पर भारी खर्च हुआ।
- पश्चिमी देशों की तुलना में तकनीकी पिछड़ापन बढ़ गया।
- प्रशासन में भ्रष्टाचार और केंद्रीकरण था।
- कम्युनिस्ट पार्टी जनता के प्रति जवाबदेह नहीं रही।
- गोर्बाचेव के सुधारों ने जनता की अपेक्षाओं और मतभेदों को बढ़ाया।
- विभिन्न गणराज्यों में राष्ट्रवादी भावनाएँ तेज हुईं।
- संप्रभुता की इच्छा का उभार विघटन का अंतिम तात्कालिक कारण बना।

विघटन की परिणतियाँ

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. 'दूसरी दुनिया' के पतन का पहला प्रमुख परिणाम क्या था?
(अ) नया सैन्य गुट
(ब) शीतयुद्ध के संघर्ष की समाप्ति
(स) उपनिवेशवाद का आरंभ
(द) सोवियत संघ का विस्तार **(ब)**

2. सोवियत संघ के पतन के बाद अकेली महाशक्ति कौन बनी?
(अ) रूस (ब) चीन
(स) अमरीका (द) भारत **(स)**

3. सोवियत खेमे के अंत का एक महत्त्वपूर्ण परिणाम क्या था?
(अ) नए देशों का उदय
(ब) साम्यवाद का विस्तार
(स) सैन्य गुटों की वृद्धि
(द) पुराने साम्राज्यों की वापसी **(अ)**

4. शीतयुद्ध समाप्त होने से किसकी समाप्ति हुई?
(अ) हथियारों की होड़ (ब) लोकतंत्र
(स) व्यापार (द) संचार **(अ)**

5. विश्व बैंक और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष का प्रभाव क्यों बढ़ा?
(अ) उन्होंने सैन्य गठबंधन बनाया
(ब) पूँजीवाद की ओर बढ़ते देशों को कर्ज दिया
(स) उन्होंने सोवियत संघ बनाया
(द) उन्होंने बर्लिन की दीवार बनाई **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. राजनीतिक रूप से ..... लोकतंत्र प्रमुख धारणा के रूप में उभरा।

उत्तर : उदारवादी

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. बाल्टिक और पूर्वी यूरोप के कई देश किस संगठन से जुड़ना चाहते थे?

उत्तर : यूरोपीय संघ से।

2. बाल्टिक और पूर्वी यूरोप के देश किस सैन्य संगठन का हिस्सा बनना चाहते थे?

उत्तर : उत्तर अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) का।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. शीतयुद्ध की समाप्ति के प्रमुख प्रभाव बताइए।

उत्तर :
- दो गुटों के बीच विचारधारात्मक संघर्ष समाप्त हुआ।
- हथियारों की तेज होड़ का अंत हुआ।
- परमाणु हथियारों के संचय पर आधारित प्रतिस्पर्धा कमजोर हुई।
- एक नई शांति की संभावना पैदा हुई।

2. सोवियत संघ के विघटन से विश्व के शक्ति–संबंधों में क्या बदलाव आया?

उत्तर :
- पूर्व की दो–महाशक्ति व्यवस्था समाप्त हुई।
- अमरीका अकेली महाशक्ति बन गया।
- पूँजीवादी अर्थव्यवस्था का अंतर्राष्ट्रीय प्रभुत्व बढ़ा।
- अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं के आपेक्षिक प्रभाव में परिवर्तन आया।

मिशन ज्ञान
पढ़ें जब चाहें जहाँ चाहें जैसे चाहें!

3. मध्य एशियाई देशों की विदेश नीति की दिशा क्या रही?

उत्तर :
- उन्होंने रूस के साथ मजबूत रिश्ते जारी रखे।
- पश्चिमी देशों के साथ भी संबंध बनाए।
- अमरीका और चीन से भी संपर्क बढ़ाया।
- उन्होंने अपनी भौगोलिक स्थिति का लाभ उठाने की कोशिश की।

4. सोवियत संघ के विघटन के बाद पूँजीवादी संस्थाओं का प्रभाव कैसे बढ़ा?

उत्तर :
- पूँजीवादी अर्थव्यवस्था प्रभुत्वशाली बनी।
- विश्व बैंक का प्रभाव बढ़ा।
- अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष की भूमिका महत्त्वपूर्ण हुई।
- इन संस्थाओं ने पूँजीवाद की ओर बढ़ते देशों को कर्ज और सलाह दी।

5. सोवियत संघ के विघटन के कोई दो परिणाम बताइए। *(RBSE-2022, RBSE-2025, RBSE-2026)*

उत्तर :
- शीतयुद्ध के संघर्ष की समाप्ति हुई।
- अमरीका अकेली महाशक्ति बन गया।
- अनेक नए स्वतंत्र देशों का उदय हुआ।
- विश्व राजनीति के शक्ति–संबंधों में व्यापक परिवर्तन आया।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. सोवियत संघ के विघटन के बाद विश्व राजनीति में विचारों और संस्थाओं का प्रभाव कैसे बदला?

उत्तर :
- समाजवादी और पूँजीवादी व्यवस्था का पुराना विचारधारात्मक विवाद कमजोर हुआ।
- पूँजीवादी अर्थव्यवस्था प्रभुत्वशाली बनी।
- विश्व बैंक अधिक प्रभावशाली सलाहकार संस्था बना।
- अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष का महत्त्व बढ़ा।
- उदारवादी लोकतंत्र राजनीतिक जीवन की प्रमुख धारणा के रूप में उभरा।
- नई अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था में नए देशों और समूहों की भूमिका बढ़ी।

2. नए स्वतंत्र देशों के उदय के परिणाम स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- पुराने सोवियत खेमे से कई स्वतंत्र देश निकले।
- इन देशों की अपनी पहचान और हित विकसित हुए।
- बाल्टिक और पूर्वी यूरोप के देशों ने यूरोपीय संघ और नाटो की ओर रुख किया।
- मध्य एशियाई देशों ने रूस के साथ संबंध बनाए रखे।
- उन्होंने अमरीका, चीन और पश्चिम के साथ भी नए रिश्ते बनाए।
- अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में अनेक नए खिलाड़ी सामने आए।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. सोवियत संघ के विघटन के बाद विश्व राजनीति में शक्ति और विचारधारा के परिवर्तन का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- दो महाशक्तियों पर आधारित पुरानी द्विध्रुवीय व्यवस्था समाप्त हुई।
- शीतयुद्ध का विचारधारात्मक संघर्ष समाप्त हुआ।
- अमरीका की शक्ति और प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई।
- पूँजीवादी अर्थव्यवस्था अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रभावशाली बनी।
- विश्व बैंक और IMF का प्रभाव बढ़ा।
- उदारवादी लोकतंत्र की धारणा अधिक प्रमुख हुई।
- पुराने सोवियत खेमे से कई नए देश उभरे।
- विश्व राजनीति में नए हित, पहचान और राजनीतिक–आर्थिक समस्याएँ सामने आईं।

2. सोवियत खेमे के अंत के बाद नए देशों की विदेश नीति की दिशाओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- नए देशों ने अपनी स्वतंत्र पहचान और पसंद विकसित की।
- बाल्टिक देशों ने यूरोपीय संघ की ओर रुख किया।
- कई पूर्वी यूरोपीय देश नाटो से जुड़ना चाहते थे।
- मध्य एशियाई देशों ने अपनी भौगोलिक स्थिति का लाभ उठाया।
- उन्होंने रूस के साथ मजबूत संबंध बनाए रखे।
- पश्चिमी देशों और अमरीका से भी संबंध विकसित किए।
- चीन तथा अन्य देशों के साथ भी नए रिश्ते बनाए।
- इस प्रकार विश्व राजनीति में विभिन्न हितों वाले नए खिलाड़ी उभरे।

3. सोवियत प्रणाली तथा उसके विघटन के परिणामों की विवेचना कीजिए। *(RBSE-2024)*

उत्तर :
- सोवियत प्रणाली का आधार समाजवाद था।
- राजनीतिक व्यवस्था की धुरी कम्युनिस्ट पार्टी थी।
- अर्थव्यवस्था योजनाबद्ध और राज्य नियंत्रित थी।
- उत्पादन संबंधी प्रमुख संपदाओं पर राज्य का स्वामित्व था।
- सोवियत संघ के विघटन से शीतयुद्ध समाप्त हुआ।
- विश्व राजनीति के शक्ति–संबंध बदल गए।
- अमरीका अकेली महाशक्ति बनकर उभरा।
- कई नए स्वतंत्र देश अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के नए खिलाड़ी बने।

पढ़ो जब चाहे, जहाँ चाहे, जैसे चाहे!

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

साम्यवादी शासन के बाद 'शॉक थेरेपी' और शॉक थेरेपी' के परिणाम

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. 'शॉक थेरेपी' किस परिवर्तन से संबंधित थी?

(अ) पूँजीवाद से समाजवाद

(ब) समाजवाद से पूँजीवाद

(स) लोकतंत्र से राजतंत्र

(द) कृषि से उद्योग **(ब)**

2. 'शॉक थेरेपी' का निर्देशन मुख्य रूप से किन संस्थाओं ने किया?

(अ) संयुक्त राष्ट्र और नाटो

(ब) विश्व बैंक और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष

(स) वारसा और नाटो

(द) यूरोपीय संघ और राष्ट्रकुल **(ब)**

3. शॉक थेरेपी की सर्वोपरि मान्यता क्या थी?

(अ) राज्य स्वामित्व सबसे प्रभावी है

(ब) निजी स्वामित्व सबसे प्रभावी है

(स) सामूहिक खेती ही सर्वोत्तम है

(द) विदेशी व्यापार समाप्त होना चाहिए **(ब)**

4. शॉक थेरेपी के तहत किस प्रकार के व्यापार को अपनाया गया?

(अ) नियंत्रित व्यापार (ब) मुक्त व्यापार

(स) केवल घरेलू व्यापार

(द) वस्तु–विनिमय **(ब)**

5. रूस में लगभग कितने प्रतिशत उद्योग निजी हाथों या कंपनियों को बेच दिए गए?

(अ) 40 प्रतिशत (ब) 60 प्रतिशत

(स) 75 प्रतिशत (द) 90 प्रतिशत **(द)**

रिक्तस्थान –

1. सामूहिक फार्म को ..... फार्म में बदला गया।

उत्तर : निजी

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. रूसी मुद्रा का नाम क्या था?

उत्तर : रूबल।

2. शॉक थेरेपी के बाद उभरे जरायमपेशा आर्थिक समूह को क्या कहा गया?

उत्तर : माफिया वर्ग।

3. 'शॉक थेरेपी' का शाब्दिक अर्थ क्या है? *(Model Paper-2023)*

उत्तर : आघात पहुँचाकर उपचार करना।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. शॉक थेरेपी ने खेती की व्यवस्था को कैसे बदला?

उत्तर :
- पुरानी सामूहिक खेती की प्रणाली समाप्त हुई।
- सामूहिक फार्मों को निजी फार्मों में बदला गया।
- खेती में पूँजीवादी पद्धति अपनाई गई।
- बाद में लोगों की खाद्यान्न सुरक्षा कमजोर हुई।

2. शॉक थेरेपी का रूसी मुद्रा और लोगों की बचत पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर :
- रूबल के मूल्य में नाटकीय गिरावट आई।
- मुद्रास्फीति बहुत बढ़ गई।
- लोगों की जमापूँजी जाती रही।
- सामान्य जनता पर गंभीर आर्थिक दबाव पड़ा।

3. शॉक थेरेपी से सामाजिक विषमता कैसे बढ़ी?

उत्तर :
- सरकारी रियायतों के समाप्त होने से गरीबी बढ़ी।
- मध्य वर्ग समाज के हाशिए पर आ गया।
- एक माफिया वर्ग उभरा।
- अमीर और गरीब के बीच आर्थिक असमानता बढ़ी।

4. 'शॉक थेरेपी' का अर्थ स्पष्ट कीजिए। *(RBSE-2022)*

उत्तर :
- यह साम्यवाद से पूँजीवादी व्यवस्था की ओर संक्रमण का मॉडल था।
- इसमें राज्य संपदा के निजीकरण पर जोर दिया गया।
- निजी स्वामित्व को सबसे प्रभावी माना गया।
- मुक्त व्यापार, वित्तीय खुलापन और मुद्रा परिवर्तनीयता को महत्त्व दिया गया।

5. 'इतिहास की सबसे बड़ी गराज–सेल' किसे और क्यों कहा गया? *(Model Paper-2026)*

उत्तर :
- रूस में लगभग 90 प्रतिशत उद्योगों को निजी हाथों में बेचा गया।
- महत्त्वपूर्ण उद्योगों की कीमत बहुत कम आँकी गई।
- उद्योग औने–पौने दामों पर बेचे गए।
- इसलिए इस महा–बिक्री को 'इतिहास की सबसे बड़ी गराज–सेल' कहा गया।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. शॉक थेरेपी के आर्थिक परिणामों का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- राज्य–नियंत्रित औद्योगिक ढाँचा चरमरा गया।
- लगभग 90 प्रतिशत उद्योगों का निजीकरण हुआ।
- रूबल के मूल्य में भारी गिरावट आई।

पहले आप, जहाँ चाहे, जैसे चाहे!

- मुद्रास्फीति से लोगों की जमापूँजी समाप्त हुई।
- पुराना व्यापारिक ढाँचा टूट गया और कोई प्रभावी वैकल्पिक व्यवस्था नहीं बनी।
- 1999 का वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद 1989 की तुलना में नीचे था।

2. शॉक थेरेपी के सामाजिक परिणाम बताइए।

उत्तर :
- पुरानी समाज कल्याण व्यवस्था को क्रमशः नष्ट किया गया।
- सरकारी रियायतों के समाप्त होने से गरीबी बढ़ी।
- मध्य वर्ग हाशिए पर चला गया।
- अकादमिक और बौद्धिक वर्ग का एक हिस्सा बिखर गया या बाहर चला गया।
- कई देशों में माफिया वर्ग उभरा।
- अमीर और गरीब के बीच गहरी आर्थिक असमानता पैदा हुई।

3. शॉक थेरेपी के राजनीतिक और संस्थागत परिणामों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर :
- आर्थिक बदलाव को लोकतांत्रिक निर्माण की तुलना में अधिक प्राथमिकता दी गई।
- कई देशों के संविधान हड़बड़ी में तैयार किए गए।
- राष्ट्रपति को कार्यपालिका प्रमुख बनाकर अत्यधिक शक्तियाँ दी गईं।
- संसद अपेक्षाकृत कमजोर संस्था बन गई।
- मध्य एशिया के कुछ राष्ट्रपति सत्तावादी हो गए।
- न्यायिक संस्कृति और न्यायपालिका की स्वतंत्रता का निर्माण अधूरा रहा।

4. शॉक थेरेपी के कोई तीन परिणाम बताइए। *(RBSE-2023)*

उत्तर :
- राज्य–नियंत्रित औद्योगिक ढाँचा चरमरा गया।
- बड़े पैमाने पर उद्योगों का निजीकरण हुआ।
- सामूहिक खेती की व्यवस्था समाप्त हुई।
- सरकारी रियायतों के अंत से गरीबी बढ़ी।
- निजीकरण ने नई आर्थिक विषमताएँ पैदा कीं।
- कई देशों में माफिया वर्ग उभरा।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. रूस में शॉक थेरेपी के आर्थिक और सामाजिक प्रभावों का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर :
- लगभग 90 प्रतिशत उद्योगों को निजी हाथों में बेचा गया।
- कम कीमत पर बिक्री को 'इतिहास की सबसे बड़ी गराज–सेल' कहा गया।
- रूबल का मूल्य तेजी से गिरा।
- मुद्रास्फीति के कारण लोगों की जमापूँजी समाप्त हुई।
- सामूहिक खेती समाप्त होने से खाद्यान्न सुरक्षा कमजोर हुई।
- सरकारी रियायतों के अंत से गरीबी बढ़ी।
- मध्य वर्ग हाशिए पर चला गया और माफिया वर्ग उभरा।
- अमीर और गरीब के बीच तीखी आर्थिक असमानता पैदा हुई।

2. शॉक थेरेपी के बाद पूर्व सोवियत देशों की आर्थिक पुनर्बहाली की प्रक्रिया स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- प्रारंभिक दौर में अर्थव्यवस्थाओं को गहरा संकट झेलना पड़ा।
- रूस सहित अधिकांश देशों की अर्थव्यवस्था ने लगभग सन् 2000 से उबरना शुरू किया।
- पुनर्जीवन का बड़ा आधार खनिज–तेल का निर्यात था।
- प्राकृतिक गैस और धातुओं के निर्यात ने भी मदद की।
- रूस, कज़ाकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान, उज़्बेकिस्तान और अज़रबैजान बड़े तेल–गैस उत्पादक थे।
- पाइपलाइन गुजरने वाले देशों को किराये से लाभ मिला।
- धीरे–धीरे कुछ क्षेत्रों में विनिर्माण कार्य फिर शुरू हुआ।
- प्राकृतिक संसाधन आर्थिक पुनर्जीवन का प्रमुख आधार बने।

3. शॉक थेरेपी क्या थी? इसके परिणाम बताइए।

(RBSE-2024)

उत्तर :
- शॉक थेरेपी साम्यवाद से पूँजीवाद की ओर संक्रमण का मॉडल थी।
- इसमें निजीकरण और निजी स्वामित्व को महत्त्व दिया गया।
- मुक्त व्यापार और वित्तीय खुलापन अपनाया गया।
- रूस का राज्य–नियंत्रित औद्योगिक ढाँचा चरमरा गया।
- रूबल के मूल्य में गिरावट और मुद्रास्फीति बढ़ी।
- समाज कल्याण व्यवस्था कमजोर हुई और गरीबी बढ़ी।
- निजीकरण से आर्थिक असमानता और माफिया वर्ग उभरा।
- लोकतांत्रिक संस्थाओं के निर्माण को आर्थिक बदलाव जितनी प्राथमिकता नहीं मिली।

पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

संघर्ष और तनाव

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. रूस के किन दो गणराज्यों में हिंसक अलगाववादी आंदोलन चले?

(अ) चेचन्या और दागिस्तान
(ब) एस्टोनिया और लातविया
(स) यूक्रेन और बेलारूस
(द) चेक और स्लोवाकिया **(अ)**

2. कौन–सा देश 2001 तक गृहयुद्ध की चपेट में रहा?

(अ) ताजिकिस्तान (ब) रूस
(स) बेलारूस (द) स्लोवाकिया **(अ)**

3. नगरनो कराबाख किस देश का एक प्रांत बताया गया है?

(अ) जार्जिया (ब) अज़रबैजान
(स) रूस (द) यूक्रेन **(ब)**

4. मध्य एशियाई गणराज्यों में किस संसाधन का विशाल भंडार है?

(अ) हाइड्रोकार्बनिक संसाधन
(ब) केवल कोयला
(स) केवल सोना
(द) लकड़ी **(अ)**

5. सबसे गहन बाल्कन संघर्ष किस गणराज्य में हुआ?

(अ) युगोस्लाविया (ब) बेलारूस
(स) रूस (द) एस्टोनिया **(अ)**

रिक्तस्थान –

1. चेकोस्लोवाकिया के विभाजन से ..... तथा ..... नामक दो देश बने। *(RBSE-2023)*

उत्तर : चेक तथा स्लोवाकिया

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. चेचन विद्रोहियों से निपटने वाला प्रमुख सत्ता केंद्र कौन था?

उत्तर : मास्को।

2. नगरनो कराबाख के स्थानीय अर्मेनियाई किस देश में मिलना चाहते थे?

उत्तर : अर्मेनिया में।

3. मध्य एशिया में बाहरी ताकतों की रुचि का प्रमुख आर्थिक कारण क्या था?

उत्तर : हाइड्रोकार्बनिक संसाधनों का विशाल भंडार।

4. रूस मध्य एशियाई राज्यों को क्या मानता है?

उत्तर : अपना निकटवर्ती 'विदेश'।

5. युगोस्लाविया के संघर्ष में किस सैन्य संगठन ने हस्तक्षेप किया?

उत्तर : नाटो ने।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. चेचन्या और दागिस्तान में संघर्ष की प्रकृति बताइए।

उत्तर :
- दोनों रूस के गणराज्यों में हिंसक अलगाववादी आंदोलन चले।
- मास्को ने चेचन विद्रोहियों के विरुद्ध सैन्य कार्रवाई की।
- सैन्य बमबारी के दौरान मानवाधिकार उल्लंघन हुए।
- इसके बावजूद आजादी की आवाज पूरी तरह नहीं दब सकी।

2. मध्य एशिया में अस्थिरता के प्रमुख कारण बताइए।

उत्तर :
- कई क्षेत्रों में गृहयुद्ध और बगावत हुई।
- अनेक सांप्रदायिक संघर्ष चल रहे थे।
- नदी–जल को लेकर विवाद थे।
- बाहरी शक्तियों की दखल और प्रतिस्पर्धा बढ़ी।

3. नगरनो कराबाख और जार्जिया के संघर्षों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- नगरनो कराबाख अज़रबैजान का प्रांत है।
- वहाँ के कुछ स्थानीय अर्मेनियाई अर्मेनिया में मिलना चाहते थे।
- जार्जिया के दो प्रांत स्वतंत्रता चाहते थे।
- इन संघर्षों ने क्षेत्र में अस्थिरता बढ़ाई।

4. मध्य एशिया में अमरीकी रुचि क्यों बढ़ी?

उत्तर :
- क्षेत्र की रणनीतिक भौगोलिक स्थिति महत्त्वपूर्ण थी।
- 11 सितंबर 2001 के बाद अमरीका सैनिक ठिकाने चाहता था।
- उसने ठिकानों के लिए मध्य एशियाई राज्यों को भुगतान किया।
- अफ़गानिस्तान और इराक युद्ध के दौरान यहाँ से विमान उड़ाने की अनुमति ली।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. पूर्व सोवियत क्षेत्र में संघर्ष और तनाव की स्थिति का विस्तार से वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- पूर्व सोवियत गणराज्यों में कई क्षेत्र संघर्ष की आशंका वाले बने।
- चेचन्या और दागिस्तान में अलगाववादी आंदोलन हुए।
- चेचन्या में सैन्य कार्रवाई के दौरान मानवाधिकार उल्लंघन हुए।
- ताजिकिस्तान लंबे समय तक गृहयुद्ध में रहा।

पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

- नगरनो कराबाख में अर्मेनियाई आबादी ने अर्मेनिया से जुड़ने की माँग की।
- जार्जिया के कुछ प्रांतों ने स्वतंत्रता की माँग की।
- नदी–जल के विवादों से भी अस्थिरता बढ़ी।
- बाहरी शक्तियों के हस्तक्षेप ने इन संघर्षों को और जटिल बनाया।

2. मध्य एशिया में संसाधनों और बाहरी शक्तियों की प्रतिस्पर्धा की विवेचना कीजिए।

उत्तर :
- मध्य एशिया में पेट्रोलियम और हाइड्रोकार्बनिक संसाधनों का विशाल भंडार है।
- इन संसाधनों से क्षेत्र को आर्थिक लाभ मिला।
- यही संसाधन बाहरी शक्तियों की प्रतिस्पर्धा का कारण बने।
- क्षेत्र रूस, चीन और अफगानिस्तान के निकट होने से रणनीतिक रूप से महत्त्वपूर्ण है।
- अमरीका ने सैनिक ठिकानों के लिए राज्यों को भुगतान किया।
- रूस इस क्षेत्र को अपना निकटवर्ती विदेश मानता है।
- चीन के हित भी खनिज–तेल और व्यापार से जुड़े हैं।
- इसलिए यह क्षेत्र आर्थिक और रणनीतिक प्रतिस्पर्धा का अखाड़ा बना।

3. युगोस्लाविया के विघटन और बाल्कन संघर्ष की प्रकृति का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- पूर्वी यूरोप में चेकोस्लोवाकिया का विभाजन शांतिपूर्वक हुआ।
- इसके विपरीत युगोस्लाविया में सबसे गहन संघर्ष हुआ।
- 1991 के बाद युगोस्लाविया कई प्रांतों में टूट गया।
- बोस्निया–हर्ज़ेगोविना ने स्वयं को स्वतंत्र घोषित किया।
- स्लोवेनिया और क्रोएशिया ने भी स्वतंत्रता घोषित की।
- जातीय संघर्ष ने गृहयुद्ध का रूप लिया।
- नाटो को इस संघर्ष में हस्तक्षेप करना पड़ा।
- युगोस्लाविया पर बमबारी भी की गई।

भारत और सोवियत संघ

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. शीतयुद्ध के दौरान भारत और सोवियत संघ के संबंध किस प्रकार के थे?

(अ) केवल सैन्य (ब) केवल आर्थिक
(स) बहुआयामी (द) केवल सांस्कृतिक **(स)**

2. सोवियत संघ ने भारत के साथ किस मुद्रा को माध्यम बनाकर व्यापार किया?

(अ) डॉलर (ब) रूबल
(स) रुपया (द) पाउंड **(स)**

3. कश्मीर मामले में सोवियत संघ ने कहाँ भारत के रुख का समर्थन किया?

(अ) विश्व बैंक में (ब) संयुक्त राष्ट्रसंघ में
(स) नाटो में (द) वारसा में **(ब)**

4. रूस और भारत दोनों किस प्रकार की विश्व व्यवस्था का सपना देखते हैं?

(अ) एकध्रुवीय (ब) बहुध्रुवीय
(स) उपनिवेशवादी (द) द्विध्रुवीय **(ब)**

5. 2001 के भारत–रूस सामरिक समझौते के अंग के रूप में कितने द्विपक्षीय दस्तावेजों पर हस्ताक्षर हुए?

(अ) 20 (ब) 40
(स) 60 (द) 80 **(द)**

रिक्तस्थान –

1. सोवियत संघ ने भारत में ..... और बोकारो के इस्पात कारखानों को सहायता दी।

उत्तर : भिलाई

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. भारत–सोवियत संबंधों के कितने प्रमुख आयाम बताए गए हैं?

उत्तर : चार – आर्थिक, राजनीतिक, सैन्य और सांस्कृतिक।

2. 1971 में सोवियत संघ ने भारत को किस संघर्ष के दौरान मदद दी?

उत्तर : पाकिस्तान के साथ युद्ध के दौरान।

3. भारत को सैन्य साजो–सामान देने वाला प्रमुख देश कौन था?

उत्तर : सोवियत संघ।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. भारत–सोवियत आर्थिक संबंधों की चार विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर :
- सोवियत संघ ने भारत की सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों की मदद की।
- भिलाई, बोकारो और विशाखापट्टनम के इस्पात कारखानों को सहायता दी।
- भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स जैसे संयंत्रों को आर्थिक और तकनीकी सहायता दी।
- विदेशी मुद्रा की कमी के समय रुपये में व्यापार किया।

RECORDED VIDEOS | LIVE CLASSES | PDF NOTES | e-BOOKS | QUIZ | TEST SERIES

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

2. भारत–सोवियत राजनीतिक संबंधों की प्रमुख बातें लिखिए।

उत्तर :
- सोवियत संघ ने कश्मीर मामले में भारत का समर्थन किया।
- उसने संयुक्त राष्ट्रसंघ में भारत के रुख का समर्थन किया।
- 1971 के पाकिस्तान युद्ध के दौरान भारत की मदद की।
- भारत ने भी सोवियत विदेश नीति का अप्रत्यक्ष समर्थन किया।

3. भारत–सोवियत सैन्य संबंधों का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- सोवियत संघ ने भारत को सैनिक साजो–सामान दिया।
- उसने भारत को सैन्य टेक्नोलॉजी उपलब्ध कराई।
- दोनों देशों के बीच कई सैन्य समझौते हुए।
- भारत संयुक्त रूप से सैन्य उपकरण तैयार कर सका।

4. भारत–सोवियत संघ के मधुर संबंधों के दो उदाहरण दीजिए। *(RBSE-2025)*

उत्तर :
- सोवियत संघ ने भारतीय सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योगों को आर्थिक–तकनीकी सहायता दी।
- उसने कश्मीर मामले में भारत के रुख का समर्थन किया।
- 1971 में पाकिस्तान के साथ युद्ध के दौरान भारत की मदद की।
- भारत को सैनिक साजो–सामान और सैन्य तकनीक उपलब्ध कराई।

5. भारत और सोवियत संघ के सांस्कृतिक संबंध लिखिए। *(RBSE-2026)*

उत्तर :
- सोवियत संघ में हिंदी फिल्में बहुत लोकप्रिय थीं।
- भारतीय संस्कृति के प्रति व्यापक आकर्षण था।
- बड़ी संख्या में भारतीय लेखक और कलाकार सोवियत संघ गए।
- भारतीय फिल्मी गीत और कलाकार वहाँ के जनमानस का हिस्सा बने।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. भारत और रूस के वर्तमान पारस्परिक हितों का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- भारत को रूस से ऊर्जा–आपूर्ति में लाभ मिलता है।
- रूस आतंकवाद संबंधी सूचनाओं के आदान–प्रदान में सहायक है।
- रूस भारत की परमाणविक योजना के लिए महत्त्वपूर्ण है।
- उसने अंतरिक्ष उद्योग में क्रायोजेनिक रॉकेट देकर मदद की।
- भारत रूस के लिए हथियारों का दूसरा सबसे बड़ा खरीददार है।
- दोनों देश विभिन्न वैज्ञानिक परियोजनाओं में साझीदार हैं।

2. रूस से घनिष्ठ संबंधों से भारत को क्या लाभ हुए? *(RBSE-2022)*

उत्तर :
- भारत को कश्मीर जैसे मुद्दों पर लाभ मिला।
- रूस से ऊर्जा–आपूर्ति में सहयोग प्राप्त हुआ।
- अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद से जुड़ी सूचनाओं का आदान–प्रदान हुआ।
- पश्चिम एशिया में पहुँच बनाने में सहायता मिली।
- चीन के साथ संबंधों में संतुलन बनाने में लाभ हुआ।
- रूस भारत की परमाणविक, अंतरिक्ष और वैज्ञानिक परियोजनाओं में महत्त्वपूर्ण सहयोगी रहा।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. भारत–रूस संबंधों की वर्तमान प्रकृति और महत्त्व का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- भारत और रूस के संबंध आपसी विश्वास और साझे हितों पर आधारित हैं।
- दोनों बहुध्रुवीय विश्व की धारणा का समर्थन करते हैं।
- 2001 के सामरिक समझौते के तहत 80 द्विपक्षीय दस्तावेजों पर हस्ताक्षर हुए।
- भारत को कश्मीर और ऊर्जा–आपूर्ति जैसे मुद्दों में लाभ हुआ।
- आतंकवाद से संबंधित सूचनाओं का आदान–प्रदान महत्त्वपूर्ण है।
- रूस भारत के लिए प्रमुख सैन्य साजो–सामान स्रोत है।
- रूस परमाणविक और अंतरिक्ष कार्यक्रमों में महत्त्वपूर्ण सहयोगी है।
- दोनों देश विभिन्न वैज्ञानिक परियोजनाओं में साझीदार हैं।

2. भारत और रूस के बहुध्रुवीय विश्व संबंधी दृष्टिकोण की विस्तार से व्याख्या कीजिए।

पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

उत्तर :
- दोनों देश अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था में कई शक्तियों की मौजूदगी चाहते हैं।
- किसी एक देश के अत्यधिक प्रभुत्व के स्थान पर साझी भूमिका चाहते हैं।
- सुरक्षा की सामूहिक जिम्मेदारी को महत्त्व देते हैं।
- क्षेत्रीयताओं को अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था में अधिक स्थान देना चाहते हैं।
- अंतर्राष्ट्रीय संघर्षों का समाधान बातचीत से चाहते हैं।
- प्रत्येक देश की स्वतंत्र विदेश नीति का समर्थन करते हैं।
- संयुक्त राष्ट्र जैसी संस्थाओं को अधिक लोकतांत्रिक और शक्तिसंपन्न बनाना चाहते हैं।
- यह दृष्टिकोण भारत–रूस के साझे रणनीतिक हितों को दर्शाता है।

3. शीतयुद्ध के समय भारत और सोवियत संघ के संबंधों का वर्णन कीजिए। *(Model Paper-2025)*

उत्तर :
- भारत और सोवियत संघ के संबंध बहुआयामी और गहरे थे।
- सोवियत संघ ने भारतीय भारी उद्योगों को आर्थिक और तकनीकी सहायता दी।
- विदेशी मुद्रा की कमी के समय रुपये में व्यापार किया गया।
- कश्मीर मामले में सोवियत संघ ने भारत का राजनीतिक समर्थन किया।
- 1971 के पाकिस्तान युद्ध में भारत की मदद की गई।
- भारत को सैन्य उपकरण और सैन्य तकनीक उपलब्ध कराई गई।
- दोनों देशों ने संयुक्त रूप से सैन्य उपकरण तैयार करने के समझौते किए।
- हिंदी फिल्मों, भारतीय संस्कृति और कलाकारों के कारण सांस्कृतिक संबंध मजबूत रहे।



2 सत्ता के समकालीन केन्द्र

यूरोपीय संघ

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. यूरोपीय संघ की स्थापना कब हुई? *(Model Paper-2024)*

(अ) 1882 (ब) 1992
(स) 1907 (द) 1857 **(ब)**

2. यूरोपीय संघ की मुद्रा है– *(RBSE-2023)*

(अ) रुपया (ब) रूबल
(स) यूरो (द) डॉलर **(स)**

3. यूरोपीय संघ को नोबेल शांति पुरस्कार किस वर्ष मिला? *(Model Paper-2026)*

(अ) 2010 (ब) 2012
(स) 2014 (द) 2008 **(ब)**

4. यूरोपीय आर्थिक समुदाय का गठन किस वर्ष हुआ?

(अ) 1948 (ब) 1951
(स) 1957 (द) 1992 **(स)**

5. शांगैन संधि किस वर्ष हुई?

(अ) 1979 (ब) 1985
(स) 1990 (द) 1993 **(ब)**

6. नई मुद्रा 'यूरो' को 12 सदस्य देशों ने कब अपनाया?

(अ) 1992 (ब) 1993
(स) 2002 (द) 2009 **(स)**

7. 2013 में यूरोपीय संघ का 28वाँ सदस्य कौन बना?

(अ) रोमानिया (ब) बुल्गारिया
(स) क्रोएशिया (द) स्लोवेनिया **(स)**

8. यूरोपीय संघ का कौन–सा सदस्य सुरक्षा परिषद् का स्थायी सदस्य है?

(अ) फ्रांस (ब) जर्मनी
(स) डेनमार्क (द) स्वीडन **(अ)**

रिक्तस्थान –

1. मार्शल योजना के तहत 1948 में ..... की स्थापना की गई।

उत्तर : यूरोपीय आर्थिक सहयोग संगठन

2. अप्रैल 1951 में छह देशों ने ..... और इस्पात समुदाय का गठन किया।

उत्तर : यूरोपीय कोयला

3. जून 1979 में यूरोपीय संसद के लिए पहला ..... चुनाव हुआ।

उत्तर : प्रत्यक्ष

4. दिसंबर 2009 में ..... संधि लागू हुई।

उत्तर : लिस्बन

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. यूरोपीय संघ की विदेश और रक्षा क्षमता सीमित क्यों है? *(RBSE-2025)*

उत्तर : क्योंकि सदस्य देशों की अपनी अलग–अलग विदेश और रक्षा नीतियाँ हैं।

2. यूरोपीय संघ के झंडे के 12 सितारे किसका प्रतीक हैं? *(Model Paper-2026)*

उत्तर : पूर्णता, समग्रता, एकता और यूरोपीय लोगों के मेल–मिलाप के।

3. यूरोपीय संघ का साझा संविधान बनाने का प्रयास सफल हुआ या असफल?

उत्तर : यूरोपीय संघ का साझा संविधान बनाने का प्रयास असफल रहा।

4. यूरोपीय संघ के नए सदस्य मुख्यतः किस खेमे के देश थे?

उत्तर : मुख्यतः भूतपूर्व सोवियत खेमे के देश।

5. अधिराष्ट्रीय संगठन के रूप में यूरोपीय संघ किन मामलों में दखल देने में सक्षम है?

उत्तर : आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक मामलों में।

6. साझी मुद्रा 'यूरो' को किन दो देशों ने मानने का प्रतिरोध किया?

उत्तर : डेनमार्क और स्वीडन।

7. इराक पर अमेरिकी हमले का जर्मनी और फ्रांस ने क्या रुख अपनाया?

उत्तर : जर्मनी और फ्रांस ने अमेरिकी हमले का विरोध किया।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. मार्शल योजना से क्या तात्पर्य है? *(RBSE-2024)*

उत्तर :
- दूसरे विश्वयुद्ध के बाद अमेरिका ने यूरोप की अर्थव्यवस्था के पुनर्गठन में मदद की।
- इस सहायता को मार्शल योजना कहा गया।
- इसके तहत 1948 में यूरोपीय आर्थिक सहयोग संगठन बना।
- इस संगठन के माध्यम से पश्चिमी यूरोप के देशों को आर्थिक मदद दी गई।
- इससे व्यापार और आर्थिक मामलों में आपसी सहयोग बढ़ा।

2. यूरोपीय संघ की आर्थिक शक्ति की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर :
- वर्ष 2024 में इसका अनुमानित सकल घरेलू उत्पादन लगभग 19.35 खरब डॉलर था।
- इसकी मुद्रा यूरो अमेरिकी डॉलर के प्रभुत्व के लिए चुनौती बन सकती है।
- विश्व व्यापार में इसकी हिस्सेदारी अमेरिका से तीन गुनी ज्यादा है।
- इसका आर्थिक प्रभाव एशिया और अफ्रीका तक फैला है।
- यह विश्व व्यापार संगठन में महत्त्वपूर्ण समूह के रूप में कार्य करता है।

3. यूरोपीय संघ की कूटनीतिक शक्ति का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- फ्रांस सुरक्षा परिषद् का स्थायी सदस्य है।
- यूरोपीय संघ के अन्य देश भी अस्थायी सदस्य रहे हैं।
- यह अमेरिका सहित अन्य देशों की नीतियों को प्रभावित करता है।
- चीन के मामले में यह कूटनीति, आर्थिक निवेश और बातचीत पर जोर देता है।
- इसकी साझी विदेश नीति इसके कूटनीतिक प्रभाव को बढ़ाती है।

4. यूरोपीय संघ की सैनिक तथा तकनीकी शक्ति पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए।

उत्तर :
- यूरोपीय संघ के पास दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी सेना है।
- इसका कुल रक्षा बजट अमेरिका के बाद सबसे अधिक है।
- फ्रांस के पास परमाणु हथियार हैं।
- अंतरिक्ष विज्ञान में यूरोपीय संघ का दुनिया में दूसरा स्थान है।
- संचार प्रौद्योगिकी में भी इसका स्थान महत्त्वपूर्ण है।

5. यूरोपीय संघ के भीतर मतभेदों के उदाहरण दीजिए।

उत्तर :
- सदस्य देशों की अपनी अलग विदेश और रक्षा नीतियाँ हैं।
- इराक युद्ध में ब्रिटेन अमेरिका के साथ था।
- जर्मनी और फ्रांस इस हमले के खिलाफ थे।
- डेनमार्क और स्वीडन ने यूरो का प्रतिरोध किया।
- इन मतभेदों से विदेश और रक्षा मामलों में संघ की क्षमता सीमित होती है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. यूरोपीय संघ के उद्देश्य लिखिए। *(RBSE-2024)*

उत्तर :
- यूरोपीय देशों के बीच आर्थिक सहयोग को बढ़ाना।
- यूरोप में पुरानी दुश्मनियों की जगह मेल–मिलाप विकसित करना।
- अधिक शांतिपूर्ण और सहकारी क्षेत्रीय व्यवस्था बनाना।
- समान विदेश और सुरक्षा नीति के लिए रास्ता तैयार करना।
- आंतरिक मामलों और न्याय से जुड़े मुद्दों पर सहयोग बढ़ाना।
- एकसमान मुद्रा यूरो के माध्यम से आर्थिक एकीकरण को मजबूत करना।

2. यूरोपीय संघ किस प्रकार एक विशाल राष्ट्र–राज्य जैसा कार्य करता है? *(RBSE-2026)*

उत्तर :
- यूरोपीय संघ का अपना झंडा है।
- इसका अपना गान है।
- इसका अपना स्थापना–दिवस है।
- इसकी अपनी साझा मुद्रा यूरो है।
- इसने साझी विदेश और सुरक्षा नीति विकसित की है।
- यूरोपीय संसद जैसी संस्थाओं ने इसे राजनीतिक स्वरूप दिया है।
- आर्थिक और कूटनीतिक मामलों में यह सामूहिक शक्ति के रूप में काम करता है।

3. यूरोपीय एकता के विकास के छह प्रमुख पड़ाव लिखिए।

उत्तर :
- 1951 में यूरोपीय कोयला और इस्पात समुदाय बना।
- 1957 में यूरोपीय आर्थिक समुदाय का गठन हुआ।
- 1979 में यूरोपीय संसद का पहला प्रत्यक्ष चुनाव हुआ।
- 1985 में शांगैन संधि हुई।
- 1992 में मास्ट्रिख्ट संधि पर हस्ताक्षर हुए।
- 2002 में 12 देशों ने यूरो को अपनाया।
- 2009 में लिस्बन संधि लागू हुई।

पढ़ें जब चाहें, जहां चाहें, जैसे चाहें!

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

4. यूरोपीय संघ की शक्ति की सीमाओं को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- सदस्य देशों की स्वतंत्र विदेश नीतियाँ हैं।
- उनकी रक्षा नीतियों में भी मतभेद हैं।
- इराक युद्ध पर सदस्य देशों का रुख अलग था।
- यूरो को लेकर भी कई देशों में नाराजगी रही।
- डेनमार्क और स्वीडन ने साझा मुद्रा का प्रतिरोध किया।
- नए सदस्यों को शामिल करने पर भी असहमति रही।
- इन मतभेदों से सामूहिक निर्णय क्षमता सीमित होती है।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. दूसरे विश्वयुद्ध के बाद यूरोपीय एकीकरण से यूरोपीय संघ की स्थापना तक की प्रक्रिया का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- दूसरे विश्वयुद्ध ने यूरोप की अर्थव्यवस्थाओं और पुरानी व्यवस्थाओं को ध्वस्त कर दिया।
- अमेरिका ने पुनर्गठन के लिए मार्शल योजना के माध्यम से मदद दी।
- 1948 में यूरोपीय आर्थिक सहयोग संगठन बना।
- 1949 में यूरोपीय परिषद् का गठन हुआ।
- 1951 में यूरोपीय कोयला और इस्पात समुदाय बना।
- 1957 में यूरोपीय आर्थिक समुदाय गठित हुआ।
- यूरोपीय संसद ने इस प्रक्रिया को राजनीतिक स्वरूप दिया।
- 1992 की मास्ट्रिख्ट संधि ने यूरोपीय संघ की स्थापना का मार्ग प्रशस्त किया।
- इसके बाद साझा विदेश नीति, सुरक्षा नीति और मुद्रा यूरो की दिशा में सहयोग बढ़ा।

2. वैकल्पिक शक्ति–केन्द्र के रूप में यूरोपीय संघ की शक्ति का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर :
- यूरोपीय संघ विश्व की प्रमुख आर्थिक शक्तियों में है।
- विश्व व्यापार में इसकी हिस्सेदारी बहुत बड़ी है।
- इसकी मुद्रा यूरो अंतर्राष्ट्रीय महत्त्व रखती है।
- यह विश्व व्यापार संगठन में प्रभावशाली समूह है।
- फ्रांस सुरक्षा परिषद् का स्थायी सदस्य है।
- इसकी कूटनीतिक नीति बातचीत और आर्थिक निवेश पर जोर देती है।
- इसके पास दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी सेना है।
- अंतरिक्ष विज्ञान और संचार प्रौद्योगिकी में इसका दूसरा स्थान है।
- इस प्रकार आर्थिक, राजनीतिक, कूटनीतिक और सैनिक स्तर पर यह वैकल्पिक शक्ति–केन्द्र है।

3. यूरोपीय संघ की उपलब्धियों तथा आंतरिक चुनौतियों का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- यूरोपीय संघ ने यूरोप में आर्थिक एकीकरण को मजबूत किया।
- साझा मुद्रा यूरो को विकसित किया गया।
- साझी विदेश और सुरक्षा नीति का आधार बना।
- अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में इसका प्रभाव बढ़ा।
- कूटनीतिक मामलों में इसकी भूमिका मजबूत हुई।
- नए सदस्यों को शामिल कर सहयोग का विस्तार किया गया।
- फिर भी सदस्य देशों की विदेश और रक्षा नीतियों में मतभेद हैं।
- यूरो तथा सदस्यता विस्तार को लेकर भी विरोध सामने आया।
- इसलिए इसकी व्यापक शक्ति के बावजूद आंतरिक मतभेद इसकी क्षमता को सीमित करते हैं।

दक्षिण पूर्व एशियाई राष्ट्रों का संगठन (आसियान)

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. आसियान क्षेत्रीय मंच की स्थापना कब हुई? *(RBSE-2024)*

(अ) 1991 (ब) 1992
(स) 1993 (द) 1994 **(द)**

2. आसियान–भारत मुक्त व्यापार क्षेत्र व्यवस्था कब लागू हुई? *(Model Paper-2025)*

(अ) 1967 (ब) 2010
(स) 2020 (द) 2024 **(ब)**

3. आसियान की स्थापना कितने देशों ने मिलकर की थी?

(अ) तीन (ब) पाँच
(स) आठ (द) दस **(ब)**

4. आसियान के प्रतीक–चिह्न में धान की कितनी बालियाँ हैं?

(अ) पाँच (ब) आठ
(स) दस (द) बारह **(स)**

5. आसियान समुदाय बनाने की दिशा में तीन स्तम्भों की घोषणा किस वर्ष हुई?

(अ) 1967 (ब) 1994
(स) 2003 (द) 2010 **(स)**

पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

6. आसियान की कार्यशैली में किसका सम्मान विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है?

(अ) सैन्य गठबंधन (ब) राष्ट्रीय सार्वभौमिकता

(स) परमाणु नीति (द) एकसमान मुद्रा **(ब)**

7. पूर्वी एशियाई सहयोग पर वार्षिक बैठक किस वर्ष से नियमित रूप से आयोजित की जा रही है?

(अ) 1991 (ब) 1994

(स) 1999 (द) 2003 **(स)**

रिक्तस्थान –

1. 2003 में आसियान ने ..... स्तम्भों के आधार पर आसियान समुदाय बनाने की दिशा में कदम उठाए।

उत्तर : तीन

2. आसियान ने निवेश, श्रम और सेवाओं के मामले में ..... व्यापार क्षेत्र बनाने पर ध्यान दिया है।

उत्तर : मुक्त

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. आसियान के किन्हीं चार सदस्य देशों के नाम लिखिए। *(RBSE-2023)*

उत्तर : इंडोनेशिया, मलेशिया, सिंगापुर और थाईलैंड।

2. भारत की लुक ईस्ट और एक्ट ईस्ट नीति के अंतर्गत कौन–से देश आते हैं? *(RBSE-2023)*

उत्तर : आसियान देश, चीन, जापान और दक्षिण कोरिया।

3. आसियान की स्थापना कब और किस घोषणा द्वारा हुई? *(RBSE-2025)*

उत्तर : 1967 में बैंकॉक घोषणा द्वारा।

4. 'आसियान शैली' क्या है? *(RBSE-2026)*

उत्तर : अनौपचारिक, टकरावरहित और सहयोगात्मक मेल–मिलाप की कार्यशैली।

5. आसियान की स्थापना का प्रमुख उद्देश्य क्या था? *(Model Paper-2026)*

उत्तर : आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास तथा क्षेत्रीय शांति और स्थायित्व को बढ़ावा देना।

6. आसियान की वर्तमान सदस्य संख्या कितनी है?

उत्तर : दस।

7. आसियान की असली ताकत किस नीति में है?

उत्तर : सदस्य देशों और अन्य पक्षों के बीच निरंतर संवाद और परामर्श की नीति में।

8. आसियान आर्थिक समुदाय का प्रमुख उद्देश्य क्या है?

उत्तर : आसियान देशों का साझा बाजार और उत्पादन आधार तैयार करना।

9. आसियान सुरक्षा समुदाय किस सहमति पर आधारित है?

उत्तर : क्षेत्रीय विवादों को सैनिक टकराव तक न ले जाने की सहमति पर।

7. बाद में आसियान में शामिल पाँच देशों के नाम लिखिए।

उत्तर : ब्रूनेई दारुस्सलाम, वियतनाम, लाओस, म्यांमार और कंबोडिया।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. आसियान की स्थापना की पृष्ठभूमि बताइए।

उत्तर :
- दक्षिण–पूर्व एशिया यूरोपीय और जापानी उपनिवेशवाद का शिकार रहा।
- युद्ध के बाद राष्ट्र–निर्माण और आर्थिक पिछड़ेपन की समस्या थी।
- गरीबी और शीतयुद्ध के दबाव भी मौजूद थे।
- अनौपचारिक सहयोग के पुराने प्रयास पर्याप्त कारगर नहीं थे।
- इसलिए क्षेत्रीय सहयोग के लिए आसियान की स्थापना की गई।

2. 'आसियान शैली' की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर :
- इसकी कार्यशैली अनौपचारिक है।
- यह टकरावरहित संबंधों पर जोर देती है।
- इसका आधार सहयोगात्मक मेल–मिलाप है।
- इसमें राष्ट्रीय सार्वभौमिकता का सम्मान महत्त्वपूर्ण है।
- यह बातचीत और परामर्श को प्राथमिकता देती है।

3. आसियान सुरक्षा समुदाय की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर :
- विवादों को सैनिक टकराव तक न ले जाने पर सहमति है।
- सदस्य देश शांति को बढ़ावा देते हैं।
- निष्पक्षता और सहयोग पर जोर दिया जाता है।
- अहस्तक्षेप तथा संप्रभुता का सम्मान किया जाता है।
- सुरक्षा नीतियों में तालमेल हेतु ARF बनाया गया।

4. आसियान आर्थिक समुदाय के उद्देश्य लिखिए।

उत्तर :
- आसियान देशों का साझा बाजार तैयार करना।
- साझा उत्पादन आधार विकसित करना।
- सामाजिक और आर्थिक विकास में सहायता देना।
- आर्थिक विवाद निपटाने की व्यवस्था को सुधारना।
- निवेश, श्रम और सेवाओं के लिए मुक्त व्यापार को बढ़ावा देना।

5. भारत और आसियान के आर्थिक संबंधों के प्रमुख बिंदु लिखिए।

पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

उत्तर :
- भारत ने 1991 से लुक ईस्ट नीति अपनाई।
- 2014 से एक्ट ईस्ट नीति अपनाई गई।
- भारत ने मलेशिया, सिंगापुर और थाईलैंड के साथ मुक्त व्यापार समझौते किए।
- 2010 में आसियान–भारत मुक्त व्यापार क्षेत्र व्यवस्था लागू हुई।
- इससे पूर्वी एशियाई देशों से भारत के आर्थिक संबंध बढ़े।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. आसियान की संक्षिप्त उपलब्धियाँ बताते हुए इसकी प्रासंगिकता पर विचार प्रकट कीजिए। (RBSE-2025)

उत्तर :
- आसियान ने सदस्य देशों में आर्थिक सहयोग को बढ़ाया।
- क्षेत्रीय शांति और स्थायित्व को प्रोत्साहित किया।
- आसियान शैली ने सहयोगात्मक कार्यशैली विकसित की।
- 2003 में तीन स्तम्भों वाले आसियान समुदाय की दिशा में कदम बढ़ाया।
- ARF ने सुरक्षा और विदेश नीति संवाद का मंच दिया।
- आसियान ने टकराव की जगह बातचीत को बढ़ावा दिया।
- भारत और चीन जैसे देशों के साथ व्यापार ने इसकी प्रासंगिकता बढ़ाई।

2. आसियान विजन–2020 की मुख्य बातें बताइए।

(RBSE-2026)

उत्तर :
- विजन–2020 में आसियान की बहिर्मुखी भूमिका को महत्त्व दिया गया।
- अंतर्राष्ट्रीय समुदाय में सक्रिय भूमिका पर जोर दिया गया।
- टकराव की जगह बातचीत को प्राथमिकता दी गई।
- क्षेत्रीय विवादों के शांतिपूर्ण समाधान की दिशा अपनाई गई।
- कंबोडिया के टकराव को समाप्त करने में बातचीत का उपयोग किया गया।
- पूर्वी तिमोर के संकट को संभालने में भूमिका निभाई गई।
- पूर्वी एशियाई सहयोग के लिए नियमित वार्षिक बैठकों को बढ़ावा मिला।

3. आसियान समुदाय के तीन स्तम्भों का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- 2003 में तीन स्तम्भों वाले आसियान समुदाय की दिशा में कदम उठाया गया।
- पहला स्तम्भ आसियान सुरक्षा समुदाय है।
- इसका आधार विवादों को सैनिक टकराव तक न ले जाना है।
- दूसरा स्तम्भ आसियान आर्थिक समुदाय है।
- इसका उद्देश्य साझा बाजार और उत्पादन आधार बनाना है।
- तीसरा स्तम्भ आसियान सामाजिक–सांस्कृतिक समुदाय है।
- इन तीनों के माध्यम से सहयोग का दायरा आर्थिक क्षेत्र से आगे बढ़ा।

4. आसियान को राजनीतिक और सुरक्षा संवाद का महत्त्वपूर्ण मंच क्यों माना जाता है?

उत्तर :
- यह निरंतर संवाद और परामर्श पर जोर देता है।
- 1994 में आसियान क्षेत्रीय मंच बनाया गया।
- इससे विदेश और सुरक्षा नीतियों में तालमेल बढ़ा।
- यह क्षेत्रीय विवादों को सैनिक टकराव से बचाने पर जोर देता है।
- यह एशियाई देशों को राजनीतिक चर्चा का मंच देता है।
- विश्व शक्तियाँ भी इस मंच पर सुरक्षा मामलों पर चर्चा करती हैं।
- इस प्रकार यह एशिया का महत्त्वपूर्ण क्षेत्रीय संवाद मंच है।

5. आसियान की आर्थिक प्रासंगिकता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- आसियान तेजी से बढ़ती क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था है।
- इसकी वृद्धि अमेरिका, यूरोपीय संघ और जापान से अधिक तेजी से हुई है।
- इसने साझा बाजार और उत्पादन आधार की दिशा अपनाई।
- निवेश, श्रम और सेवाओं में मुक्त व्यापार पर ध्यान दिया।
- अमेरिका और चीन ने इसके साथ मुक्त व्यापार पर बातचीत शुरू की।
- भारत के साथ 2010 में मुक्त व्यापार क्षेत्र व्यवस्था लागू हुई।
- भारत और चीन के साथ व्यापार ने इसकी आकर्षकता बढ़ाई।

पढ़ो जब चाहे, जहाँ चाहे, जैसे चाहे!

निबंधात्मक प्रश्न –

1. क्षेत्रीय संगठनों को बनाने का उद्देश्य क्या है? 'आसियान' संगठन की स्थापना एवं 'आसियान विजन 2020' की मुख्य बातें क्या हैं, बताइए। *(Model Paper-2023)*

उत्तर :
- क्षेत्रीय संगठन साझा समस्याओं का क्षेत्रीय समाधान खोजते हैं।
- आर्थिक वृद्धि और सामाजिक–सांस्कृतिक विकास इनके प्रमुख उद्देश्य हैं।
- क्षेत्रीय शांति और स्थायित्व को भी बढ़ावा दिया जाता है।
- 1967 में पाँच देशों ने बैंकॉक घोषणा से आसियान की स्थापना की।
- संस्थापक देश इंडोनेशिया, मलेशिया, फिलीपींस, सिंगापुर और थाईलैंड थे।
- बाद में पाँच और देश जुड़ने से सदस्य संख्या दस हो गई।
- आसियान ने बातचीत, सहयोग और अहस्तक्षेप पर आधारित शैली अपनाई।
- विजन–2020 ने आसियान की बहिर्मुखी अंतर्राष्ट्रीय भूमिका पर जोर दिया।
- टकराव के बजाय बातचीत के माध्यम से क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा दिया गया।

2. आसियान की स्थापना से लेकर एक प्रभावशाली क्षेत्रीय संगठन बनने तक की प्रक्रिया समझाइए।

उत्तर :
- 1967 में पाँच देशों ने आसियान की स्थापना की।
- बाद में सदस्य संख्या बढ़कर दस हुई।
- संगठन ने आर्थिक और सामाजिक विकास पर प्रारंभिक जोर दिया।
- आसियान शैली के माध्यम से टकरावरहित सहयोग विकसित किया।
- 1994 में आसियान क्षेत्रीय मंच बनाया गया।
- 2003 में तीन स्तम्भों वाला आसियान समुदाय प्रस्तावित हुआ।
- मुक्त व्यापार और साझा बाजार की दिशा में आर्थिक सहयोग बढ़ा।
- विजन–2020 ने इसकी अंतर्राष्ट्रीय भूमिका को व्यापक बनाया।
- विश्व शक्तियों के साथ संवाद ने इसकी क्षेत्रीय प्रासंगिकता बढ़ाई।

3. आसियान की सफलता में संवाद, अहस्तक्षेप और आर्थिक सहयोग की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- आसियान ने टकराव के बजाय संवाद को प्राथमिकता दी।
- सदस्य देशों की राष्ट्रीय सार्वभौमिकता का सम्मान किया।
- अहस्तक्षेप के सिद्धांत को महत्त्व दिया गया।
- विवादों को सैनिक टकराव से बचाने पर सहमति बनी।
- आर्थिक समुदाय के माध्यम से साझा बाजार पर जोर दिया गया।
- निवेश, श्रम और सेवाओं में मुक्त व्यापार को बढ़ावा दिया गया।
- ARF के माध्यम से राजनीतिक और सुरक्षा चर्चा को संस्थागत रूप मिला।
- भारत, चीन और अन्य शक्तियों से आर्थिक संबंधों ने इसकी प्रासंगिकता बढ़ाई।
- इस प्रकार आर्थिक सहयोग और बातचीत इसकी प्रमुख शक्ति बने।

4. भारत और आसियान के संबंधों के विकास का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- शुरुआती वर्षों में भारतीय विदेश नीति ने आसियान पर अधिक ध्यान नहीं दिया।
- 1991 में भारत ने लुक ईस्ट नीति अपनाई।
- इससे पूर्वी एशियाई देशों से आर्थिक संबंध बढ़े।
- भारत ने मलेशिया, सिंगापुर और थाईलैंड के साथ मुक्त व्यापार समझौते किए।
- 2010 में आसियान–भारत मुक्त व्यापार क्षेत्र व्यवस्था लागू हुई।
- 2014 से भारत ने एक्ट ईस्ट नीति अपनाई।
- आसियान की तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था ने भारत के लिए इसकी प्रासंगिकता बढ़ाई।
- निरंतर संवाद और परामर्श ने संबंधों को मजबूत बनाया।
- भारत–आसियान संबंध क्षेत्रीय आर्थिक सहयोग का महत्त्वपूर्ण हिस्सा बने।

मिशन ज्ञान
जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

चीनी अर्थव्यवस्था का उत्थान

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. किसने 'खुले द्वार की नीति' अपनाई?

(Model Paper-2025)

(अ) दक्षिण कोरिया (ब) चीन
(स) जापान (द) अमेरिका **(ब)**

2. चीन ने अमेरिका से संबंध बनाकर अपना राजनीतिक और आर्थिक एकांतवास कब समाप्त किया?

(अ) 1949 (ब) 1972
(स) 1978 (द) 1982 **(ब)**

3. आधुनिकीकरण के चार प्रस्ताव किसने रखे?

(अ) माओ (ब) चाऊ एनलाई
(स) देंग श्याओपेंग (द) हू **(ब)**

4. चीन में खेती का निजीकरण कब किया गया?

(अ) 1972 (ब) 1978
(स) 1982 (द) 1998 **(स)**

5. चीन में उद्योगों का निजीकरण कब किया गया?

(अ) 1982 (ब) 1998
(स) 2001 (द) 1973 **(ब)**

6. चीन विश्व व्यापार संगठन में कब शामिल हुआ?

(अ) 1998 (ब) 1999
(स) 2001 (द) 2003 **(स)**

रिक्तस्थान –

1. 1949 में माओ के नेतृत्व में चीन में ..... क्रांति हुई। (RBSE-2026)

उत्तर : साम्यवादी क्रांति

2. विदेशी निवेशकों के लिए चीन ने ..... आर्थिक क्षेत्रों का निर्माण किया।

उत्तर : विशेष

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. साम्यवादी क्रांति के बाद चीन ने किस आर्थिक मॉडल को अपनाया?

उत्तर : सोवियत मॉडल पर आधारित राज्य–नियंत्रित अर्थव्यवस्था।

2. चीन ने आयातित सामानों को घरेलू स्तर पर तैयार करना क्यों शुरू किया?

उत्तर : विदेशी बाजारों से खरीद के लिए विदेशी मुद्रा की कमी के कारण।

3. चीन ने 'शॉक थेरेपी' के स्थान पर कौन–सा मार्ग अपनाया?

उत्तर : अर्थव्यवस्था को चरणबद्ध ढंग से खोलने का मार्ग।

4. विशेष आर्थिक क्षेत्रों का प्रमुख उद्देश्य क्या था?

उत्तर : विदेशी निवेशकों को अपने उद्यम स्थापित करने की सुविधा देना।

5. आर्थिक सुधारों के तीन नकारात्मक परिणाम कौन–से थे?

उत्तर : बेरोजगारी, पर्यावरण का नुकसान और भ्रष्टाचार।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. चीन में कृषि के निजीकरण से क्या लाभ हुए?

(RBSE-2023)

उत्तर :
- कृषि उत्पादों में उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई।
- ग्रामीण आय में वृद्धि हुई।
- ग्रामीण क्षेत्रों में निजी बचत बढ़ी।
- ग्रामीण उद्योगों की संख्या तेजी से बढ़ी।

2. साम्यवादी क्रांति के बाद चीन के आर्थिक मॉडल की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर :
- अर्थव्यवस्था सोवियत मॉडल पर आधारित थी।
- बड़े उद्योग सरकारी नियंत्रण में स्थापित किए गए।
- खेती से पूँजी निकालकर उद्योगों में लगाई गई।
- आयातित सामानों को घरेलू स्तर पर तैयार करने पर जोर दिया गया।
- रोजगार और सामाजिक कल्याण योजनाओं का व्यापक विस्तार किया गया।

3. पुराने चीनी आर्थिक मॉडल की प्रमुख समस्याएँ क्या थीं?

उत्तर :
- औद्योगिक उत्पादन पर्याप्त तेजी से नहीं बढ़ रहा था।
- विदेशी व्यापार लगभग न के बराबर था।
- प्रति व्यक्ति आय बहुत कम थी।
- जनसंख्या की तेज वृद्धि विकास के लाभ को कम कर रही थी।
- कृषि पर्याप्त अधिशेष उपलब्ध नहीं करा पा रही थी।

4. 1970 के दशक में चीनी नेतृत्व द्वारा किए गए प्रमुख नीतिगत निर्णय लिखिए।

उत्तर :
- 1972 में अमेरिका से राजनीतिक और आर्थिक संबंध बनाए।
- 1973 में चार क्षेत्रों के आधुनिकीकरण का प्रस्ताव रखा गया।
- कृषि, उद्योग, सेना और विज्ञान–प्रौद्योगिकी पर जोर दिया गया।
- 1978 में आर्थिक सुधारों की घोषणा हुई।
- विदेशी पूँजी और प्रौद्योगिकी से उच्चतर उत्पादकता का लक्ष्य रखा गया।

मिशन ज्ञान
पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

5. विशेष आर्थिक क्षेत्रों ने चीन के आर्थिक विकास में क्या भूमिका निभाई?

उत्तर :
- विशेष क्षेत्रों में व्यापार संबंधी अवरोध हटाए गए।
- विदेशी निवेशकों को उद्यम लगाने की सुविधा मिली।
- प्रत्यक्ष विदेशी निवेश बढ़ा।
- विदेश व्यापार में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।
- चीन विश्व अर्थव्यवस्था से अधिक गहराई से जुड़ा।

6. चीन के आर्थिक सुधारों के सामाजिक और पर्यावरणीय परिणाम लिखिए।

उत्तर :
- चीन में बेरोजगारी बढ़ी।
- बड़ी संख्या में लोग रोजगार की तलाश में रहे।
- महिलाओं के रोजगार और काम की दशाएँ खराब रहीं।
- पर्यावरण को नुकसान हुआ।
- गाँव–शहर और तटीय–मुख्यभूमि क्षेत्रों के बीच आर्थिक फासला बढ़ा।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. चीन ने अपनी अर्थव्यवस्था मजबूत करने के लिए क्या प्रयास किए? (RBSE-2025)

उत्तर :
- 1972 में अमेरिका से संबंध बनाकर एकांतवास कम किया।
- 1978 में आर्थिक सुधार और खुले द्वार की नीति अपनाई।
- अर्थव्यवस्था को चरणबद्ध ढंग से खोला गया।
- 1982 में खेती का निजीकरण किया गया।
- 1998 में उद्योगों का निजीकरण किया गया।
- विशेष आर्थिक क्षेत्रों के माध्यम से विदेशी निवेश बढ़ाया गया।
- 2001 में चीन विश्व व्यापार संगठन में शामिल हुआ।

2. नई आर्थिक नीतियों से चीन को हुए आर्थिक लाभों का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- कृषि उत्पादन और ग्रामीण आय में बढ़ोतरी हुई।
- ग्रामीण निजी बचत बढ़ी।
- ग्रामीण उद्योगों का तेजी से विस्तार हुआ।
- उद्योग और कृषि दोनों की वृद्धि–दर तेज हुई।
- विदेश व्यापार में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।
- चीन प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के लिए आकर्षक देश बना।
- विदेशी मुद्रा का विशाल भंडार विकसित हुआ।

3. वैश्विक आर्थिक शक्ति के रूप में चीन के प्रभाव को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- चीन पूर्वी एशिया के विकास का इंजन–जैसा बन गया।
- क्षेत्रीय मामलों में उसका प्रभाव बढ़ा।
- व्यापारिक साझीदारों पर उसका प्रभाव मजबूत हुआ।
- जापान, अमेरिका, आसियान और रूस के साथ व्यापारिक संबंध गहरे हुए।
- 1997 के वित्तीय संकट के बाद आसियान अर्थव्यवस्थाओं को सहायता मिली।
- लातिनी अमेरिका और अफ्रीका में निवेश तथा मदद बढ़ी।
- चीन एक नई विश्व शक्ति के रूप में उभरा।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. चीनी अर्थव्यवस्था के उत्थान की प्रक्रिया का विस्तार से वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- 1949 के बाद चीन ने सोवियत मॉडल पर आधारित अर्थव्यवस्था अपनाई।
- सरकारी नियंत्रण में बड़े उद्योग स्थापित किए गए।
- सामाजिक कल्याण, शिक्षा और स्वास्थ्य में उल्लेखनीय प्रगति हुई।
- पुराना मॉडल धीमे औद्योगिक उत्पादन और कम विदेशी व्यापार से संकट में आया।
- 1972 में अमेरिका से संबंध बनाकर एकांतवास कम किया गया।
- 1978 में देंग श्याओपेंग ने आर्थिक सुधार और खुले द्वार की नीति अपनाई।
- खेती और उद्योगों का चरणबद्ध निजीकरण किया गया।
- विशेष आर्थिक क्षेत्रों ने विदेशी निवेश और व्यापार बढ़ाया।
- 2001 में WTO में प्रवेश के बाद चीन विश्व अर्थव्यवस्था से और गहराई से जुड़ा।

2. आज की चीनी अर्थव्यवस्था पुराने नियंत्रित आर्थिक मॉडल से किस प्रकार अलग है?

उत्तर :
- पुराने मॉडल में बड़े उद्योग सरकारी नियंत्रण में थे।
- विदेशी व्यापार अत्यंत सीमित था।
- आयातित वस्तुओं के घरेलू उत्पादन पर जोर था।
- नई व्यवस्था में विदेशी पूँजी और प्रौद्योगिकी को स्वीकार किया गया।

मिशन ज्ञान
पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

- कृषि और उद्योगों में निजीकरण की प्रक्रिया शुरू हुई।
- विशेष आर्थिक क्षेत्रों को विदेशी निवेश के लिए खोला गया।
- व्यापार संबंधी अवरोधों को सीमित क्षेत्रों में हटाया गया।
- WTO में प्रवेश से वैश्विक व्यापारिक जुड़ाव बढ़ा।
- चीन अब अन्य देशों में भी निवेश करने वाली बड़ी आर्थिक शक्ति बन गया।

3. चीन के आर्थिक सुधारों की उपलब्धियों और समस्याओं का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर :
- कृषि उत्पादन और ग्रामीण आय में वृद्धि हुई।
- ग्रामीण उद्योगों का तेजी से विस्तार हुआ।
- औद्योगिक और कृषि वृद्धि–दर तेज हुई।
- विदेश व्यापार और प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में वृद्धि हुई।
- विदेशी मुद्रा का विशाल भंडार बना।
- चीन विश्व अर्थव्यवस्था में प्रभावशाली शक्ति बना।
- दूसरी ओर बेरोजगारी बढ़ी।
- पर्यावरण के नुकसान और भ्रष्टाचार जैसी समस्याएँ सामने आईं।
- ग्रामीण–शहरी और तटीय–मुख्यभूमि आर्थिक असमानता बढ़ी।

चीन के साथ भारत के संबंध

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. भारत और चीन के बीच युद्ध किस वर्ष हुआ?

(अ) 1950 (ब) 1962
(स) 1976 (द) 1981 **(ब)**

2. भारत और चीन के बीच कूटनीतिक संबंधों में सुधार किस वर्ष के बाद शुरू हुआ?

(अ) 1962 (ब) 1976
(स) 1981 (द) 1992 **(ब)**

3. सीमा विवादों को दूर करने के लिए वार्ताओं की श्रृंखला कब शुरू हुई?

(अ) 1972 (ब) 1976
(स) 1981 (द) 1988 **(स)**

4. भारत–चीन संबंधों को सुधारने में राजीव गांधी की चीन यात्रा किस वर्ष हुई?

(अ) 1981 (ब) 1988
(स) 1992 (द) 1999 **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. आजादी के तत्काल बाद ..... में चीन ने तिब्बत को अपने नियंत्रण में लिया।

उत्तर : 1950

2. भारत और चीन ने व्यापार के लिए सीमा पर ..... पोस्ट खोलने के समझौते किए।

उत्तर : चार

3. वैश्विक धरातल पर भारत और चीन ने ..... जैसे अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक संगठन में समान नीतियाँ अपनाई हैं।

उत्तर : विश्व व्यापार संगठन

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. प्राचीन काल में भारत और चीन के प्रत्यक्ष राजनीतिक संबंध सीमित क्यों रहे?

उत्तर : क्योंकि दोनों के प्रभाव क्षेत्रों में प्रत्यक्ष टकराव नहीं था और वे एक–दूसरे को सीमित रूप से जानते थे।

2. आजादी के बाद भारत–चीन मित्रता का लोकप्रिय नारा क्या था?

उत्तर : 'हिंदी–चीनी भाई–भाई'।

3. दोनों देशों ने सीमा पर शांति बनाए रखने के लिए किस प्रकार के उपाय किए?

उत्तर : टकराव टालने, शांति और यथास्थिति बनाए रखने के उपाय।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. भारत–चीन सहयोग के दो बिंदु लिखिए।

(Model Paper-2024)

उत्तर :
- दोनों देशों के बीच व्यापार तेजी से बढ़ा।
- सांस्कृतिक आदान–प्रदान को बढ़ावा मिला।
- विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में सहयोग हुआ।
- विश्व व्यापार संगठन में दोनों ने कई मुद्दों पर समान नीतियाँ अपनाईं।

2. भारत–चीन के बीच 1962 के युद्ध के दो कारण बताइए।

(RBSE-2026)

उत्तर :
- चीन द्वारा तिब्बत पर नियंत्रण से संबंध खराब हुए।
- भारत–चीन सीमा पर बस्तियाँ बनाने का मुद्दा उभरा।
- अरुणाचल प्रदेश के कुछ इलाकों पर प्रतिस्पर्धी दावे थे।
- अक्साई–चिन क्षेत्र पर भी दोनों के दावे थे।

3. स्वतंत्रता के बाद भारत–चीन संबंधों में प्रारंभिक आशा और बाद की गिरावट स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- दोनों देशों से विकासशील दुनिया में महत्त्वपूर्ण भूमिका की आशा थी।
- 'हिंदी–चीनी भाई–भाई' का नारा लोकप्रिय हुआ।
- 1950 में तिब्बत के प्रश्न से संबंध बिगड़े।
- सीमा विवादों ने अविश्वास बढ़ाया।
- 1962 का युद्ध संबंधों में बड़ी गिरावट का कारण बना।

4. 1976 के बाद भारत–चीन संबंधों में सुधार के प्रमुख कदम लिखिए।

उत्तर :
- 1976 के बाद कूटनीतिक संबंधों में सुधार शुरू हुआ।
- चीन ने वैचारिक मुद्दों की जगह व्यावहारिक मुद्दों को महत्त्व दिया।
- विवादास्पद मामलों को अलग रखकर संबंध सुधारने की कोशिश की गई।
- 1981 में सीमा वार्ताओं की श्रृंखला शुरू हुई।
- दोनों देशों के बीच संपर्क धीरे–धीरे बढ़ा।

5. शीतयुद्ध की समाप्ति के बाद भारत–चीन संबंधों में क्या परिवर्तन आया?

उत्तर :
- संबंध केवल रणनीतिक नहीं रहे।
- उनका आर्थिक पहलू भी महत्त्वपूर्ण हो गया।
- दोनों स्वयं को विश्व राजनीति की उभरती शक्ति मानने लगे।
- एशिया की राजनीति और अर्थव्यवस्था में भूमिका बढ़ाने की इच्छा रही।
- व्यापार और सहयोग के नए क्षेत्र विकसित हुए।

6. वर्तमान भारत–चीन संबंधों में गिरावट के कारण लिखिए।

उत्तर :
- दोनों देशों के बीच सीमा–विवाद बना हुआ है।
- चीन–पाकिस्तान आर्थिक गलियारा विवाद का कारण है।
- संयुक्त राष्ट्र में आतंकवाद विरोधी भारतीय प्रस्ताव पर मतभेद रहे।
- इस मामले में चीन द्वारा पाकिस्तान को समर्थन देने से तनाव बढ़ा।
- इन कारणों से हाल के समय में संबंधों में गिरावट आई।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. भारत–चीन संबंधों पर टिप्पणी लिखिए।

(Model Paper-2026, RBSE-2024, RBSE-2025)

उत्तर :
- प्रारंभ में 'हिंदी–चीनी भाई–भाई' की भावना रही।
- तिब्बत और सीमा विवाद से संबंध बिगड़े।
- 1962 में दोनों देशों के बीच युद्ध हुआ।
- 1976 के बाद कूटनीतिक संबंधों में सुधार शुरू हुआ।
- 1981 में सीमा विवाद पर वार्ताएँ शुरू हुईं।
- 1988 की राजीव गांधी यात्रा से सुधार को बढ़ावा मिला।
- बाद में व्यापार, सांस्कृतिक संपर्क और आर्थिक सहयोग बढ़ा।

2. 1988 के बाद भारत–चीन संबंधों में सुधार के उपायों का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- राजीव गांधी की चीन यात्रा से संबंध सुधारने को गति मिली।
- दोनों देशों ने टकराव टालने के उपाय शुरू किए।
- सीमा पर शांति और यथास्थिति बनाए रखने का प्रयास किया।
- सांस्कृतिक आदान–प्रदान बढ़ाया गया।
- विज्ञान और तकनीक में परस्पर सहयोग किया गया।
- व्यापार के लिए सीमा पर चार पोस्ट खोलने के समझौते हुए।
- दोनों देशों के नेताओं और अधिकारियों की यात्राएँ बढ़ीं।

3. भारत–चीन संबंधों को सकारात्मक और मजबूत बनाने वाले कारक लिखिए।

उत्तर :
- परिवहन मार्गों में वृद्धि हुई।
- संचार मार्गों का विस्तार हुआ।
- दोनों देशों के समान आर्थिक हित बढ़े।
- वैश्विक मुद्दों पर कई साझा सरोकार विकसित हुए।
- व्यापारिक संपर्कों में निरंतर वृद्धि हुई।
- नेताओं और अधिकारियों की यात्राएँ बढ़ीं।
- इससे दोनों देश एक–दूसरे को अधिक निकट से समझने लगे।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. भारत–चीन संबंधों में सहयोग और विवाद दोनों साथ–साथ कैसे मौजूद हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- दोनों देशों के बीच सीमा संबंधी विवाद जारी हैं।
- अक्साई–चिन और अरुणाचल प्रदेश से जुड़े दावे ऐतिहासिक तनाव के कारण रहे।
- पाकिस्तान से चीन के संबंध भी भारतीय चिंताओं से जुड़े हैं।

मिशन ज्ञान
पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

- इसके बावजूद सीमा विवाद पर बातचीत जारी रही।
- दोनों देशों के बीच व्यापार तेजी से बढ़ा।
- सांस्कृतिक, वैज्ञानिक और तकनीकी सहयोग विकसित हुआ।
- WTO जैसे मंचों पर कई समान नीतियाँ अपनाई गईं।
- ऊर्जा सौदों जैसे मुद्दों पर भी सहयोग हुआ।
- इसलिए विवादों के साथ–साथ व्यावहारिक सहयोग भी संबंधों की विशेषता है।

2. भारत और चीन के बीच आर्थिक संपर्कों ने द्विपक्षीय संबंधों को किस प्रकार प्रभावित किया?

उत्तर :
- शीतयुद्ध के बाद संबंधों में आर्थिक पहलू प्रमुख हुआ।
- 1999 से व्यापार लगभग 30 प्रतिशत वार्षिक दर से बढ़ा।
- 1992 में व्यापार 33 करोड़ 80 लाख डॉलर था।
- 2017 में यह बढ़कर 84 अरब डॉलर हो गया।
- व्यापार वृद्धि से संबंधों में नई गर्मजोशी आई।
- सीमा पर व्यापार के लिए चार पोस्ट खोलने के समझौते हुए।
- समान आर्थिक हितों ने सहयोग को बढ़ाया।
- WTO जैसे मंचों पर समान नीतियों को बढ़ावा मिला।
- आर्थिक संपर्कों ने राजनीतिक मतभेदों के बावजूद संबंध बनाए रखने में सहायता की।

जापान और दक्षिण कोरिया

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. 'हान नदी पर चमत्कार' किस देश से संबंधित है? **(Model Paper-2025)**

(अ) दक्षिण कोरिया (ब) उत्तरी कोरिया
(स) जापान (द) अफ्रीका **(अ)**

2. जापान आर्थिक सहयोग तथा विकास संगठन का सदस्य कब बना?

(अ) 1951 (ब) 1964
(स) 1991 (द) 1996 **(ब)**

3. जापान संयुक्त राष्ट्रसंघ के बजट में कितना योगदान करता है?

(अ) 1 प्रतिशत (ब) 5 प्रतिशत
(स) 10 प्रतिशत (द) 18 प्रतिशत **(स)**

4. जापान के संविधान का कौन–सा अनुच्छेद युद्ध और बल–प्रयोग के त्याग से संबंधित है?

(अ) अनुच्छेद 1 (ब) अनुच्छेद 9
(स) अनुच्छेद 18 (द) अनुच्छेद 38 **(ब)**

5. दक्षिण कोरिया OECD का सदस्य कब बना?

(अ) 1964 (ब) 1991
(स) 1996 (द) 2017 **(स)**

रिक्तस्थान –

1. प्राकृतिक संसाधन कम होने के कारण जापान ज्यादातर ..... का आयात करता है।

उत्तर : कच्चे माल

2. जापान का अमेरिका के साथ सुरक्षा–गठबंधन ..... से है।

उत्तर : 1951

3. दोनों कोरिया ..... सितंबर 1991 को संयुक्त राष्ट्र के सदस्य बने।

उत्तर : 17

4. कोरियाई प्रायद्वीप को ..... समानांतर के साथ–साथ विभाजित किया गया था।

उत्तर : 38वें

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. जापान की सैन्य नीति में संविधान का अनुच्छेद 9 क्या घोषित करता है?

उत्तर : युद्ध तथा अंतर्राष्ट्रीय विवादों में बल–प्रयोग या धमकी का त्याग।

2. कोरियाई युद्ध किस अवधि में हुआ?

उत्तर : 1950–53।

3. 2017 में दक्षिण कोरिया की अर्थव्यवस्था का विश्व में कौन–सा स्थान था?

उत्तर : ग्यारहवाँ।

4. भारत में प्रसिद्ध तीन दक्षिण कोरियाई ब्रांडों के नाम लिखिए।

उत्तर : सैमसंग, एलजी और हुंडई।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. प्राकृतिक संसाधन कम होने के बावजूद जापान आर्थिक शक्ति कैसे बना?

उत्तर :
- जापान के पास प्राकृतिक संसाधन कम हैं।
- वह अधिकांश कच्चे माल का आयात करता है।
- दूसरे विश्वयुद्ध के बाद उसने तेजी से आर्थिक प्रगति की।
- उच्च प्रौद्योगिकी वाले उत्पादों में जापानी कंपनियाँ प्रसिद्ध हुईं।
- 2017 में जापान विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था था।

2. विश्व स्तर पर जापान की आर्थिक और संस्थागत भूमिका स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- जापान विश्व की प्रमुख आर्थिक शक्तियों में है।
- वह समूह–7 में शामिल एशिया का एकमात्र देश है।
- 1964 में वह OECD का सदस्य बना।
- संयुक्त राष्ट्र के बजट में 10 प्रतिशत योगदान देता है।
- अंशदान के लिहाज से वह दूसरा सबसे बड़ा देश है।

3. जापान की सुरक्षा और सैन्य नीति की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर :
- 1951 से अमेरिका के साथ उसका सुरक्षा–गठबंधन है।
- संविधान का अनुच्छेद 9 युद्ध के त्याग पर आधारित है।
- अंतर्राष्ट्रीय विवादों में बल–प्रयोग से दूर रहने की बात कही गई है।
- सैन्य व्यय GDP का केवल 1 प्रतिशत है।
- फिर भी सैन्य व्यय में उसका विश्व में सातवाँ स्थान है।

4. दक्षिण कोरिया के आर्थिक उत्थान का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- 1960 से 1980 के दशक के बीच तेजी से आर्थिक विकास हुआ।
- इस विकास को 'हान नदी पर चमत्कार' कहा गया।
- 1996 में दक्षिण कोरिया OECD का सदस्य बना।
- 2017 में इसकी अर्थव्यवस्था विश्व की ग्यारहवीं सबसे बड़ी थी।
- सैमसंग, एलजी और हुंडई जैसे ब्रांड इसके आर्थिक विकास को दर्शाते हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. दक्षिण कोरिया के तीव्र विकास के प्रमुख कारकों का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- सफल भूमि सुधार विकास का महत्त्वपूर्ण आधार रहा।
- ग्रामीण विकास पर विशेष ध्यान दिया गया।
- व्यापक मानव संसाधन विकास किया गया।
- तीव्र और न्यायसंगत आर्थिक वृद्धि हुई।
- निर्यात उन्मुखीकरण को अपनाया गया।
- सार्वजनिक अवसंरचना और पुनर्वितरण नीतियाँ मजबूत रहीं।
- प्रभावी संस्थाओं और शासन ने विकास को गति दी।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. वैकल्पिक शक्ति केन्द्र के रूप में जापान प्रभावकारी है। तथ्यों के माध्यम से स्पष्ट कीजिए। *(Model Paper-2023)*

उत्तर :
- जापान प्राकृतिक संसाधनों की कमी के बावजूद बड़ी आर्थिक शक्ति बना।
- उच्च प्रौद्योगिकी वाले उत्पादों के लिए जापानी ब्रांड विश्व प्रसिद्ध हैं।
- 1964 में जापान OECD का सदस्य बना।
- 2017 में इसकी अर्थव्यवस्था विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था थी।
- एशिया में जापान समूह–7 का एकमात्र सदस्य है।
- वह संयुक्त राष्ट्र बजट में 10 प्रतिशत योगदान देता है।
- 1951 से अमेरिका के साथ उसका सुरक्षा–गठबंधन है।
- सैन्य व्यय GDP का केवल 1 प्रतिशत होने के बावजूद विश्व में सातवाँ स्थान है।
- आर्थिक, तकनीकी और संस्थागत प्रभाव उसे महत्त्वपूर्ण वैकल्पिक शक्ति–केन्द्र बनाता है।

2. दक्षिण कोरिया के आर्थिक और मानव विकास की प्रक्रिया का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- 1960 से 1980 के दशक के बीच दक्षिण कोरिया ने तेजी से आर्थिक विकास किया।
- इस विकास को 'हान नदी पर चमत्कार' कहा गया।
- 1996 में वह OECD का सदस्य बना।
- 2017 में उसकी अर्थव्यवस्था विश्व की ग्यारहवीं सबसे बड़ी थी।
- सफल भूमि सुधार और ग्रामीण विकास ने मजबूत आधार प्रदान किया।
- व्यापक मानव संसाधन विकास किया गया।
- निर्यात उन्मुखीकरण और न्यायसंगत आर्थिक वृद्धि पर जोर दिया गया।
- सार्वजनिक अवसंरचना, पुनर्वितरण नीतियाँ और प्रभावी संस्थाएँ विकसित हुईं।
- इन कारकों से दक्षिण कोरिया एशिया में सत्ता के महत्त्वपूर्ण केन्द्र के रूप में उभरा।

3. जापान और दक्षिण कोरिया को एशिया के समकालीन शक्ति–केन्द्रों के रूप में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- दोनों देशों ने आर्थिक विकास के माध्यम से एशिया में महत्त्वपूर्ण स्थान बनाया।
- जापान उच्च प्रौद्योगिकी और विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में उभरा।
- दक्षिण कोरिया का तीव्र विकास 'हान नदी पर चमत्कार' कहलाया।
- दोनों देश OECD के सदस्य बने।
- दोनों देशों के वैश्विक ब्रांड आर्थिक और तकनीकी क्षमता दर्शाते हैं।
- जापान संयुक्त राष्ट्र में बड़ा आर्थिक योगदान देता है।
- दक्षिण कोरिया ने भूमि सुधार, मानव संसाधन विकास और निर्यात उन्मुखीकरण से प्रगति की।
- दक्षिण कोरिया का उच्च मानव विकास उसकी संस्थागत क्षमता को दर्शाता है।
- इस प्रकार दोनों देश आर्थिक और तकनीकी आधार पर एशिया के महत्त्वपूर्ण शक्ति–केन्द्र हैं।

मिशन ज्ञान
पढ़ें जहाँ चाहें जब चाहें!

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

3 समकालीन दक्षिण एशिया

क्या है दक्षिण एशिया?

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. 'साफ्टा' संबंधित है– **(Model Paper-2023)**

(अ) सार्क (ब) आसियान
(स) ओपेक (द) यूनेस्को **(अ)**

2. दक्षिण एशिया में सबसे बड़ा देश है– **(Model Paper-2024)**

(अ) बांग्लादेश (ब) नेपाल
(स) श्रीलंका (द) भारत **(द)**

3. साफ्टा कब प्रभावी हुआ? **(RBSE-2025)**

(अ) 2006 (ब) 2007
(स) 2008 (द) 2009 **(अ)**

4. दक्षेस का पहला सम्मेलन कहाँ हुआ? **(RBSE-2026)**

(अ) नई दिल्ली (ब) माले
(स) ढाका (द) इस्लामाबाद **(स)**

5. निम्न में से किस देश को दक्षिण एशिया का अंग नहीं माना गया है?

(अ) भारत (ब) नेपाल
(स) चीन (द) श्रीलंका **(स)**

6. मालदीव एक गणतंत्र कब बना?

(अ) 1948 (ब) 1968
(स) 1978 (द) 1988 **(ब)**

7. भूटान संवैधानिक राजतंत्र कब बना?

(अ) 1998 (ब) 2005
(स) 2008 (द) 2015 **(स)**

रिक्तस्थान –

1. वर्ष 2007 में ..... दक्षेस का सदस्य बना। (Model Paper-2025)

उत्तर : अफ़गानिस्तान

2. 18वाँ दक्षेस सम्मेलन ....., नेपाल में हुआ। (Model Paper-2025)

उत्तर : काठमांडू

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. दक्षेस का पूरा नाम लिखिए। *(RBSE-2025)*

उत्तर : साउथ एशियन एसोशिएशन फॉर रिजनल कोऑपरेशन (SAARC/दक्षेस)।

2. दक्षिण एशिया में सम्मिलित किन्हीं चार देशों के नाम लिखिए। *(RBSE-2026)*

उत्तर : भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश और नेपाल।

3. दक्षिण एशिया के दक्षिण में कौन–सा महासागर है?

उत्तर : हिंद महासागर।

4. मालदीव में कौन–सी शासन प्रणाली अपनाई गई?

उत्तर : अध्यक्षात्मक शासन प्रणाली।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. दक्षिण एशिया की भौगोलिक विशिष्टता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- उत्तर में विशाल हिमालय पर्वत–श्रृंखला स्थित है।
- दक्षिण में हिंद महासागर है।
- पश्चिम में अरब सागर स्थित है।
- पूरब में बंगाल की खाड़ी है।
- यह भौगोलिक स्थिति इसे एक विशिष्ट प्राकृतिक क्षेत्र बनाती है।

2. दक्षिण एशिया को विविधताओं से भरा क्षेत्र क्यों कहा गया है?

उत्तर :
- यह क्षेत्र भाषाई विविधता से भरा है।
- यहाँ व्यापक सामाजिक विविधता है।
- विभिन्न देशों की सांस्कृतिक विशेषताएँ अलग हैं।
- देशों की राजनीतिक प्रणालियाँ भी एक जैसी नहीं हैं।
- इसके बावजूद भू–राजनीतिक धरातल पर यह एक क्षेत्र है।

3. मालदीव में हुए राजनीतिक परिवर्तनों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- मालदीव 1968 तक सल्तनत था।
- 1968 में यह गणतंत्र बना।
- यहाँ अध्यक्षात्मक शासन प्रणाली अपनाई गई।
- जून 2005 में संसद ने बहुदलीय प्रणाली का समर्थन किया।
- 2018 के चुनावों में मालदीवियन डेमोक्रेटिक पार्टी ने जीत हासिल की।

4. दक्षिण एशिया में लोकतंत्र को मिले जन–समर्थन का महत्त्व बताइए।

उत्तर :
- पाँच बड़े देशों में लोकतंत्र को व्यापक जन–समर्थन मिला।
- विभिन्न वर्गों और धर्मों के नागरिक लोकतंत्र को अच्छा मानते हैं।
- लोग प्रतिनिधिमूलक लोकतंत्र की संस्थाओं का समर्थन करते हैं।
- अन्य शासन प्रणालियों की अपेक्षा लोकतंत्र को वरीयता दी गई।
- इस अनुभव ने लोकतंत्र की वैश्विक कल्पना का दायरा बढ़ाया।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. 'दक्षिण एशिया' से क्या आशय है? इसकी प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर :
- सामान्यतः बांग्लादेश, भूटान, भारत, मालदीव, नेपाल, पाकिस्तान और श्रीलंका को दक्षिण एशिया कहा जाता है।
- उत्तर में हिमालय पर्वत–श्रृंखला इसकी प्राकृतिक सीमा बनाती है।
- दक्षिण में हिंद महासागर स्थित है।
- पश्चिम में अरब सागर तथा पूरब में बंगाल की खाड़ी है।
- यह क्षेत्र भाषाई, सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से विविधताओं से भरा है।
- कभी–कभी अफ़गानिस्तान और म्यांमार को भी क्षेत्र की चर्चा में शामिल किया जाता है।
- चीन प्रमुख देश होने के बावजूद दक्षिण एशिया का अंग नहीं माना जाता।

2. दक्षिण एशिया की विभिन्न राजनीतिक व्यवस्थाओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- भारत और श्रीलंका में आजादी के बाद लोकतांत्रिक व्यवस्था कायम रही।
- पाकिस्तान में लोकतांत्रिक और सैनिक शासन दोनों रहे।
- बांग्लादेश में भी लोकतांत्रिक और सैनिक नेतृत्व का अनुभव रहा।
- नेपाल में लंबे समय तक संवैधानिक राजतंत्र रहा।
- 2008 में नेपाल लोकतांत्रिक गणराज्य बना।
- भूटान 2008 में संवैधानिक राजतंत्र और बहुदलीय लोकतंत्र के रूप में उभरा।
- मालदीव गणतंत्र बना और बाद में बहुदलीय प्रणाली अपनाई गई।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. दक्षिण एशिया की भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक प्रकृति का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- दक्षिण एशिया में सात प्रमुख देशों को शामिल किया गया है।
- इसकी प्राकृतिक सीमाएँ हिमालय, हिंद महासागर, अरब सागर और बंगाल की खाड़ी से बनती हैं।
- यह एक विशिष्ट उप–महाद्वीपीय क्षेत्र है।
- यहाँ व्यापक भाषाई विविधता पाई जाती है।
- सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर भी अनेक विविधताएँ मौजूद हैं।
- सभी देशों में एक जैसी राजनीतिक प्रणाली नहीं है।
- कुछ देशों में लोकतंत्र स्थायी रहा, जबकि कुछ में सैनिक शासन और राजतंत्र रहे।
- अनेक समस्याओं के बावजूद जनता में लोकतांत्रिक आकांक्षा मजबूत रही है।
- भू–राजनीतिक धरातल पर विविधताओं के बावजूद दक्षिण एशिया एक क्षेत्र है।

2. दक्षिण एशिया के लोकतांत्रिक अनुभवों का विस्तार से वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- भारत और श्रीलंका ने आजादी के बाद लोकतांत्रिक व्यवस्था बनाए रखी।
- पाकिस्तान में लोकतांत्रिक और सैनिक शासन बारी–बारी से रहे।
- बांग्लादेश में भी सैनिक शासन के बाद प्रतिनिधिमूलक लोकतंत्र स्थापित हुआ।
- नेपाल में संवैधानिक राजतंत्र के विरुद्ध लोकतंत्र–समर्थक आंदोलन हुए।
- 2008 में नेपाल लोकतांत्रिक गणराज्य बना।
- भूटान 2008 में बहुदलीय लोकतंत्र की ओर बढ़ा।
- मालदीव ने बहुदलीय प्रणाली अपनाई।
- दक्षिण एशियाई जनता में लोकतंत्र के प्रति व्यापक समर्थन पाया गया।
- इन अनुभवों ने लोकतंत्र की वैश्विक कल्पना का दायरा विस्तृत किया।

पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

पाकिस्तान में सेना और लोकतंत्र

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. पाकिस्तान में पहले संविधान के बनने के बाद शासन की बागडोर किसने अपने हाथों में ली?

(अ) जनरल अयूब खान (ब) जुल्फिकार अली भुट्टो
(स) नवाज़ शरीफ़ (द) बेनज़ीर भुट्टो **(अ)**

2. जनरल अयूब खान के बाद सैनिक शासन की बागडोर किसने संभाली?

(अ) परवेज मुशर्रफ़ (ब) याहिया खान
(स) जियाउल–हक (द) जियाउर्रहमान **(ब)**

3. जुल्फिकार अली भुट्टो की निर्वाचित सरकार किस अवधि तक कायम रही?

(अ) 1965–1970 (ब) 1971–1977
(स) 1977–1982 (द) 1988–1999 **(ब)**

4. 1977 में जुल्फिकार अली भुट्टो की सरकार किसने गिराई?

(अ) जनरल जियाउल–हक
(ब) जनरल याहिया खान
(स) जनरल अयूब खान
(द) परवेज मुशर्रफ़ **(अ)**

5. 1988 में पाकिस्तान में लोकतांत्रिक सरकार किसके नेतृत्व में बनी?

(अ) नवाज़ शरीफ़ (ब) जुल्फिकार अली भुट्टो
(स) बेनज़ीर भुट्टो (द) परवेज मुशर्रफ़ **(स)**

6. 1999 में पाकिस्तान में सत्ता पर किसने कब्जा किया?

(अ) जियाउल–हक (ब) परवेज मुशर्रफ़
(स) अयूब खान (द) याहिया खान **(ब)**

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. पाकिस्तान में 1971 के बाद निर्वाचित सरकार का नेतृत्व किसने किया?

उत्तर : जुल्फिकार अली भुट्टो।

2. 1982 के बाद जियाउल–हक को किस प्रकार के आंदोलन का सामना करना पड़ा?

उत्तर : लोकतंत्र–समर्थक आंदोलन।

3. बेनज़ीर भुट्टो किस राजनीतिक दल से संबंधित थीं?

उत्तर : पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी।

4. परवेज मुशर्रफ़ ने राष्ट्रपति के रूप में अपना निर्वाचन कब कराया?

उत्तर : 2001 में।

5. पाकिस्तान में लोकतांत्रिक तरीके से चुने गए नेता कब से शासन कर रहे हैं?

उत्तर : 2008 से।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. पाकिस्तान के लोकतंत्रीकरण में कठिनाइयाँ बताइए।

(Model Paper-2024)

उत्तर :
- सेना का राजनीतिक जीवन में मजबूत प्रभाव है।
- धर्मगुरु और भूस्वामी अभिजनों का सामाजिक दबदबा है।
- कई बार निर्वाचित सरकारों को हटाकर सैनिक शासन स्थापित हुआ।
- भारत के साथ तनातनी के कारण सेना–समर्थक समूह मजबूत हुए।
- लोकतांत्रिक शासन के लिए पर्याप्त अंतर्राष्ट्रीय समर्थन नहीं मिला।

2. भारत के साथ तनाव ने पाकिस्तान की घरेलू राजनीति को कैसे प्रभावित किया?

उत्तर :
- भारत–पाकिस्तान के बीच लगातार तनातनी बनी रही।
- इससे पाकिस्तान में सेना–समर्थक समूह मजबूत हुए।
- इन समूहों ने लोकतांत्रिक दलों की आलोचना की।
- सुरक्षा के नाम पर सैनिक शासन को जायज ठहराया गया।
- इससे लोकतांत्रिक व्यवस्था के स्थायी होने में कठिनाई हुई।

3. पाकिस्तान में अंतर्राष्ट्रीय शक्तियों की भूमिका का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- लोकतांत्रिक शासन के लिए विशेष अंतर्राष्ट्रीय समर्थन नहीं मिला।
- अमरीका और अन्य पश्चिमी देशों ने कई अवसरों पर सैनिक शासन को बढ़ावा दिया।
- पश्चिमी देशों को तथाकथित विश्वव्यापी इस्लामी आतंकवाद की चिंता रही।
- पाकिस्तान के परमाण्विक हथियारों को लेकर भी आशंका रही।
- पाकिस्तान को पश्चिमी हितों का रखवाला माना गया।

4. 1988 से 1999 तक पाकिस्तान की राजनीति की मुख्य विशेषताएँ बताइए।

उत्तर :
- 1988 में बेनज़ीर भुट्टो के नेतृत्व में लोकतांत्रिक सरकार बनी।

मिशन ज्ञान
पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

- राजनीति पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी और मुस्लिम लीग की होड़ के आसपास घूमी।
- निर्वाचित लोकतंत्र की अवस्था 1999 तक कायम रही।
- 1999 में सेना ने फिर हस्तक्षेप किया।
- परवेज मुशर्रफ़ ने नवाज़ शरीफ़ को सत्ता से हटा दिया।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. पाकिस्तान में लोकतांत्रिक आकांक्षा के बने रहने के आधारों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- सैनिक शासन के बावजूद लोकतंत्र का जज्बा मजबूत रहा।
- समय–समय पर लोकतंत्र–समर्थक आंदोलन हुए।
- जियाउल–हक को भी लोकतांत्रिक आंदोलन का सामना करना पड़ा।
- 1988 में लोकतांत्रिक सरकार की वापसी हुई।
- पाकिस्तान में अपेक्षाकृत स्वतंत्र प्रेस कायम रहा।
- मानवाधिकार आंदोलन मजबूत रहा।
- 2008 से लोकतांत्रिक तरीके से चुने गए नेताओं का शासन है।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. पाकिस्तान में सेना और लोकतंत्र के संबंधों का विस्तार से वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- पाकिस्तान में पहले संविधान के बाद ही सेना का प्रभाव बढ़ा।
- जनरल अयूब खान ने शासन की बागडोर अपने हाथ में ली।
- उनके बाद याहिया खान ने सैनिक शासन स्थापित किया।
- 1971 के बाद निर्वाचित भुट्टो सरकार बनी।
- 1977 में जियाउल–हक ने फिर सैन्य हस्तक्षेप किया।
- 1988 में बेनज़ीर भुट्टो के नेतृत्व में लोकतंत्र लौटा।
- 1999 में परवेज मुशर्रफ़ ने नवाज़ शरीफ़ को हटा दिया।
- सैनिक शासन के बावजूद लोकतंत्र–समर्थक शक्तियाँ सक्रिय बनी रहीं।
- 2008 से लोकतांत्रिक तरीके से निर्वाचित नेताओं का शासन जारी रहा।

2. पाकिस्तान की राजनीति में 1971 से 2008 तक हुए प्रमुख परिवर्तनों की विवेचना कीजिए।

उत्तर :
- 1971 में पाकिस्तान को बांग्लादेश संकट और भारत से युद्ध का सामना करना पड़ा।
- इसके बाद जुल्फिकार अली भुट्टो की निर्वाचित सरकार बनी।
- 1977 में जियाउल–हक ने भुट्टो सरकार को गिराया।
- 1982 के बाद लोकतंत्र–समर्थक आंदोलन मजबूत हुआ।
- 1988 में बेनज़ीर भुट्टो के नेतृत्व में लोकतंत्र की वापसी हुई।
- 1988–1999 की राजनीति पीपुल्स पार्टी और मुस्लिम लीग की प्रतिस्पर्धा से प्रभावित रही।
- 1999 में परवेज मुशर्रफ़ ने सैनिक हस्तक्षेप किया।
- 2001 में मुशर्रफ़ राष्ट्रपति बने।
- 2008 से पुनः लोकतांत्रिक तरीके से चुने गए नेता शासन करने लगे।

बांग्लादेश में लोकतंत्र

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. बांग्लादेश किस अवधि तक पाकिस्तान का अंग था?

(अ) 1947–1965 (ब) 1947–1971
(स) 1950–1975 (द) 1948–1972 **(ब)**

2. पूर्वी पाकिस्तान के जन–संघर्ष का नेतृत्व किसने किया?

(अ) जियाउर्रहमान (ब) एच.एम. इरशाद
(स) शेख मुजीबुर्रहमान (द) याहिया खान **(स)**

3. 1970 के चुनावों में पूर्वी पाकिस्तान की सारी सीटों पर किस दल ने विजय प्राप्त की?

(अ) मुस्लिम लीग
(ब) अवामी लीग
(स) बांग्लादेश नेशनल पार्टी
(द) मालदीवियन डेमोक्रेटिक पार्टी **(ब)**

4. बांग्लादेश में संसदीय प्रणाली की जगह अध्यक्षात्मक शासन प्रणाली कब स्वीकार की गई?

(अ) 1971 (ब) 1975
(स) 1979 (द) 1991 **(ब)**

5. 1979 के चुनाव में कौन विजयी रहा?

(अ) जियाउर्रहमान (ब) जनरल इरशाद
(स) शेख मुजीबुर्रहमान (द) याहिया खान **(अ)**

6. बांग्लादेश में बहुदलीय चुनावों पर आधारित प्रतिनिधिमूलक लोकतंत्र कब से कायम है?

पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

(अ) 1975 (ब) 1979

(स) 1991 (द) 2001 **(स)**

रिक्तस्थान –

1. बांग्लादेश ने अपने संविधान में स्वयं को धर्मनिरपेक्ष, लोकतांत्रिक तथा ..... देश घोषित किया।

उत्तर : समाजवादी

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. पूर्वी पाकिस्तान के लिए स्वायत्तता की माँग किसने की?

उत्तर : शेख मुजीबुर्रहमान।

2. 1970 के चुनाव में किस पार्टी को बहुमत मिला?

उत्तर : अवामी लीग।

3. जियाउर्रहमान द्वारा स्थापित पार्टी का नाम क्या था?

उत्तर : बांग्लादेश नेशनल पार्टी।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. पूर्वी पाकिस्तान में असंतोष के प्रमुख कारण बताइए।

उत्तर :
- पश्चिमी पाकिस्तान का दबदबा था।
- लोगों पर उर्दू भाषा थोपे जाने का विरोध था।
- बंगाली संस्कृति और भाषा के साथ दुर्व्यवहार का विरोध हुआ।
- प्रशासन में न्यायोचित प्रतिनिधित्व की माँग उठी।
- राजनीतिक सत्ता में समुचित हिस्सेदारी की माँग की गई।

2. 1970 के चुनावों के बाद पूर्वी पाकिस्तान में संकट क्यों बढ़ा?

उत्तर :
- अवामी लीग ने पूर्वी पाकिस्तान की सारी सीटें जीत लीं।
- उसे प्रस्तावित संविधान सभा में बहुमत प्राप्त हुआ।
- पश्चिमी पाकिस्तान के नेताओं का सरकार पर दबदबा था।
- सरकार ने संविधान सभा को आहूत करने से इंकार किया।
- शेख मुजीबुर्रहमान को गिरफ्तार कर लिया गया।

3. बांग्लादेश के निर्माण में भारत की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- पूर्वी पाकिस्तान से बड़ी संख्या में लोग भारत आए।
- भारत के सामने शरणार्थियों को संभालने की समस्या आई।
- भारत ने पूर्वी पाकिस्तान की आजादी की माँग का समर्थन किया।
- भारत ने वित्तीय और सैन्य सहायता प्रदान की।
- 1971 के युद्ध के बाद स्वतंत्र बांग्लादेश का निर्माण हुआ।

4. 1975 में बांग्लादेश की राजनीतिक व्यवस्था में क्या परिवर्तन हुए?

उत्तर :
- शेख मुजीबुर्रहमान ने संविधान में संशोधन कराया।
- संसदीय प्रणाली की जगह अध्यक्षात्मक प्रणाली अपनाई गई।
- अवामी लीग को छोड़कर अन्य पार्टियों को समाप्त कर दिया गया।
- इससे तनाव और संघर्ष की स्थिति बनी।
- अगस्त 1975 में सेना ने शेख मुजीब के विरुद्ध बगावत की।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. बांग्लादेश के स्वतंत्र राष्ट्र बनने की प्रक्रिया का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- 1947 से 1971 तक बांग्लादेश पूर्वी पाकिस्तान के रूप में पाकिस्तान का अंग था।
- पश्चिमी पाकिस्तान के दबदबे तथा उर्दू थोपे जाने का विरोध हुआ।
- शेख मुजीबुर्रहमान ने स्वायत्तता की माँग का नेतृत्व किया।
- 1970 में अवामी लीग को पूर्वी पाकिस्तान की सभी सीटों पर विजय मिली।
- सरकार ने संविधान सभा को बुलाने से इंकार किया और शेख मुजीब को गिरफ्तार किया।
- पाकिस्तानी सेना द्वारा आंदोलन दबाने के कारण बड़ी संख्या में लोग भारत आए।
- 1971 के भारत–पाक युद्ध के बाद स्वतंत्र बांग्लादेश अस्तित्व में आया।

2. स्वतंत्रता के बाद बांग्लादेश की राजनीतिक व्यवस्था में हुए परिवर्तनों का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- संविधान में बांग्लादेश को धर्मनिरपेक्ष, लोकतांत्रिक और समाजवादी देश घोषित किया गया।
- 1975 में संसदीय प्रणाली की जगह अध्यक्षात्मक प्रणाली अपनाई गई।
- अवामी लीग के अतिरिक्त अन्य पार्टियों को समाप्त कर दिया गया।
- 1975 में सैनिक विद्रोह में शेख मुजीब मारे गए।
- जियाउर्रहमान ने बांग्लादेश नेशनल पार्टी बनाई और 1979 में चुनाव जीता।

मिशन ज्ञान
पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

- बाद में एच.एम. इरशाद के नेतृत्व में सैनिक शासन स्थापित हुआ।
- 1991 से बहुदलीय चुनाव आधारित प्रतिनिधिमूलक लोकतंत्र कायम हुआ।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. बांग्लादेश में लोकतंत्र के विकास की ऐतिहासिक प्रक्रिया का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- 1947 से 1971 तक बांग्लादेश पूर्वी पाकिस्तान था।
- पश्चिमी पाकिस्तान के राजनीतिक और भाषाई दबदबे का विरोध हुआ।
- शेख मुजीबुर्रहमान ने स्वायत्तता आंदोलन का नेतृत्व किया।
- 1970 के चुनाव में अवामी लीग ने निर्णायक सफलता प्राप्त की।
- सत्ता हस्तांतरण न होने और सैनिक दमन से संकट बढ़ा।
- 1971 के युद्ध के बाद स्वतंत्र बांग्लादेश बना।
- स्वतंत्रता के बाद लोकतांत्रिक संविधान बनाया गया, पर 1975 में अध्यक्षात्मक व्यवस्था अपनाई गई।
- आगे जियाउर्रहमान और इरशाद के दौर में सैनिक शासन रहा।
- 1991 से बहुदलीय चुनावों पर आधारित प्रतिनिधिमूलक लोकतंत्र कायम हुआ।

2. बांग्लादेश के निर्माण में भाषा, संस्कृति, प्रतिनिधित्व और स्वायत्तता की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- पूर्वी पाकिस्तान की जनता पश्चिमी पाकिस्तान के दबदबे से असंतुष्ट थी।
- लोगों ने उर्दू भाषा थोपे जाने का विरोध किया।
- बंगाली भाषा और संस्कृति के साथ दुर्व्यवहार के विरुद्ध आंदोलन हुआ।
- प्रशासन में न्यायोचित प्रतिनिधित्व की माँग उठी।
- राजनीतिक सत्ता में समुचित हिस्सेदारी की माँग की गई।
- शेख मुजीबुर्रहमान ने पूर्वी क्षेत्र के लिए स्वायत्तता की माँग की।
- अवामी लीग को 1970 के चुनावों में व्यापक समर्थन मिला।
- सत्ता हस्तांतरण से इंकार के कारण संघर्ष तेज हुआ।
- अंततः 1971 में स्वतंत्र बांग्लादेश का निर्माण हुआ।

3. बांग्लादेश में सैनिक हस्तक्षेप और लोकतंत्र–समर्थक आंदोलन का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर :
- 1975 में संवैधानिक परिवर्तन के बाद राजनीतिक तनाव बढ़ा।
- अगस्त 1975 में सेना ने शेख मुजीब के खिलाफ बगावत की।
- जियाउर्रहमान ने नई पार्टी बनाई और 1979 में चुनाव जीता।
- उनकी हत्या के बाद एच.एम. इरशाद ने सैनिक शासन स्थापित किया।
- जनता जल्दी ही लोकतंत्र के समर्थन में संगठित हुई।
- छात्र लोकतंत्र–समर्थक आंदोलन में आगे रहे।
- व्यापक विरोध के कारण इरशाद को राजनीतिक गतिविधियों में छूट देनी पड़ी।
- 1990 में इरशाद ने राष्ट्रपति पद छोड़ दिया।
- 1991 से बहुदलीय प्रतिनिधिमूलक लोकतंत्र कायम है।

नेपाल में राजतंत्र और लोकतंत्र

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. नेपाल में राजतंत्र का अंत कब हुआ? (त्वैम–2024)
(अ) 2007 (ब) 2008
(स) 2009 (द) 2010 **(ब)**

2. नेपाल के राजा ने नए लोकतांत्रिक संविधान की माँग कब मानी?
(अ) 1988 (ब) 1990
(स) 2002 (द) 2006 **(ब)**

3. नेपाल में संसद को किस वर्ष भंग किया गया?
(अ) 1990 (ब) 1996
(स) 2002 (द) 2008 **(स)**

4. नेपाल में देशव्यापी लोकतंत्र–समर्थक प्रदर्शन कब हुए?
(अ) अप्रैल 2002 (ब) अप्रैल 2006
(स) मई 2008 (द) जून 2015 **(ब)**

5. 2006 के लोकतंत्र–समर्थक आंदोलन में निम्न में से कौन शामिल था?
(अ) सात दलों का गठबंधन
(ब) माओवादी
(स) सामाजिक कार्यकर्ता
(द) उपर्युक्त सभी **(द)**

6. नेपाल ने नया संविधान कब अपनाया?
(अ) 2008 (ब) 2010
(स) 2015 (द) 2018 **(स)**

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

7. नेपाल के माओवादी किसके विरुद्ध सशस्त्र विद्रोह करना चाहते थे?

(अ) केवल विदेशी शक्तियों के
(ब) राजा और सत्ताधारी अभिजन के
(स) केवल संसद के
(द) केवल सामाजिक कार्यकर्ताओं के **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. सप्तदलीय गठबंधन का संबंध ..... से है।
(Model Paper-2024, RBSE--2022)

उत्तर : नेपाल

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. नेपाल अतीत में किस प्रकार का राज्य था?

उत्तर : हिन्दू–राज्य।

2. 2006 के आंदोलन के बाद संसद किस राजा ने बहाल की?

उत्तर : राजा ज्ञानेन्द्र।

3. नेपाल का संविधान लिखने के लिए किस संस्था का गठन हुआ?

उत्तर : संविधान–सभा।

4. माओवादी समूहों ने किस मार्ग को छोड़ने की बात मान ली?

उत्तर : सशस्त्र संघर्ष की राह।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. नेपाल में संवैधानिक राजतंत्र के दौरान लोकतंत्र की स्थिति कैसी थी?

उत्तर :
- नेपाल में कई वर्षों तक संवैधानिक राजतंत्र रहा।
- राजनीतिक पार्टियाँ अधिक खुले शासन की माँग करती थीं।
- आम जनता उत्तरदायी शासन चाहती थी।
- राजा ने सेना की सहायता से शासन पर पूरा नियंत्रण कर लिया।
- इससे नेपाल में लोकतंत्र की राह अवरुद्ध हुई।

2. 1990 के लोकतंत्र–समर्थक आंदोलन का क्या परिणाम हुआ?

उत्तर :
- एक मजबूत लोकतंत्र–समर्थक आंदोलन खड़ा हुआ।
- राजा को जनता के दबाव का सामना करना पड़ा।
- राजा ने नए लोकतांत्रिक संविधान की माँग स्वीकार की।
- लोकतांत्रिक सरकारों की स्थापना हुई।
- हालांकि इन सरकारों का कार्यकाल छोटा और समस्याओं से भरा रहा।

3. नेपाल में माओवादी आंदोलन के उदय का राजनीतिक प्रभाव बताइए।

उत्तर :
- 1990 के दशक में माओवादियों का प्रभाव बढ़ा।
- वे राजा और सत्ताधारी अभिजन के विरुद्ध थे।
- उन्होंने सशस्त्र विद्रोह का रास्ता अपनाया।
- राजा की सेना और माओवादी गुरिल्लों के बीच हिंसक लड़ाई हुई।
- राजनीति में त्रिकोणीय संघर्ष की स्थिति बनी।

4. 2002 के बाद नेपाल में लोकतंत्र की स्थिति स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- 2002 में राजा ने संसद भंग कर दी।
- राजा ने सरकार को भी गिरा दिया।
- पहले से सीमित लोकतंत्र लगभग समाप्त हो गया।
- लोकतंत्र–समर्थक शक्तियों में असंतोष बढ़ा।
- आगे 2006 में व्यापक लोकतंत्र–समर्थक आंदोलन हुआ।

5. अप्रैल 2006 के लोकतंत्र–समर्थक आंदोलन की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर :
- पूरे देश में लोकतंत्र–समर्थक प्रदर्शन हुए।
- सात दलों के गठबंधन ने आंदोलन में भाग लिया।
- माओवादी तथा सामाजिक कार्यकर्ता भी शामिल हुए।
- आंदोलन मोटे तौर पर अहिंसक रहा।
- राजा ज्ञानेन्द्र को संसद बहाल करनी पड़ी।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. नेपाल में राजा, माओवादी और लोकतंत्र–समर्थकों के त्रिकोणीय संघर्ष को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- 1990 के दशक में माओवादियों का प्रभाव बढ़ा।
- माओवादी राजा और सत्ताधारी अभिजन के विरुद्ध सशस्त्र विद्रोह चाहते थे।
- राजा की सेना और माओवादी गुरिल्लों के बीच हिंसक संघर्ष हुआ।
- दूसरी ओर राजनीतिक दल लोकतंत्र की बहाली चाहते थे।
- कुछ समय तक तीनों पक्षों के बीच त्रिकोणीय संघर्ष रहा।
- 2006 में लोकतंत्र–समर्थक शक्तियाँ संयुक्त आंदोलन में सामने आईं।
- आगे माओवादियों ने सशस्त्र संघर्ष छोड़ने की बात स्वीकार की।

2. 2006 के बाद नेपाल में लोकतांत्रिक परिवर्तन का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- अप्रैल 2006 में देशव्यापी प्रदर्शन हुए।
- सात दलों का गठबंधन, माओवादी और सामाजिक कार्यकर्ता एकजुट हुए।
- राजा ज्ञानेन्द्र ने संसद को बहाल किया।
- संविधान लिखने के लिए संविधान–सभा बनाई गई।

- माओवादी सशस्त्र संघर्ष छोड़ने के लिए सहमत हुए।
- 2008 में राजतंत्र समाप्त कर लोकतांत्रिक गणराज्य स्थापित किया गया।
- 2015 में नेपाल ने नया संविधान अपनाया।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. नेपाल में लोकतंत्र की स्थापना के लिए हुए संघर्ष का विस्तृत वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- नेपाल अतीत में हिन्दू–राज्य तथा बाद में संवैधानिक राजतंत्र रहा।
- राजनीतिक दल और जनता खुले तथा उत्तरदायी शासन की माँग करते रहे।
- राजा ने सेना की सहायता से सत्ता पर पूरा नियंत्रण स्थापित किया।
- 1990 में लोकतंत्र–समर्थक आंदोलन के दबाव में नया लोकतांत्रिक संविधान स्वीकार हुआ।
- लोकतांत्रिक सरकारें कमजोर और अल्पकालिक रहीं।
- माओवादी विद्रोह के कारण राजनीतिक संघर्ष और बढ़ा।
- 2002 में संसद भंग होने से लोकतंत्र समाप्तप्राय हो गया।
- 2006 में व्यापक अहिंसक आंदोलन के बाद संसद बहाल हुई।
- 2008 में राजतंत्र समाप्त हुआ और नेपाल लोकतांत्रिक गणराज्य बना।

2. नेपाल के लोकतंत्रीकरण में माओवादियों, राजनीतिक दलों और जनता की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- राजनीतिक दल लंबे समय से अधिक खुले शासन की माँग करते रहे।
- आम जनता उत्तरदायी शासन चाहती थी।
- माओवादी राजा और सत्ताधारी अभिजन के खिलाफ सक्रिय हुए।
- माओवादी आंदोलन ने राजतंत्र के विरुद्ध राजनीतिक दबाव बढ़ाया।
- सात दलों के गठबंधन ने लोकतंत्र–समर्थक शक्तियों को संगठित किया।
- सामाजिक कार्यकर्ता भी 2006 के आंदोलन में शामिल हुए।
- देशव्यापी विरोध के कारण राजा को संसद बहाल करनी पड़ी।
- माओवादियों ने सशस्त्र संघर्ष छोड़ने की बात मानी।
- इन प्रक्रियाओं के परिणामस्वरूप लोकतांत्रिक गणराज्य स्थापित हुआ।

3. नेपाल में 1990 से 2015 तक हुए प्रमुख राजनीतिक परिवर्तनों का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर :
- 1990 में राजा ने नए लोकतांत्रिक संविधान की माँग स्वीकार की।
- लोकतांत्रिक सरकारों का कार्यकाल छोटा और समस्याओं से भरा रहा।
- 1990 के दशक में माओवादी प्रभाव बढ़ा।
- राजा की सेना और माओवादियों के बीच संघर्ष हुआ।
- 2002 में संसद भंग कर दी गई।
- 2006 में लोकतंत्र–समर्थक आंदोलन के बाद संसद बहाल हुई।
- संविधान–सभा का गठन किया गया।
- 2008 में राजतंत्र समाप्त हुआ और लोकतांत्रिक गणराज्य बना।
- 2015 में नेपाल ने नया संविधान अपनाया।

श्रीलंका में जातीय संघर्ष और लोकतंत्र

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. श्रीलंका को आजादी कब मिली?
(अ) 1947 (ब) 1948
(स) 1950 (द) 1952 **(ब)**

2. श्रीलंका को पहले किस नाम से जाना जाता था?
(अ) सिलोन (ब) ईलम
(स) मलाया (द) सावर **(अ)**

3. LTTE ने श्रीलंकाई सेना के साथ सशस्त्र संघर्ष कब से किया?
(अ) 1971 (ब) 1975
(स) 1983 (द) 1989 **(स)**

4. भारत श्रीलंका के तमिल मसले में प्रत्यक्ष रूप से कब शामिल हुआ?
(अ) 1983 (ब) 1987
(स) 1989 (द) 1991 **(ब)**

5. भारत ने अपनी शांति सेना कब वापस बुला ली?
(अ) 1987 (ब) 1988
(स) 1989 (द) 1990 **(स)**

6. LTTE को कब समाप्त कर दिया गया?
(अ) 2005 (ब) 2007
(स) 2008 (द) 2009 **(द)**

रिक्तस्थान –

1. श्रीलंका की राजनीति में ..... समुदाय का प्रभाव रहा है। (RBSE-2023)

उत्तर : सिंहली

2. 1983 के बाद उग्र तमिल संगठन ..... ने सशस्त्र संघर्ष किया।

उत्तर : लिट्टे

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. LTTE का पूरा नाम लिखिए। *(Model Paper-2024)*

उत्तर : लिबरेशन टाइगर्स ऑफ तमिल ईलम।

2. किसी समय श्रीलंका के किस हिस्से पर लिट्टे का नियंत्रण था?

उत्तर : उत्तर–पूर्वी हिस्से पर।

3. श्रीलंका संघर्ष में मध्यस्थता करने वाले दो देश कौन थे?

उत्तर : नार्वे और आइसलैंड।

4. 1987 के हस्तक्षेप के बाद भारत ने कौन–सी नीति अपनाई?

उत्तर : असंलग्नता की नीति।

5. दक्षिण एशिया में सबसे पहले अपनी अर्थव्यवस्था का उदारीकरण किस देश ने किया?

उत्तर : श्रीलंका।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. श्रीलंका में LTTE की प्रमुख माँग क्या थी? (RBSE-2022)

उत्तर :
- लिट्टे श्रीलंका के तमिलों के लिए अलग देश चाहता था।
- इस अलग राष्ट्र को 'तमिल ईलम' कहा गया।
- माँग श्रीलंका के एक क्षेत्र को अलग राष्ट्र बनाने की थी।
- लिट्टे ने इस माँग के लिए श्रीलंकाई सेना से सशस्त्र संघर्ष किया।

2. श्रीलंका में उग्र तमिल राष्ट्रवाद के उदय के कारण बताइए।

उत्तर :
- राजनीति पर बहुसंख्यक सिंहली समुदाय का दबदबा था।
- सिंहली राष्ट्रवादी तमिलों को रियायत देने के विरोधी थे।
- उनका मानना था कि श्रीलंका केवल सिंहली लोगों का है।
- तमिलों के प्रति उपेक्षा भरा व्यवहार हुआ।
- इसके परिणामस्वरूप उग्र तमिल राष्ट्रवाद की आवाज मजबूत हुई।

3. भारतीय शांति सेना का श्रीलंका में अनुभव कैसा रहा?

उत्तर :
- शांति सेना को तमिल समस्या के समाधान के लिए भेजा गया।
- भारतीय सेना लिट्टे के साथ संघर्ष में फँस गई।
- श्रीलंका की जनता ने भारतीय सेना की उपस्थिति पसंद नहीं की।
- इसे अंदरूनी मामलों में दखलंदाजी माना गया।
- 1989 में भारत ने लक्ष्य हासिल किए बिना शांति सेना वापस बुला ली।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. श्रीलंका में जातीय संघर्ष पर टिप्पणी लिखिए। *(RBSE-2024)*

उत्तर :
- श्रीलंका की राजनीति में बहुसंख्यक सिंहली समुदाय का दबदबा रहा।
- तमिल आबादी के प्रति उपेक्षापूर्ण व्यवहार से असंतोष बढ़ा।
- उग्र तमिल राष्ट्रवाद ने अलग 'तमिल ईलम' की माँग की।
- 1983 के बाद लिट्टे और श्रीलंकाई सेना के बीच सशस्त्र संघर्ष हुआ।
- 1987 में भारत तमिल मसले में प्रत्यक्ष रूप से शामिल हुआ।
- भारतीय शांति सेना बाद में लिट्टे के साथ संघर्ष में फँस गई।
- 2009 में लिट्टे के समाप्त होने के साथ सशस्त्र संघर्ष खत्म हुआ।

2. श्रीलंका के संघर्ष में अंतर्राष्ट्रीय मध्यस्थता और संघर्ष की समाप्ति स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- श्रीलंका संकट का चरित्र हिंसक था।
- संघर्ष श्रीलंकाई सेना और लिट्टे के बीच चल रहा था।
- नार्वे तथा आइसलैंड ने अंतर्राष्ट्रीय मध्यस्थ की भूमिका निभाई।
- दोनों पक्षों को वार्ता के लिए राजी करने की कोशिश हुई।
- लंबे समय तक संघर्ष जारी रहा।
- अंततः सशस्त्र संघर्ष समाप्त हुआ।
- 2009 में लिट्टे को खत्म कर दिया गया।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. श्रीलंका के जातीय संघर्ष के संदर्भ में भारत की नीति का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर :
- भारत की तमिल जनता ने श्रीलंकाई तमिलों के हितों की रक्षा के लिए दबाव बनाया।
- भारत ने समय–समय पर श्रीलंका सरकार से बातचीत की।
- 1987 में भारत श्रीलंका के तमिल मसले में प्रत्यक्ष रूप से शामिल हुआ।
- भारत–श्रीलंका समझौते के बाद भारतीय सेना भेजी गई।
- भारतीय सेना का उद्देश्य सरकार और तमिलों के संबंध सामान्य करना था।
- सेना बाद में लिट्टे से संघर्ष में उलझ गई।
- श्रीलंका की जनता ने इसे अंदरूनी मामलों में हस्तक्षेप माना।
- 1989 में शांति सेना वापस बुला ली गई।
- इसके बाद भारत ने श्रीलंका के अंदरूनी मामलों में असंलग्नता की नीति अपनाई।

पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

2. श्रीलंका में जातीय संघर्ष, लोकतंत्र और आर्थिक विकास के सह–अस्तित्व की व्याख्या कीजिए।

उत्तर :
- श्रीलंका में आजादी के बाद से लोकतंत्र कायम रहा।
- देश को लंबे जातीय संघर्ष का सामना करना पड़ा।
- संघर्ष का स्वरूप सशस्त्र और हिंसक रहा।
- इसके बावजूद लोकतांत्रिक राजव्यवस्था बनी रही।
- श्रीलंका ने अच्छी आर्थिक वृद्धि हासिल की।
- जनसंख्या वृद्धि–दर पर सफल नियंत्रण किया।
- दक्षिण एशिया में सबसे पहले अर्थव्यवस्था का उदारीकरण किया।
- गृहयुद्ध के बावजूद प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद ऊँचा रहा।
- इस प्रकार आंतरिक संघर्ष के बावजूद लोकतंत्र और विकास जारी रहे।

भारत–पाकिस्तान संघर्ष एवं भारत और उसके अन्य पड़ोसी देश

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. ISI किस देश की खुफिया एजेंसी है? *(Model Paper-2026)*

(अ) नेपाल (ब) भूटान
(स) पाकिस्तान (द) अफगानिस्तान **(स)**

2. भारत और पाकिस्तान ने सिंधु–जल संधि कब की?

(अ) 1948 (ब) 1960
(स) 1965 (द) 1972 **(ब)**

3. भारत ने 1998 में परमाणु परीक्षण कहाँ किए?

(अ) चगाई (ब) पोखरण
(स) सरक्रीक (द) सियाचिन **(ब)**

4. भारत और बांग्लादेश ने परिक्षेत्रों का आदान–प्रदान कब किया?

(अ) 2005 (ब) 2010
(स) 2014 (द) 2015 **(द)**

5. भारत और श्रीलंका ने मुक्त व्यापार संधि पर कब हस्ताक्षर किए?

(अ) 1987 (ब) 1993
(स) 1998 (द) 2004 **(स)**

6. 1988 में मालदीव की सहायता के लिए भारत ने किसका प्रयोग किया?

(अ) केवल स्थल सेना (ब) वायुसेना और नौसेना
(स) केवल नौसेना (द) केवल पुलिस **(ब)**

7. पाकिस्तान की रणनीतिक साझेदारी किस देश के साथ बताई गई है?

(अ) नेपाल (ब) चीन
(स) भूटान (द) बांग्लादेश **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. 1998 में पाकिस्तान ने ..... पहाड़ी पर परमाणु परीक्षण किया। *(Model Paper-2026)*

उत्तर : चगाई

2. जून–जुलाई 1999 में भारत और पाकिस्तान के बीच ..... युद्ध हुआ।

उत्तर : करगिल

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. भारत–बांग्लादेश ने गंगा नदी के पानी में हिस्सेदारी के लिए कौन–सी संधि की? *(RBSE-2022)*

उत्तर : फरक्का संधि।

2. भारत के नागरिक किस पड़ोसी देश में बिना पासपोर्ट और वीजा के जा सकते हैं? *(RBSE-2025)*

उत्तर : नेपाल।

3. शिमला समझौता कब और किनके बीच हुआ? *(RBSE-2026)*

उत्तर : जुलाई 1972 में भारत और पाकिस्तान के बीच।

4. भारत–पाकिस्तान के बीच कश्मीर के दोनों हिस्सों के बीच कौन–सी रेखा है?

उत्तर : नियंत्रण–सीमा रेखा।

5. बांग्लादेश 2014 से भारत की किस नीति का हिस्सा है?

उत्तर : एक्ट ईस्ट नीति।

6. भारत भूटान में किस प्रकार की बड़ी परियोजनाओं में सहायता करता है?

उत्तर : पनबिजली परियोजनाओं में।

7. 1988 में भारत ने किस पड़ोसी द्वीपीय देश की सैन्य सहायता की?

उत्तर : मालदीव।

8. दक्षिण एशिया की राजनीति में दो प्रमुख बाहरी शक्तियाँ कौन–सी हैं?

उत्तर : चीन और संयुक्त राज्य अमरीका।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. भारत–पाकिस्तान के बीच विवाद के दो मुद्दे बताइए। *(Model Paper-2023)*

उत्तर :
- कश्मीर का मसला दोनों देशों के बीच प्रमुख विवाद है।
- सियाचिन ग्लेशियर पर नियंत्रण को लेकर तनातनी रही है।
- नदी–जल के इस्तेमाल और बँटवारे को लेकर मतभेद रहे हैं।
- सरक्रीक की सीमारेखा को लेकर भी विवाद है।

2. भारत–भूटान सहयोग के दो क्षेत्र बताइए। *(Model Paper-2023)*

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

उत्तर :
- भारत भूटान की पनबिजली परियोजनाओं में सहयोग करता है।
- भूटान के विकास कार्यों के लिए भारत से बड़ा अनुदान मिलता है।
- भूटान ने पूर्वोत्तर भारत के उग्रवादियों को अपने क्षेत्र से खदेड़ा।
- इस कदम से भारत की सुरक्षा को सहायता मिली।

3. 'भारत और नेपाल' के बीच सम्बन्धों पर टिप्पणी लिखिए। *(Model Paper-2025, RBSE-2026)*

उत्तर :
- दोनों देशों के संबंध मधुर और विशेष हैं।
- नागरिक बिना पासपोर्ट और वीजा के एक–दूसरे के देश में आ–जा सकते हैं।
- व्यापार तथा वैज्ञानिक सहयोग में दोनों साथ हैं।
- बिजली उत्पादन और जल प्रबंधन में सहयोग है।
- मतभेदों के बावजूद संबंध मजबूत और शांतिपूर्ण हैं।

4. भारत–पाकिस्तान के बीच तनाव के दो कारण बताइए। *(RBSE-2022)*

उत्तर :
- कश्मीर मसला दोनों देशों के बीच प्रमुख तनाव का कारण है।
- सियाचिन ग्लेशियर और सामरिक मुद्दों पर मतभेद हैं।
- नदी–जल तथा सरक्रीक की सीमारेखा पर विवाद हैं।
- दोनों देशों के बीच हथियारों की होड़ ने भी तनाव बढ़ाया है।

5. 'भारत व पाकिस्तान के मध्य विवाद का मुख्य कारण पाक द्वारा आतंकवाद को प्रोत्साहन देना है।' इसके कोई दो उदाहरण दीजिए। *(RBSE-2023)*

उत्तर :
- भारत सरकार का आरोप है कि पाकिस्तान कश्मीरी उग्रवादियों को हथियार देता है।
- उन पर प्रशिक्षण और धन उपलब्ध कराने का आरोप है।
- पाकिस्तान पर भारत में हमलों के लिए उग्रवादियों को सुरक्षा देने का आरोप है।
- आईएसआई पर बांग्लादेश और नेपाल के गुप्त ठिकानों से भारत–विरोधी अभियानों में संलग्न होने का आरोप है।

6. भारत–मालदीव संबंधों पर टिप्पणी लिखिए। *(RBSE-2025)*

उत्तर :
- भारत–मालदीव संबंध सौहार्दपूर्ण और गर्मजोशी से भरे हैं।
- 1988 में मालदीव ने भारत से सैन्य सहायता माँगी।
- भारतीय वायुसेना और नौसेना ने तुरंत कार्रवाई की।
- भारत ने मालदीव के आर्थिक विकास में सहायता की।
- पर्यटन और मत्स्य उद्योग में भी भारत ने सहयोग दिया।

7. भारत–बांग्लादेश के बीच विवाद के मुद्दे बताइए। *(RBSE-2026)*

उत्तर :
- गंगा और ब्रह्मपुत्र के नदी–जल की हिस्सेदारी पर मतभेद हैं।
- भारत में अवैध आप्रवास को लेकर विवाद है।
- भारत–विरोधी जमातों को समर्थन देने के आरोप हैं।
- व्यापार और प्राकृतिक गैस से संबंधित मतभेद हैं।
- दोनों पक्ष एक–दूसरे पर विभिन्न आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप के आरोप लगाते रहे हैं।

8. सिंधु–जल संधि का भारत–पाक संबंधों में क्या महत्त्व है?

उत्तर :
- सिंधु नदी के उपयोग को लेकर दोनों देशों में विवाद थे।
- 1960 में विश्व बैंक की मदद से संधि हुई।
- भारत और पाकिस्तान दोनों ने इस पर हस्ताक्षर किए।
- कई सैन्य संघर्षों के बावजूद संधि कायम रही।
- हालांकि इसकी व्याख्या और जल उपयोग पर छोटे विवाद बने रहे।

9. भारत–बांग्लादेश के बीच सहयोग के प्रमुख क्षेत्र बताइए।

उत्तर :
- दोनों देशों के आर्थिक संबंध बेहतर हुए हैं।
- बांग्लादेश भारत की लुक ईस्ट और एक्ट ईस्ट नीति का हिस्सा है।
- आपदा–प्रबंधन में दोनों ने सहयोग किया।
- पर्यावरण के मसलों पर निरंतर सहयोग हुआ।
- 2015 में दोनों ने कुछ परिक्षेत्रों का आदान–प्रदान किया।

10. भारत–श्रीलंका संबंधों की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर :
- तमिल मुद्दे को लेकर दोनों देशों में तनाव रहा।
- 1987 के बाद भारत ने श्रीलंका के अंदरूनी मामलों में असंलग्नता की नीति अपनाई।
- भारत–श्रीलंका ने मुक्त व्यापार समझौता किया।
- इस समझौते से संबंध मजबूत हुए।
- सुनामी के बाद भारतीय सहायता ने दोनों देशों को और करीब लाया।

11. दक्षिण एशिया के छोटे देश भारत के प्रति आशंकित क्यों रहते हैं?

उत्तर :
- भारत का आकार बड़ा और वह अपेक्षाकृत शक्तिशाली है।
- छोटे देशों को भारत के इरादों पर शक होता है।
- उन्हें लगता है कि भारत क्षेत्र में अपना दबदबा कायम करना चाहता है।
- कुछ देश भारत पर अंदरूनी मामलों में हस्तक्षेप का आरोप लगाते हैं।
- दूसरी ओर भारत को लगता है कि पड़ोसी उसका बेजा फायदा उठाते हैं।

12. दक्षिण एशिया की राजनीति पर बाहरी शक्तियों के प्रभाव को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- चीन और संयुक्त राज्य अमरीका की भूमिका महत्त्वपूर्ण है।
- पाकिस्तान के साथ चीन की रणनीतिक साझेदारी है।
- भारत और चीन के आर्थिक संबंध 1991 के बाद मजबूत हुए।
- शीतयुद्ध के बाद दक्षिण एशिया में अमरीकी प्रभाव बढ़ा।
- अमरीका ने भारत और पाकिस्तान दोनों के साथ संबंध बेहतर किए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. भारत–पाकिस्तान के मध्य तीन प्रमुख विवाद लिखिए। *(RBSE-2024)*

उत्तर :
- सबसे प्रमुख विवाद कश्मीर का मसला है।
- सियाचिन ग्लेशियर पर नियंत्रण को लेकर सामरिक मतभेद हैं।
- दोनों देशों के बीच हथियारों की होड़ और परमाणु प्रतिस्पर्धा रही।
- एक–दूसरे पर हिंसा और उग्रवादी गतिविधियों को समर्थन देने के आरोप हैं।
- सिंधु नदी के जल के उपयोग और बँटवारे पर मतभेद रहे।
- सरक्रीक की सीमारेखा को लेकर विवाद है।
- विभिन्न मुद्दों को लेकर दोनों देशों के बीच वार्ताएँ चलती रही हैं।

2. दक्षिण एशिया में शांति और सहयोग के संदर्भ में भारत–पाक संबंधों का महत्त्व बताइए। *(Model Paper-2026)*

उत्तर :
- भारत–पाक संबंध दक्षिण एशिया की शांति से गहराई से जुड़े हैं।
- दोनों देशों के बीच तनाव क्षेत्रीय सहयोग को प्रभावित करता है।
- युद्ध के जोखिम कम करने के लिए विश्वास बहाली के उपाय किए गए।
- दोनों देशों के नेताओं ने समस्याओं के समाधान के लिए वार्ताएँ कीं।
- लोगों के बीच दोस्ती बढ़ाने के प्रयास भी हुए।
- व्यापार और वीजा संबंधी सुविधाएँ बढ़ाने के प्रयास किए गए।
- बेहतर संबंध दक्षिण एशिया में सहयोग की संभावनाएँ मजबूत कर सकते हैं।

3. भारत–बांग्लादेश संबंधों में सहयोग और असहमति दोनों पक्षों का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- नदी–जल की हिस्सेदारी को लेकर दोनों देशों में मतभेद हैं।
- अवैध आप्रवास और सुरक्षा से संबंधित मुद्दे भी विवाद का कारण हैं।
- प्राकृतिक गैस और व्यापार से संबंधित आरोप–प्रत्यारोप रहे हैं।
- इसके बावजूद दोनों देशों के आर्थिक संबंध बेहतर हुए हैं।
- बांग्लादेश भारत की एक्ट ईस्ट नीति का हिस्सा है।
- आपदा–प्रबंधन और पर्यावरण के क्षेत्र में सहयोग हुआ है।
- 2015 में परिक्षेत्रों के आदान–प्रदान से सहयोग को बल मिला।

4. भारत के नेपाल, भूटान और मालदीव के साथ संबंधों का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- नेपाल के साथ भारत के संबंध विशेष और सामान्यतः शांतिपूर्ण हैं।
- भारत–नेपाल के नागरिक बिना पासपोर्ट और वीजा के आ–जा सकते हैं।
- व्यापार, बिजली और जल प्रबंधन में भारत–नेपाल सहयोग है।
- भूटान के साथ भारत के बहुत अच्छे संबंध हैं।
- भारत भूटान की पनबिजली और विकास परियोजनाओं में सहायता करता है।
- मालदीव के साथ भारत के संबंध सौहार्दपूर्ण हैं।
- भारत ने मालदीव को सुरक्षा, आर्थिक विकास, पर्यटन और मत्स्य उद्योग में सहायता दी।

5. भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव कम करने के प्रयासों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- दोनों देशों ने युद्ध का जोखिम कम करने के लिए विश्वास बहाली के उपाय किए।
- सामाजिक कार्यकर्ताओं ने दोनों देशों के लोगों के बीच दोस्ती बढ़ाने का प्रयास किया।
- महत्त्वपूर्ण हस्तियाँ भी शांति प्रयासों से जुड़ीं।
- दोनों देशों के नेता सम्मेलनों में मिलते रहे।
- समस्याओं को बातचीत से समझने और सुलझाने की कोशिश हुई।
- दोनों देशों के बीच व्यापार बढ़ा।
- एक समय वीजा अधिक आसानी से दिए जाने लगे।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. भारत और उसके अन्य दक्षिण एशियाई पड़ोसी देशों के संबंधों का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर :
- बांग्लादेश के साथ नदी–जल, आप्रवास और व्यापार पर मतभेद हैं।

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

- भारत–बांग्लादेश में आर्थिक, पर्यावरण और आपदा–प्रबंधन सहयोग भी है।
- नेपाल के साथ विशेष संबंध तथा लोगों के मुक्त आवागमन की व्यवस्था है।
- भारत–नेपाल में व्यापार, जल और बिजली सहयोग के साथ कुछ राजनीतिक मतभेद भी हैं।
- भूटान के साथ संबंध बहुत अच्छे हैं और पनबिजली क्षेत्र में सहयोग है।
- मालदीव के साथ भारत के संबंध सौहार्दपूर्ण हैं।
- श्रीलंका के साथ तमिल मुद्दे पर तनाव रहा, पर मुक्त व्यापार से संबंध मजबूत हुए।
- छोटे पड़ोसी भारत के आकार और शक्ति के कारण कभी–कभी उसके इरादों पर संदेह करते हैं।
- इसके बावजूद विभिन्न क्षेत्रों में पारस्परिक सहयोग निरंतर जारी है।

2. दक्षिण एशिया में शांति, सहयोग और बाहरी शक्तियों की भूमिका का विवेचन कीजिए।

उत्तर :
- अनेक संघर्षों के बावजूद दक्षिण एशियाई देश सहयोग का महत्त्व पहचानते हैं।
- दक्षेस क्षेत्रीय सहयोग की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है।
- साफ्टा का उद्देश्य क्षेत्रीय व्यापार को बढ़ावा देना है।
- भारत–पाक तनाव क्षेत्रीय सहयोग की गति को प्रभावित करता है।
- दोनों देशों ने विश्वास बहाली और वार्ता के प्रयास किए हैं।
- चीन दक्षिण एशिया की राजनीति में एक महत्वपूर्ण बाहरी शक्ति है।
- पाकिस्तान के साथ चीन की रणनीतिक साझेदारी है।
- शीतयुद्ध के बाद संयुक्त राज्य अमरीका की क्षेत्रीय भूमिका बढ़ी है।
- दक्षिण एशिया का भविष्य अंततः यहाँ की सरकारों और लोगों के आपसी सहयोग पर निर्भर बताया गया है।



4 अंतर्राष्ट्रीय संगठन

हमें अंतर्राष्ट्रीय संगठन क्यों चाहिए?

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. अंतर्राष्ट्रीय संगठनों का निर्माण मुख्यतः कौन करता है?
(अ) केवल महाशक्तियाँ
(ब) विभिन्न राज्य
(स) केवल संयुक्त राष्ट्रसंघ
(द) केवल विकासशील देश **(ब)**

2. अंतर्राष्ट्रीय संगठन मुख्य रूप से सदस्य देशों की किस कार्य में सहायता करते हैं?
(अ) युद्ध को बढ़ाने में
(ब) समस्याओं के शांतिपूर्ण समाधान में
(स) दूसरे देशों पर नियंत्रण करने में
(द) सैन्य शक्ति बढ़ाने में **(ब)**

3. 'ग्लोबल वार्मिंग' के सबसे प्रभावकारी समाधान के लिए किसकी आवश्यकता बताई गई है?
(अ) प्रत्येक देश का अलग–अलग कार्य करना
(ब) केवल छोटे देशों का सहयोग
(स) विश्व के बड़े औद्योगिक देशों का सहयोग
(द) केवल संयुक्त राष्ट्रसंघ का कार्य करना **(स)**

4. अंतर्राष्ट्रीय संगठन अपने सदस्यों के लिए क्या उपलब्ध करा सकता है?
(अ) सैन्य शासन
(ब) नियमों और नौकरशाही की रूपरेखा
(स) एक–दलीय व्यवस्था
(द) राष्ट्रीय संविधान **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. कुछ रोगों को समाप्त करने के लिए विश्व के प्रत्येक देश को अपनी आबादी को ....., लगाने में सहयोग करना होता है।

उत्तर : टीके

2. वातावरण में ....., गैसों के बढ़ने से तापमान बढ़ रहा है।

उत्तर : ग्रीनहाउस

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. अंतर्राष्ट्रीय संगठन सहयोग के लिए किस प्रकार की जानकारी उपलब्ध करा सकते हैं?

उत्तर : सहयोग करने के उपाय और सूचनाएँ।

2. अंतर्राष्ट्रीय संगठन किस प्रकार का शक्तिशाली निकाय नहीं होता?

उत्तर : अपने सदस्यों पर धौंस चलाने वाला राज्य।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. विश्व व्यापार संगठन पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए। *(Model Paper-2024)*

उत्तर :
- विश्व व्यापार संगठन (WTO) की स्थापना 1995 में हुई।
- यह वैश्विक व्यापार के नियमों को तय करता है।
- यह जेनरल एग्रीमेंट ऑन ट्रेड एंड टैरिफ का उत्तराधिकारी है।
- इसके फैसले सभी सदस्यों की सहमति से किए जाते हैं।
- विकासशील देशों की शिकायत है कि इसकी कार्यविधि पूरी तरह पारदर्शी नहीं है।

2. एमनेस्टी इंटरनेशनल क्या है? *(Model Paper-2025)*

उत्तर :
- एमनेस्टी इंटरनेशनल एक अंतर्राष्ट्रीय स्वयंसेवी संगठन है।
- यह विश्वभर में मानवाधिकारों की रक्षा के लिए अभियान चलाता है।
- यह मानवाधिकारों से संबंधित रिपोर्ट तैयार और प्रकाशित करता है।
- इसकी रिपोर्टें मानवाधिकार संबंधी अनुसंधान और तरफदारी में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

3. अंतर्राष्ट्रीय संगठन समस्याओं के शांतिपूर्ण समाधान में किस प्रकार सहायक होते हैं?

उत्तर :
- वे देशों को बातचीत का मंच उपलब्ध कराते हैं।
- देशों के विभेद और झगड़े बिना युद्ध के हल करने में मदद करते हैं।
- सदस्य देश मिलकर शांतिपूर्ण समाधान खोज सकते हैं।
- वे सदस्य देशों के बीच सहयोग को बढ़ावा देते हैं।

मिशन ज्ञान
जहाँ चाह, वहाँ राह!

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

- उनके माध्यम से वैर–विरोध को युद्ध में बदलने से बचाया जा सकता है।

4. अंतर्राष्ट्रीय सहयोग करना कठिन क्यों हो सकता है?

उत्तर :
- देशों में सहयोग की आवश्यकता पर सहमति हो सकती है, लेकिन उसके तरीके पर मतभेद हो सकते हैं।
- सहयोग की लागत का भार कौन उठाए, यह विवाद का विषय हो सकता है।
- सहयोग से मिलने वाले लाभ का न्यायोचित बँटवारा कठिन हो सकता है।
- देश समझौते के बाद उसकी शर्तों का पालन करेंगे या नहीं, यह चिंता रहती है।
- मोल–तोल के बाद कोई देश अपने निर्णय से मुकरे नहीं, यह सुनिश्चित करना आवश्यक होता है।

5. वैश्विक समस्याओं के समाधान में अंतर्राष्ट्रीय संगठनों का क्या महत्त्व है?

उत्तर :
- अनेक समस्याएँ ऐसी हैं जिन्हें देश साथ मिलकर ही हल कर सकते हैं।
- रोगों को समाप्त करने के लिए वैश्विक स्तर पर टीकाकरण में सहयोग जरूरी है।
- ग्लोबल वार्मिंग जैसी समस्या का समाधान सामूहिक प्रयास से संभव है।
- वे साझा समस्याओं पर देशों के बीच समन्वय स्थापित करते हैं।

6. अंतर्राष्ट्रीय संगठन की प्रकृति की मुख्य विशेषताएँ बताइए।

उत्तर :
- अंतर्राष्ट्रीय संगठन स्वयं कोई शक्तिशाली राज्य नहीं होता।
- उसका निर्माण विभिन्न राज्य मिलकर करते हैं।
- वह सदस्य देशों के मामलों के प्रति जवाबदेह होता है।
- ऐसे संगठन राज्यों की सहमति से स्थापित होते हैं।
- स्थापना के बाद वे सदस्य देशों को समस्याओं के शांतिपूर्ण समाधान में सहायता देते हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. विश्व के राष्ट्रों को अन्तर्राष्ट्रीय संगठन क्यों चाहिए? स्पष्ट कीजिए। *(Model Paper-2025)*

उत्तर :
- अंतर्राष्ट्रीय संगठन देशों के बीच विवादों का शांतिपूर्ण समाधान खोजने में सहायता करते हैं।
- वे वैर–विरोध को युद्ध में बदलने से रोकने में उपयोगी होते हैं।
- अनेक वैश्विक समस्याओं का समाधान केवल सामूहिक सहयोग से किया जा सकता है।
- रोगों के उन्मूलन के लिए देशों के बीच टीकाकरण संबंधी सहयोग आवश्यक है।
- ग्लोबल वार्मिंग जैसी समस्या के लिए बड़े औद्योगिक देशों का सहयोग जरूरी है।
- अंतर्राष्ट्रीय संगठन सहयोग के लिए नियम, सूचनाएँ और संस्थागत रूपरेखा उपलब्ध कराते हैं।
- वे लागत, लाभ तथा समझौतों के पालन के संबंध में देशों के बीच विश्वास बढ़ाते हैं।

2. अंतर्राष्ट्रीय सहयोग में आने वाली कठिनाइयों तथा अंतर्राष्ट्रीय संगठन की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- देश सहयोग की आवश्यकता स्वीकार कर सकते हैं, पर सर्वोत्तम तरीके पर सहमत नहीं होते।
- सहयोग की लागत का भार किस पर कितना हो, यह विवाद पैदा कर सकता है।
- सहयोग से मिलने वाले लाभ के न्यायोचित बँटवारे का प्रश्न उठता है।
- मोल–तोल के बाद किसी देश के मुकर जाने की आशंका रहती है।
- अंतर्राष्ट्रीय संगठन सहयोग के उपाय और सूचनाएँ उपलब्ध कराते हैं।
- वे नियमों और नौकरशाही की रूपरेखा देते हैं।
- इससे समझौतों की शर्तों के पालन और समुचित साझेदारी पर विश्वास बढ़ता है।

3. वैश्विक तापवृद्धि के उदाहरण से अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की आवश्यकता समझाइए।

उत्तर :
- वातावरण में ग्रीनहाउस गैसों के बढ़ने से तापमान बढ़ रहा है।
- इससे समुद्रतल की ऊँचाई बढ़ने का खतरा है।
- समुद्रतटीय इलाके और बड़े शहर इससे प्रभावित हो सकते हैं।
- प्रत्येक देश अलग–अलग स्तर पर इसके दुष्प्रभावों का समाधान खोज सकता है।
- लेकिन सबसे प्रभावकारी उपाय वैश्विक तापवृद्धि को रोकना है।
- इसके लिए विश्व के बड़े औद्योगिक देशों का सहयोग जरूरी है।
- यह उदाहरण दिखाता है कि कुछ समस्याओं का समाधान सामूहिक कार्रवाई से ही संभव है।

4. अंतर्राष्ट्रीय संगठन राज्य नहीं होते, फिर भी वे महत्त्वपूर्ण क्यों हैं?

उत्तर :
- अंतर्राष्ट्रीय संगठन स्वयं कोई शक्तिशाली राज्य नहीं होते।
- उनका निर्माण स्वयं विभिन्न राज्यों द्वारा किया जाता है।
- वे अपने सदस्यों के मामलों के प्रति जवाबदेह होते हैं।
- वे देशों को वैर–विरोध के बजाय बातचीत का मार्ग उपलब्ध कराते हैं।

- वे सहयोग संबंधी नियम और प्रक्रियाएँ विकसित करते हैं।
- साझा वैश्विक समस्याओं के समाधान में समन्वय करते हैं।
- इस प्रकार वे युद्ध और संघर्ष के बजाय सहयोग और शांतिपूर्ण समाधान को बढ़ावा देते हैं।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. विश्व को अंतर्राष्ट्रीय संगठन की आवश्यकता क्यों है? *(RBSE-2022)*

उत्तर :
- अंतर्राष्ट्रीय संगठन देशों के बीच सहयोग बढ़ाने में सहायता करते हैं।
- वे देशों के विवादों का शांतिपूर्ण समाधान उपलब्ध कराते हैं।
- वे वैर–विरोध को युद्ध का रूप लेने से रोकने में मदद करते हैं।
- अनेक वैश्विक समस्याएँ केवल सामूहिक कार्रवाई से हल की जा सकती हैं।
- महामारी और रोगों से निपटने के लिए वैश्विक टीकाकरण सहयोग आवश्यक है।
- ग्लोबल वार्मिंग जैसी समस्या के लिए बड़े औद्योगिक देशों का सहयोग जरूरी है।

2. अंतर्राष्ट्रीय संगठन की प्रकृति, सीमाएँ और उपयोगिता का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- अंतर्राष्ट्रीय संगठन कोई सर्वशक्तिमान राज्य नहीं होता।
- उसका निर्माण विभिन्न सदस्य राज्यों द्वारा किया जाता है।
- उसका अस्तित्व राज्यों की सहमति पर निर्भर होता है।
- वह अपने सदस्यों के मामलों के लिए जवाबदेह रहता है।
- वह प्रत्येक समस्या का स्वतः समाधान नहीं कर सकता।
- फिर भी वह विवादों में शांतिपूर्ण समाधान खोजने में मदद करता है।
- वह साझा समस्याओं पर सामूहिक सहयोग को संगठित करता है।
- वह नियम, सूचना और संस्थागत व्यवस्था द्वारा देशों के बीच विश्वास बढ़ाता है।

पाकिस्तान में सेना और लोकतंत्र

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् के स्थायी सदस्यों की संख्या कितनी है? *(Model Paper-2025)*

(अ) 4 (ब) 5
(स) 6 (द) 7 **(ब)**

2. संयुक्त राष्ट्रसंघ की स्थापना कब हुई? *(RBSE-2022, Model Paper-2024)*

(अ) 14 अक्टूबर, 1945
(ब) 16 अक्टूबर, 1945
(स) 18 अक्टूबर, 1945
(द) 24 अक्टूबर, 1945 **(द)**

3. 2001 का नोबेल शांति पुरस्कार किस संयुक्त राष्ट्र महासचिव को मिला? *(RBSE-2024)*

(अ) बुतरस बुतरस घाली
(ब) बान की मून
(स) कोफी ए. अन्नान
(द) यू थांट **(स)**

4. वर्तमान में संयुक्त राष्ट्र का कौन–सा अंग स्थगित है? *(RBSE-2026)*

(अ) अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय
(ब) आर्थिक एवं सामाजिक परिषद
(स) सचिवालय
(द) न्यास परिषद **(द)**

5. संयुक्त राष्ट्रसंघ के मूल संस्थापक सदस्यों की संख्या कितनी थी?

(अ) 50 (ब) 51
(स) 54 (द) 193 **(ब)**

6. संयुक्त राष्ट्रसंघ की आम सभा में सदस्यों की संख्या कितनी बताई गई है?

(अ) 15 (ब) 51
(स) 193 (द) 54 **(स)**

7. अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय का मुख्यालय कहाँ है?

(अ) न्यूयॉर्क (ब) हेग
(स) वाशिंग्टन (द) सेन फ्रांसिस्को **(ब)**

8. आर्थिक और सामाजिक परिषद् में कितने सदस्य होते हैं?

(अ) 15 (ब) 51
(स) 54 (द) 193 **(स)**

9. संयुक्त राष्ट्रसंघ के महासचिव की नियुक्ति कितने वर्षों के लिए होती है?

(अ) दो वर्ष (ब) तीन वर्ष
(स) पाँच वर्ष (द) नौ वर्ष **(स)**

पहले जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

रिक्तस्थान –

1. लीग ऑफ नेशन्स के उत्तराधिकारी के रूप में ..... की स्थापना हुई। *(Model Paper-2023)*

उत्तर : संयुक्त राष्ट्रसंघ

2. नॉर्वे के ..... संयुक्त राष्ट्र के पहले महासचिव बने। *(Model Paper-2023)*

उत्तर : ट्राइग्व ली

3. संयुक्त राष्ट्र के नौवें महासचिव ..... हैं। *(Model Paper-2026)*

उत्तर : अन्तोनियो गुटेरेस

4. संयुक्त राष्ट्रसंघ चार्टर पर 26 जून 1945 को ..... देशों ने हस्ताक्षर किए।

उत्तर : 50

5. संयुक्त राष्ट्रसंघ की आम सभा में प्रत्येक सदस्य को ..... वोट प्राप्त है।

उत्तर : एक

6. अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय में ..... न्यायाधीश होते हैं।

उत्तर : 15

7. सुरक्षा परिषद् के अस्थायी सदस्य ..... वर्षों के लिए चुने जाते हैं।

उत्तर : दो

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् के स्थायी सदस्यों के नाम लिखिए। *(RBSE-2022)*

उत्तर : अमरीका, रूस, ब्रिटेन, फ्रांस और चीन।

2. लीग ऑफ नेशन्स के स्थान पर संयुक्त राष्ट्र की स्थापना क्यों हुई? *(RBSE-2023)*

उत्तर : लीग ऑव नेशंस दूसरा विश्वयुद्ध रोकने में असफल रहा था।

3. वीटो पावर से क्या अभिप्राय है? *(RBSE-2024)*

उत्तर : सुरक्षा परिषद् के स्थायी सदस्य द्वारा किसी फैसले को रोकने का विशेष अधिकार।

4. भारत संयुक्त राष्ट्र में कब शामिल हुआ? *(Model Paper-2026)*

उत्तर : 30 अक्टूबर 1945।

5. संयुक्त राष्ट्र की स्थापना कब हुई? *(RBSE-2026)*

उत्तर : 24 अक्टूबर 1945।

6. संयुक्त राष्ट्रसंघ का मुख्य उद्देश्य क्या है?

उत्तर : अंतर्राष्ट्रीय झगड़ों को रोकना और राष्ट्रों के बीच सहयोग की राह दिखाना।

7. संयुक्त राष्ट्रसंघ के महासचिव की नियुक्ति कौन करता है?

उत्तर : सुरक्षा परिषद् की सलाह पर आम सभा।

8. आम सभा के प्रमुख निर्णयों के लिए कितना बहुमत आवश्यक है?

उत्तर : दो–तिहाई बहुमत।

9. न्यासिता परिषद् कब से स्थगित है?

उत्तर : 1 नवम्बर 1994 से।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. संयुक्त राष्ट्रसंघ के मुख्य उद्देश्यों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- अंतर्राष्ट्रीय झगड़ों को रोकना इसका प्रमुख उद्देश्य है।
- राष्ट्रों के बीच सहयोग की राह दिखाना है।
- युद्ध होने पर शत्रुता के दायरे को सीमित करने का प्रयास करना है।
- विभिन्न देशों को सामाजिक–आर्थिक विकास के लिए एक साथ लाना है।
- विश्व में शांति और सहयोग के लिए संस्थागत व्यवस्था उपलब्ध कराना है।

2. सुरक्षा परिषद् की संरचना की मुख्य विशेषताएँ बताइए।

उत्तर :
- सुरक्षा परिषद् में कुल 15 सदस्य हैं।
- इनमें 5 स्थायी सदस्य हैं।
- 10 अस्थायी सदस्य आम सभा द्वारा चुने जाते हैं।
- अस्थायी सदस्य दो वर्षों के लिए चुने जाते हैं।
- स्थायी सदस्यों को निषेधाधिकार (वीटो) प्राप्त है।

3. संयुक्त राष्ट्रसंघ की आम सभा की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर :
- आम सभा में 193 सदस्यों के प्रतिनिधि हैं।
- प्रत्येक सदस्य को एकसमान मत प्राप्त है।
- प्रमुख निर्णयों के लिए दो–तिहाई बहुमत आवश्यक है।
- अन्य मामलों में सामान्य बहुमत की आवश्यकता होती है।
- आम सभा के निर्णय सभी सदस्यों पर बाध्यकारी नहीं होते।

4. अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय की संरचना बताइए ।

उत्तर :
- अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय में 15 न्यायाधीश होते हैं।
- उनका चुनाव 9 वर्षों के लिए होता है।
- चुनाव आम सभा और सुरक्षा परिषद् दोनों में पूर्ण बहुमत से होता है।
- इसका मुख्यालय हेग में स्थित है।

5. संयुक्त राष्ट्रसंघ के सचिवालय और महासचिव की भूमिका बताइए।

उत्तर :
- सचिवालय में प्रमुख संगठनों के कार्यों के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्टाफ होता है।
- इसका प्रधान महासचिव होता है।
- महासचिव की नियुक्ति सुरक्षा परिषद् की सलाह पर आम सभा करती है।

पहले जब चाहे, जहाँ चाहे, जैसा चाहे!

- महासचिव का कार्यकाल पाँच वर्ष होता है।
- महासचिव संयुक्त राष्ट्रसंघ का प्रमुख सार्वजनिक चेहरा और प्रतिनिधि होता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. लीग ऑव नेशंस से संयुक्त राष्ट्रसंघ की स्थापना तक के विकास को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- पहले विश्वयुद्ध के बाद विवादों के समाधान के लिए लीग ऑव नेशंस का गठन हुआ।
- प्रारंभिक सफलताओं के बावजूद यह दूसरा विश्वयुद्ध रोक नहीं सका।
- अगस्त 1941 में अटलांटिक चार्टर पर हस्ताक्षर हुए।
- फरवरी 1945 के याल्टा सम्मेलन में प्रस्तावित संगठन पर सम्मेलन का निर्णय हुआ।
- अप्रैल–मई 1945 में सेन फ्रांसिस्को सम्मेलन आयोजित हुआ।
- 26 जून 1945 को संयुक्त राष्ट्रसंघ के चार्टर पर 50 देशों ने हस्ताक्षर किए।
- 24 अक्टूबर 1945 को संयुक्त राष्ट्रसंघ की स्थापना हुई।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. संयुक्त राष्ट्रसंघ की प्रमुख संस्थाओं और उनकी निर्णय प्रक्रिया का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- सुरक्षा परिषद् में 15 सदस्य हैं और पाँच स्थायी सदस्यों को वीटो प्राप्त है।
- इसके दस अस्थायी सदस्यों का चुनाव दो वर्षों के लिए होता है।
- सुरक्षा परिषद् के निर्णय सदस्यों पर बाध्यकारी होते हैं।
- आम सभा में सभी सदस्य देशों को एक–एक मत मिलता है।
- प्रमुख निर्णयों के लिए आम सभा में दो–तिहाई बहुमत आवश्यक है।
- आर्थिक और सामाजिक परिषद् के 54 सदस्यों का चुनाव तीन वर्षों के लिए होता है।
- अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय में 15 न्यायाधीश नौ वर्षों के लिए चुने जाते हैं।
- सचिवालय का प्रधान महासचिव होता है।

2. संयुक्त राष्ट्रसंघ के महासचिवों की भूमिका के उदाहरण प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर :
- ट्राइग्व ली ने भारत–पाकिस्तान युद्ध में युद्धविराम के लिए प्रयास किए।
- डेग हैमरशोल्ड ने स्वेज विवाद और अफ्रीका के अनौपनिवेशीकरण के लिए कार्य किया।
- यू थांट ने क्यूबा मिसाइल संकट और कांगो संकट के समाधान के लिए प्रयास किए।
- कुर्त वाल्डहीम ने नामीबिया और लेबनान की समस्याओं पर कार्य किया।
- जेवियर पेरेज द कुइयार ने साइप्रस, अफगानिस्तान और अल सल्वाडोर में शांति प्रयास किए।
- बुतरस बुतरस घाली ने 'एन एजेंडा फॉर पीस' रिपोर्ट जारी की।
- कोफी ए. अन्नान ने मानवाधिकार परिषद् तथा शांति संस्थापक आयोग की स्थापना में भूमिका निभाई।
- बान की मून ने जलवायु परिवर्तन, सहस्राब्दि विकास लक्ष्य और सतत विकास लक्ष्य पर ध्यान दिया।
- अन्तोनियो गुटेरेस संयुक्त राष्ट्रसंघ के नौवें महासचिव हैं।

शीतयुद्ध के बाद संयुक्त राष्ट्रसंघ में सुधार

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. मानवाधिकार परिषद् की स्थापना कब हुई? *(RBSE-2024)*

(अ) 2005 (ब) 2006
(स) 2007 (द) 2008 **(ब)**

2. संयुक्त राष्ट्रसंघ में सुधार की जाँच कोफी अन्नान ने कब शुरू करवाई?

(अ) 1 जनवरी 1997 (ब) 1 जनवरी 1992
(स) 24 अक्टूबर 1995 (द) 19 जून 2006 **(अ)**

3. सुरक्षा परिषद् के नए सदस्य के लिए सुझाए गए मानदंडों में से कौन–सा एक था?

(अ) बड़ी आर्थिक ताकत
(ब) केवल छोटा भू–क्षेत्र
(स) संयुक्त राष्ट्रसंघ से बाहर रहना
(द) लोकतंत्र का विरोध **(अ)**

रिक्तस्थान –

1. संयुक्त राष्ट्रसंघ में एक सुधार उसकी बनावट और ..... में किया जाना है।

उत्तर : प्रक्रियाओं

2. 2005 में ..... आयोग के गठन का निर्णय लिया गया।

उत्तर : शांति संस्थापक

3. संयुक्त राष्ट्रसंघ में सुधार के अंतर्गत एक ..... कोष के गठन पर सहमति हुई।

उत्तर : लोकतंत्र

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. संयुक्त राष्ट्रसंघ के सामने बुनियादी सुधारों के दो प्रमुख क्षेत्र कौन–से हैं?

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

उत्तर : बनावट एवं प्रक्रियाओं में सुधार तथा न्यायाधिकार से जुड़े मुद्दों की समीक्षा।

2. सुरक्षा परिषद् में किन क्षेत्रों के अधिक देशों को सदस्यता देने की माँग की गई?

उत्तर : एशिया, अफ्रीका और दक्षिण अमरीका।

3. अमरीका और पश्चिमी देश संयुक्त राष्ट्रसंघ में किस प्रकार का सुधार चाहते हैं?

उत्तर : बजट संबंधी प्रक्रियाओं और प्रशासन में सुधार।

4. वीटो को समाप्त करने के समर्थक इसे किस धारणा से असंगत मानते हैं?

उत्तर : लोकतंत्र और संप्रभु राष्ट्रों की बराबरी की धारणा से।

5. 2005 में मानवाधिकार संबंधी किस नई संस्था की स्थापना का निर्णय हुआ?

उत्तर : मानवाधिकार परिषद्।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. शीतयुद्ध के बाद संयुक्त राष्ट्रसंघ में सुधार की आवश्यकता क्यों अनुभव हुई?

उत्तर :
- शीतयुद्ध के बाद विश्व राजनीति की वास्तविकताएँ बदल गईं।
- सोवियत संघ बिखर गया और अमरीका सबसे ताकतवर देश बन गया।
- अनेक नए देश संयुक्त राष्ट्रसंघ में शामिल हुए।
- चीन और भारत जैसी शक्तियों का महत्त्व बढ़ा।
- जनसंहार, आतंकवाद, परमाणविक प्रसार और जलवायु परिवर्तन जैसी नई चुनौतियाँ सामने आईं।

2. 1992 के प्रस्ताव में सुरक्षा परिषद् के विरुद्ध कौन–सी शिकायतें उठाई गईं?

उत्तर :
- 1992 में आम सभा ने सुधार से संबंधित प्रस्ताव स्वीकार किया।
- सुरक्षा परिषद् वर्तमान राजनीतिक वास्तविकताओं की नुमाइंदगी नहीं करती।
- इसके फैसलों पर पश्चिमी मूल्यों और हितों की छाप दिखाई देती है।
- इसके फैसलों पर चंद देशों का दबदबा है।
- सुरक्षा परिषद् में बराबर का प्रतिनिधित्व नहीं है।

3. सुरक्षा परिषद् के नए सदस्य के लिए सुझाए गए प्रमुख मानदंड बताइए।

उत्तर :
- देश एक बड़ी आर्थिक ताकत हो।
- उसके पास बड़ी सैन्य ताकत हो।
- संयुक्त राष्ट्रसंघ के बजट में उसका योगदान अधिक हो।
- वह आबादी के लिहाज से बड़ा राष्ट्र हो।
- वह लोकतंत्र और मानवाधिकारों का सम्मान करता हो।

4. वीटो के प्रश्न पर सुधार संबंधी बहस स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- कुछ देशों ने स्थायी सदस्यों के वीटो को समाप्त करने की माँग की।
- इसे लोकतंत्र और संप्रभु राष्ट्रों की बराबरी से असंगत माना गया।
- स्थायी सदस्यों के ऐसे सुधार पर सहमत होने की संभावना कम है।
- वीटो हटने पर शक्तिशाली देशों की संयुक्त राष्ट्रसंघ में दिलचस्पी घटने का खतरा है।
- उनके समर्थन के अभाव में संयुक्त राष्ट्रसंघ की प्रभावकारिता कमजोर हो सकती है।

5. संयुक्त राष्ट्रसंघ के न्यायाधिकार से संबंधित सुधार की बहस क्या है?

उत्तर :
- कुछ देश संयुक्त राष्ट्रसंघ को शांति और सुरक्षा संबंधी मिशनों में बड़ी भूमिका देना चाहते हैं।
- कुछ इसे विकास और मानवीय भलाई के कार्यों पर केंद्रित रखना चाहते हैं।
- इसमें स्वास्थ्य, शिक्षा और पर्यावरण जैसे मुद्दे शामिल हैं।
- मानवाधिकार, लैंगिक न्याय और सामाजिक न्याय भी प्रमुख विषय हैं।
- इस बात पर सहमति नहीं है कि संयुक्त राष्ट्रसंघ को किन मुद्दों को अधिक प्राथमिकता देनी चाहिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. एक ध्रुवीय विश्व में संयुक्त राष्ट्र संघ की भूमिका का उल्लेख कीजिए। *(Model Paper-2024)*

उत्तर :
- एकध्रुवीय विश्व में अमरीका एकमात्र महाशक्ति के रूप में उभरा।
- अपनी सैन्य और आर्थिक शक्ति के कारण अमरीका संयुक्त राष्ट्रसंघ की अनदेखी कर सकता है।
- संयुक्त राष्ट्रसंघ के बजट में अमरीका का बड़ा योगदान उसके प्रभाव को बढ़ाता है।
- अमरीका अपने वीटो के द्वारा प्रतिकूल प्रस्ताव रोक सकता है।
- इसलिए संयुक्त राष्ट्रसंघ अमरीकी शक्ति पर पूर्ण अंकुश लगाने में सक्षम नहीं है।
- फिर भी संयुक्त राष्ट्रसंघ अमरीका और शेष विश्व के बीच बातचीत का मंच उपलब्ध कराता है।
- यह ऐसा मंच है जहाँ अमरीकी नीतियों की आलोचना और बीच का रास्ता तलाशा जा सकता है।

2. 2005 में संयुक्त राष्ट्रसंघ को अधिक प्रासंगिक बनाने के लिए सुझाए गए कदमों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर :
- शांति संस्थापक आयोग के गठन का निर्णय लिया गया।
- नागरिकों को अत्याचार से बचाने में असफल राज्य के मामले में विश्व–बिरादरी की जिम्मेदारी स्वीकार की गई।
- मानवाधिकार परिषद् की स्थापना का निर्णय हुआ।
- सहस्त्राब्दि विकास लक्ष्य प्राप्त करने पर सहमति बनी।
- हर रूप के आतंकवाद की निंदा की गई।
- एक लोकतंत्र–कोष के गठन का निर्णय हुआ।
- न्यासिता परिषद् को समाप्त करने पर सहमति हुई।

3. सुरक्षा परिषद् की सदस्यता के मानदंड तय करने में आने वाली कठिनाइयों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- यह तय करना कठिन है कि किसी देश की अर्थव्यवस्था कितनी बड़ी होनी चाहिए।
- सैन्य शक्ति की आवश्यक मात्रा का कोई स्पष्ट मानदंड नहीं है।
- संयुक्त राष्ट्रसंघ के बजट में कितने योगदान को पर्याप्त माना जाए, यह भी विवादित है।
- बड़ी जनसंख्या को सहायता या बाधा मानने का प्रश्न उठता है।
- लोकतंत्र और मानवाधिकार का सम्मान करने वाले देशों में से प्रभावकारी सदस्य कौन होगा, यह तय करना कठिन है।
- भूगोल, अर्थव्यवस्था और संस्कृति में से प्रतिनिधित्व का आधार चुनना जटिल है।
- विभिन्न सरकारें अपने हितों और महत्त्वाकांक्षाओं के अनुसार अलग–अलग मानदंडों को समर्थन देती हैं।

4. सुरक्षा परिषद् के ढाँचे और प्रक्रियाओं में सुधार की प्रमुख माँगों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- स्थायी और अस्थायी सदस्यों की संख्या बढ़ाने की माँग की गई।
- परिषद् में समकालीन विश्व राजनीति की बेहतर नुमाइंदगी आवश्यक मानी गई।
- एशिया, अफ्रीका और दक्षिण अमरीका के अधिक देशों को प्रतिनिधित्व देने पर जोर है।
- सुरक्षा परिषद् में बराबर प्रतिनिधित्व का प्रश्न उठाया गया।
- कुछ देशों ने पाँच स्थायी सदस्यों के वीटो को समाप्त करने का सुझाव दिया।
- सदस्यता के लिए आर्थिक, सैन्य, जनसंख्या और लोकतंत्र जैसे मानदंड सुझाए गए।
- विभिन्न देशों के हितों के कारण इन सुधारों पर सहमति बनाना कठिन है।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. शीतयुद्ध के बाद सुरक्षा परिषद् में सुधार की बहस का विस्तार से वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- शीतयुद्ध के बाद विश्व की राजनीतिक वास्तविकताएँ बदल गईं।
- सुरक्षा परिषद् पर समकालीन राजनीति की सही नुमाइंदगी न करने का आरोप लगा।
- उसके फैसलों पर पश्चिमी देशों के मूल्यों और हितों की छाप की शिकायत हुई।
- परिषद् पर चंद देशों का दबदबा होने की बात कही गई।
- इसमें बराबर प्रतिनिधित्व की कमी को प्रमुख समस्या माना गया।
- स्थायी और अस्थायी सदस्यों की संख्या बढ़ाने की माँग उठी।
- एशिया, अफ्रीका और दक्षिण अमरीका को अधिक प्रतिनिधित्व देने पर जोर दिया गया।
- नए सदस्यों के चयन के लिए आर्थिक, सैन्य, जनसंख्या तथा लोकतंत्र संबंधी मानदंड सुझाए गए।
- वीटो अधिकार को बनाए रखने या समाप्त करने को लेकर भी गंभीर मतभेद रहे।

2. संयुक्त राष्ट्रसंघ में सुधार लागू करने की कठिनाइयों का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर :
- सभी देश सुधार की आवश्यकता से सहमत हैं, पर सुधार के स्वरूप पर सहमति नहीं है।
- स्थायी सदस्यता के लिए स्वीकार्य मानदंड तय करना कठिन है।
- आर्थिक और सैन्य ताकत को कितना महत्त्व दिया जाए, इस पर मतभेद हैं।
- भौगोलिक प्रतिनिधित्व का स्वरूप तय करना जटिल है।
- क्षेत्र, उपक्षेत्र, संस्कृति और सभ्यता के आधार पर प्रतिनिधित्व की अलग–अलग माँगें हैं।
- वीटो अधिकार में बदलाव स्थायी सदस्यों की सहमति पर निर्भर है।
- संयुक्त राष्ट्रसंघ के न्यायाधिकार में विकास या सुरक्षा में किसे प्राथमिकता मिले, इस पर विचार अलग हैं।
- विभिन्न देश अपने राष्ट्रीय हित और महत्त्वाकांक्षाओं के अनुसार सुधारों को देखते हैं।
- इसी कारण सुधार की दिशा, तरीका और समय तय करना कठिन बना रहता है।

पढ़ें जहाँ, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

संयुक्त राष्ट्रसंघ में सुधार और भारत

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. भारत सुरक्षा परिषद् में किस प्रकार के सदस्यों की संख्या बढ़ाने का समर्थक है?
(अ) केवल स्थायी
(ब) केवल अस्थायी
(स) स्थायी और अस्थायी दोनों
(द) किसी की नहीं **(स)**

2. भारत संयुक्त राष्ट्रसंघ के एजेंडे में किस विषय को प्रमुख मानता है?
(अ) केवल सैन्य शक्ति (ब) विकास
(स) केवल व्यापार (द) केवल चुनाव **(ब)**

3. भारत सुरक्षा परिषद् के विस्तार का समर्थन क्यों करता है?
(अ) उसे कम प्रतिनिधिमूलक बनाने के लिए
(ब) उसे अधिक प्रतिनिधिमूलक बनाने के लिए
(स) आम सभा को समाप्त करने के लिए
(द) केवल स्थायी सदस्यों को हटाने के लिए **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. भारत का मानना है कि सुरक्षा परिषद् में अभी की अपेक्षा अधिक ..... देश होने चाहिए।

उत्तर : विकासशील

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. सुरक्षा परिषद् की संरचना को लेकर भारत की मुख्य चिंता क्या है?

उत्तर : सुरक्षा परिषद् के प्रतिनिधित्वमूलक चरित्र की हानि।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. भारत की संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता के समर्थन में दो तर्क दीजिए।

(Model Paper-2023, RBSE-2024)

उत्तर :
- **तर्क 1** – लोकतांत्रिक प्रतिनिधित्वरू भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है।
  इसका आधार यह भी है कि भारत में विश्व की कुल जनसंख्या का लगभग 1/5वाँ हिस्सा निवास करता है।
- **तर्क 2** – संयुक्त राष्ट्रसंघ में योगदानरू भारत शांति बहाल करने के प्रयासों में लंबे समय से ठोस भूमिका निभाता रहा है।
  भारत संयुक्त राष्ट्रसंघ के बजट में नियमित योगदान देता है और अपने भुगतान से नहीं चूका है।

2. सुरक्षा परिषद् के प्रतिनिधित्व को लेकर भारत की चिंता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- संयुक्त राष्ट्रसंघ की आम सभा में सदस्यों की संख्या काफी बढ़ी है।
- इसके विपरीत सुरक्षा परिषद् की सदस्य संख्या लंबे समय से स्थिर रही है।
- भारत के अनुसार इससे परिषद् के प्रतिनिधित्वमूलक चरित्र की हानि हुई है।
- आम सभा में बड़ी संख्या में विकासशील देश हैं।
- भारत चाहता है कि परिषद् के निर्णयों में विकासशील देशों की भी सुनी जाए।

3. भारत की स्थायी सदस्यता की दावेदारी में जनसंख्या और लोकतंत्र का क्या महत्त्व है?

उत्तर :
- भारत विश्व में सबसे बड़ी आबादी वाला देश है।
- भारत में विश्व की कुल जनसंख्या का लगभग 1/5वाँ हिस्सा निवास करता है।
- भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है।
- ये तथ्य भारत की स्थायी सदस्यता के दावे को प्रतिनिधित्व के आधार पर मजबूत बनाते हैं।
- भारत की सदस्यता से परिषद् को अधिक प्रतिनिधिमूलक स्वरूप मिलने का तर्क दिया जाता है।

4. संयुक्त राष्ट्रसंघ में भारत के योगदान को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- भारत ने संयुक्त राष्ट्रसंघ की लगभग सभी पहलकदमियों में भाग लिया है।
- शांति बहाल करने के प्रयासों में भारत ने लंबे समय से ठोस भूमिका निभाई है।
- भारत संयुक्त राष्ट्रसंघ के बजट में नियमित योगदान देता है।
- भारत अपने संयुक्त राष्ट्रसंघ संबंधी भुगतान से नहीं चूका है।
- भारत विभिन्न देशों के बीच सहयोग और विकास बढ़ाने का समर्थक है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. भारत को सुरक्षा परिषद् का स्थायी सदस्य बनाने के पक्ष में तर्क दीजिए।

(Model Paper-2025, RBSE-2023, RBSE-2022)

उत्तर :
- भारत विश्व में सबसे बड़ी आबादी वाला देश है।
- भारत में विश्व की कुल जनसंख्या का लगभग 1/5वाँ हिस्सा निवास करता है।
- भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है।
- भारत ने संयुक्त राष्ट्रसंघ की लगभग सभी पहलकदमियों में भाग लिया है।
- शांति बहाल करने के प्रयासों में भारत ने लंबे समय से ठोस भूमिका निभाई है।
- भारत अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर तेजी से आर्थिक शक्ति के रूप में उभर रहा है।
- भारत संयुक्त राष्ट्रसंघ के बजट में नियमित योगदान देता है और भुगतान से नहीं चूका है।

मिशन ज्ञान
मिशन: जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

2. सुरक्षा परिषद् में विकासशील देशों की अधिक भागीदारी की आवश्यकता पर भारत के तर्क स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- संयुक्त राष्ट्रसंघ की आम सभा में अधिकतर सदस्य विकासशील देश हैं।
- सुरक्षा परिषद् के फैसलों का प्रभाव इन देशों पर भी पड़ता है।
- इसलिए परिषद् के निर्णयों में उनकी बात सुनी जानी चाहिए।
- परिषद् की वर्तमान संरचना पूरी तरह प्रतिनिधिमूलक नहीं है।
- अधिक विकासशील देशों के शामिल होने से परिषद् की वैधता और समर्थन बढ़ सकता है।
- भारत स्वयं परिषद् में अधिक विकासशील देशों को शामिल करने का समर्थक है।
- भारत के अनुसार पुनर्गठन की योजना व्यापक प्रतिनिधित्व पर आधारित होनी चाहिए।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. सुरक्षा परिषद् के विस्तार के पक्ष में भारत के तर्कों का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- संयुक्त राष्ट्रसंघ की आम सभा में सदस्य देशों की संख्या काफी बढ़ चुकी है।
- इसके विपरीत सुरक्षा परिषद् की सदस्य संख्या लंबे समय तक स्थिर रही है।
- इससे परिषद् के प्रतिनिधित्वमूलक चरित्र की हानि हुई है।
- सुरक्षा परिषद् का विस्तार उसे अधिक प्रतिनिधिमूलक बना सकता है।
- इससे परिषद् को विश्व–बिरादरी का अधिक समर्थन मिल सकता है।
- भारत स्थायी और अस्थायी दोनों प्रकार की सदस्यता में वृद्धि का समर्थक है।
- आम सभा में बड़ी संख्या में विकासशील देश हैं।
- सुरक्षा परिषद् के फैसलों में इन विकासशील देशों की भी सुनी जानी चाहिए।
- परिषद् में अधिक विकासशील देशों की उपस्थिति से पुनर्गठन का आधार अधिक व्यापक होगा।

2. भारत की स्थायी सदस्यता के विरोध में व्यक्त सरोकारों का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर :
- कुछ देश भारत के परमाणु हथियारों को लेकर चिंतित हैं।
- पाकिस्तान के साथ संबंधों में कठिनाई को भारत की सदस्यता के संदर्भ में आपत्ति के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।
- कुछ देशों का मानना है कि ऐसी स्थिति में भारत स्थायी सदस्य के रूप में अप्रभावी रह सकता है।
- ब्राजील, जर्मनी और जापान जैसी अन्य उभरती शक्तियों की सदस्यता का प्रश्न भी उठता है।
- संभवतः दक्षिण अफ्रीका को भी शामिल करने की माँग सामने आ सकती है।
- कुछ देशों का मत है कि विस्तार होने पर अफ्रीका को प्रतिनिधित्व मिलना चाहिए।
- इसी प्रकार दक्षिण अमरीका के प्रतिनिधित्व का प्रश्न भी उठता है।
- मौजूदा परिषद् में इन दोनों महादेशों की नुमाइंदगी नहीं है।
- इन सरोकारों के कारण भारत के लिए स्थायी सदस्यता प्राप्त करना कठिन बना हुआ है।



DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

5 समकालीन विश्व में सुरक्षा

सुरक्षा क्या है?

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. सुरक्षा का बुनियादी अर्थ क्या है? *(Model Paper-2025)*
(अ) खतरा (ब) खतरे से आजादी
(स) युद्ध (द) इनमें से कोई नहीं **(ब)**

2. सुरक्षा विषयक अध्ययन में मुख्य रूप से किन खतरों को शामिल किया जाना चाहिए?
(अ) प्रत्येक छोटे–बड़े खतरे को
(ब) केवल आर्थिक खतरों को
(स) केंद्रीय मूल्यों को खतरा पहुँचाने वाले खतरों को
(द) केवल व्यक्तिगत विवादों को **(स)**

3. सुरक्षा का संबंध मुख्य रूप से किस प्रकार के खतरों से है?
(अ) साधारण खतरों से
(ब) गंभीर खतरों से
(स) केवल प्राकृतिक खतरों से
(द) केवल आर्थिक खतरों से **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. सुरक्षा का संबंध जीवन के ..... मूल्यों पर मंडराने वाले गंभीर खतरों से है।

उत्तर : केंद्रीय

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. सुरक्षा का बुनियादी अर्थ क्या है? *(Model Paper-2024)*

उत्तर : खतरे से आजादी।

2. सुरक्षा के दो मुख्य स्वरूप कौन–से हैं? *(RBSE-2024)*

उत्तर : पारंपरिक तथा अपारंपरिक सुरक्षा।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. सुरक्षा को समझने में संदर्भ और स्थिति का क्या महत्त्व है?

उत्तर :
- अलग–अलग परिस्थितियों में सुरक्षा की प्राथमिकताएँ बदलती हैं।
- विभिन्न समाजों के सामने खतरों की प्रकृति अलग होती है।
- समय के साथ सुरक्षा संबंधी सरोकार बदल सकते हैं।
- इसी कारण संदर्भ और स्थिति सुरक्षा के बारे में हमारा नजरिया बनाते हैं।

2. लोकतंत्र और सुरक्षा संबंधी चर्चा के बीच क्या संबंध है?

उत्तर :
- सुरक्षा को केवल गुप्त और विशेषज्ञों तक सीमित विषय नहीं माना जा सकता।
- लोकतंत्र में नागरिकों का सुरक्षा से सीधा संबंध है।
- सुरक्षा संबंधी मामलों पर आवश्यक जानकारी और चर्चा होनी चाहिए।
- नागरिकों को अपने सुरक्षा सरोकारों को समझने का अवसर मिलना चाहिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. सुरक्षा का अत्यधिक व्यापक अर्थ लेना क्यों उचित नहीं है?

उत्तर :
- रोजमर्रा के जीवन में व्यक्ति अनेक छोटे–बड़े खतरों का सामना करता है।
- हर खतरे को सुरक्षा का प्रश्न मानने पर प्रत्येक गतिविधि सुरक्षा से जुड़ जाएगी।
- इससे सुरक्षा की अवधारणा अपनी स्पष्टता खो देगी।
- सुरक्षा–अध्ययन में मुख्य ध्यान केंद्रीय मूल्यों पर होना चाहिए।
- खतरा गंभीर और उसके परिणाम गहरे होने चाहिए।
- सुरक्षा का उचित अर्थ गंभीर और अपूरणीय क्षति पहुँचाने वाले खतरों तक सीमित रहता है।

2. सुरक्षा को संदर्भ–आधारित एवं विवादग्रस्त धारणा के रूप में समझाइए।

उत्तर :
- विभिन्न समाजों की परिस्थितियाँ समान नहीं होतीं।
- अलग–अलग समय में खतरों की प्रकृति बदलती रहती है।
- समाजों और देशों के केंद्रीय मूल्य भी भिन्न हो सकते हैं।
- इसलिए सभी देशों में सुरक्षा की एक जैसी धारणा होना आवश्यक नहीं है।
- सुरक्षा का नजरिया संबंधित संदर्भ और स्थिति से बनता है।
- इसी कारण सुरक्षा को विवादग्रस्त धारणा माना गया है।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. सुरक्षा की अवधारणा का विस्तार से वर्णन कीजिए।

मिशन ज्ञान
चलें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें

उत्तर :
- सुरक्षा का बुनियादी अर्थ खतरे से आजादी है।
- मानव तथा देशों का जीवन अनेक प्रकार के खतरों से भरा होता है।
- प्रत्येक छोटे–बड़े खतरे को सुरक्षा का प्रश्न नहीं माना जा सकता।
- सुरक्षा मुख्यतः जीवन के केंद्रीय मूल्यों से जुड़ी होती है।
- सुरक्षा–खतरा इतना गंभीर होना चाहिए कि केंद्रीय मूल्यों को गहरी क्षति की आशंका हो।
- यदि खतरे को न रोका जाए तो उससे अपूरणीय क्षति हो सकती है।
- सुरक्षा की धारणा अलग–अलग समय और समाज में बदल सकती है।
- इसलिए सुरक्षा को संदर्भ–आधारित और विवादग्रस्त धारणा माना जाता है।

2. किसी खतरे को सुरक्षा का मसला मानने के प्रमुख आधारों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर :
- सबसे पहले यह देखना आवश्यक है कि खतरा किसके लिए है।
- खतरे का संबंध व्यक्ति, समाज अथवा देश के केंद्रीय मूल्यों से होना चाहिए।
- खतरे की गंभीरता का आकलन किया जाना चाहिए।
- साधारण और रोजमर्रा के प्रत्येक खतरे को सुरक्षा में शामिल नहीं किया जा सकता।
- खतरे के परिणामों में गंभीर क्षति की संभावना होनी चाहिए।
- ऐसा खतरा अपूरणीय क्षति पैदा कर सकता हो।
- खतरे को संबंधित समय, समाज और परिस्थिति के संदर्भ में समझना चाहिए।
- इसी आधार पर सुरक्षा की वास्तविक प्राथमिकताओं का निर्धारण किया जाता है।

सुरक्षा के पारंपरिक तरीके

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. जैविक हथियार संधि कब हुई? *(Model Paper-2024)*

(अ) 1972 (ब) 1980
(स) 1967 (द) 1897 **(अ)**

2. युद्ध की आशंका को सुरक्षा नीति द्वारा रोकना कहलाता है– *(RBSE-2024, Model Paper-2025)*

(अ) आदेशात्मक युद्ध विराम
(ब) शक्ति संतुलन
(स) एकजुट होकर हमलावर को रोकना
(द) अपरोध **(द)**

3. पारंपरिक सुरक्षा की अवधारणा में सबसे बड़ा खतरा किसे माना जाता है?

(अ) सांस्कृतिक खतरे को
(ब) सैन्य खतरे को
(स) केवल महामारी को
(द) केवल गरीबी को **(ब)**

4. शक्ति–संतुलन बनाए रखने की कवायद मुख्यतः किससे जुड़ी होती है?

(अ) सैन्य–शक्ति बढ़ाने से
(ब) जनसंख्या घटाने से
(स) प्रवास बढ़ाने से
(द) सीमाएँ समाप्त करने से **(अ)**

5. गठबंधन मुख्यतः किस आधार पर बनाए जाते हैं?

(अ) व्यक्तिगत हित (ब) राष्ट्रीय हित
(स) केवल धार्मिक हित
(द) केवल सांस्कृतिक हित **(ब)**

6. विश्वास बहाली के उपायों का उद्देश्य क्या है?

(अ) औचक हमले की गलतफहमी को कम करना
(ब) सैन्य टकराव बढ़ाना
(स) हथियारों का उत्पादन बढ़ाना
(द) युद्ध को अनिवार्य बनाना **(अ)**

रिक्तस्थान –

1. परमाणु अप्रसार संधि ..... में हुई। *(Model Paper-2024)*

उत्तर : 1968

2. रासायनिक हथियार सम्मेलन पर हस्ताक्षर ..... में हुए। *(RBSE-2026)*

उत्तर : 1997

3. पारंपरिक सुरक्षा में किसी देश के प्रमुख केंद्रीय मूल्यों में ....., स्वतंत्रता और क्षेत्रीय अखंडता शामिल हैं।

उत्तर : संप्रभुता

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. जैविक हथियार संधि सर्वप्रथम कब हुई? *(RBSE-2022)*

उत्तर : 1972 में।

2. युद्ध को सीमित रखने अथवा समाप्त करने की नीति को क्या कहा जाता है?

उत्तर : रक्षा।

3. शक्ति–संतुलन क्या है?

उत्तर : दूसरे देशों के मुकाबले अपनी शक्ति को संतुलित एवं अनुकूल बनाए रखने की नीति।

4. गठबंधन क्या है?

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

उत्तर : सैन्य हमले को रोकने या उससे रक्षा के लिए कई देशों का समवेत समूह।

5. अस्त्र–नियंत्रण का अर्थ क्या है?

उत्तर : हथियारों के विकास या उपार्जन को निश्चित कायदे–कानूनों के अधीन करना।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. निरस्त्रीकरण से क्या अभिप्राय है? *(RBSE-2024)*

उत्तर :
- निरस्त्रीकरण में कुछ खास किस्म के हथियारों से बाज आने की माँग की जाती है।
- यह माँग सभी राज्यों पर उनके आकार और ताकत से परे लागू होती है।
- इसका उद्देश्य विशेष प्रकार के हथियारों को बनाना और रखना रोकना है।
- BWC 1972 और CWC 1997 इसके उदाहरण हैं।

2. युद्ध की स्थिति में किसी सरकार के सामने कौन–कौन से विकल्प होते हैं?

उत्तर :
- दूसरे पक्ष की बात मानकर आत्मसमर्पण करना।
- संभावित नाश का संकेत देकर हमले को रोकने का प्रयास करना।
- युद्ध होने पर अपनी रक्षा करना।
- हमलावर को पीछे हटाना अथवा उसे पराजित करना।

3. शक्ति–संतुलन की नीति को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- देश अपने पड़ोसी देशों की शक्ति पर नजर रखते हैं।
- अधिक शक्तिशाली देश भविष्य में खतरा बन सकता है।
- सरकारें शक्ति का पलड़ा अपने पक्ष में रखने का प्रयास करती हैं।
- इसके लिए मुख्यतः सैन्य–शक्ति बढ़ाई जाती है।
- आर्थिक और प्रौद्योगिकीय ताकत भी सैन्य–शक्ति का आधार है।

4. सैन्य गठबंधन की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर :
- गठबंधन में कई देश शामिल होते हैं।
- अधिकांश गठबंधनों को लिखित संधि से औपचारिक रूप मिलता है।
- गठबंधन राष्ट्रीय हितों पर आधारित होते हैं।
- राष्ट्रीय हित बदलने पर गठबंधन भी बदल सकते हैं।

5. निरस्त्रीकरण और अस्त्र–नियंत्रण में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- निरस्त्रीकरण कुछ खास हथियारों से पूरी तरह बाज आने पर जोर देता है।
- अस्त्र–नियंत्रण हथियारों के विकास या उपार्जन पर नियम लगाता है।
- BWC और CWC निरस्त्रीकरण से संबंधित उदाहरण हैं।
- ABM, SALT II, START और NPT अस्त्र–नियंत्रण से संबंधित हैं।
- दोनों का उद्देश्य हथियारों से पैदा होने वाले खतरे को सीमित करना है।

6. विश्वास बहाली के उपायों का महत्त्व बताइए।

उत्तर :
- प्रतिद्वंद्वी देश नियमित रूप से सूचनाओं का आदान–प्रदान करते हैं।
- वे अपने सैन्य मकसद और कुछ सैन्य योजनाएँ बताते हैं।
- वे औचक हमले की योजना न होने का आश्वासन देते हैं।
- सैन्य बल और उनकी तैनाती की जानकारी साझा की जा सकती है।
- इससे गलतफहमी या गफलत के कारण युद्ध की संभावना कम होती है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. पारंपरिक बाहरी सुरक्षा के प्रमुख तत्त्वों का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- पारंपरिक सुरक्षा में सैन्य खतरे को सबसे गंभीर माना जाता है।
- युद्ध की आशंका रोकने की नीति को अपरोध कहा जाता है।
- युद्ध होने पर उसे सीमित या समाप्त करने से रक्षा जुड़ी है।
- संभावित विरोधी के मुकाबले शक्ति–संतुलन बनाए रखा जाता है।
- सैन्य हमले को रोकने अथवा उससे रक्षा के लिए गठबंधन बनाए जाते हैं।
- विश्व–राजनीति में केंद्रीय सत्ता न होने के कारण प्रत्येक देश अपनी सुरक्षा की जिम्मेदारी स्वयं उठाता है।

2. नव–स्वतंत्र देशों की पारंपरिक सुरक्षा चुनौतियों का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- नव–स्वतंत्र देशों को पड़ोसी देशों से सैन्य हमले की आशंका थी।
- उन्हें आंतरिक सैन्य–संघर्ष की भी चिंता थी।
- सीमा और भूक्षेत्र को लेकर विवाद हुए।
- आबादी पर नियंत्रण से संबंधित झगड़े भी सामने आए।
- अलग राष्ट्र की माँग करने वाले अलगाववादी आंदोलन सुरक्षा–चुनौती बने।
- इस प्रकार पड़ोसी देशों से युद्ध और आंतरिक संघर्ष उनकी प्रमुख सुरक्षा चुनौतियाँ थीं।

3. पारंपरिक सुरक्षा में सहयोग के प्रमुख उपायों की व्याख्या कीजिए।

मिशन ज्ञान
पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

उत्तर :
- पारंपरिक सुरक्षा देशों के बीच सहयोग की संभावना को स्वीकार करती है।
- निरस्त्रीकरण में कुछ खास हथियारों को त्यागने पर जोर है।
- अस्त्र–नियंत्रण हथियारों के विकास और उपार्जन पर नियम लगाता है।
- BWC और CWC कुछ विशिष्ट हथियारों पर प्रतिबंध से संबंधित हैं।
- ABM] SALT II] START और NPT अस्त्र–नियंत्रण के उदाहरण हैं।
- विश्वास बहाली से गलतफहमी के कारण युद्ध की संभावना को कम किया जाता है।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. सुरक्षा की पारंपरिक धारणा एवं उसके प्रमुख उपायों का विस्तार से वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- पारंपरिक सुरक्षा में राज्य को प्रमुख संदर्भ माना जाता है।
- इसमें बाहरी सैन्य खतरे को अत्यंत गंभीर माना जाता है।
- सैन्य खतरा संप्रभुता, स्वतंत्रता और क्षेत्रीय अखंडता को प्रभावित कर सकता है।
- युद्ध की आशंका रोकने को अपरोध कहा जाता है।
- युद्ध को सीमित या समाप्त करने से रक्षा जुड़ी है।
- देश शक्ति–संतुलन बनाए रखने का प्रयास करते हैं।
- सैन्य हमले के अपरोध या रक्षा के लिए गठबंधन बनाए जाते हैं।
- निरस्त्रीकरण, अस्त्र–नियंत्रण और विश्वास बहाली भी पारंपरिक सुरक्षा के महत्त्वपूर्ण उपाय हैं।

2. पारंपरिक सुरक्षा में बल–प्रयोग की सीमाओं और सहयोग के उपायों को समझाइए।

उत्तर :
- पारंपरिक दृष्टिकोण हिंसा के प्रयोग को यथासंभव सीमित रखने पर जोर देता है।
- युद्ध केवल उचित कारणों, जैसे आत्मरक्षा, के लिए किया जाना चाहिए।
- संघर्षविमुख, निहत्थे और आत्मसमर्पण करने वाले लोगों को निशाना नहीं बनाना चाहिए।
- उतने ही बल का प्रयोग हो जितना आत्मरक्षा के लिए आवश्यक हो।
- बल–प्रयोग अंतिम उपाय होना चाहिए।
- निरस्त्रीकरण विशेष हथियारों के परित्याग पर जोर देता है।
- अस्त्र–नियंत्रण हथियारों के विकास और उपार्जन पर नियम लगाता है।
- विश्वास बहाली सूचनाओं के आदान–प्रदान से गलतफहमी और युद्ध की आशंका को कम करती है।

सुरक्षा की अपारंपरिक धारणा

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. अपारंपरिक सुरक्षा में सुरक्षा का संदर्भ किस तक विस्तृत हो जाता है?
(अ) केवल राज्य (ब) केवल सेना
(स) व्यक्ति, समुदाय और समूची मानवता
(द) केवल सरकार **(स)**

2. मानवता की सुरक्षा का प्राथमिक लक्ष्य क्या है?
(अ) केवल राज्य की सीमा
(ब) व्यक्तियों की संरक्षा
(स) सैन्य शक्ति
(द) गठबंधन **(ब)**

3. मानवता की सुरक्षा के संकीर्ण अर्थ में किससे सुरक्षा पर जोर दिया जाता है?
(अ) हिंसक खतरों से
(ब) केवल आर्थिक प्रतिस्पर्धा से
(स) केवल व्यापार से
(द) केवल सैन्य गठबंधनों से **(अ)**

4. मानवता की सुरक्षा के व्यापक अर्थ में निम्न में से क्या शामिल है?
(अ) अकाल, महामारी और आपदाएँ
(ब) केवल सीमा विवाद
(स) केवल हथियारों की दौड़
(द) केवल गठबंधन **(अ)**

5. मानवता की सुरक्षा के व्यापकतम नजरिए में किस पर जोर दिया जाता है?
(अ) केवल सैन्य शक्ति
(ब) अभाव से मुक्ति और भय से मुक्ति
(स) केवल राष्ट्रीय हित
(द) केवल शक्ति–संतुलन **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. सुरक्षा की अपारंपरिक धारणा को ..... की सुरक्षा भी कहा जाता है।

उत्तर : मानवता

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. सुरक्षा की अपारंपरिक धारणा के दो पक्ष कौन–से हैं? *(RBSE-2022, RBSE-2023)*

उत्तर : मानवता की सुरक्षा और विश्व सुरक्षा।

2. अपारंपरिक सुरक्षा में 'संदर्भी' से क्या आशय है?

उत्तर : वह व्यक्ति, समुदाय, राज्य या मानवता जिसे सुरक्षा की आवश्यकता है।

मिशन ज्ञान
पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. पारंपरिक और अपारंपरिक सुरक्षा में संदर्भी का अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- पारंपरिक सुरक्षा में मुख्य संदर्भी राज्य होता है।
- इसमें राज्य के भूक्षेत्र और संस्थाओं की सुरक्षा प्रमुख होती है।
- अपारंपरिक सुरक्षा में संदर्भी का दायरा अधिक व्यापक है।
- इसमें व्यक्ति, समुदाय और समूची मानवता की सुरक्षा शामिल होती है।

2. मानवता की सुरक्षा के संकीर्ण अर्थ को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- इसका प्राथमिक लक्ष्य व्यक्तियों की संरक्षा है।
- इसका जोर हिंसक खतरों से बचाव पर होता है।
- इसमें खून–खराबे से व्यक्तियों और समुदायों की रक्षा प्रमुख है।
- यह सुरक्षा को केवल राज्य तक सीमित नहीं रखता।

3. मानवता की सुरक्षा के व्यापक अर्थ की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर :
- यह हिंसक खतरों से आगे सुरक्षा का दायरा बढ़ाता है।
- इसमें अकाल को सुरक्षा–खतरा माना जाता है।
- महामारी और प्राकृतिक आपदाएँ भी इसमें शामिल हैं।
- व्यापकतम अर्थ में आर्थिक सुरक्षा और मानवीय गरिमा भी शामिल हैं।
- इसमें अभाव से मुक्ति और भय से मुक्ति पर जोर है।

4. विश्व–सुरक्षा की धारणा क्यों उभरी?

उत्तर :
- अनेक खतरे राष्ट्रीय सीमाओं तक सीमित नहीं रहे।
- वैश्विक तापवृद्धि अनेक देशों को प्रभावित करती है।
- अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद एक से अधिक देशों के लिए खतरा है।
- एड्स और बर्ड फ्लू जैसी महामारियाँ सीमा–पार फैलती हैं।
- इन समस्याओं के समाधान के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग आवश्यक है।

5. सुरक्षित राज्य का अर्थ हमेशा सुरक्षित जनता क्यों नहीं होता?

उत्तर :
- राज्य की सुरक्षा और जनता की सुरक्षा समान नहीं हैं।
- विदेशी हमले से रक्षा नागरिकों की सुरक्षा की आवश्यक शर्त है।
- लेकिन केवल बाहरी हमले से रक्षा पर्याप्त नहीं है।
- व्यक्तियों को अंदरूनी हिंसा और अन्य गंभीर खतरों से भी सुरक्षा चाहिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. मानवता की सुरक्षा की अवधारणा का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- मानवता की सुरक्षा में जनता की सुरक्षा को विशेष महत्त्व दिया जाता है।
- इसका प्राथमिक लक्ष्य व्यक्तियों की संरक्षा है।
- संकीर्ण दृष्टिकोण हिंसक खतरों से बचाव पर केंद्रित है।
- व्यापक दृष्टिकोण अकाल, महामारी और प्राकृतिक आपदा को भी शामिल करता है।
- व्यापकतम दृष्टिकोण में आर्थिक सुरक्षा और मानवीय गरिमा शामिल हैं।
- इसका केंद्रीय विचार अभाव से मुक्ति और भय से मुक्ति है।

2. विश्व–सुरक्षा की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- विश्व–सुरक्षा की धारणा 1990 के दशक में प्रमुख रूप से उभरी।
- यह ऐसे खतरों से संबंधित है जिनकी प्रकृति वैश्विक है।
- वैश्विक तापवृद्धि इसका एक उदाहरण है।
- अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद अनेक देशों को प्रभावित करता है।
- एड्स और बर्ड फ्लू जैसी महामारियाँ राष्ट्रीय सीमाओं से परे फैलती हैं।
- इन समस्याओं से निपटने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग आवश्यक है।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. सुरक्षा का अर्थ बताते हुए पारंपरिक एवं अपारंपरिक सुरक्षा की विवेचना कीजिए। *(RBSE-2025)*

उत्तर :
- सुरक्षा का बुनियादी अर्थ खतरे से आजादी है।
- सुरक्षा का संबंध ऐसे गंभीर खतरों से है जो केंद्रीय मूल्यों को क्षति पहुँचा सकते हैं।
- पारंपरिक सुरक्षा में राज्य को मुख्य संदर्भ माना जाता है।
- पारंपरिक दृष्टिकोण मुख्यतः सैन्य खतरों और राज्य की संप्रभुता से संबंधित है।
- इसमें अपरोध, रक्षा, शक्ति–संतुलन और गठबंधन जैसे उपाय शामिल हैं।
- अपारंपरिक सुरक्षा का संदर्भ व्यक्ति, समुदाय और मानवता तक विस्तृत है।
- इसमें हिंसा के साथ अकाल, महामारी, आपदा और आर्थिक असुरक्षा जैसे खतरे भी शामिल हो सकते हैं।
- अपारंपरिक दृष्टिकोण का प्रमुख लक्ष्य अभाव से मुक्ति और भय से मुक्ति है।

मिशन ज्ञान
जहाँ चाह, वहाँ राह. जहाँ चाह, जैसे चाह!

2. सुरक्षा की अपारंपरिक धारणा का विस्तृत वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- अपारंपरिक सुरक्षा सैन्य खतरे से आगे सुरक्षा की धारणा का विस्तार करती है।
- इसमें सुरक्षा के संदर्भी के रूप में राज्य के साथ व्यक्ति और समुदाय शामिल हैं।
- इसे मानवता की सुरक्षा अथवा विश्व–रक्षा भी कहा जाता है।
- इसका प्राथमिक लक्ष्य व्यक्तियों की संरक्षा है।
- संकीर्ण दृष्टिकोण हिंसक खतरों से सुरक्षा पर जोर देता है।
- व्यापक दृष्टिकोण अकाल, महामारी और प्राकृतिक आपदाओं को शामिल करता है।
- व्यापकतम दृष्टिकोण में आर्थिक सुरक्षा और मानवीय गरिमा भी शामिल हैं।
- इस दृष्टिकोण में अभाव से मुक्ति और भय से मुक्ति केंद्रीय विचार हैं।

3. राज्य की सुरक्षा और मानवता की सुरक्षा के संबंध को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- पारंपरिक सुरक्षा में राज्य की रक्षा प्रमुख होती है।
- मानवता की सुरक्षा में व्यक्तियों की संरक्षा प्राथमिक है।
- राज्य और मानवता की सुरक्षा एक–दूसरे के पूरक हो सकते हैं।
- सुरक्षित राज्य का अर्थ हमेशा सुरक्षित जनता नहीं होता।
- विदेशी हमले से सुरक्षा नागरिकों के लिए आवश्यक है।
- केवल विदेशी हमले से रक्षा मानव सुरक्षा के लिए पर्याप्त नहीं है।
- नागरिकों को अंदरूनी हिंसा तथा अन्य गंभीर खतरों से भी सुरक्षा चाहिए।
- इसलिए अपारंपरिक सुरक्षा राज्य से आगे व्यक्ति और समुदाय को केंद्र में रखती है।

खतरे के नए स्रोत

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. 11 सितम्बर 2001 के आतंकवादी हमले किस संगठन ने किए? *(Model Paper-2026)*

(अ) हमास (ब) अल–कायदा
(स) तालिबान (द) आई.एस.आई.एस. **(ब)**

2. अमेरिका के वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर हमला कब हुआ? *(RBSE-2022)*

(अ) 11 सितम्बर, 2001
(ब) 11 सितम्बर, 2011
(स) 21 सितम्बर, 2001
(द) 21 सितम्बर, 2011 **(अ)**

3. युद्ध, प्राकृतिक आपदा अथवा राजनीतिक उत्पीड़न के कारण स्वदेश छोड़ने वाले कहलाते हैं– *(RBSE-2026)*

(अ) आप्रवासी (ब) शरणार्थी
(स) घुसपैठिया (द) विस्थापित जन **(ब)**

4. अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद की एक प्रमुख विशेषता क्या है?

(अ) वह केवल एक गाँव तक सीमित होता है
(ब) वह एक से ज्यादा देशों में व्याप्त होता है
(स) उसमें नागरिकों को कभी निशाना नहीं बनाया जाता
(द) उसका राजनीति से कोई संबंध नहीं होता **(ब)**

5. राष्ट्रीय सीमा के भीतर घर–बार छोड़ने वाले लोगों को क्या कहा जाता है?

(अ) शरणार्थी (ब) आप्रवासी
(स) आंतरिक रूप से विस्थापित जन
(द) गठबंधन **(स)**

6. महामारियाँ विभिन्न देशों में तेजी से किन माध्यमों से फैल सकती हैं?

(अ) आप्रवास, व्यवसाय, पर्यटन और सैन्य–अभियान
(ब) केवल खेती
(स) केवल शिक्षा
(द) केवल मतदान **(अ)**

7. किसी मसले को सुरक्षा का मसला मानने का न्यूनतम आधार क्या है?

(अ) वह मनोरंजन से संबंधित हो
(ब) उससे संदर्भी के अस्तित्व को खतरा हो
(स) उसमें कोई मतभेद न हो
(द) वह केवल आर्थिक हो **(ब)**

8. सहयोगमूलक सुरक्षा में सहयोग किस स्तर पर हो सकता है?

(अ) केवल वैश्विक
(ब) केवल द्विपक्षीय
(स) द्विपक्षीय, क्षेत्रीय, महादेशीय अथवा वैश्विक
(द) केवल स्थानीय **(स)**

रिक्तस्थान –

1. सुरक्षा के अपारंपरिक खतरों से निपटने में .....सुरक्षा पर जोर दिया जाता है।

उत्तर : सहयोगमूलक

2. विश्व स्वास्थ्य संगठन एक ..... संगठन है।

उत्तर : अंतर्राष्ट्रीय

पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. शरणार्थी किसे कहते हैं? *(Model Paper-2025)*

उत्तर : युद्ध, प्राकृतिक आपदा अथवा राजनीतिक उत्पीड़न के कारण स्वदेश छोड़ने पर मजबूर व्यक्ति।

2. मानवाधिकारों को सामान्यतः कितनी कोटियों में बाँटा गया है? *(RBSE-2026)*

उत्तर : तीन कोटियों में।

3. आतंकवाद का आशय क्या है?

उत्तर : जान–बूझकर नागरिकों को निशाना बनाने वाला राजनीतिक खून–खराबा।

4. वैश्विक निर्धनता किस प्रकार का सुरक्षा–खतरा है?

उत्तर : अपारंपरिक सुरक्षा–खतरा।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. अप्रवासी और शरणार्थी में अंतर बताइए। *(RBSE-2023)*

उत्तर :
- आप्रवासी अपनी इच्छा से स्वदेश छोड़ता है।
- शरणार्थी मजबूरी में स्वदेश छोड़ता है।
- शरणार्थी के विस्थापन का कारण युद्ध, प्राकृतिक आपदा या राजनीतिक उत्पीड़न हो सकता है।
- सामान्यतः राज्य से शरणार्थियों को स्वीकार करने की उम्मीद की जाती है, जबकि आप्रवासियों को स्वीकारने की बाध्यता नहीं होती।

2. आतंकवाद को अपारंपरिक सुरक्षा–खतरे के रूप में समझाइए। *(RBSE-2026)*

उत्तर :
- आतंकवाद का आशय राजनीतिक खून–खराबे से है।
- इसमें जान–बूझकर नागरिकों को निशाना बनाया जाता है।
- आतंकवादी बल–प्रयोग या उसकी धमकी से राजनीतिक स्थिति बदलना चाहते हैं।
- विमान–अपहरण और भीड़ भरी जगहों पर बम लगाना इसके चिर–परिचित रूप हैं।
- 11 सितम्बर 2001 का वर्ल्ड ट्रेड सेंटर हमला इसका प्रमुख उदाहरण है।

3. मानवाधिकारों की तीन कोटियों का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- पहली कोटि राजनीतिक अधिकारों की है।
- दूसरी कोटि आर्थिक और सामाजिक अधिकारों की है।
- तीसरी कोटि में उपनिवेशीकृत जनता तथा जातीय और मूलवासी अल्पसंख्यकों के अधिकार आते हैं।

4. वैश्विक निर्धनता सुरक्षा के लिए चुनौती क्यों है?

उत्तर :
- गरीब देशों में जनसंख्या की वृद्धि अधिक हो सकती है।
- प्रति व्यक्ति निम्न आय और तेज जनसंख्या वृद्धि गरीबी को बढ़ाती है।
- विश्व स्तर पर उत्तर और दक्षिण के देशों के बीच असमानता दिखाई देती है।
- गरीब इलाकों में सशस्त्र संघर्ष भी गंभीर समस्या बन सकते हैं।
- गरीबी लोगों को बेहतर आर्थिक अवसरों की तलाश में प्रवास के लिए प्रेरित करती है।

5. शरणार्थी और आंतरिक विस्थापन सुरक्षा से किस प्रकार जुड़े हैं?

उत्तर :
- युद्ध और सशस्त्र संघर्ष लोगों को जन्मभूमि छोड़ने के लिए मजबूर कर सकते हैं।
- राष्ट्रीय सीमा पार करने वाले मजबूर लोग शरणार्थी कहलाते हैं।
- राष्ट्रीय सीमा के भीतर विस्थापित लोग आंतरिक रूप से विस्थापित जन कहलाते हैं।
- व्यापक भय, आजीविका का नाश और पहचान का संकट विस्थापन का कारण बन सकते हैं।
- विश्व का शरणार्थी–मानचित्र संघर्ष–मानचित्र से निकटता से जुड़ा है।

6. महामारियाँ सुरक्षा के लिए वैश्विक चुनौती क्यों हैं?

उत्तर :
- महामारियाँ देशों की सीमाओं के पार तेजी से फैल सकती हैं।
- आप्रवास, व्यवसाय, पर्यटन और सैन्य–अभियान इनके फैलाव के माध्यम बनते हैं।
- एक देश की सफलता या असफलता दूसरे देशों के संक्रमण को प्रभावित कर सकती है।
- कुछ पुरानी महामारियों ने औषधि–प्रतिरोधक रूप धारण किया है।
- इससे अंतर्राष्ट्रीय सहयोग बढ़ाने की आवश्यकता सामने आती है।

7. सहयोगमूलक सुरक्षा की आवश्यकता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- अनेक अपारंपरिक खतरों का समाधान सैन्य–बल से संभव नहीं है।
- गरीबी, महामारी और शरणार्थियों की समस्या में सहयोग अधिक प्रभावी है।
- सहयोग द्विपक्षीय से वैश्विक स्तर तक हो सकता है।
- इसमें देशों के साथ अंतर्राष्ट्रीय और स्वयंसेवी संगठन भी भाग ले सकते हैं।
- इसका उद्देश्य सामूहिक रणनीति द्वारा सुरक्षा–खतरों का सामना करना है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. युद्ध, शरणार्थी और विस्थापन के परस्पर संबंध को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- सशस्त्र संघर्ष लोगों के जीवन और आजीविका को नष्ट कर सकते हैं।
- सर्वव्याप्त भय लोगों को जन्मभूमि छोड़ने के लिए मजबूर कर सकता है।
- सीमा पार करने वाले मजबूर लोग शरणार्थी बनते हैं।
- राष्ट्रीय सीमा में ही स्थान बदलने वाले आंतरिक रूप से विस्थापित जन कहलाते हैं।
- विश्व का शरणार्थी–मानचित्र संघर्ष–मानचित्र से लगभग मेल खाता है।
- इससे स्पष्ट है कि युद्ध और सशस्त्र संघर्ष बड़े पैमाने पर विस्थापन पैदा करते हैं।

2. सहयोगमूलक सुरक्षा की अवधारणा एवं उसके प्रमुख पक्षों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर :
- अपारंपरिक खतरों से निपटने में केवल सैन्य–संघर्ष पर्याप्त नहीं है।
- अंतर्राष्ट्रीय सहयोग से रणनीतियाँ तैयार करना अधिक प्रभावी माना गया है।
- सहयोग द्विपक्षीय, क्षेत्रीय, महादेशीय अथवा वैश्विक हो सकता है।
- इसमें संयुक्त राष्ट्रसंघ, विश्व स्वास्थ्य संगठन और विश्व बैंक जैसे संगठन शामिल हो सकते हैं।
- स्वयंसेवी संगठन, व्यावसायिक संगठन और जानी–मानी हस्तियाँ भी भाग ले सकती हैं।
- अंतिम उपाय के रूप में बल–प्रयोग सामूहिक स्वीकृति और सामूहिक रूप में किया जा सकता है।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर खतरों के नए स्रोत कौन–कौन से हो सकते हैं? वर्तमान सन्दर्भों को सम्मिलित करते हुए वर्णन कीजिए। *(Model Paper-2026)*

उत्तर :
- आतंकवाद नागरिकों को जान–बूझकर निशाना बनाने वाला राजनीतिक खून–खराबा है।
- मानवाधिकारों का हनन अंतर्राष्ट्रीय बिरादरी के सामने हस्तक्षेप का प्रश्न खड़ा करता है।
- वैश्विक निर्धनता देशों और सामाजिक समूहों के बीच असमानता बढ़ाती है।
- युद्ध और उत्पीड़न से शरणार्थी तथा आंतरिक विस्थापन की समस्या उत्पन्न होती है।
- एचआईवी–एड्स, बर्ड फ्लू और सार्स जैसी महामारियाँ देशों के बीच तेजी से फैल सकती हैं।
- प्राकृतिक आपदाएँ मानवीय अस्तित्व और जीवन–यापन के साधनों को प्रभावित कर सकती हैं।
- वैश्विक तापवृद्धि समुद्र–तल बढ़ने जैसे गंभीर खतरों को जन्म दे सकती है।
- इन खतरों की वैश्विक प्रकृति के कारण अंतर्राष्ट्रीय सहयोग आवश्यक हो जाता है।

2. अपारंपरिक खतरों और बढ़ती वैश्विक पारस्परिक निर्भरता के संबंध की विवेचना कीजिए।

उत्तर :
- आतंकवाद एक से अधिक देशों और उनके नागरिकों को प्रभावित कर सकता है।
- महामारियाँ राष्ट्रीय सीमाओं को पार कर तेजी से फैल सकती हैं।
- आप्रवास, व्यवसाय, पर्यटन और सैन्य–अभियान संक्रमण को फैलाने के माध्यम बन सकते हैं।
- एक देश की स्वास्थ्य संबंधी सफलता या असफलता दूसरे देशों को प्रभावित करती है।
- युद्धों से पैदा शरणार्थी कई देशों की सुरक्षा और राजनीति को प्रभावित कर सकते हैं।
- वैश्विक निर्धनता बेहतर अवसरों की तलाश में अंतर्राष्ट्रीय प्रवास बढ़ाती है।
- वैश्विक तापवृद्धि जैसे खतरे किसी एक देश से नियंत्रित नहीं हो सकते।
- ये सभी स्थितियाँ देशों के बीच बढ़ती पारस्परिक निर्भरता और सहयोग की आवश्यकता दर्शाती हैं।

3. मानवाधिकारों के उल्लंघन और अंतर्राष्ट्रीय हस्तक्षेप संबंधी बहस को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- मानवाधिकारों की राजनीतिक, आर्थिक–सामाजिक तथा अन्य अधिकारों की कोटियाँ बताई गई हैं।
- मानवाधिकारों के उल्लंघन को सुरक्षा से जोड़कर देखा जाने लगा है।
- रवांडा में जनसंहार जैसी घटनाओं से हस्तक्षेप की बहस तेज हुई।
- कुवैत पर इराक के हमले ने भी अंतर्राष्ट्रीय प्रतिक्रिया का प्रश्न उठाया।
- पूर्वी तिमूर में रक्तपात ने मानवाधिकार संरक्षण पर बहस को बढ़ाया।
- एक मत के अनुसार संयुक्त राष्ट्रसंघ मानवाधिकारों की रक्षा के लिए कार्रवाई कर सकता है।
- दूसरा मत मानता है कि ताकतवर देशों के हित कार्रवाई को प्रभावित कर सकते हैं।
- इसलिए मानवाधिकार और अंतर्राष्ट्रीय हस्तक्षेप का प्रश्न विवादग्रस्त बना हुआ है।

4. वैश्विक निर्धनता, प्रवास और महामारियों को सुरक्षा–खतरे के रूप में समझाइए।

उत्तर :
- वैश्विक निर्धनता देशों और सामाजिक समूहों के बीच गहरी असमानता पैदा करती है।
- प्रति व्यक्ति निम्न आय और तेज जनसंख्या वृद्धि गरीबी को और बढ़ा सकती है।

मिशन ज्ञान
पढ़ना सब चाहें, जहाँ चाहें जैसे चाहें!

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

- बेहतर आर्थिक अवसरों की खोज में लोग दूसरे देशों की ओर प्रवास करते हैं।
- युद्ध और उत्पीड़न से लोग शरणार्थी बनने के लिए मजबूर होते हैं।
- विस्थापन लोगों की आजीविका, पहचान और जीवन–परिवेश को प्रभावित करता है।
- महामारियाँ व्यापार, पर्यटन और आप्रवास के जरिए सीमा–पार फैलती हैं।
- औषधि–प्रतिरोधक महामारियाँ उपचार को अधिक कठिन बना सकती हैं।
- इन समस्याओं के समाधान के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग आवश्यक है।

भारत : सुरक्षा की रणनीतियाँ

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. भारत की सुरक्षा–नीति में सैन्य–क्षमता मजबूत करने की आवश्यकता मुख्यतः क्यों पड़ी?

(अ) पड़ोसी देशों से हमलों के कारण
(ब) केवल व्यापार बढ़ाने के लिए
(स) केवल पर्यटन के लिए
(द) केवल चुनावों के कारण **(अ)**

2. 1998 के परमाणु परीक्षणों को भारतीय सरकार ने किस आधार पर उचित ठहराया?

(अ) कृषि विकास (ब) राष्ट्रीय सुरक्षा
(स) पर्यटन (द) शिक्षा **(ब)**

3. जवाहरलाल नेहरू ने निम्न में से किसका समर्थन किया?

(अ) विउपनिवेशीकरण
(ब) हथियारों की अनियंत्रित दौड़
(स) सैन्य गुटबंदी
(द) उपनिवेशवाद **(अ)**

4. भारत ने 1997 के किस समझौते पर हस्ताक्षर किए?

(अ) क्योटो प्रोटोकॉल (ब) ABM
(स) SALT II (द) START **(अ)**

5. भारत ने राष्ट्रीय एकता बनाए रखने के लिए किस व्यवस्था का पालन किया है?

(अ) लोकतांत्रिक राजनीतिक व्यवस्था
(ब) सैन्य शासन
(स) औपनिवेशिक शासन
(द) एकाधिकारवादी शासन **(अ)**

रिक्तस्थान –

1. भारत ने सन् ..... में पहला परमाणु परीक्षण किया। (Model Paper-2023)

उत्तर : 1974

2. दो महाशक्तियों की खेमेबाजी से अलग भारत ने ..... का विकल्प सामने रखा।

उत्तर : गुटनिरपेक्षता

3. भारत ने संयुक्त राष्ट्रसंघ के ..... मिशनों में अपनी सेना भेजी है।

उत्तर : शांतिबहाली

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. जवाहरलाल नेहरू ने अंतर्राष्ट्रीय संघर्षों में किसे अंतिम पंच मानने पर जोर दिया?

उत्तर : संयुक्त राष्ट्रसंघ को।

2. भारत में किन क्षेत्रों में उग्रवादी समूहों ने अलगाव की कोशिश की?

उत्तर : नगालैंड, मिजोरम, पंजाब और कश्मीर में।

3. भारत की आर्थिक सुरक्षा रणनीति का प्रमुख उद्देश्य क्या रहा?

उत्तर : गरीबी और अभाव कम करना तथा आर्थिक असमानता को नियंत्रित करना।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. भारत की सुरक्षा रणनीति के दो घटक बताइए।

(Model Paper-2023, Model Paper-2025)

उत्तर :
- पहला प्रमुख घटक सैन्य–क्षमता को मजबूत करना है।
- इसका कारण पड़ोसी देशों से हुए सैन्य हमले रहे हैं।
- दूसरा प्रमुख घटक अंतर्राष्ट्रीय कायदों और संस्थाओं को मजबूत करना है।
- इसके अंतर्गत भारत ने निरस्त्रीकरण, संयुक्त राष्ट्रसंघ और सहयोगमूलक सुरक्षा की पहलकदमियों का समर्थन किया।

2. भारत की सुरक्षा रणनीति में सैन्य–क्षमता के महत्त्व को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- भारत को पड़ोसी देशों के सैन्य हमलों का सामना करना पड़ा है।
- पाकिस्तान ने 1947–48, 1965, 1971 और 1999 में हमला किया।
- चीन ने 1962 में भारत पर हमला किया।

- भारत ने 1974 में पहला परमाणु परीक्षण किया।
- 1998 के परमाणु परीक्षणों को राष्ट्रीय सुरक्षा के तर्क से उचित ठहराया गया।

3. भारत ने आंतरिक सुरक्षा की चुनौतियों का सामना किस प्रकार किया?

उत्तर :
- नगालैंड, मिजोरम, पंजाब और कश्मीर में अलगाववादी गतिविधियाँ सामने आईं।
- भारत ने राष्ट्रीय एकता बनाए रखने का प्रयास किया।
- इसके लिए लोकतांत्रिक राजनीतिक व्यवस्था का पालन किया गया।
- विभिन्न समुदायों और जनसमूहों को शिकायतें रखने का अवसर मिला।
- उन्हें सत्ता में भागीदारी का अवसर भी उपलब्ध कराया गया।

4. भारत की सुरक्षा में आर्थिक विकास का क्या महत्त्व है?

उत्तर :
- अर्थव्यवस्था को इस तरह विकसित करने का प्रयास हुआ कि गरीबी कम हो।
- नागरिकों को अभाव से निजात दिलाने पर जोर दिया गया।
- आर्थिक असमानता को अत्यधिक बढ़ने से रोकने का प्रयास किया गया।
- लोकतंत्र गरीब और वंचित नागरिकों को अपनी आवाज उठाने का अवसर देता है।
- आर्थिक संवृद्धि को मानवीय विकास का सहगामी बनाने पर दबाव रहता है।

5. भारत की हथियार–अप्रसार संबंधी नीति को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- भारत ने हथियारों के अप्रसार में सार्वभौम नीति की हिमायत की।
- नीति को बिना भेदभाव वाला बनाने पर जोर दिया गया।
- सभी देशों के लिए समान अधिकारों की बात की गई।
- सभी देशों के लिए समान दायित्वों की भी माँग की गई।
- यह सामूहिक संहार के परमाणु, जैविक और रासायनिक हथियारों से संबंधित थी।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. भारत की सुरक्षा रणनीति के अंतर्राष्ट्रीय पक्ष की व्याख्या कीजिए।

उत्तर :
- भारत ने अंतर्राष्ट्रीय कायदों और संस्थाओं को मजबूत करने पर जोर दिया।
- नेहरू ने एशियाई एकता और विउपनिवेशीकरण की हिमायत की।
- भारत ने निरस्त्रीकरण के प्रयासों का समर्थन किया।
- संयुक्त राष्ट्रसंघ को अंतर्राष्ट्रीय संघर्षों में महत्त्व देने पर जोर दिया गया।
- भारत ने गुटनिरपेक्षता के रूप में विश्व–शांति का तीसरा विकल्प प्रस्तुत किया।
- भारत ने क्योटो प्रोटोकॉल और संयुक्त राष्ट्रसंघ के शांतिबहाली मिशनों जैसी सहयोगमूलक पहलकदमियों का समर्थन किया।

2. भारत की आंतरिक एवं आर्थिक सुरक्षा रणनीतियों को समझाइए।

उत्तर :
- भारत के कुछ क्षेत्रों में उग्रवादी और अलगाववादी चुनौतियाँ सामने आईं।
- राष्ट्रीय एकता बनाए रखने के लिए लोकतांत्रिक राजनीतिक व्यवस्था अपनाई गई।
- विभिन्न समुदायों को शिकायतें खुलकर रखने का अवसर दिया गया।
- सत्ता में भागीदारी के अवसरों ने लोकतांत्रिक समाधान को मजबूत किया।
- अर्थव्यवस्था के विकास के माध्यम से गरीबी और अभाव कम करने का प्रयास किया गया।
- आर्थिक संवृद्धि को मानवीय विकास से जोड़कर जनता को अधिक सुरक्षा देने का प्रयास किया गया।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. भारत की सुरक्षा रणनीतियों का विस्तार से वर्णन कीजिए।

(Model Paper-2026)

उत्तर :
- भारत की सुरक्षा नीति का पहला घटक सैन्य–क्षमता को मजबूत करना रहा है।
- भारत ने 1974 और 1998 में परमाणु परीक्षण किए; 1998 के परीक्षणों को राष्ट्रीय सुरक्षा से जोड़ा गया।
- दूसरा घटक अंतर्राष्ट्रीय कायदों और संस्थाओं को मजबूत करना है।
- भारत ने निरस्त्रीकरण, सार्वभौम अप्रसार नीति और गुटनिरपेक्षता का समर्थन किया।
- तीसरा घटक आंतरिक सुरक्षा चुनौतियों और अलगाववादी गतिविधियों से निपटना है।
- भारत ने राष्ट्रीय एकता के लिए लोकतांत्रिक राजनीतिक व्यवस्था का पालन किया।

पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

- चौथा घटक गरीबी, अभाव और आर्थिक असमानता कम करने की दिशा में आर्थिक विकास है।
- इस प्रकार भारत की रणनीति में सैन्य, अंतर्राष्ट्रीय, लोकतांत्रिक और आर्थिक उपायों का समन्वय दिखाई देता है।

2. भारत की सुरक्षा रणनीति में सैन्य क्षमता और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की भूमिका का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- पड़ोसी देशों के हमलों के कारण भारत ने सैन्य–क्षमता मजबूत की।
- पाकिस्तान और चीन के साथ हुए सैन्य संघर्षों ने सुरक्षा नीति को प्रभावित किया।
- भारत ने 1974 में पहला और 1998 में पुनः परमाणु परीक्षण किया।
- 1998 के परीक्षणों को सरकार ने राष्ट्रीय सुरक्षा के आधार पर उचित ठहराया।
- भारत ने अंतर्राष्ट्रीय कायदों और संस्थाओं को मजबूत करने का समर्थन किया।
- निरस्त्रीकरण तथा बिना भेदभाव वाली अप्रसार नीति की हिमायत की गई।
- क्योटो प्रोटोकॉल तथा संयुक्त राष्ट्रसंघ के शांतिबहाली मिशनों का समर्थन किया गया।
- इससे भारत की रणनीति में सैन्य तैयारी और सहयोगमूलक सुरक्षा दोनों का समावेश दिखाई देता है।

3. लोकतंत्र और आर्थिक विकास भारत की सुरक्षा को किस प्रकार मजबूत करते हैं?

उत्तर :
- भारत ने आंतरिक सुरक्षा समस्याओं के समाधान में लोकतांत्रिक व्यवस्था को महत्त्व दिया।
- समुदायों और जनसमूहों को अपनी शिकायतें खुलकर रखने का अवसर मिला।
- नागरिकों को सत्ता में भागीदारी का अवसर दिया गया।
- इससे राष्ट्रीय एकता बनाए रखने में सहायता मिली।
- आर्थिक नीति में गरीबी और अभाव कम करने का प्रयास किया गया।
- आर्थिक असमानता को नियंत्रित करने की दिशा में भी प्रयास हुए।
- लोकतांत्रिक सरकार पर आर्थिक संवृद्धि को मानवीय विकास से जोड़ने का दबाव रहता है।
- इसलिए लोकतंत्र केवल राजनीतिक आदर्श नहीं बल्कि जनता को अधिक सुरक्षा देने का साधन भी है।



6 पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधन

वैश्विक राजनीति में पर्यावरण की चिंता क्यों?

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. ब्रंटलैंड रिपोर्ट 'अवर कॉमन फ्यूचर' कब प्रकाशित हुई? *(Model Paper-2024)*

(अ) 1957 (ब) 1987
(स) 1907 (द) 1917 **(ब)**

2. पृथ्वी सम्मेलन कब हुआ? *(Model Paper-2025)*

(अ) 1990 (ब) 1991
(स) 1992 (द) 1993 **(स)**

3. 1992 का पृथ्वी सम्मेलन किस देश में हुआ? *(RBSE-2022)*

(अ) अर्जेंटीना (ब) चिली
(स) पेरू (द) ब्राजील **(द)**

4. क्योटो प्रोटोकॉल का मुख्य विषय क्या था? *(RBSE-2023)*

(अ) ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन को कम करना
(ब) निशस्त्रीकरण पर बल
(स) आतंकवाद का विरोध
(द) अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में वृद्धि **(अ)**

5. रियो सम्मेलन का मुख्य मुद्दा क्या था? *(RBSE-2024)*

(अ) सैन्य शक्ति पर बल
(ब) पर्यावरण और विकास
(स) शांति सहयोग
(द) आतंकवाद से निपटना **(ब)**

6. वैश्विक तापवृद्धि में किस गैस की भूमिका नहीं है? *(RBSE-2026)*

(अ) कार्बन डाइऑक्साइड
(ब) ऑक्सीजन
(स) मीथेन
(द) हाइड्रो–फ्लोरो कार्बन **(ब)**

7. आर्थिक विकास के कारण पर्यावरण पर होने वाले असर की चिंता ने कब से राजनीतिक चरित्र ग्रहण किया?

(अ) 1959 के बाद (ब) 1960 के दशक के बाद
(स) 1972 के बाद (द) 1992 के बाद **(ब)**

8. 'क्लब ऑफ रोम' क्या था?

(अ) एक विद्वत् समूह (ब) बहुराष्ट्रीय निगम
(स) मूलवासी संगठन (द) वन–आंदोलन **(अ)**

9. रियो सम्मेलन में उत्तरी देशों की मुख्य चिंता किसको लेकर थी?

(अ) ओजोन परत में छेद और वैश्विक तापवृद्धि
(ब) नदियों के प्रबंधन और खनन
(स) पावन वन–प्रांतर और वन–नीति
(द) मूलवासी पहचान और भूमि **(अ)**

10. दक्षिणी देश किस संबंध को सुलझाने के लिए अधिक चिंतित थे?

(अ) युद्ध और शांति
(ब) आर्थिक विकास और पर्यावरण प्रबंधन
(स) समुद्री नौवहन और व्यापार
(द) सैन्य शक्ति और संसाधन **(ब)**

11. 'एजेंडा–21' की आलोचना किस आधार पर की गई?

(अ) इसका झुकाव आर्थिक वृद्धि की ओर माना गया
(ब) इसने औद्योगीकरण समाप्त करने की बात कही
(स) इसने समुद्री परिवहन बंद करने की बात कही
(द) इसने प्राकृतिक संसाधनों के प्रयोग पर पूर्ण रोक लगाई **(अ)**

रिक्तस्थान –

1. भारत ने वर्ष ..... में क्योटो प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर/अनुमोदन किया। *(Model Paper-2025)*

उत्तर : 2002

2. 'लिमिट्स टू ग्रोथ' पुस्तक ..... में प्रकाशित हुई।

उत्तर : 1972

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. क्योटो प्रोटोकॉल का लक्ष्य क्या था? *(Model Paper-2023)*

उत्तर : औद्योगिक देशों के ग्रीन हाऊस गैसों के उत्सर्जन को कम करना।

2. पृथ्वी सम्मेलन में किन्होंने भाग लिया? *(RBSE-2026)*

उत्तर : 170 देश, हजारों स्वयंसेवी संगठन तथा अनेक बहुराष्ट्रीय निगमों ने भाग लिया।

3. पर्यावरणीय समस्याएँ विश्व–राजनीति का हिस्सा क्यों बन जाती हैं?

उत्तर : क्योंकि अधिकांश पर्यावरणीय समस्याओं का समाधान कोई एक देश अकेले नहीं कर सकता।

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

4. 'लिमिट्स टू ग्रोथ' में किस खतरे की ओर संकेत किया गया?

उत्तर : बढ़ती जनसंख्या के संदर्भ में प्राकृतिक संसाधनों के विनाश के खतरे की ओर।

5. पर्यावरणीय समस्याओं पर सम्मेलन और अध्ययन को किस कार्यक्रम ने बढ़ावा दिया?

उत्तर : संयुक्त राष्ट्रसंघ पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP) सहित अंतर्राष्ट्रीय संगठनों ने।

6. रियो सम्मेलन में किन तीन क्षेत्रों से संबंधित नियमाचार निर्धारित हुए?

उत्तर : जलवायु–परिवर्तन, जैव–विविधता और वानिकी।

7. 'टिकाऊ विकास' का मूल अर्थ क्या है?

उत्तर : ऐसा आर्थिक वृद्धि का तरीका जिससे पर्यावरण को नुकसान न पहुँचे।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. क्योटो प्रोटोकॉल क्या है? *(Model Paper-2025)*

उत्तर :
- यह एक अंतर्राष्ट्रीय समझौता है।
- इसके अंतर्गत औद्योगिक देशों के लिए लक्ष्य निर्धारित किए गए।
- लक्ष्य ग्रीन हाऊस गैसों के उत्सर्जन को कम करना है।
- जापान के क्योटो में 1997 में इस पर सहमति बनी।

2. पर्यावरण संरक्षण में भारत के योगदान के दो बिंदु बताइए। *(RBSE-2024)*

उत्तर :
- भारत ने क्योटो प्रोटोकॉल का अनुमोदन किया।
- नेशनल ऑटो–फ्यूल पॉलिसी के अंतर्गत स्वच्छतर ईंधन अनिवार्य किया।
- ऊर्जा–संरक्षण अधिनियम, 2001 पारित किया।
- बिजली अधिनियम, 2003 में नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा दिया।

3. प्राकृतिक वनों का पर्यावरणीय महत्त्व बताइए।

उत्तर :
- प्राकृतिक वन जलवायु संतुलित रखने में मदद करते हैं।
- वे जलचक्र को संतुलित रखते हैं।
- उनमें पृथ्वी की जैव–विविधता का भंडार है।
- वन कटने से लोगों का विस्थापन और जैव–विविधता की हानि होती है।

4. ओजोन परत की कमी चिंता का विषय क्यों है?

उत्तर :
- ऊपरी वायुमंडल में ओजोन गैस की मात्रा घट रही है।
- इसे ओजोन परत में छेद होना कहा जाता है।
- इससे पारिस्थितिकी तंत्र पर खतरा है।
- इससे मनुष्य के स्वास्थ्य पर भी बड़ा खतरा है।

5. रियो सम्मेलन में उत्तरी और दक्षिणी देशों के पर्यावरणीय एजेंडे में क्या अंतर था?

उत्तर :
- उत्तरी देश धनी और विकसित देश थे।
- उनकी मुख्य चिंता ओजोन परत में छेद और वैश्विक तापवृद्धि थी।
- दक्षिणी देश गरीब और विकासशील देश थे।
- उनकी चिंता आर्थिक विकास और पर्यावरण प्रबंधन के संबंध को लेकर थी।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण संरक्षण के सम्बन्ध में भारत द्वारा किए गए प्रयासों पर प्रकाश डालिए। *(Model Paper-2026)*

उत्तर :
- भारत ने 2002 में क्योटो प्रोटोकॉल का अनुमोदन किया।
- नेशनल ऑटो–फ्यूल पॉलिसी द्वारा स्वच्छतर ईंधन को अनिवार्य किया।
- ऊर्जा–संरक्षण अधिनियम, 2001 द्वारा ऊर्जा के कारगर उपयोग को बढ़ावा दिया।
- बिजली अधिनियम, 2003 में नवीकरणीय ऊर्जा को प्रोत्साहन दिया।
- प्राकृतिक गैस और स्वच्छ कोयला प्रौद्योगिकी की ओर रुझान बढ़ाया।
- भारत ने 2 अक्तूबर 2016 को पेरिस जलवायु समझौते को अनुमोदित किया।

2. वैश्विक स्तर पर पर्यावरण की चिंता क्यों आवश्यक है? *(RBSE-2022, RBSE-2025)*

उत्तर :
- कृषि–योग्य भूमि नहीं बढ़ रही और उपजाऊ जमीन की उर्वरता घट रही है।
- चारागाह, मत्स्य–भंडार और जलाशयों की जलराशि घट रही है।
- स्वच्छ जल और साफ–सफाई की सुविधाओं का अभाव है।
- प्राकृतिक वनों की कटाई और जैव–विविधता की हानि हो रही है।
- ओजोन परत में कमी से पारिस्थितिकी तंत्र और मानव स्वास्थ्य पर खतरा है।
- समुद्रतटीय क्षेत्रों का प्रदूषण बढ़ रहा है।
- अधिकांश समस्याओं का समाधान एक देश अकेले नहीं कर सकता।

3. 1960 के दशक के बाद पर्यावरण वैश्विक राजनीति का महत्वपूर्ण मुद्दा कैसे बना?

उत्तर :
- आर्थिक विकास के पर्यावरणीय प्रभावों की चिंता ने राजनीतिक चरित्र ग्रहण किया।
- क्लब ऑफ रोम ने वैश्विक समस्याओं पर ध्यान केंद्रित किया।
- उसने 1972 में 'लिमिट्स टू ग्रोथ' प्रकाशित की।
- प्राकृतिक संसाधनों के विनाश की आशंका बताई।
- UNEP सहित संगठनों ने सम्मेलन आयोजित किए।
- पर्यावरणीय समस्याओं पर अध्ययन और पहलकदमी बढ़ी।
- इससे पर्यावरण वैश्विक राजनीति का महत्वपूर्ण मसला बन गया।

4. रियो पृथ्वी सम्मेलन के प्रमुख परिणाम बताइए।

उत्तर :
- सम्मेलन पर्यावरण और विकास पर केंद्रित था।
- पर्यावरण संबंधी वैश्विक सरोकारों को ठोस रूप मिला।
- जलवायु–परिवर्तन, जैव–विविधता और वानिकी के नियमाचार बने।
- एजेंडा–21 के रूप में विकास के तौर–तरीके सुझाए गए।
- आर्थिक वृद्धि और पर्यावरण संरक्षण के संबंध पर चर्चा हुई।
- टिकाऊ विकास के विचार पर सहमति बनी।
- इसके बावजूद उत्तर और दक्षिण के बीच मतभेद और कठिनाइयाँ बनी रहीं।

5. पर्यावरणीय समस्याओं के राजनीतिक स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- पर्यावरणीय नुकसान को रोकने के लिए सरकारी कार्रवाई जरूरी है।
- अनेक समस्याएँ राष्ट्रीय सीमाओं से आगे जाती हैं।
- एक देश इनका पूरा समाधान अकेले नहीं कर सकता।
- पर्यावरण को कौन नुकसान पहुँचाता है, यह राजनीतिक प्रश्न है।
- संरक्षण की जिम्मेदारी के बँटवारे पर मतभेद होते हैं।
- प्राकृतिक संसाधनों के इस्तेमाल के अधिकार पर संघर्ष होता है।
- इन प्रश्नों को देशों की ताकत और प्रभाव प्रभावित करते हैं।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. पृथ्वी सम्मेलन की पृष्ठभूमि, प्रमुख मुद्दों और परिणामों का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर :
- पर्यावरणीय चिंता ने 1960 के दशक के बाद राजनीतिक चरित्र ग्रहण किया।
- 1987 की ब्रंटलैंड रिपोर्ट ने विकास के चालू तरीकों की अस्थिरता पर चेतावनी दी।
- 1992 में रियो डी जनेरियो में पृथ्वी सम्मेलन हुआ।
- इसमें 170 देश, हजारों स्वयंसेवी संगठन और बहुराष्ट्रीय निगम शामिल हुए।
- उत्तर और दक्षिण के अलग–अलग पर्यावरणीय एजेंडे सामने आए।
- जलवायु–परिवर्तन, जैव–विविधता और वानिकी पर नियमाचार बने।
- एजेंडा–21 के रूप में विकास के तरीके सुझाए गए।
- पर्यावरण को नुकसान न पहुँचाने वाली वृद्धि को टिकाऊ विकास कहा गया।
- सम्मेलन के बाद भी इसके क्रियान्वयन को लेकर मतभेद बने रहे।

2. रियो सम्मेलन के संदर्भ में उत्तर–दक्षिण पर्यावरणीय मतभेद और टिकाऊ विकास की धारणा समझाइए।

उत्तर :
- उत्तरी गोलार्द्ध में मुख्यतः धनी और विकसित देश शामिल थे।
- दक्षिणी गोलार्द्ध में मुख्यतः गरीब और विकासशील देश थे।
- उत्तरी देशों की चिंता ओजोन परत और वैश्विक तापवृद्धि थी।
- दक्षिणी देश आर्थिक विकास और पर्यावरण प्रबंधन के संबंध से चिंतित थे।
- सम्मेलन ने विकास और पर्यावरण के बीच संतुलन की आवश्यकता स्वीकार की।
- पर्यावरण को नुकसान न पहुँचाने वाली वृद्धि को टिकाऊ विकास कहा गया।
- एजेंडा–21 में विकास के कुछ तरीके सुझाए गए।
- आलोचकों ने एजेंडा–21 का झुकाव आर्थिक वृद्धि की ओर माना।
- इस प्रकार टिकाऊ विकास के क्रियान्वयन का प्रश्न विवादित बना रहा।

विश्व की साझी संपदा की सुरक्षा

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. अंटार्कटिका संधि किस वर्ष हुई?

(अ) 1959 (ब) 1987
(स) 1991 (द) 1997 **(अ)**

2. अंटार्कटिका पर्यावरणीय न्यायाचार किस वर्ष हुआ?

(अ) 1987 (ब) 1991
(स) 1992 (द) 1997 **(ब)**

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. मानवता की साझी विरासत में क्या शामिल है?

(RBSE-2022)

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

उत्तर : वायुमंडल, अंटार्कटिका, समुद्री सतह और बाहरी अंतरिक्ष।

2. क्रिल मछली का अंटार्कटिक पारिस्थितिकी–तंत्र में क्या महत्त्व है?

उत्तर : यह समुद्री आहार श्रृंखला की धुरी है।

3. अंटार्कटिका विश्व की जलवायु में क्या भूमिका निभाता है?

उत्तर : यह विश्व की जलवायु को संतुलित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

4. अंटार्कटिका की हिमानी परत किसका सूचना–स्रोत है?

उत्तर : ग्रीन हाऊस गैसों के जमाव और पुराने वायुमंडलीय तापमान का।

5. 1959 के बाद अंटार्कटिका में गतिविधियाँ किन क्षेत्रों तक सीमित रहीं?

उत्तर : वैज्ञानिक अनुसंधान, मत्स्य आखेट और पर्यटन तक।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. वैश्विक संपदा अथवा मानवता की साझी विरासत क्या है? *(Model Paper-2026)*

उत्तर :
- ये क्षेत्र किसी एक देश के संप्रभु क्षेत्राधिकार से बाहर होते हैं।
- इनका प्रबंधन अंतर्राष्ट्रीय समुदाय द्वारा साझे तौर पर होता है।
- पृथ्वी का वायुमंडल और अंटार्कटिका इसमें शामिल हैं।
- समुद्री सतह और बाहरी अंतरिक्ष भी इसके भाग हैं।

2. अंटार्कटिका पर स्वामित्व का मसला विवादास्पद क्यों है? *(RBSE-2025)*

उत्तर :
- कुछ देशों ने अंटार्कटिका पर संप्रभु अधिकार का दावा किया।
- इनमें ब्रिटेन, अर्जेन्टीना, चिले, नार्वे, फ्रांस, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड शामिल हैं।
- अन्य अधिकांश देशों ने इसे विश्व की साझी संपदा माना।
- इस कारण अंटार्कटिका के क्षेत्राधिकार को लेकर मतभेद बना।

3. वैश्विक संपदा की सुरक्षा में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग कठिन क्यों है?

उत्तर :
- पारिस्थितिकी संबंधी मुद्दों में वैज्ञानिक साक्ष्यों पर मतभेद होते हैं।
- वैज्ञानिक साक्ष्य कई बार अपुष्ट होते हैं।
- समस्या की समय–सीमा पर सहमति नहीं बनती।
- इसलिए सर्व–सामान्य पर्यावरणीय एजेंडा तय करना कठिन होता है।

4. अंटार्कटिका के समुद्री पारिस्थितिकी–तंत्र की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर :
- इसका समुद्री पारिस्थितिकी–तंत्र अत्यंत उर्वर है।
- इसमें सूक्ष्म शैवाल, कवक और लाइकेन पाए जाते हैं।
- इसमें समुद्री स्तनधारी, मत्स्य और पक्षी पाए जाते हैं।
- क्रिल मछली समुद्री आहार श्रृंखला की धुरी है।

5. सीमित मानवीय गतिविधियों के बावजूद अंटार्कटिका पर पर्यावरणीय दबाव कैसे पड़ा है?

उत्तर :
- गतिविधियाँ मुख्यतः अनुसंधान, मत्स्य आखेट और पर्यटन तक सीमित हैं।
- इसके बावजूद कुछ क्षेत्रों की पर्यावरणीय गुणवत्ता कम हुई है।
- अवशिष्ट पदार्थ पर्यावरण पर दबाव डाल रहे हैं।
- तेल का रिसाव इसका एक उदाहरण है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. वैश्विक संपदा की सुरक्षा से संबंधित प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय प्रयास बताइए।

उत्तर :
- वैश्विक संपदा किसी एक देश के क्षेत्राधिकार से बाहर है।
- इसके प्रबंधन के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग आवश्यक है।
- अंटार्कटिका संधि, 1959 एक महत्वपूर्ण प्रयास है।
- मांट्रियल न्यायाचार, 1987 भी महत्वपूर्ण समझौता है।
- अंटार्कटिका पर्यावरणीय न्यायाचार, 1991 अपनाया गया।
- अंटार्कटिका के लिए विशेष पर्यावरण–सुरक्षा नियम बनाए गए।
- वैज्ञानिक मतभेदों के कारण समान पर्यावरणीय एजेंडा बनाना कठिन बना हुआ है।

2. वैश्विक संपदा के रूप में बाहरी अंतरिक्ष से संबंधित समस्याएँ बताइए।

उत्तर :
- बाहरी अंतरिक्ष किसी एक देश के संप्रभु क्षेत्राधिकार में नहीं आता।
- इसके प्रबंधन पर उत्तर–दक्षिण की असमानता का प्रभाव पड़ा है।
- मुख्य प्रश्न प्रौद्योगिकी और औद्योगिक विकास का है।
- अंतरिक्ष में विभिन्न प्रकार के दोहन–कार्य हो रहे हैं।
- वर्तमान पीढ़ी में लाभ सभी को बराबर नहीं मिलते।
- भावी पीढ़ियों के लिए भी लाभों का समान वितरण सुनिश्चित नहीं है।
- इसलिए इसका प्रबंधन वैश्विक सहयोग और समानता से जुड़ा प्रश्न है।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. 'विश्व की साझी संपदा' की अवधारणा तथा उसकी सुरक्षा की चुनौतियों का वर्णन कीजिए।

पढ़ें जब चाहें जहाँ चाहें जैसे चाहें!

उत्तर :
- वैश्विक संपदा किसी एक देश के संप्रभु क्षेत्राधिकार से बाहर होती है।
- इसका प्रबंधन अंतर्राष्ट्रीय समुदाय द्वारा साझे तौर पर किया जाता है।
- वायुमंडल, अंटार्कटिका, समुद्री सतह और बाहरी अंतरिक्ष इसके उदाहरण हैं।
- इनके संरक्षण के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग आवश्यक है।
- अंटार्कटिका संधि और मांट्रियल न्यायाचार जैसे समझौते किए गए।
- वैज्ञानिक प्रमाणों की अनिश्चितता सहयोग को कठिन बनाती है।
- पर्यावरणीय समस्याओं की समय–सीमा को लेकर मतभेद होते हैं।
- उत्तर–दक्षिण की प्रौद्योगिकीय असमानता भी समस्या है।
- इसलिए सर्व–सामान्य पर्यावरणीय एजेंडा पर सहमति बनाना कठिन है।

2. वैश्विक संपदा के प्रबंधन में विज्ञान, प्रौद्योगिकी और उत्तर–दक्षिण असमानता की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- पर्यावरणीय मुद्दों में वैज्ञानिक साक्ष्यों को लेकर मतभेद होते हैं।
- समस्या की समय–सीमा पर भी मतभेद बने रहते हैं।
- इससे साझा पर्यावरणीय एजेंडा बनाना कठिन होता है।
- बाहरी अंतरिक्ष में प्रमुख प्रश्न प्रौद्योगिकी और औद्योगिक विकास का है।
- उत्तरी और दक्षिणी देशों की क्षमताओं में असमानता है।
- अंतरिक्ष में होने वाले दोहन के लाभ समान नहीं हैं।
- वर्तमान पीढ़ी के सभी लोगों को बराबर लाभ नहीं मिलता।
- भावी पीढ़ियों को भी समान लाभ मिलने की गारंटी नहीं है।
- इसलिए वैश्विक संपदा का प्रबंधन समानता और सहयोग की माँग करता है।

साझी संपदा

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. राजस्थान में पावन वन–प्रांतर के लिए कौन–सा नाम प्रयुक्त होता है?

(अ) काव (ब) लिंगदोह
(स) वानी, केंकड़ी और ओरान
(द) देव रहतिस **(स)**

2. पावन वन–प्रांतरों के संरक्षण का मूल आधार क्या था?

(अ) संसाधनों की विरलता
(ब) प्रकृति के प्रति गहरी श्रद्धा
(स) औद्योगिक विकास
(द) अंतर्राष्ट्रीय समझौते **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. मेघालय में पावन वन–प्रांतर को ..... कहा जाता है।

उत्तर : लिंगदोह

2. केरल में पावन वन–प्रांतर का नाम ..... है।

उत्तर : काव

3. महाराष्ट्र में पावन वन–प्रांतर को ..... कहा जाता है।

उत्तर : देव रहतिस

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. विश्व की साझी संपदा का आकार घटने के दो कारण बताइए। *(Model Paper-2023)*

उत्तर : निजीकरण और पारिस्थितिकी तंत्र की गिरावट।

2. साझी संपदा क्या है? *(Model Paper-2024)*

उत्तर : ऐसी संपदा जिस पर समूह के प्रत्येक सदस्य का स्वामित्व हो।

3. भारत में 'पावन वन–प्रांतर' का अर्थ क्या है? *(Model Paper-2025)*

उत्तर : ऐसे वन–प्रांतर जिन्हें धार्मिक–सांस्कृतिक मान्यताओं के कारण संरक्षित रखा जाता है।

4. झारखंड में पावन वन–प्रांतर को किन नामों से जाना जाता है?

उत्तर : जहेरा थान और सरना।

5. उत्तराखंड में पावन वन–प्रांतर को क्या कहा जाता है?

उत्तर : थान या देवभूमि।

6. पावन वन–प्रांतर में वनों के कुछ हिस्सों को क्यों नहीं काटा जाता?

उत्तर : क्योंकि वहाँ देवता अथवा किसी पुण्यात्मा का वास माना जाता है।

7. देवस्थान के प्रबंधन में प्रमुख स्वामित्व समस्या क्या है?

उत्तर : कानूनी स्वामित्व राज्य का और व्यावहारिक नियंत्रण समुदाय का हो सकता है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. साझी संपदा में अधिकार और उत्तरदायित्व की व्यवस्था समझाइए।

उत्तर :
- समूह के प्रत्येक सदस्य को समान अधिकार प्राप्त होते हैं।

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

- प्रत्येक सदस्य को समान उत्तरदायित्व निभाने होते हैं।
- संसाधन की प्रकृति और उपयोग सामूहिक व्यवस्था से जुड़े होते हैं।
- संसाधन का रख–रखाव भी समूह की सामूहिक जिम्मेदारी होती है।

2. भारत के ग्रामीण समुदायों में साझी संपदा की परंपरा का स्वरूप बताइए।

उत्तर :
- यह व्यवस्था सदियों के चलन से विकसित हुई।
- इसमें आपसी समझदारी महत्वपूर्ण रही।
- समुदाय ने सदस्यों के अधिकार निर्धारित किए।
- साथ ही उनके दायित्व भी तय किए गए।

3. देवस्थान जैव–विविधता एवं पारिस्थितिकी संरक्षण में कैसे सहायक हैं?

उत्तर :
- प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग संतुलित रूप में किया जाता है।
- इससे पारिस्थितिकी तंत्र का संतुलन बना रहता है।
- यह जैव–विविधता के संरक्षण में मदद कर सकता है।
- इससे सांस्कृतिक वैविध्य भी कायम रह सकता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. भारत में पावन वन–प्रांतर की अवधारणा का विश्लेषण कीजिए। *(RBSE-2026)*

उत्तर :
- पावन वन–प्रांतर प्रकृति–संरक्षण की प्राचीन सामुदायिक व्यवस्था हैं।
- इनके कुछ वन क्षेत्रों को काटा नहीं जाता।
- इनमें देवता अथवा पुण्यात्मा का वास माना जाता है।
- इनका प्रबंधन परंपरागत रूप से स्थानीय समुदाय करता है।
- ये पारिस्थितिकी संतुलन और जैव–विविधता में सहायक हैं।
- इनसे सांस्कृतिक वैविध्य बनाए रखने में भी मदद मिलती है।
- इनका आधार संसाधन–विरलता के बजाय प्रकृति के प्रति गहरी श्रद्धा है।

2. साझी संपदा के क्षय के कारण और परिणाम बताइए।

उत्तर :
- निजीकरण साझी संपदा को कम कर रहा है।
- गहनतर खेती से सामुदायिक संसाधनों पर दबाव बढ़ा है।
- आबादी की वृद्धि भी इसका कारण है।
- पारिस्थितिकी तंत्र की गिरावट से संसाधन प्रभावित हैं।
- पूरी दुनिया में साझी संपदा का आकार घट रहा है।
- इसकी गुणवत्ता कम हो रही है।
- गरीबों के लिए इसकी उपलब्धता भी घट रही है।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. साझी संपदा की अवधारणा, उसके प्रबंधन और वर्तमान संकट का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- साझी संपदा पर समूह के प्रत्येक सदस्य का स्वामित्व होता है।
- प्रत्येक सदस्य को समान अधिकार प्राप्त होते हैं।
- प्रत्येक सदस्य समान उत्तरदायित्व भी निभाता है।
- भारत में ग्रामीण समुदायों ने सदियों से ऐसी व्यवस्थाएँ विकसित की हैं।
- निजीकरण से साझी संपदा का आकार घट रहा है।
- गहनतर खेती और आबादी वृद्धि से संसाधनों पर दबाव बढ़ा है।
- पारिस्थितिकी तंत्र की गिरावट भी इसका कारण है।
- साझी संपदा की गुणवत्ता और उपलब्धता कम हो रही है।
- विशेष रूप से गरीबों के लिए इसकी उपलब्धता प्रभावित हुई है।

2. पावन वन–प्रांतरों के परंपरागत प्रबंधन के सामने आने वाली समस्याओं का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर :
- मानवीय बसाहट का विस्तार इन क्षेत्रों पर दबाव डाल रहा है।
- कई देवस्थानों पर धीरे–धीरे कब्जा हुआ है।
- नई राष्ट्रीय वन–नीतियों से उनकी परंपरागत पहचान कमजोर हुई है।
- कई स्थानों पर कानूनी स्वामित्व राज्य के पास है।
- व्यावहारिक नियंत्रण समुदाय के हाथों में होता है।
- दोनों के नीतिगत मानक अलग होते हैं।
- उपयोग के उद्देश्यों में भी मेल का अभाव हो सकता है।
- इससे परंपरागत सामुदायिक प्रबंधन कठिन होता है।
- परिणामस्वरूप साझी संपदा की संरक्षण व्यवस्था प्रभावित होती है।

पर्यावरण आंदोलन – एक या अनेक?

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. अनेक वन्यजीव संरक्षण अभियानों को किस संगठन ने सहायता दी?

(अ) UNEP
(ब) वर्ल्ड वाइल्ड लाइफ फंड
(स) क्लब ऑफ रोम
(द) वर्ल्ड काउंसिल ऑफ इंडिजिनस पीपल **(ब)**

2. विश्व का पहला बाँध–विरोधी आंदोलन किस देश में चला?

(अ) भारत (ब) ऑस्ट्रेलिया
(स) फिलीपिन्स (द) ब्राजील **(ब)**

3. भारत का सबसे प्रसिद्ध बाँध–विरोधी एवं नदी हितैषी आंदोलन कौन–सा है?
(अ) नर्मदा आंदोलन (ब) अंटार्कटिका आंदोलन
(स) क्योटो आंदोलन (द) रियो आंदोलन **(अ)**

रिक्तस्थान –

1. पहला बाँध–विरोधी आंदोलन ..... के दशक के शुरुआती और मध्यवर्ती वर्षों में चला।

उत्तर : 1980

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. पर्यावरण आंदोलन में सक्रिय कार्यकर्ता किन स्तरों पर काम करते हैं?

उत्तर : अंतर्राष्ट्रीय और स्थानीय स्तर पर।

2. खनिज उद्योग किसका भरपूर उपयोग करता है?

उत्तर : रसायनों का।

3. विश्व का पहला बाँध–विरोधी आंदोलन किस नदी से संबंधित था?

उत्तर : फ्रेंकलिन नदी।

4. बाँध–विरोधी आंदोलनों को अब किस रूप में भी देखा जाता है?

उत्तर : नदियों को बचाने के आंदोलनों के रूप में।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. खनिज उद्योगों से पर्यावरण को दो हानियाँ बताइए। *(RBSE-2023)*

उत्तर :
- खनिज उद्योग रसायनों का भरपूर उपयोग करता है।
- यह भूमि को प्रदूषित करता है।
- यह जलमार्गों को प्रदूषित करता है।
- इससे स्थानीय वनस्पतियों का विनाश होता है।

2. समकालीन पर्यावरण आंदोलनों की विविधता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- कुछ कार्यकर्ता अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सक्रिय हैं।
- अन्य कार्यकर्ता स्थानीय स्तर पर सक्रिय हैं।
- आंदोलनों में वन, खनन और बाँध–विरोध जैसे मुद्दे हैं।
- इन्हें जीवंत, विविधतापूर्ण और ताकतवर सामाजिक आंदोलन माना जाता है।

3. वन्यजीव एवं विजनपन से जुड़े अभियानों के उदाहरण दीजिए।

उत्तर :
- फिलीपिन्स में गरुड़ और शिकारी पक्षियों को बचाने की मुहिम चली।
- भारत में बंगाल–टाइगर को बचाने का अभियान चला।
- अफ्रीका में हाथीदाँत व्यापार और हाथियों की हत्या के खिलाफ अभियान चला।
- ब्राजील और इंडोनेशिया के जंगलों में विजनपन से जुड़े संघर्ष हुए।

4. वेस्टर्न माइनिंग कारपोरेशन का विरोध किन कारणों से हुआ?

उत्तर :
- फिलीपिन्स में विभिन्न समूहों ने कंपनी के खिलाफ अभियान चलाया।
- कंपनी का विरोध उसके स्वदेश ऑस्ट्रेलिया में भी हुआ।
- विरोध में परमाण्विक शक्ति की मुखालफत की भावना थी।
- ऑस्ट्रेलियाई आदिवासियों के बुनियादी अधिकारों की पैरोकारी भी कारण थी।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. विश्व के विभिन्न भागों में खनिज उद्योगों का विरोध क्यों होता है? *(RBSE-2026)*

उत्तर :
- खनिज उद्योग धरती के भीतर के संसाधनों को बाहर निकालता है।
- यह बड़ी मात्रा में रसायनों का उपयोग करता है।
- इससे भूमि और जलमार्ग प्रदूषित होते हैं।
- स्थानीय वनस्पतियों का विनाश होता है।
- स्थानीय जन–समुदायों को विस्थापित होना पड़ता है।
- खनिज उद्योग के कारण अनेक क्षेत्रों में आलोचना और विरोध हुआ।
- आदिवासी बुनियादी अधिकारों का प्रश्न भी विरोध से जुड़ा है।

2. पर्यावरण आंदोलनों की भूमिका और विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- अनेक पहल सरकारों के बजाय पर्यावरण–सचेत कार्यकर्ताओं ने की।
- कार्यकर्ता स्थानीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर सक्रिय हैं।
- पर्यावरण आंदोलन अत्यंत जीवंत हैं।
- इनकी प्रमुख विशेषता विविधता है।
- इन आंदोलनों ने राजनीतिक कार्रवाई के नए रूप विकसित किए।
- इनसे पर्यावरण के बारे में नए विचार निकले।
- इन्होंने वैयक्तिक और सामूहिक जीवन के लिए नई दृष्टि दी।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. समकालीन पर्यावरण आंदोलनों की विविधता को वन, खनिज और बाँध आंदोलनों के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- पर्यावरण आंदोलन स्थानीय से लेकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक सक्रिय हैं।

पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

- दक्षिणी देशों में वन–आंदोलन महत्वपूर्ण हैं।
- वन कटाई की तेज गति ने इन आंदोलनों को प्रेरित किया है।
- खनिज उद्योग के प्रदूषण और विस्थापन के विरुद्ध आंदोलन हुए।
- फिलीपिन्स में वेस्टर्न माइनिंग कारपोरेशन का विरोध इसका उदाहरण है।
- बड़े बाँधों के विरुद्ध बाँध–विरोधी आंदोलन विकसित हुए।
- फ्रैंकलिन नदी आंदोलन ने वन, विजनपन और नदी संरक्षण को जोड़ा।
- भारत में नर्मदा आंदोलन महत्वपूर्ण उदाहरण है।
- इन विविध आंदोलनों में पर्यावरण और सामाजिक न्याय के प्रश्न जुड़े हैं।

पर्यावरण आंदोलन – एक या अनेक?

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. वैश्विक रणनीति में लगातार सबसे महत्वपूर्ण संसाधन कौन–सा रहा है?

(अ) तेल (ब) पावन वन
(स) क्रिल (द) लाइकेन (अ)

रिक्तस्थान –

1. खाड़ी–क्षेत्र विश्व के कुल तेल–उत्पादन का लगभग ..... प्रतिशत मुहैया कराता है।

उत्तर : 30

2. दुनिया को परिवहन के लिए आवश्यक ऊर्जा का लगभग ..... प्रतिशत पेट्रोलियम से पूरा होता है।

उत्तर : 95

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. तेल को लेकर राजनीतिक संघर्ष क्यों होता है?

उत्तर : क्योंकि तेल के साथ विपुल संपदा और नियंत्रण जुड़ा है।

2. 'जलयुद्ध' शब्द किस स्थिति को इंगित करता है?

उत्तर : स्वच्छ जल–संसाधनों को लेकर संभावित हिंसक संघर्ष को।

3. जॉर्डन और यारमुक नदी के पानी को लेकर किन देशों में संघर्ष हुआ?

उत्तर : इजरायल, सीरिया और जॉर्डन।

4. फरात नदी पर बाँध को लेकर किन देशों के बीच मतभेद है?

उत्तर : तुर्की, सीरिया और इराक।

5. शीतयुद्ध के बाद संसाधनों के संबंध में सरकारों की मुख्य चिंता क्या है ?

उत्तर : संसाधनों की सुरक्षित आपूर्ति बनाए रखना।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. शीतयुद्ध के दौरान विकसित देशों ने संसाधनों की सतत् आपूर्ति के लिए कौन–से उपाय किए?

उत्तर :
- संसाधन–दोहन क्षेत्रों के आसपास सेना की तैनाती की।
- समुद्री परिवहन–मार्गों की सुरक्षा की।
- महत्वपूर्ण संसाधनों का भंडारण किया।
- उत्पादक देशों में मनपसंद सरकारों और हितसाधक समझौतों का समर्थन किया।

2. पश्चिम एशिया का तेल की दृष्टि से महत्त्व बताइए।

उत्तर :
- खाड़ी–क्षेत्र विश्व के तेल–उत्पादन का लगभग 30 प्रतिशत देता है।
- यहाँ ज्ञात तेल–भंडार का लगभग 64 प्रतिशत है।
- सऊदी अरब के पास विश्व के कुल तेल–भंडार का लगभग एक चौथाई है।
- इराक का ज्ञात तेल–भंडार सऊदी अरब के बाद दूसरे स्थान पर है।

3. संसाधनों की भू–राजनीति में समुद्री नौवहन का क्या महत्त्व रहा?

उत्तर :
- यूरोपीय शक्तियों के विस्तार में समुद्री नौवहन महत्वपूर्ण था।
- संसाधनों तक पहुँच विदेशों में उनकी मौजूदगी पर निर्भर थी।
- नौवहन स्वयं इमारती लकड़ी पर आधारित था।
- इसलिए जहाजों के लिए लकड़ी की आपूर्ति रणनीतिक प्राथमिकता बनी।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. संसाधनों की भू–राजनीति क्या है? *(Model Paper-2026)*

उत्तर :
- संसाधन यूरोपीय शक्तियों के विश्वव्यापी प्रसार का साधन और उद्देश्य रहे।
- संसाधनों को लेकर राज्यों के बीच तनातनी हुई।
- पश्चिमी दुनिया ने इसे व्यापार, युद्ध और ताकत से जोड़कर देखा।
- विदेशों में संसाधनों की मौजूदगी और समुद्री नौवहन महत्वपूर्ण रहे।
- तेल जैसे संसाधनों की निर्बाध और सुरक्षित आपूर्ति रणनीतिक चिंता रही।
- संसाधनों पर पहुँच और नियंत्रण ने अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक संघर्षों को प्रभावित किया।

पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

निबंधात्मक प्रश्न –

1. संसाधनों की भू–राजनीति के ऐतिहासिक विकास का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- संसाधन यूरोपीय शक्तियों के विश्वव्यापी विस्तार के साधन और उद्देश्य रहे।
- पश्चिमी सोच में संसाधन व्यापार, युद्ध और ताकत से जुड़े रहे।
- समुद्री नौवहन के लिए इमारती लकड़ी महत्वपूर्ण थी।
- 17वीं सदी से लकड़ी की आपूर्ति यूरोपीय शक्तियों की प्राथमिकता बनी।
- विश्वयुद्धों ने तेल की निर्बाध आपूर्ति का महत्व स्पष्ट किया।
- शीतयुद्ध में विकसित देशों ने संसाधन क्षेत्रों की सैन्य सुरक्षा की।
- संसाधनों का भंडारण किया गया।
- उत्पादक देशों में अनुकूल सरकारों और समझौतों को समर्थन दिया गया।
- शीतयुद्ध के बाद प्रमुख चिंता सुरक्षित आपूर्ति बनाए रखना बनी रही।

2. पेट्रोलियम को वैश्विक राजनीति का केंद्रीय संसाधन क्यों माना जाता है?

उत्तर :
- विश्व अर्थव्यवस्था लंबे समय तक पेट्रोलियम पर निर्भर रही।
- परिवहन के लिए यह अत्यंत महत्वपूर्ण ऊर्जा–स्रोत है।
- औद्योगिक दुनिया पेट्रोलियम पर व्यापक रूप से निर्भर है।
- तेल के साथ विपुल संपदा जुड़ी है।
- नियंत्रण को लेकर राजनीतिक संघर्ष होते हैं।
- पेट्रोलियम का इतिहास अनेक युद्धों और संघर्षों से जुड़ा है।
- खाड़ी–क्षेत्र के पास विशाल तेल–भंडार हैं।
- सऊदी अरब और इराक जैसे देशों का रणनीतिक महत्त्व इससे बढ़ता है।
- दूर स्थित बड़े उपभोक्ता देशों की जरूरतें भी तेल को भू–राजनीतिक मुद्दा बनाती हैं।

मूलवासी और उनके अधिकार

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. संयुक्त राष्ट्रसंघ ने मूलवासियों की शुरुआती परिभाषा कब दी?

(अ) 1975 (ब) 1982
(स) 1992 (द) 2002 **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. चिली में ..... नामक मूलवासी रहते हैं। *(Model Paper-2024)*

उत्तर : मापुशे

2. वर्ल्ड काउंसिल ऑफ इंडिजिनस पीपल का गठन ..... में हुआ। (RBSE-2022)

उत्तर : 1975

3. पनामा नहर के पूरब में ..... नामक मूलवासी रहते हैं।

उत्तर : कुना

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. भारत में मूलवासी किन्हें कहा जाता है? *(RBSE-2024)*

उत्तर : अनुसूचित जनजाति अथवा आदिवासी।

2. मूलवासी अपने मूल वासस्थान पर दावेदारी के लिए कौन–सा जुमला प्रयोग करते हैं?

उत्तर : "हम यहाँ अनंत काल से रहते चले आ रहे हैं।"

3. मूलवासियों के लिए भूमि की हानि का क्या अर्थ है?

उत्तर : आर्थिक संसाधनों के आधार की हानि।

4. भारत की अधिकांश आदिवासी जनता किस पर निर्भर है?

उत्तर : खेती पर।

5. मूलवासियों की विश्व–राजनीतिक आवाज किस उद्देश्य से उठी?

उत्तर : विश्व–बिरादरी में बराबरी का दर्जा पाने के लिए।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. मूलवासी से क्या समझते हैं? *(Model Paper-2023)*

उत्तर :
- वे ऐसे लोगों के वंशज हैं जो किसी देश में बहुत दिनों से रहते आए हैं।
- बाद में दूसरी संस्कृति या जातीय मूल के लोगों ने उन्हें अधीन बनाया।
- वे अपनी परंपराओं और सांस्कृतिक रिवाजों को महत्व देते हैं।
- वे अपने विशिष्ट सामाजिक और आर्थिक ढर्रे पर जीवन जीना पसंद करते हैं।

2. मूलवासी विश्व के किन क्षेत्रों में पाए जाते हैं?

उत्तर :
- मध्य और दक्षिण अमरीका में।
- अफ्रीका और दक्षिणपूर्व एशिया में।
- भारत में आदिवासी या जनजातियों के रूप में।
- ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड तथा ओसियाना के द्वीपीय देशों में।

3. मूलवासियों के लिए भूमि का क्या महत्त्व है?

उत्तर :
- भूमि उनके आर्थिक संसाधनों का आधार है।
- उनकी विभिन्न जीवन–प्रणालियाँ भूमि से जुड़ी हैं।

पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

- भूमि की हानि उनके जीवन के लिए बड़ा खतरा है।
- भूमि उनके मूल वासस्थान के अधिकार से जुड़ी है।

4. भारत में आदिवासी समुदायों की आजीविका की स्थिति बताइए।

उत्तर :
- भारत में मूलवासियों को अनुसूचित जनजाति या आदिवासी कहा जाता है।
- वे कुल जनसंख्या का लगभग आठ प्रतिशत हैं।
- कुछ घुमन्तू जनजातियों को छोड़कर अधिकांश खेती पर निर्भर हैं।
- सदियों से वे उपलब्ध भूमि पर खेती करते आए हैं।

5. विकास परियोजनाओं का भारत के मूलवासी समुदायों पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर :
- उन्हें राजनीतिक प्रतिनिधित्व में संवैधानिक सुरक्षा मिली है।
- फिर भी देश के विकास का उन्हें अधिक लाभ नहीं मिला।
- विकास परियोजनाओं के कारण बड़ी संख्या में लोग विस्थापित हुए।
- विस्थापित लोगों में मूलवासी समुदाय का हिस्सा बहुत बड़ा रहा।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. विश्व–राजनीति में मूलवासियों के अधिकारों और माँगों का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- मूलवासी विश्व–बिरादरी में बराबरी का दर्जा चाहते हैं।
- वे अपनी स्वतंत्र सामुदायिक पहचान बनाए रखना चाहते हैं।
- वे अपने मूल वासस्थान पर अधिकार का दावा करते हैं।
- उनकी विश्वदृष्टि जमीन और जीवन–प्रणालियों से जुड़ी है।
- भूमि की हानि उनके आर्थिक संसाधनों के आधार की हानि है।
- वे अपनी परंपराओं, संस्कृति और विशिष्ट सामाजिक–आर्थिक ढर्रे को सुरक्षित रखना चाहते हैं।
- इसलिए उनका प्रश्न पर्यावरण, संसाधन और राजनीति को एक साथ जोड़ता है।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. विश्व स्तर पर मूलवासी अधिकार आंदोलन के विकास का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- लंबे समय तक मूलवासी अधिकारों के मुद्दे उपेक्षित रहे।
- 1970 के दशक में उनके नेताओं के बीच अंतर्राष्ट्रीय संपर्क बढ़ा।
- इससे साझा अनुभवों और चिंताओं को एक रूप मिला।
- 1975 में वर्ल्ड काउंसिल ऑफ इंडिजिनस पीपल की स्थापना हुई।
- परिषद् को संयुक्त राष्ट्रसंघ में परामर्शदायी दर्जा मिला।
- अन्य आदिवासी संगठनों को भी ऐसा दर्जा प्रदान किया गया।
- मूलवासियों ने अपनी स्वतंत्र पहचान की माँग उठाई।
- उन्होंने अपने मूल वासस्थान पर अधिकार पर जोर दिया।
- इस प्रक्रिया से मूलवासी अधिकारों की आवाज विश्व–राजनीति में मजबूत हुई।



7 वैश्वीकरण

वैश्वीकरण की अवधारणा

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. वैश्वीकरण में वस्तु, विचार और पूँजी का प्रवाह शामिल है– *(RBSE-2025)*

(अ) वस्तु प्रवाह (ब) विचार प्रवाह
(स) पूँजी प्रवाह (द) उपर्युक्त सभी **(द)**

2. वैश्वीकरण की अवधारणा की बुनियादी बात क्या है?

(अ) संघर्ष (ब) प्रवाह
(स) संरक्षणवाद (द) अलगाव **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. वैश्वीकरण के राजनीतिक, आर्थिक और ..... अवतार हैं।

उत्तर : सांस्कृतिक

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. वैश्वीकरण का अर्थ बताइए। *(RBSE-2024, RBSE-2026)*

उत्तर : विश्व के विभिन्न हिस्सों में विचार, पूँजी, वस्तु और लोगों के प्रवाह से उत्पन्न विश्वव्यापी पारस्परिक जुड़ाव।

2. वैश्वीकरण में प्रमुख रूप से किन चार प्रकार के प्रवाहों की चर्चा की गई है?

उत्तर : विचार, पूँजी, वस्तु और लोगों के प्रवाह।

3. वैश्वीकरण केवल आर्थिक परिघटना है या बहुआयामी अवधारणा?

उत्तर : वैश्वीकरण एक बहुआयामी अवधारणा है।

4. वैश्वीकरण से उत्पन्न निरंतर प्रवाहों की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता क्या है?

उत्तर : विश्वव्यापी पारस्परिक जुड़ाव।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. वैश्वीकरण को बहुआयामी अवधारणा क्यों कहा गया है?

उत्तर :
- इसमें विचारों का प्रवाह शामिल है।
- पूँजी और वस्तुओं की आवाजाही शामिल है।
- लोगों की आवाजाही भी शामिल है।
- राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक रूप हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. वैश्वीकरण में 'प्रवाह' और 'विश्वव्यापी पारस्परिक जुड़ाव' के संबंध को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- वैश्वीकरण की बुनियादी बात प्रवाह है।
- विचार विश्व के एक हिस्से से दूसरे हिस्से में पहुँचते हैं।
- पूँजी एक से अधिक स्थानों पर जाती है।
- वस्तुएँ अनेक देशों में पहुँचती और व्यापार का हिस्सा बनती हैं।
- बेहतर आजीविका की तलाश में लोगों की आवाजाही होती है।
- इन प्रवाहों की निरंतरता से विश्वव्यापी पारस्परिक जुड़ाव पैदा होता है।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. वैश्वीकरण की अवधारणा की प्रमुख विशेषताओं का विवेचन कीजिए।

उत्तर :
- वैश्वीकरण की बुनियादी विशेषता प्रवाह है।
- इसमें विश्व स्तर पर विचारों का प्रवाह होता है।
- इसमें एक से अधिक स्थानों के बीच पूँजी की आवाजाही होती है।
- वस्तुएँ विभिन्न देशों में पहुँचती हैं और उनका व्यापार होता है।
- बेहतर आजीविका के लिए लोगों की आवाजाही होती है।
- इन प्रवाहों से विश्वव्यापी पारस्परिक जुड़ाव पैदा होता है।
- वैश्वीकरण के राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक आयाम हैं।
- इसका प्रभाव विभिन्न समाजों और समूहों पर विषम रहता है।

2. वास्तविक जीवन के उदाहरणों के आधार पर वैश्वीकरण की जटिल प्रकृति स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- कॉल–सेंटर का काम सेवाओं के वैश्वीकरण को दर्शाता है।
- विदेशी वस्तुओं की खरीद–बिक्री वस्तुओं की आवाजाही दिखाती है।
- नए रोजगार अवसर बदलते जीवन–मूल्यों को प्रभावित करते हैं।
- बहुराष्ट्रीय कंपनियों से जुड़े महंगे बीज किसानों को प्रभावित कर सकते हैं।

मिशन ज्ञान
पढ़ना चाहे, जहाँ चाहे, जैसे चाहें!

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

- भारतीय कंपनी द्वारा विदेशी कंपनी की खरीद प्रभाव की दोतरफा दिशा दिखाती है।
- खुदरा दुकानदार बड़ी अंतर्राष्ट्रीय कंपनियों से अपनी रोजी–रोटी को लेकर चिंतित हो सकते हैं।
- फिल्मों तथा पहनावे पर भी वैश्विक संपर्क का प्रभाव दिखाई देता है।
- इसलिए वैश्वीकरण को केवल सकारात्मक अथवा आर्थिक प्रक्रिया नहीं माना जा सकता।

3. वैश्वीकरण के प्रभाव की विषमता को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- वैश्वीकरण का प्रभाव सभी देशों पर समान नहीं होता।
- कुछ समाज अन्य समाजों से अधिक प्रभावित होते हैं।
- एक ही समाज के कुछ हिस्सों पर प्रभाव अधिक पड़ सकता है।
- वैश्वीकरण के कुछ परिणाम सकारात्मक हो सकते हैं।
- इसके कुछ परिणाम नकारात्मक भी हो सकते हैं।
- प्रभाव हमेशा धनी देशों से गरीब देशों की ओर ही नहीं जाता।
- राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक प्रभावों में अंतर होता है।
- इसलिए वैश्वीकरण को समझते समय संदर्भ–विशेष पर ध्यान देना आवश्यक है।

वैश्वीकरण के कारण

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. किस प्रौद्योगिकी ने राष्ट्रवाद की आधारशिला रखी?
(Model Paper-2025)

(अ) टेलीग्राफ (ब) टेलीफोन
(स) माइक्रोचिप (द) छपाई (मुद्रण) तकनीक **(द)**

2. वैश्वीकरण में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका किसकी रही?
(RBSE-2025)

(अ) संचार व प्रौद्योगिकी
(ब) राजनीतिक दल
(स) सामाजिक संगठन
(द) धार्मिक संगठन **(अ)**

3. निम्न में से किसने विश्व के विभिन्न भागों के बीच संचार की क्रांति में योगदान दिया?

(अ) टेलीग्राफ (ब) टेलीफोन
(स) माइक्रोचिप (द) उपर्युक्त सभी **(द)**

रिक्तस्थान –

1. प्रौद्योगिकी वैश्वीकरण का एक ..... कारण साबित हुई है।

उत्तर : अपरिहार्य

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. वैश्वीकरण के लिए उत्तरदायी दो कारक बताइए।
(RBSE-2026)

उत्तर : प्रौद्योगिकी और संचार–साधनों की तरक्की।

2. समकालीन वैश्वीकरण की प्रमुख नई विशेषता क्या है?

उत्तर : प्रवाहों की तेज गति और व्यापक प्रसार।

3. लोगों की तुलना में कौन–से दो प्रवाह अधिक तेज और व्यापक हैं?

उत्तर : पूँजी और वस्तुओं का प्रवाह।

4. ऐसी एक घटना बताइए जो राष्ट्रीय सीमाओं में सिमटी नहीं रहती।

उत्तर : बर्ड फ्लू अथवा सुनामी।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. वैश्वीकरण में प्रौद्योगिकी का क्या योगदान है?
(Model Paper-2023)

उत्तर :
- प्रौद्योगिकी ने विश्व के विभिन्न भागों के बीच संचार की गति बढ़ाई।
- विचार, पूँजी, वस्तु और लोगों की आवाजाही आसान हुई।
- टेलीग्राफ, टेलीफोन और माइक्रोचिप ने संचार क्रांति को बढ़ावा दिया।
- विश्व के विभिन्न भागों के बीच पारस्परिक जुड़ाव तेज हुआ।

2. वैश्वीकरण के ऐतिहासिक आधार को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- विचार, पूँजी, वस्तु और लोगों की आवाजाही पहले भी होती रही है।
- ये प्रवाह मानव इतिहास के अधिकांश समय मौजूद रहे हैं।
- इसलिए वैश्वीकरण का एक मजबूत ऐतिहासिक आधार है।
- वर्तमान वैश्वीकरण को इन प्रवाहों के ऐतिहासिक संदर्भ में समझना चाहिए।

3. समकालीन वैश्वीकरण को पूर्ववर्ती प्रवाहों से अलग क्या बनाता है?

उत्तर :
- पुराने समय में भी विभिन्न प्रकार के प्रवाह मौजूद थे।
- आज इन प्रवाहों की गति अधिक तेज है।
- इनके प्रसार का धरातल अधिक व्यापक है।
- यही दोनों विशेषताएँ समकालीन वैश्वीकरण को अनूठा बनाती हैं।

4. संचार प्रौद्योगिकी के विकास का मनुष्य की सोच पर क्या प्रभाव पड़ सकता है?

उत्तर :
- प्रौद्योगिकी केवल संचार को तेज नहीं करती।
- यह हमारे सोचने के तरीके को प्रभावित करती है।

- यह स्वयं के बारे में हमारी समझ को बदल सकती है।
- यह सामूहिक जीवन के बारे में सोचने के ढंग पर प्रभाव डालती है।

5. विश्व के विभिन्न हिस्सों की परस्पर संबद्धता को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- लोग समझ रहे हैं कि विश्व के अलग–अलग हिस्से आपस में जुड़े हैं।
- एक क्षेत्र की घटना दूसरे क्षेत्रों को प्रभावित कर सकती है।
- बर्ड फ्लू और सुनामी राष्ट्रीय सीमाओं तक सीमित नहीं रहते।
- बड़ी आर्थिक घटनाओं का प्रभाव भी विश्व के विभिन्न भागों में महसूस होता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. केवल तकनीकी साधनों की उपलब्धता से वैश्वीकरण की व्याख्या क्यों पूरी नहीं होती?

उत्तर :
- प्रौद्योगिकी वैश्वीकरण का महत्त्वपूर्ण कारण है।
- लेकिन केवल संचार–साधनों की उपलब्धता पर्याप्त नहीं है।
- लोगों में यह समझ विकसित हुई है कि वे आपस में जुड़े हैं।
- एक क्षेत्र की घटना अन्य क्षेत्रों को प्रभावित करती है।
- बर्ड फ्लू और सुनामी जैसी घटनाएँ राष्ट्रीय सीमाओं में नहीं सिमटतीं।
- बड़ी आर्थिक घटनाओं का प्रभाव भी विश्व स्तर पर महसूस किया जाता है।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. वैश्वीकरण का अर्थ बताते हुए उसके कारणों की विवेचना कीजिए। *(RBSE-2023)*

उत्तर :
- वैश्वीकरण की बुनियादी बात विभिन्न प्रकार के प्रवाह हैं।
- इसमें विचार, पूँजी, वस्तु और लोगों की आवाजाही शामिल है।
- इन प्रवाहों से विश्वव्यापी पारस्परिक जुड़ाव पैदा होता है।
- वैश्वीकरण के लिए कोई एक कारण जिम्मेदार नहीं है।
- प्रौद्योगिकी इसका एक अपरिहार्य कारण है।
- टेलीग्राफ, टेलीफोन और माइक्रोचिप ने संचार क्रांति को बढ़ावा दिया।
- समकालीन वैश्वीकरण में प्रवाहों की गति और प्रसार बढ़ा है।
- लोगों में यह समझ विकसित हुई है कि विश्व के अलग–अलग हिस्सों की घटनाएँ एक–दूसरे को प्रभावित करती हैं।

2. समकालीन वैश्वीकरण की विशिष्टता और उसके ऐतिहासिक आधार की व्याख्या कीजिए।

उत्तर :
- विचार, पूँजी, वस्तु और लोगों का प्रवाह इतिहास में पहले भी रहा है।
- इसलिए वैश्वीकरण का मजबूत ऐतिहासिक आधार है।
- समकालीन वैश्वीकरण में प्रवाह स्वयं बिल्कुल नए नहीं हैं।
- नई विशेषता इन प्रवाहों की तेज गति है।
- इनके प्रसार का धरातल भी पहले से अधिक व्यापक है।
- तकनीकी विकास ने इन प्रवाहों को आसान बनाया है।
- संचार क्रांति ने विश्व के अलग–अलग हिस्सों को अधिक निकट जोड़ा है।
- इसी कारण वर्तमान वैश्वीकरण को ऐतिहासिक प्रवाहों से अलग विशिष्ट रूप मिला है।

3. विश्वव्यापी पारस्परिक जुड़ाव वैश्वीकरण को कैसे गति देता है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- संचार–साधनों की उपलब्धता मात्र वैश्वीकरण की पूरी व्याख्या नहीं करती।
- लोगों में यह समझ बढ़ी है कि वे परस्पर जुड़े हुए हैं।
- एक क्षेत्र की घटना दूसरे क्षेत्रों को प्रभावित कर सकती है।
- बर्ड फ्लू जैसी घटनाएँ राष्ट्रीय सीमाओं में सीमित नहीं रहतीं।
- सुनामी का प्रभाव भी अनेक क्षेत्रों में महसूस किया जा सकता है।
- बड़ी आर्थिक घटनाएँ अपने स्थानीय क्षेत्र से बाहर प्रभाव डालती हैं।
- इससे विश्व स्तर पर पारस्परिक निर्भरता की अनुभूति बढ़ती है।
- यही जागरूकता वैश्वीकरण की समकालीन प्रक्रिया को मजबूत करती है।

राजनीतिक प्रभाव, आर्थिक प्रभाव और सांस्कृतिक प्रभाव

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. बर्गर और नीली जीन्स की लोकप्रियता किस देश की जीवन–शैली से जुड़ी है? *(Model Paper-2026)*

(अ) रूस (ब) अमेरिका
(स) चीन (द) जापान **(ब)**

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

2. 'मैकडोनॉल्डीकरण' किस देश की ओर इंगित करता है? *(RBSE-2026)*

(अ) अमेरिका (ब) रूस
(स) भारत (द) पाकिस्तान **(अ)**

3. कल्याणकारी राज्य की जगह किस प्रकार के राज्य की धारणा बढ़ी है?

(अ) साम्राज्यवादी राज्य
(ब) न्यूनतम हस्तक्षेपकारी राज्य
(स) औपनिवेशिक राज्य
(द) निरंकुश राज्य **(ब)**

4. आर्थिक और सामाजिक प्राथमिकताओं का प्रमुख निर्धारक किसे माना जाने लगा है?

(अ) बाजार (ब) परिवार
(स) स्थानीय समुदाय (द) विद्यालय **(अ)**

5. आर्थिक वैश्वीकरण की चर्चा में किस अंतर्राष्ट्रीय संस्था का उल्लेख किया गया है?

(अ) अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष
(ब) इंडियन सोशल फोरम
(स) वर्ल्ड सोशल फोरम
(द) स्थानीय परिषद **(अ)**

6. आर्थिक रूप से कमजोर लोगों पर वैश्वीकरण के दुष्प्रभाव कम करने के उपाय को क्या कहा गया है?

(अ) संरक्षणवाद
(ब) सामाजिक सुरक्षा–कवच
(स) सांस्कृतिक समरूपता
(द) मैक्डोनॉल्डीकरण **(ब)**

7. वैश्वीकरण से संस्कृतियों के अधिक अलग और विशिष्ट होने की प्रक्रिया क्या कहलाती है?

(अ) सांस्कृतिक समरूपता
(ब) सांस्कृतिक वैभिन्नीकरण
(स) संरक्षणवाद
(द) पुनःउपनिवेशीकरण **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. विश्व–संस्कृति के नाम पर शेष विश्व पर ..... संस्कृति लादी जाने की आशंका व्यक्त की गई है।

उत्तर : पश्चिमी

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. आर्थिक वैश्वीकरण का एक लाभ लिखिए। *(Model Paper-2023)*

उत्तर : विश्व के विभिन्न देशों के बीच व्यापार में वृद्धि।

2. क्या वैश्वीकरण के बाद राज्य की राजनीतिक प्रधानता समाप्त हो गई है?

उत्तर : नहीं, राज्य आज भी राजनीतिक समुदाय का प्रमुख आधार बना हुआ है।

3. वैश्वीकरण के दौर में बहुराष्ट्रीय निगमों की भूमिका में क्या परिवर्तन हुआ?

उत्तर : बहुराष्ट्रीय निगमों की भूमिका बढ़ी है।

4. 'सामाजिक सुरक्षा–कवच' का उद्देश्य क्या है?

उत्तर : आर्थिक रूप से कमजोर लोगों पर वैश्वीकरण के दुष्प्रभाव कम करना।

5. आर्थिक वैश्वीकरण के समर्थकों के अनुसार 'खुलेपन' का क्या परिणाम है?

उत्तर : इससे अधिक आबादी की खुशहाली बढ़ती है।

6. सांस्कृतिक वैभिन्नीकरण का अर्थ क्या है?

उत्तर : वैश्वीकरण से प्रत्येक संस्कृति का अधिक अलग और विशिष्ट होना।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. वैश्वीकरण के कारण वस्तुओं और पूँजी की तुलना में लोगों का प्रवाह कम क्यों हुआ? *(RBSE-2026)*

उत्तर :
- वस्तुओं और पूँजी पर पहले की तुलना में कम प्रतिबंध हैं।
- विकसित देश लोगों की आवाजाही पर अधिक नियंत्रण रखते हैं।
- वे अपनी वीजा–नीति के जरिए सीमाओं को सतर्कता से नियंत्रित करते हैं।
- उन्हें आशंका रहती है कि बाहरी नागरिक उनके नागरिकों के नौकरी–धंधे न हथिया लें।

2. आर्थिक वैश्वीकरण में प्रमुख आर्थिक प्रवाहों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- देशों के बीच वस्तुओं का व्यापार बढ़ता है।
- पूँजी की अंतर्राष्ट्रीय आवाजाही तेज होती है।
- विचारों का प्रवाह राष्ट्रीय सीमाओं से अधिक मुक्त होता है।
- लोगों की आवाजाही भी होती है, लेकिन वस्तुओं और पूँजी जितनी नहीं।

3. वैश्वीकरण की आर्थिक नीतियों के परिणाम सभी जगह समान क्यों नहीं होते?

उत्तर :
- अनेक सरकारों ने एकसार आर्थिक नीतियाँ अपनाई हैं।
- अलग–अलग क्षेत्रों की परिस्थितियाँ समान नहीं हैं।
- इसलिए वैश्वीकरण के परिणाम विभिन्न क्षेत्रों में भिन्न रहे हैं।
- परिणामों का मूल्यांकन करते समय संदर्भ–विशेष पर ध्यान देना चाहिए।

मिशन ज्ञान
पहुँचना चाहें, जहाँ चलना जरूरी है!

3. आर्थिक वैश्वीकरण के समर्थकों के मुख्य तर्क लिखिए।

उत्तर :
- आर्थिक वैश्वीकरण से समृद्धि बढ़ती है।
- 'खुलेपन' से अधिक लोगों की खुशहाली बढ़ सकती है।
- बढ़ता व्यापार प्रत्येक देश को बेहतर प्रदर्शन का अवसर देता है।
- इसके समर्थक वैश्वीकरण को अपरिहार्य मानते हैं।

4. संस्कृति पर बाहरी प्रभाव हमेशा नकारात्मक क्यों नहीं होते?

उत्तर :
- संस्कृति कोई जड़ वस्तु नहीं है।
- हर संस्कृति बाहरी प्रभावों को स्वीकार करती रहती है।
- बाहरी प्रभाव कभी पसंद–नापसंद का दायरा बढ़ाते हैं।
- परंपरागत मूल्यों को छोड़े बिना भी संस्कृति का परिष्कार हो सकता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. वैश्वीकरण के राजनीतिक प्रभावों की विवेचना कीजिए। *(Model Paper-2026)*

उत्तर :
- वैश्वीकरण से राज्य की कुछ निर्णयकारी क्षमताओं में कमी आती है।
- कल्याणकारी राज्य की जगह न्यूनतम हस्तक्षेपकारी राज्य की धारणा बढ़ी है।
- आर्थिक और सामाजिक प्राथमिकताओं में बाजार की भूमिका बढ़ी है।
- बहुराष्ट्रीय निगमों की भूमिका बढ़ने से सरकारों की स्वतंत्र निर्णय क्षमता प्रभावित होती है।
- इसके बावजूद राज्य कानून–व्यवस्था और राष्ट्रीय सुरक्षा जैसे कार्यों में महत्त्वपूर्ण हैं।
- नई प्रौद्योगिकी ने सूचना जुटाने और कारगर ढंग से काम करने की राज्य की क्षमता बढ़ाई है।

2. वैश्वीकरण के सकारात्मक प्रभाव बताइए। *(RBSE-2024)*

उत्तर :
- विश्व स्तर पर वस्तुओं के व्यापार में वृद्धि हुई है।
- पूँजी की अंतर्राष्ट्रीय आवाजाही आसान हुई है।
- विचारों के प्रवाह के सामने राष्ट्रीय सीमाओं की बाधाएँ कम हुई हैं।
- समर्थकों के अनुसार आर्थिक खुलेपन से समृद्धि बढ़ती है।
- बढ़ते व्यापार से देशों को बेहतर प्रदर्शन का अवसर मिलता है।
- सरकार, व्यवसाय और लोगों के बीच जुड़ाव बढ़ा है।

3. वैश्वीकरण के आर्थिक प्रभाव बताइए। *(RBSE-2025)*

उत्तर :
- दुनिया के विभिन्न देशों के बीच आर्थिक प्रवाह तेज हुए हैं।
- वस्तुओं के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में वृद्धि हुई है।
- पूँजी की आवाजाही पर पहले की तुलना में कम प्रतिबंध रह गए हैं।
- निवेशकर्ता दूसरे देशों, विशेषकर विकासशील देशों में निवेश कर सकते हैं।
- आर्थिक लाभों का वितरण सभी समूहों में समान नहीं है।
- वैश्वीकरण से जुड़े लाभ और हानि को लेकर जनमत विभाजित है।

4. वैश्वीकरण के सांस्कृतिक प्रभाव बताइए। *(RBSE-2025)*

उत्तर :
- खान–पान, पहनावे और सोच पर वैश्वीकरण का प्रभाव दिखाई देता है।
- वैश्वीकरण सांस्कृतिक समरूपता को जन्म दे सकता है।
- प्रभुत्वशाली पश्चिमी और अमरीकी संस्कृति की छाप बढ़ सकती है।
- इससे समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर के कमजोर होने की आशंका व्यक्त की जाती है।
- बाहरी प्रभाव पसंद–नापसंद का दायरा भी बढ़ा सकते हैं।
- वैश्वीकरण से सांस्कृतिक वैभिन्नीकरण भी पैदा होता है।

5. आर्थिक वैश्वीकरण में अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं तथा अन्य खिलाड़ियों की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- आर्थिक वैश्वीकरण की चर्चा में अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष महत्त्वपूर्ण संस्था है।
- विश्व व्यापार संगठन भी आर्थिक नीतियों से जुड़ा है।
- आर्थिक वैश्वीकरण केवल इन संस्थाओं तक सीमित नहीं है।
- इसमें सरकारें, व्यवसाय और अन्य आर्थिक खिलाड़ी भी शामिल हैं।
- इसके तहत देशों के बीच विभिन्न आर्थिक प्रवाह तेज होते हैं।
- आर्थिक लाभों के बँटवारे को समझना भी आवश्यक है।

6. आर्थिक वैश्वीकरण को लेकर सामाजिक न्याय से जुड़ी चिंताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- सरकारों के कुछ जिम्मेदारियों से पीछे हटने पर चिंता व्यक्त की जाती है।
- आर्थिक वैश्वीकरण से सीमित तबके को अधिक लाभ मिलने की आशंका है।
- सरकार पर निर्भर गरीब लोग बदहाल हो सकते हैं।

पढ़ेगा इंडिया, तभी तो बढ़ेगा इंडिया।

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

- शिक्षा, स्वास्थ्य और साफ–सफाई जैसे जन–कल्याण के प्रश्न महत्त्वपूर्ण हैं।
- कमजोर लोगों के लिए सामाजिक सुरक्षा–कवच की मांग की जाती है।
- कुछ आंदोलनों के अनुसार केवल सुरक्षा–कवच पर्याप्त नहीं है।

7. सांस्कृतिक प्रभाव की एकतरफा व्याख्या उचित क्यों नहीं है?

उत्तर :
- वैश्वीकरण से सांस्कृतिक समरूपता उत्पन्न हो सकती है।
- प्रभुत्वशाली संस्कृति कमजोर समाजों पर प्रभाव डाल सकती है।
- लेकिन संस्कृति लगातार बाहरी प्रभाव स्वीकार करती है।
- बाहरी प्रभाव पसंदों का दायरा बढ़ा सकते हैं।
- संस्कृतियों के मेल से नए सांस्कृतिक रूप उत्पन्न होते हैं।
- इसलिए वैश्वीकरण से सांस्कृतिक वैभिन्नीकरण भी होता है।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. वैश्वीकरण के आर्थिक प्रभावों की विवेचना कीजिए।

(RBSE-2023)

उत्तर :
- आर्थिक वैश्वीकरण में देशों के बीच आर्थिक प्रवाह तेज होता है।
- वस्तुओं के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में वृद्धि हुई है।
- आयात पर लगाए जाने वाले अनेक प्रतिबंध कम हुए हैं।
- पूँजी की अंतर्राष्ट्रीय आवाजाही आसान हुई है।
- धनी देशों के निवेशकर्ता विकासशील देशों में निवेश कर सकते हैं।
- विचारों और कंप्यूटर से जुड़ी सेवाओं का प्रवाह बढ़ा है।
- वैश्वीकरण के आर्थिक लाभों का वितरण असमान हो सकता है।
- आर्थिक वैश्वीकरण के लाभ और हानि को लेकर विश्व में जनमत विभाजित है।

2. आर्थिक वैश्वीकरण के समर्थकों और आलोचकों के तर्कों का विवेचन कीजिए।

उत्तर :
- समर्थकों के अनुसार वैश्वीकरण से समृद्धि बढ़ती है।
- आर्थिक 'खुलेपन' से अधिक लोगों की खुशहाली बढ़ सकती है।
- व्यापार वृद्धि से देशों को बेहतर प्रदर्शन का अवसर मिलता है।
- समर्थक आर्थिक वैश्वीकरण को अपरिहार्य मानते हैं।
- आलोचकों को कमजोर वर्गों पर इसके दुष्प्रभाव की चिंता है।
- वे आर्थिक लाभों के असमान वितरण की ओर ध्यान दिलाते हैं।
- सामाजिक न्याय के समर्थक कमजोर लोगों के लिए सुरक्षा उपाय चाहते हैं।
- कुछ अर्थशास्त्रियों ने इसे विश्व का पुनःउपनिवेशीकरण कहा है।

भारत और वैश्वीकरण

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. औपनिवेशिक दौर में भारत मुख्य रूप से क्या निर्यात करता था?

(अ) बने–बनाए सामान
(ब) आधारभूत वस्तुएँ और कच्चा माल
(स) केवल सेवाएँ
(द) केवल मशीनें **(ब)**

2. भारतीय उत्पादकों की रक्षा के लिए अपनाई गई नीति को क्या कहा गया?

(अ) सांस्कृतिक समरूपता
(ब) संरक्षणवाद
(स) मैक्डोनॉल्डीकरण
(द) सामाजिक सुरक्षा–कवच **(ब)**

3. 1991 की आर्थिक–सुधार योजना में किन क्षेत्रों पर लगी बाधाएँ हटाई गईं?

(अ) केवल कृषि (ब) व्यापार और विदेशी निवेश
(स) केवल संस्कृति (द) केवल शिक्षा **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. औपनिवेशिक दौर में भारत बने–बनाए सामानों का ..... देश था।

उत्तर : आयातक

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. भारत में नए आर्थिक सुधारों की शुरुआत कब हुई?

(Model Paper-2024)

उत्तर : 1991 में।

2. 'संरक्षणवाद' किस उद्देश्य से अपनाया गया था?

उत्तर : ताकि अपने उत्पादक वस्तुओं का निर्माण सीख सकें।

3. संरक्षणवाद के बावजूद किन क्षेत्रों पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया गया?

उत्तर : स्वास्थ्य, आवास और प्राथमिक शिक्षा।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. औपनिवेशिक दौर में भारत की आर्थिक स्थिति का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- ब्रिटेन के साम्राज्यवादी मंसूबों का भारत पर प्रभाव था।
- भारत आधारभूत वस्तुओं और कच्चे माल का निर्यातक था।
- भारत बने–बनाए सामानों का आयातक था।
- इन अनुभवों ने स्वतंत्रता के बाद की भारतीय आर्थिक नीति को प्रभावित किया।

2. स्वतंत्रता के बाद भारत ने आर्थिक क्षेत्र में क्या नीति अपनाई?

उत्तर :
- भारत ने दूसरे देशों पर निर्भरता कम करने का निर्णय लिया।
- देश में ही सामान बनाने पर जोर दिया गया।
- विदेशी वस्तुओं के आयात को सीमित करने का प्रयास हुआ।
- इसका उद्देश्य भारतीय उत्पादकों को विकसित करना था।

3. संरक्षणवाद से उत्पन्न दिक्कतों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर :
- संरक्षणवाद से कुछ क्षेत्रों में तरक्की हुई।
- कुछ महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों को पर्याप्त प्राथमिकता नहीं मिली।
- स्वास्थ्य, आवास और प्राथमिक शिक्षा पर अपेक्षित ध्यान नहीं दिया गया।
- भारत की आर्थिक–वृद्धि की दर धीमी रही।

4. 1991 के आर्थिक सुधारों की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर :
- आर्थिक सुधार वित्तीय संकट से उबरने के लिए शुरू किए गए।
- ऊँची आर्थिक वृद्धि–दर प्राप्त करना भी लक्ष्य था।
- विभिन्न क्षेत्रों पर लगी बाधाएँ हटाई गईं।
- व्यापार और विदेशी निवेश भी इन क्षेत्रों में शामिल थे।

5. भारत में आर्थिक सुधारों की सफलता के मूल्यांकन की कसौटी क्या होनी चाहिए?

उत्तर :
- केवल ऊँची वृद्धि–दर पर्याप्त कसौटी नहीं है।
- आर्थिक बढ़वार के लाभों को देखना आवश्यक है।
- इन फायदों में सबका साझा सुनिश्चित होना चाहिए।
- अंतिम उद्देश्य प्रत्येक व्यक्ति की खुशहाली होना चाहिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. स्वतंत्रता के बाद भारत की संरक्षणवादी नीति के उद्देश्य और परिणाम स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- ब्रिटेन के औपनिवेशिक अनुभव से भारत ने सबक लिया।
- दूसरे देशों पर निर्भरता के बजाय स्वदेशी उत्पादन पर जोर दिया गया।
- आयात सीमित करके भारतीय उत्पादकों को सीखने का अवसर दिया गया।
- इस नीति को संरक्षणवाद कहा गया।
- कुछ क्षेत्रों में इस नीति से तरक्की हुई।
- फिर भी स्वास्थ्य, आवास, प्राथमिक शिक्षा और धीमी वृद्धि जैसी समस्याएँ बनी रहीं।

2. 1991 के आर्थिक सुधारों के उद्देश्य और उनकी अंतिम कसौटी स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- 1991 में भारत वित्तीय संकट का सामना कर रहा था।
- आर्थिक वृद्धि की ऊँची दर प्राप्त करने की इच्छा थी।
- विभिन्न क्षेत्रों पर लगी बाधाएँ हटाई गईं।
- व्यापार पर लगे प्रतिबंधों को कम किया गया।
- विदेशी निवेश के लिए भी रास्ते खोले गए।
- सुधारों की अंतिम कसौटी आर्थिक बढ़वार के फायदों में सबका साझा होना है।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. वैश्वीकरण की आर्थिक परिणतियाँ क्या हुई हैं? इस संदर्भ में वैश्वीकरण ने भारत पर कैसे प्रभाव डाला है?

(Model Paper-2025)

उत्तर :
- आर्थिक वैश्वीकरण से विश्व स्तर पर वस्तुओं के व्यापार में वृद्धि हुई।
- पूँजी की अंतर्राष्ट्रीय आवाजाही पर प्रतिबंध कम हुए।
- विचारों और कंप्यूटर आधारित सेवाओं का प्रवाह बढ़ा।
- भारत का वैश्विक प्रवाहों से संबंध ऐतिहासिक रूप से पुराना है।
- स्वतंत्रता के बाद भारत ने संरक्षणवाद और स्वदेशी उत्पादन पर जोर दिया।
- 1991 में वित्तीय संकट से उबरने के लिए आर्थिक सुधार शुरू किए गए।
- व्यापार और विदेशी निवेश पर लगी विभिन्न बाधाएँ हटाई गईं।
- भारत के लिए अंतिम कसौटी यह है कि आर्थिक बढ़वार के फायदों में सबका साझा हो।

वैश्वीकरण का प्रतिरोध वत भारत और वैश्वीकरण का प्रतिरोध

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. वर्ल्ड सोशल फोरम की पहली बैठक कब हुई?

(Model Paper-2024)

(अ) 2010 (ब) 2006
(स) 2004 (द) 2001 **(द)**

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

2. भारत में वैश्वीकरण के प्रतिरोध में किसकी भूमिका रही है? **(Model Paper-2026)**

(अ) इंडियन सोशल फोरम
(ब) वामपंथी
(स) औद्योगिक श्रमिक
(द) उपर्युक्त सभी **(द)**

3. वर्ल्ड सोशल फोरम की प्रथम बैठक किस देश में हुई? **(RBSE-2024, Model Paper-2026, RBSE-2026)**

(अ) ब्राजील (ब) जापान
(स) भारत (द) श्रीलंका **(अ)**

4. विश्व व्यापार संगठन की मंत्री–स्तरीय बैठक के विरुद्ध 1999 में बड़े पैमाने पर प्रदर्शन कहाँ हुए?

(अ) सिएटल (ब) मुंबई
(स) नेपाल (द) दिल्ली **(अ)**

5. भारत में किस वनस्पति को विदेशी फर्मों द्वारा पेटेन्ट कराने के प्रयास का विरोध हुआ?

(अ) नीम (ब) गेहूँ
(स) चावल (द) चाय **(अ)**

रिक्तस्थान –

1. नव–उदारवादी वैश्वीकरण के विरोध में विश्वव्यापी मंच ..... है। *(RBSE-2025)*

उत्तर : वर्ल्ड सोशल फोरम

2. औद्योगिक श्रमिक और किसानों के संगठनों ने ..... निगमों के प्रवेश का विरोध किया।

उत्तर : बहुराष्ट्रीय

3. वैश्वीकरण–विरोधी आंदोलन समान सोच रखने वाले दूसरे देशों के लोगों से ..... करते हैं।

उत्तर : गठजोड़

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. विश्व सामाजिक मंच के कार्यकर्ता किसका विरोध करते हैं? **(Model Paper-2023)**

उत्तर : नव–उदारवादी वैश्वीकरण का।

2. दक्षिणपंथी आलोचकों की एक राजनीतिक चिंता क्या है?

उत्तर : राज्य का कमजोर होना।

3. वर्ल्ड सोशल फोरम में किन प्रकार के कार्यकर्त्ता शामिल होते हैं?

उत्तर : मानवाधिकार, पर्यावरण, मजदूर, युवा और महिला कार्यकर्त्ता।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. वैश्वीकरण के वामपंथी आलोचकों के प्रमुख तर्क लिखिए।

उत्तर :
- वे मौजूदा वैश्वीकरण को विश्वव्यापी पूँजीवाद की खास अवस्था मानते हैं।
- उनके अनुसार इससे धनिक और अधिक धनी होते हैं।
- गरीब लोगों की स्थिति और अधिक खराब हो सकती है।
- राज्य के कमजोर होने से गरीबों के हितों की रक्षा की क्षमता घटती है।

2. वैश्वीकरण के दक्षिणपंथी आलोचकों की मुख्य चिंताएँ क्या हैं?

उत्तर :
- उन्हें राजनीतिक रूप से राज्य के कमजोर होने की चिंता है।
- वे कुछ क्षेत्रों में आर्थिक आत्मनिर्भरता चाहते हैं।
- वे संरक्षणवाद को पुनः स्थापित करने के पक्ष में हैं।
- सांस्कृतिक रूप से उन्हें परंपरागत संस्कृति और जीवन–मूल्यों की हानि की चिंता है।

3. 1999 के सिएटल विरोध–प्रदर्शनों का कारण क्या था?

उत्तर :
- सिएटल में विश्व व्यापार संगठन की मंत्री–स्तरीय बैठक हुई।
- बैठक के दौरान बड़े पैमाने पर विरोध–प्रदर्शन हुए।
- प्रदर्शन ताकतवर देशों के अनुचित व्यापारिक तौर–तरीकों के खिलाफ थे।
- विरोधियों का कहना था कि विकासशील देशों के हितों को पर्याप्त महत्त्व नहीं मिला।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. भारत में वैश्वीकरण का प्रतिरोध किन आधारों पर हुआ? *(Model Paper-2026)*

उत्तर :
- आर्थिक वैश्वीकरण के खिलाफ वामपंथी राजनीतिक दलों ने आवाज उठाई।
- इंडियन सोशल फोरम जैसे मंचों ने भी इसका विरोध किया।
- औद्योगिक श्रमिक संगठनों ने बहुराष्ट्रीय निगमों के प्रवेश का विरोध किया।
- किसान संगठनों ने भी वैश्वीकरण से जुड़े आर्थिक प्रभावों का विरोध किया।
- नीम जैसी वनस्पतियों को विदेशी फर्मों द्वारा पेटेन्ट कराने के प्रयासों का कड़ा विरोध हुआ।
- दक्षिणपंथी समूहों ने विदेशी टी.वी. चौनलों, वैलेन्टाइन–डे और पश्चिमी पोशाकों जैसे सांस्कृतिक प्रभावों का विरोध किया।

2. वर्ल्ड सोशल फोरम की भूमिका और स्वरूप का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- वर्ल्ड सोशल फोरम नव–उदारवादी वैश्वीकरण के विरोध का विश्वव्यापी मंच है।
- इसमें मानवाधिकार–कार्यकर्त्ता शामिल होते हैं।
- पर्यावरणवादी इस मंच में सक्रिय रहते हैं।
- मजदूर, युवा और महिला कार्यकर्त्ता भी इसमें भाग लेते हैं।
- इसकी पहली बैठक 2001 में ब्राजील के पोर्टो अलगेरे में हुई।
- इसकी चौथी बैठक 2004 में मुंबई में हुई।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. वैश्वीकरण के प्रतिरोध के विभिन्न वैचारिक आधारों का विवेचन कीजिए।

उत्तर :
- वैश्वीकरण पूरी दुनिया में एक बहसतलब मुद्दा बना हुआ है।
- वामपंथी आलोचक इसे विश्वव्यापी पूँजीवाद की खास अवस्था मानते हैं।
- उनके अनुसार इससे धनिक और अधिक धनी तथा गरीब और अधिक गरीब होते हैं।
- वे गरीबों की रक्षा करने की राज्य की घटती क्षमता से चिंतित हैं।
- दक्षिणपंथी आलोचकों को राज्य के कमजोर होने की चिंता है।
- वे कुछ क्षेत्रों में आर्थिक आत्मनिर्भरता और संरक्षणवाद चाहते हैं।
- सांस्कृतिक रूप से वे परंपरागत संस्कृति और पुराने जीवन–मूल्यों की हानि से चिंतित हैं।
- इस प्रकार वैश्वीकरण का विरोध आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक आधारों पर होता है।

2. वर्ल्ड सोशल फोरम और अन्य वैश्विक विरोध आंदोलनों की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- वैश्वीकरण–विरोधी आंदोलन स्वयं विश्वव्यापी नेटवर्क में भाग लेते हैं।
- वे दूसरे देशों में समान सोच रखने वाले लोगों से गठजोड़ करते हैं।
- 1999 के सिएटल प्रदर्शन अनुचित व्यापारिक तौर–तरीकों के विरुद्ध थे।
- विरोधियों ने विकासशील देशों के हितों की अनदेखी पर प्रश्न उठाया।
- वर्ल्ड सोशल फोरम नव–उदारवादी वैश्वीकरण के विरोध का प्रमुख मंच है।
- इसमें मानवाधिकार–कार्यकर्त्ता, पर्यावरणवादी, मजदूर, युवा और महिला कार्यकर्त्ता शामिल हैं।
- इसकी पहली बैठक 2001 में ब्राजील के पोर्टो अलगेरे में हुई।
- इसकी चौथी बैठक 2004 में मुंबई में हुई और फरवरी 2024 में इसकी बैठक नेपाल में हुई।



स्वतंत्र भारत में राजनीति (राजनीति विज्ञान)

1 राष्ट्र-निर्माण की चुनौतियाँ

नए राष्ट्रीय राज्य की चुनौतियाँ

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. सन् 1947 में स्वतंत्र भारत के सामने पहली और तात्कालिक चुनौती क्या थी?
(अ) एकता के सूत्र में बँधे भारत का निर्माण
(ब) नए रजवाड़ों का निर्माण
(स) औपनिवेशिक शासन का विस्तार
(द) नए देशों की स्थापना **(अ)**

2. भारत ने किस प्रकार के लोकतंत्र को अपनाया?
(अ) राजतंत्रीय लोकतंत्र
(ब) संसदीय शासन पर आधारित प्रतिनिधित्वमूलक लोकतंत्र
(स) सैनिक शासन
(द) रजवाड़ा शासन **(ब)**

3. स्वतंत्र भारत के सामने दूसरी प्रमुख चुनौती क्या थी?
(अ) लोकतंत्र को कायम करना
(ब) रजवाड़ों की संख्या बढ़ाना
(स) ब्रिटिश शासन बनाए रखना
(द) अलग-अलग राष्ट्र बनाना **(अ)**

4. स्वतंत्र भारत के सामने तीसरी प्रमुख चुनौती किससे संबंधित थी?
(अ) ऐसे विकास से जिससे समूचे समाज का भला हो
(ब) राजाओं की सत्ता बढ़ाने से
(स) ब्रिटिश प्रांत बढ़ाने से
(द) धार्मिक आधार पर राज्यों के गठन से **(अ)**

5. संविधान के अंतर्गत लोक-कल्याण के लक्ष्य किसमें स्पष्ट किए गए?
(अ) रजवाड़ों के समझौतों में
(ब) राज्य के नीति-निर्देशक सिद्धांतों में
(स) विभाजन योजना में
(द) माउंटबेटन योजना में **(ब)**

6. 'ट्रिस्ट विद डेस्टिनी' से कौन संबंधित हैं? *(RBSE-2023)*
(अ) महात्मा गाँधी
(ब) सरदार पटेल
(स) जवाहरलाल नेहरू
(द) डॉ. भीमराव अम्बेडकर **(स)**

रिक्तस्थान –

1. भारत ने ..... शासन पर आधारित प्रतिनिधित्वमूलक लोकतंत्र अपनाया।

उत्तर : संसदीय

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. लोकतंत्र को कायम रखने के लिए संविधान के अतिरिक्त किसकी आवश्यकता थी?

उत्तर : संविधान से मेल खाते लोकतांत्रिक व्यवहार-बरताव की।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. स्वतंत्रता के समय भारत की पहली और तात्कालिक चुनौती का स्वरूप बताइए।

उत्तर :
- भारत को एकता के सूत्र में बाँधना आवश्यक था।
- भारतीय समाज की सभी विविधताओं के लिए जगह बनानी थी।
- अलग-अलग भाषाओं, संस्कृतियों और धर्मों के बीच राष्ट्रीय एकता कायम करनी थी।
- देश की क्षेत्रीय अखंडता को बनाए रखना बड़ी चुनौती थी।
- क्षेत्रीय तथा उप-क्षेत्रीय पहचानों को स्वीकार करते हुए राष्ट्र का निर्माण करना था।

2. स्वतंत्र भारत में लोकतंत्र को कायम करने की चुनौती को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- संविधान में मौलिक अधिकारों की गारंटी दी गई।
- प्रत्येक नागरिक को मतदान का अधिकार दिया गया।
- भारत ने संसदीय शासन पर आधारित प्रतिनिधित्वमूलक लोकतंत्र अपनाया।
- लोकतांत्रिक ढाँचे के भीतर राजनीतिक मुकाबले की व्यवस्था बनी।
- संविधान के साथ लोकतांत्रिक व्यवहार-बरताव को चलन में लाना भी जरूरी था।

3. स्वतंत्र भारत के सामने विकास से संबंधित चुनौती क्या थी?

उत्तर :
- विकास का लाभ समूचे समाज तक पहुँचाना था।
- केवल कुछ तबकों के हित का विकास पर्याप्त नहीं माना गया।
- सभी के साथ समानता का बरताव सुनिश्चित करना था।

- सामाजिक रूप से वंचित तथा धार्मिक–सांस्कृतिक अल्पसंख्यकों को विशेष सुरक्षा देनी थी।
- आर्थिक विकास और गरीबी के खात्मे के लिए कारगर नीतियाँ तैयार करनी थीं।

4. स्वतंत्रता के समय राष्ट्रीय एकता का प्रश्न इतना महत्त्वपूर्ण क्यों था?

उत्तर :
- भारत अत्यधिक भाषाई, सांस्कृतिक और धार्मिक विविधता वाला देश था।
- देश का जन्म विभाजन के साथ हुआ था।
- विभाजन ने भारत की एकता को लेकर आशंकाएँ बढ़ा दी थीं।
- क्षेत्रीय और उप–क्षेत्रीय पहचानों को राष्ट्र के साथ जोड़ना जरूरी था।
- देश की क्षेत्रीय अखंडता को सुरक्षित रखना तत्काल आवश्यकता थी।

5. आजादी की लड़ाई के दौरान देश के भावी शासन के संबंध में किन बातों पर सहमति थी?

उत्तर :
- देश का शासन लोकतांत्रिक सरकार द्वारा चलाया जाएगा।
- सरकार सबके भले के लिए काम करेगी।
- गरीबों का विशेष ध्यान रखा जाएगा।
- कमजोर वर्गों के हितों की रक्षा की जाएगी।
- स्वतंत्रता के बाद इन लक्ष्यों को वास्तविक रूप देना था।

6. स्वतंत्रता के बाद भारत के सामने किन्हीं दो प्रमुख चुनौतियों को बताइए। (RBSE-2022, RBSE-2024)

उत्तर :
- पहली प्रमुख चुनौती राष्ट्रीय एकता और क्षेत्रीय अखंडता बनाए रखने की थी।
- विविध भाषाई, सांस्कृतिक और धार्मिक समुदायों को एक राष्ट्र में समाहित करना था।
- दूसरी प्रमुख चुनौती लोकतंत्र को कायम करना थी।
- लोकतांत्रिक संविधान के साथ लोकतांत्रिक व्यवहार–बरताव को भी स्थापित करना था।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. स्वतंत्र भारत का जन्म किन परिस्थितियों में हुआ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- स्वतंत्र भारत का जन्म कठिन परिस्थितियों में हुआ।
- भारत को आजादी देश के विभाजन के साथ मिली।
- सन् 1947 अभूतपूर्व हिंसा का वर्ष था।
- बड़े पैमाने पर विस्थापन की त्रासदी सामने आई।
- देश की एकता और भविष्य को लेकर गंभीर आशंकाएँ थीं।
- नए राष्ट्र को एक साथ अनेक बहुविध लक्ष्यों को हासिल करना था।
- इन परिस्थितियों में राष्ट्रीय एकता और सुरक्षा का प्रश्न सबसे प्रमुख चुनौती बन गया।

2. स्वतंत्र भारत के लिए लोकतंत्र स्थापित करना केवल संविधान बनाने तक सीमित क्यों नहीं था?

उत्तर :
- संविधान ने मौलिक अधिकारों की गारंटी दी।
- प्रत्येक नागरिक को मतदान का अधिकार प्रदान किया गया।
- भारत ने प्रतिनिधित्वमूलक लोकतंत्र अपनाया।
- शासन की व्यवस्था संसदीय प्रणाली पर आधारित थी।
- लोकतांत्रिक ढाँचे में राजनीतिक मुकाबले का अवसर दिया गया।
- केवल लोकतांत्रिक संविधान होना पर्याप्त नहीं था।
- संविधान से मेल खाते लोकतांत्रिक व्यवहार–बरताव को भी स्थापित करना जरूरी था।

3. स्वतंत्र भारत में विकास की चुनौती के प्रमुख आयामों का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- विकास से समूचे समाज का भला होना था।
- विकास कुछ सीमित तबकों तक नहीं रहना चाहिए था।
- सभी नागरिकों के साथ समानता का बरताव आवश्यक था।
- सामाजिक रूप से वंचित तबकों को विशेष सुरक्षा देनी थी।
- धार्मिक–सांस्कृतिक अल्पसंख्यकों को भी विशेष सुरक्षा देनी थी।
- राज्य के नीति–निर्देशक सिद्धांतों में लोक–कल्याण के लक्ष्य रखे गए।
- आर्थिक विकास तथा गरीबी के खात्मे के लिए कारगर नीतियाँ बनानी थीं।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. स्वतंत्रता के समय भारत के सामने उपस्थित तीन प्रमुख चुनौतियों का विस्तृत वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- पहली और तात्कालिक चुनौती राष्ट्रीय एकता कायम करने की थी।
- भारत की भाषाई, सांस्कृतिक और धार्मिक विविधताओं को राष्ट्र में स्थान देना था।
- देश की क्षेत्रीय अखंडता को सुरक्षित रखना जरूरी था।
- दूसरी चुनौती लोकतंत्र को कायम करने की थी।
- मौलिक अधिकार, मतदान का अधिकार और प्रतिनिधित्वमूलक लोकतंत्र को व्यवहार में उतारना था।

पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

- लोकतांत्रिक संविधान के अनुरूप लोकतांत्रिक व्यवहार–बरताव विकसित करना था।
- तीसरी चुनौती ऐसे विकास की थी जिससे पूरे समाज को लाभ मिले।
- वंचित तबकों और धार्मिक–सांस्कृतिक अल्पसंख्यकों की विशेष सुरक्षा आवश्यक थी।
- आर्थिक विकास और गरीबी के खात्मे के लिए कारगर नीतियाँ तैयार करनी थीं।

2. स्वतंत्र भारत में राष्ट्रीय एकता और विविधता के बीच संबंध को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- भारत आकार और विविधता में किसी महादेश के समान था।
- यहाँ अलग–अलग भाषाएँ बोलने वाले लोग रहते थे।
- लोगों की संस्कृतियाँ भी अलग–अलग थीं।
- विभिन्न धर्मों के अनुयायी भारतीय समाज का हिस्सा थे।
- विभाजन के बाद देश की एकता को लेकर गंभीर आशंकाएँ थीं।
- भारत को विविधताओं को समाप्त किए बिना एकता के सूत्र में बाँधना था।
- क्षेत्रीय और उप–क्षेत्रीय पहचान को पूरी तरह खारिज करना उचित नहीं था।
- सबसे महत्त्वपूर्ण प्रश्न देश की क्षेत्रीय अखंडता कायम रखने का था।
- राष्ट्र–निर्माण की प्रक्रिया में साझे इतिहास और साझी नियति का भाव विकसित करना था।

3. भारतीय संविधान ने लोकतंत्र और लोक–कल्याण संबंधी राष्ट्र–निर्माण के लक्ष्यों को किस प्रकार दिशा दी?

उत्तर :
- संविधान ने मौलिक अधिकारों की गारंटी दी।
- प्रत्येक नागरिक को मतदान का अधिकार दिया।
- भारत ने संसदीय शासन पर आधारित प्रतिनिधित्वमूलक लोकतंत्र अपनाया।
- राजनीतिक मुकाबलों को लोकतांत्रिक ढाँचे के भीतर स्थान मिला।
- सभी नागरिकों के साथ समानता का बरताव करने का लक्ष्य रखा गया।
- सामाजिक रूप से वंचित तबकों को विशेष सुरक्षा दी गई।
- धार्मिक–सांस्कृतिक अल्पसंख्यकों की सुरक्षा पर बल दिया गया।
- राज्य के नीति–निर्देशक सिद्धांतों में लोक–कल्याण के लक्ष्य स्पष्ट किए गए।
- आर्थिक विकास और गरीबी के खात्मे के लिए कारगर नीतियों की आवश्यकता स्वीकार की गई।

विभाजन : विस्थापन और पुनर्वास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. 'द्वि–राष्ट्र सिद्धांत' की बात किसने की थी?
(अ) मुस्लिम लीग (ब) हैदराबाद कांग्रेस
(स) राज्य पुनर्गठन आयोग
(द) संविधान सभा **(अ)**

2. भारत के विभाजन का आधार क्या तय किया गया था?
(अ) भाषा (ब) धार्मिक बहुसंख्या
(स) आर्थिक विकास (द) प्रशासनिक सुविधा **(ब)**

3. मुस्लिम–बहुल आबादी वाले दो प्रमुख क्षेत्र कहाँ स्थित थे?
(अ) केवल पश्चिम में (ब) केवल पूर्व में
(स) पश्चिम और पूर्व में
(द) केवल दक्षिण में **(स)**

4. पंजाब और बंगाल के विभाजन में किस स्तर को आधार माना गया?
(अ) केवल पूरे प्रांत को
(ब) जिले अथवा उससे निचले प्रशासनिक हलके को
(स) केवल रजवाड़े को
(द) भाषा को **(ब)**

5. विभाजन की सबसे अबूझ कठिनाई किससे संबंधित थी?
(अ) अल्पसंख्यकों से (ब) रजवाड़ों की संख्या से
(स) मतदान से
(द) राज्य पुनर्गठन आयोग से **(अ)**

रिक्तस्थान –

1. विभाजन के लिए ..... बहुसंख्या को आधार बनाया गया।

उत्तर : धार्मिक

2. ब्रिटिश इंडिया के दो मुस्लिम–बहुल प्रांत ..... और ..... थे।

उत्तर : पंजाब और बंगाल

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. 'सीमांत गाँधी' के नाम से कौन प्रसिद्ध थे? *(RBSE-2023)*

उत्तर : खान अब्दुल गफ्फार खान।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. भारत–विभाजन की प्रक्रिया में प्रमुख कठिनाइयाँ क्या थीं?

उत्तर :
- मुस्लिम–बहुल क्षेत्र पश्चिम और पूर्व में अलग–अलग स्थित थे।
- सभी मुस्लिम–बहुल क्षेत्र पाकिस्तान में शामिल होने के पक्ष में नहीं थे।
- पंजाब और बंगाल के भीतर गैर–मुस्लिम बहुल इलाके भी थे।

मिशन ज्ञान
पढ़ें जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

- जिले अथवा उससे निचले प्रशासनिक क्षेत्रों के आधार पर सीमाएँ निर्धारित करनी पड़ीं।
- दोनों ओर बड़ी संख्या में अल्पसंख्यक समुदाय रह गए।

2. विभाजन के समय अल्पसंख्यकों की स्थिति का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- सीमा के दोनों ओर बड़ी संख्या में अल्पसंख्यक मौजूद थे।
- लोग अपने ही घर में स्वयं को विदेशी अनुभव करने लगे।
- अल्पसंख्यक समुदायों के विरुद्ध हिंसा शुरू हुई।
- अनेक लोगों को बहुत कम सूचना पर घर छोड़ना पड़ा।
- हिंसा पर नियंत्रण की कोई प्रभावी पूर्व योजना नहीं थी।

3. विभाजन के कारण लोगों के विस्थापन का स्वरूप कैसा था?

उत्तर :
- आबादी का स्थानांतरण बहुत बड़े पैमाने पर हुआ।
- यह स्थानांतरण आकस्मिक और अनियोजित था।
- लोगों को घर–बार छोड़कर सीमा पार करनी पड़ी।
- अनेक लोगों को अस्थायी शरणार्थी शिविरों में रहना पड़ा।
- लाखों लोग बेठिकाना हो गए।

4. विभाजन ने महिलाओं और बच्चों को किस प्रकार प्रभावित किया?

उत्तर :
- हजारों महिलाओं का अपहरण हुआ।
- महिलाओं को जबरन विवाह करने के लिए मजबूर किया गया।
- कई महिलाओं को अपहरणकर्ता का धर्म अपनाना पड़ा।
- अनेक परिवारों ने 'कुल की इज्जत' के नाम पर महिलाओं की हत्या की।
- बहुत–से बच्चे अपने माता–पिता से बिछड़ गए।

5. विभाजन के बाद भारत के धार्मिक स्वरूप के संबंध में क्या प्रश्न उठा?

उत्तर :
- विभाजन धर्म के आधार पर हुआ था।
- बड़ी संख्या में मुसलमान पाकिस्तान चले गए।
- इसके बावजूद भारत में बड़ी मुस्लिम आबादी बनी रही।
- अन्य धार्मिक अल्पसंख्यक भी भारत के नागरिक थे।
- प्रमुख राष्ट्रीय नेता सभी नागरिकों को समान दर्जा देने के पक्ष में थे।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. भारत–विभाजन की प्रक्रिया की प्रमुख समस्याओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- विभाजन के लिए धार्मिक बहुसंख्या को आधार बनाया गया।
- मुस्लिम बहुसंख्या वाले क्षेत्र पश्चिम और पूर्व में अलग–अलग थे।
- सभी मुस्लिम–बहुल क्षेत्र पाकिस्तान में जाना नहीं चाहते थे।
- खान अब्दुल गफ्फार खान द्वि–राष्ट्र सिद्धांत के विरोधी थे।
- पंजाब और बंगाल में गैर–मुस्लिम बहुल क्षेत्रों के कारण सीमांकन कठिन था।
- जिले अथवा उससे निचले प्रशासनिक हलके को विभाजन का आधार बनाया गया।
- सीमा के दोनों ओर अल्पसंख्यकों की सुरक्षा सबसे गंभीर समस्याओं में से एक बनी।

2. विभाजन के मानवीय और सामाजिक परिणामों का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- बड़े पैमाने पर आबादी का स्थानांतरण हुआ।
- लोगों को अपना घर–बार छोड़ना पड़ा।
- अनेक लोगों को शरणार्थी शिविरों में रहना पड़ा।
- सांप्रदायिक हिंसा में बड़ी संख्या में लोगों की जान गई।
- महिलाओं को अपहरण, जबरन विवाह और हिंसा का सामना करना पड़ा।
- बच्चे अपने माता–पिता से बिछड़ गए।
- पड़ोसी समुदायों के बीच हिंसक अलगाव पैदा हुआ।

3. विभाजन के बाद भारत में धर्मनिरपेक्ष राज्य की आवश्यकता किस प्रकार सामने आई?

उत्तर :
- विभाजन धर्म के आधार पर हुआ था।
- भारत में बड़ी संख्या में मुसलमान नागरिक बने रहे।
- सिख, ईसाई, जैन, बौद्ध, पारसी और यहूदी जैसे अन्य धार्मिक समुदाय भी थे।
- भारत के अधिकतर राष्ट्रीय नेता नागरिकों को समान दर्जा देने के पक्ष में थे।
- किसी एक धर्म को दूसरे धर्म पर वरीयता देना स्वीकार नहीं किया गया।
- नागरिकता की कसौटी धर्म को नहीं बनाया जाना था।
- इसी सोच की अभिव्यक्ति धर्मनिरपेक्ष राज्य के आदर्श में हुई।

मिशन ज्ञान
पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

निबंधात्मक प्रश्न –

1. भारत–विभाजन की प्रक्रिया का विस्तृत वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- मुस्लिम लीग ने द्वि–राष्ट्र सिद्धांत के आधार पर पाकिस्तान की माँग की।
- विभाजन के लिए धार्मिक बहुसंख्या को आधार बनाया गया।
- मुस्लिम बहुसंख्या वाले क्षेत्र पश्चिम और पूर्व में अलग–अलग स्थित थे।
- दोनों हिस्सों के बीच भारतीय भू–भाग का बड़ा विस्तार था।
- सभी मुस्लिम–बहुल क्षेत्र पाकिस्तान में शामिल होने को तैयार नहीं थे।
- पंजाब और बंगाल के भीतर गैर–मुस्लिम बहुल क्षेत्र भी मौजूद थे।
- इन प्रांतों में जिले अथवा उससे निचले प्रशासनिक हलके को आधार बनाया गया।
- आजादी के दिन तक अनेक लोगों को अपनी राष्ट्रीय स्थिति स्पष्ट नहीं थी।
- पंजाब और बंगाल का बँटवारा विभाजन की सबसे बड़ी त्रासदी साबित हुआ।

2. सांप्रदायिक हिंसा के समय महात्मा गाँधी की भूमिका का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- गाँधीजी ने 15 अगस्त 1947 के आजादी समारोह में भाग नहीं लिया।
- वे हिंदू–मुस्लिम दंगों से प्रभावित कोलकाता में थे।
- सांप्रदायिक हिंसा से वे अत्यंत दुखी थे।
- उन्होंने हिंदुओं और मुसलमानों से हिंसा छोड़ने का आग्रह किया।
- कोलकाता में उनकी मौजूदगी से हालात में सुधार हुआ।
- दंगे दोबारा भड़कने पर वे उपवास पर बैठे।
- दिल्ली पहुँचकर उन्होंने मुसलमानों के गरिमापूर्ण और समान नागरिक जीवन पर बल दिया।
- जनवरी 1948 में उन्होंने एक बार फिर उपवास किया, जिससे सांप्रदायिक तनाव में कमी आई।
- वे जीवन के अंत तक न्याय और सहिष्णुता के आदर्श के प्रति समर्पित रहे।

3. भारत विभाजन के परिणामों पर लेख लिखिए।

(Model Paper-2023)

उत्तर :
- विभाजन के कारण बड़े पैमाने पर सांप्रदायिक हिंसा हुई।
- लगभग 80 लाख लोगों को घर–बार छोड़कर सीमा पार करना पड़ा।
- तकरीबन पाँच से दस लाख लोगों ने अपनी जान गँवाई।
- लाखों लोगों को शरणार्थी शिविरों में रहने के लिए मजबूर होना पड़ा।
- हजारों महिलाओं को अपहरण और जबरन विवाह जैसी हिंसा का सामना करना पड़ा।
- बहुत–से बच्चे अपने माता–पिता से बिछड़ गए।
- वित्तीय संपदा, कार्यालयी सामान और सरकारी संसाधनों का भी विभाजन हुआ।
- सरकारी और रेलवे कर्मचारियों तक का बँटवारा हुआ।
- सदियों से साथ रहते आए दो समुदाय हिंसक अलगाव का शिकार हुए।

रजवाड़ों का विलय

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. रजवाड़ों पर किसका शासन था?

(अ) राजाओं का (ब) राज्य पुनर्गठन आयोग का
(स) संविधान सभा का (द) पंचायतों का **(अ)**

2. हैदराबाद का भारत में विलय किस घटना के बाद हुआ?

(अ) निजाम के आत्मसमर्पण के बाद
(ब) राज्य पुनर्गठन आयोग के बाद
(स) आंध्र आंदोलन के बाद
(द) संविधान सभा के विघटन के बाद **(अ)**

3. 'देशी रियासतों के एकीकरण' में किसने अहम भूमिका निभाई? *(Model Paper-2025)*

(अ) सरदार वल्लभभाई पटेल
(ब) गोपाल कृष्ण गोखले
(स) जवाहरलाल नेहरू
(द) महात्मा गाँधी **(अ)**

4. 1948 में सार्वभौम वयस्क मताधिकार के आधार पर भारत के किस भाग में चुनाव करवाए गए?

(Model Paper-2026)

(अ) त्रिपुरा (ब) गुजरात
(स) मणिपुर (द) उड़ीसा **(स)**

रिक्तस्थान –

1. अंग्रेजी प्रभुत्व के अंतर्गत भारतीय साम्राज्य के लगभग ..... हिस्से में रजवाड़े कायम थे।

उत्तर : एक–तिहाई

2. सबसे पहले ..... के राजा ने अपने राज्य को आजाद रखने की घोषणा की।

उत्तर : त्रावणकोर

3. हैदराबाद के निजाम ने नवंबर 1947 में भारत के साथ ..... बहाल रखने का समझौता किया।

उत्तर : यथास्थिति

4. सितंबर ..... में भारत सरकार मणिपुर के महाराजा से भारतीय संघ में शामिल होने के समझौते पर हस्ताक्षर करवाने में सफल हुई।

उत्तर : 1949

5. स्वतंत्रता के बाद अधिकांश रजवाड़ों ने भारत के साथ ..... के दस्तावेज पर हस्ताक्षर किए। (RBSE-2026)

उत्तर : इंस्ट्रूमेंट ऑफ़ एक्सेशन

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. 'रजाकार' कौन थे?

उत्तर : निजाम द्वारा लोगों के विरुद्ध भेजा गया अर्द्ध–सैनिक बल।

2. मणिपुर के महाराजा का नाम क्या था?

उत्तर : बोधचंद्र सिंह।

3. हैदराबाद का भारत में विलय किस महीने और वर्ष में हुआ?

उत्तर : सितंबर 1948।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. आजादी के समय रजवाड़ों की समस्या भारत के लिए गंभीर क्यों थी?

उत्तर :
- ब्रिटिश–अधीनता समाप्त होते ही 565 रजवाड़े कानूनी तौर पर स्वतंत्र होने वाले थे।
- उन्हें भारत या पाकिस्तान में शामिल होने अथवा स्वतंत्र रहने की छूट थी।
- निर्णय लेने का अधिकार रजवाड़ों की जनता को नहीं, राजाओं को दिया गया था।
- इससे भारत के अनेक छोटे–छोटे देशों में बँटने का खतरा था।
- यह स्थिति अखंड भारत और लोकतंत्र के लिए गंभीर चुनौती थी।

2. देसी रजवाड़ों की चर्चा से कौन–सी तीन मुख्य बातें सामने आती हैं?

उत्तर :
- अधिकतर रजवाड़ों की जनता भारतीय संघ में शामिल होना चाहती थी।
- भारत सरकार का रुख लचीला था।
- कुछ क्षेत्रों को आवश्यकता के अनुसार स्वायत्तता देने की तैयारी थी।
- सरकार विविधताओं और क्षेत्रीय माँगों का सम्मान करना चाहती थी।
- विभाजन की पृष्ठभूमि में क्षेत्रीय अखंडता का प्रश्न सबसे महत्त्वपूर्ण था।

3. हैदराबाद में निजाम के विरुद्ध आंदोलन की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर :
- तेलंगाना के किसान निजाम के दमनकारी शासन से दुखी थे।
- किसानों ने निजाम के विरुद्ध आंदोलन शुरू किया।
- बड़ी संख्या में महिलाएँ भी आंदोलन में शामिल हुईं।
- कम्युनिस्ट और हैदराबाद कांग्रेस आंदोलन की अग्रिम पंक्ति में थे।
- आंदोलन के विरुद्ध निजाम ने रजाकारों को भेजा।

4. मणिपुर में संवैधानिक राजतंत्र किस प्रकार स्थापित हुआ?

उत्तर :
- महाराजा बोधचंद्र सिंह ने भारत से विलय का सहमति–पत्र किया।
- मणिपुर की आंतरिक स्वायत्तता बनाए रखने का आश्वासन दिया गया।
- जनमत के दबाव में जून 1948 में चुनाव करवाए गए।
- चुनाव के बाद मणिपुर में संवैधानिक राजतंत्र कायम हुआ।
- चुनाव सार्वभौम वयस्क मताधिकार के सिद्धांत पर हुए।

5. रजवाड़ों के एकीकरण में 'इंस्ट्रूमेंट ऑफ़ एक्सेशन' का क्या महत्त्व था?

उत्तर :
- अधिकतर रजवाड़ों के शासकों ने एक सहमति–पत्र पर हस्ताक्षर किए।
- इस सहमति–पत्र को 'इंस्ट्रूमेंट ऑफ़ एक्सेशन' कहा गया।
- हस्ताक्षर का अर्थ भारतीय संघ में शामिल होने की सहमति था।
- शांतिपूर्ण बातचीत के जरिए अधिकतर रजवाड़े भारत में शामिल हुए।
- इस प्रक्रिया ने भारत की क्षेत्रीय एकता को मजबूत किया।

6. स्वतंत्रता के समय ब्रिटिश इंडिया दो भागों में था– समझाइए। *(RBSE-2023)*

उत्तर :
- पहला भाग ब्रिटिश प्रभुत्व वाले भारतीय प्रांतों का था।
- इन प्रांतों पर अंग्रेजी सरकार का सीधा नियंत्रण था।
- दूसरा भाग छोटे–बड़े देसी रजवाड़ों का था।
- रजवाड़ों पर राजा शासन करते थे और उन्होंने ब्रिटिश–राज की सर्वोच्च सत्ता स्वीकार कर रखी थी।

मिशन ज्ञान
मंजिल चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

7. हैदराबाद के भारत में विलय में क्या समस्याएँ आईं?

(RBSE-2026)

उत्तर :
- हैदराबाद का निजाम स्वतंत्र रहना चाहता था।
- निजाम के शासन के खिलाफ जनता का आंदोलन तेज हो गया।
- रजाकारों ने हिंसा, लूटपाट और अत्याचार किए।
- सितंबर 1948 में भारतीय सेना की कार्रवाई के बाद निजाम ने आत्मसमर्पण किया।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. रजवाड़ों का प्रश्न स्वतंत्र भारत की एकता और लोकतंत्र के लिए चुनौती क्यों था?

उत्तर :
- ब्रिटिश भारत में 565 रजवाड़े मौजूद थे।
- ब्रिटिश प्रभुत्व समाप्त होने पर वे कानूनी रूप से स्वतंत्र होने वाले थे।
- उन्हें भारत, पाकिस्तान अथवा स्वतंत्र अस्तित्व में से विकल्प चुनने की छूट थी।
- यह निर्णय जनता के बजाय राजाओं को करना था।
- अधिकतर रजवाड़ों में शासन अलोकतांत्रिक था।
- कई शासक अपनी जनता को लोकतांत्रिक अधिकार देने के लिए तैयार नहीं थे।
- इससे अखंड भारत और लोकतांत्रिक राष्ट्र के निर्माण पर गंभीर खतरा उत्पन्न हुआ।

2. रजवाड़ों के शांतिपूर्ण विलय की प्रक्रिया तथा उससे निकले प्रमुख निष्कर्षों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- अंतरिम सरकार ने भारत के छोटे–छोटे देशों में बँटने की संभावना के विरुद्ध कड़ा रुख अपनाया।
- सरदार पटेल ने रजवाड़ों के शासकों को समझाने में ऐतिहासिक भूमिका निभाई।
- अधिकतर रजवाड़ों के लोग भारतीय संघ में शामिल होना चाहते थे।
- सरकार कुछ क्षेत्रों को स्वायत्तता देने के लिए भी तैयार थी।
- अधिकतर रजवाड़े 15 अगस्त 1947 से पहले भारत में शामिल हो गए।
- शासकों ने इंस्ट्रूमेंट ऑफ़ एक्सेशन पर हस्ताक्षर किए।
- इससे देश की क्षेत्रीय अखंडता और एकता को बनाए रखने में सहायता मिली।

3. हैदराबाद में निजाम के विरुद्ध जन–आंदोलन और रजाकारों की भूमिका का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- निजाम हैदराबाद को स्वतंत्र रियासत बनाए रखना चाहता था।
- तेलंगाना के किसान उसके दमनकारी शासन से दुखी थे।
- किसानों ने निजाम के विरुद्ध आंदोलन शुरू किया।
- महिलाओं ने भी बड़ी संख्या में आंदोलन में भाग लिया।
- कम्युनिस्ट और हैदराबाद कांग्रेस आंदोलन की अग्रिम पंक्ति में थे।
- निजाम ने आंदोलन के विरुद्ध रजाकार नामक अर्द्ध–सैनिक बल भेजा।
- रजाकारों ने लूटपाट, हत्या तथा अत्याचार किए और इसके बाद भारतीय सेना ने हस्तक्षेप किया।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. आजादी के समय देसी रजवाड़ों की समस्या का विस्तृत वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- ब्रिटिश इंडिया का एक बड़ा हिस्सा देसी रजवाड़ों से बना था।
- रजवाड़ों की संख्या 565 थी।
- इन पर राजाओं का शासन था और उन्होंने ब्रिटिश सर्वोच्च सत्ता स्वीकार कर रखी थी।
- अंग्रेजी शासन की समाप्ति के साथ रजवाड़ों पर ब्रिटिश अधीनता भी खत्म होने वाली थी।
- रजवाड़ों को भारत या पाकिस्तान में शामिल होने अथवा स्वतंत्र रहने की छूट दी गई।
- यह निर्णय रजवाड़ों की जनता के बजाय शासकों को करना था।
- त्रावणकोर और हैदराबाद जैसे कुछ शासकों ने स्वतंत्र रहने की घोषणा की।
- अनेक रजवाड़ों में शासन अलोकतांत्रिक था और जनता को लोकतांत्रिक अधिकार नहीं थे।
- इससे भारत के छोटे–छोटे देशों में बँटने और राष्ट्रीय अखंडता के संकट की आशंका पैदा हुई।

2. हैदराबाद के भारत में विलय की पूरी प्रक्रिया का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- हैदराबाद के शासक निजाम स्वतंत्र रियासत का दर्जा चाहते थे।
- नवंबर 1947 में निजाम ने भारत के साथ एक वर्ष का यथास्थिति समझौता किया।
- इस दौरान भारत सरकार और निजाम के बीच बातचीत जारी रही।

- तेलंगाना के किसान निजाम के दमनकारी शासन के विरुद्ध उठ खड़े हुए।
- महिलाएँ, कम्युनिस्ट और हैदराबाद कांग्रेस भी आंदोलन में सक्रिय रहे।
- निजाम ने आंदोलन के विरुद्ध रजाकारों नामक अर्द्ध–सैनिक बल को भेजा।
- रजाकारों ने गैर–मुसलमानों को विशेष रूप से निशाना बनाया और हिंसा की।
- सितंबर 1948 में भारतीय सेना हैदराबाद पहुँची और कुछ दिनों तक लड़ाई हुई।
- निजाम के आत्मसमर्पण के साथ हैदराबाद का भारत में विलय हो गया।

3. मणिपुर के भारत में विलय और वहाँ की लोकतांत्रिक प्रक्रिया का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- आजादी से कुछ दिन पहले महाराजा बोधचंद्र सिंह ने भारत के साथ सहमति–पत्र पर हस्ताक्षर किए।
- उन्हें मणिपुर की आंतरिक स्वायत्तता बरकरार रहने का आश्वासन मिला।
- जनमत के दबाव में जून 1948 में चुनाव करवाए गए।
- चुनाव के बाद मणिपुर में संवैधानिक राजतंत्र कायम हुआ।
- मणिपुर भारत का पहला भाग था जहाँ सार्वभौम वयस्क मताधिकार के आधार पर चुनाव हुए।
- मणिपुर विधानसभा में भारत में विलय के प्रश्न पर मतभेद थे।
- मणिपुर कांग्रेस भारत में विलय के पक्ष में थी।
- दूसरी राजनीतिक पार्टियाँ विलय के विरुद्ध थीं।
- सितंबर 1949 में भारत सरकार महाराजा से भारतीय संघ में शामिल होने के समझौते पर हस्ताक्षर करवाने में सफल हुई।

4. रजवाड़ों के विलय पर सरकार के नजरिए पर लेख लिखिए।
(RBSE-2022, Model Paper-2023)

उत्तर :
- भारत सरकार छोटे–छोटे देशों में विभाजन की संभावना के विरुद्ध थी।
- अंतरिम सरकार ने इस समस्या पर कड़ा रुख अपनाया।
- सरदार पटेल ने रजवाड़ों के शासकों को समझाने में ऐतिहासिक भूमिका निभाई।
- अधिकतर रजवाड़ों की जनता भारतीय संघ में शामिल होना चाहती थी।
- सरकार का रुख लचीला था और वह आवश्यकता के अनुसार स्वायत्तता देने को तैयार थी।
- सरकार विभिन्नताओं और क्षेत्रीय माँगों का सम्मान करना चाहती थी।
- अधिकतर रजवाड़ों को शांतिपूर्ण बातचीत के जरिए भारत में शामिल किया गया।
- शासकों ने इंस्ट्रूमेंट ऑफ़ एक्सेशन पर हस्ताक्षर किए।
- विभाजन की पृष्ठभूमि में सरकार के लिए देश की क्षेत्रीय अखंडता सर्वोपरि थी।

5. स्वतंत्रता पश्चात रजवाड़ों का विलय किस प्रकार से किया गया? हैदराबाद और मणिपुर के सन्दर्भ में विशेष उल्लेख सहित बताइए। *(Model Paper-2026)*

उत्तर :
- सरदार पटेल ने अधिकतर रजवाड़ों को भारतीय संघ में शामिल होने के लिए राजी किया।
- अधिकांश शासकों ने इंस्ट्रूमेंट ऑफ़ एक्सेशन पर हस्ताक्षर किए।
- अधिकतर रजवाड़ों का विलय शांतिपूर्ण बातचीत से हुआ।
- हैदराबाद का निजाम स्वतंत्र रहना चाहता था और वहाँ जनता ने उसके विरुद्ध आंदोलन किया।
- सितंबर 1948 में भारतीय सेना की कार्रवाई के बाद निजाम ने आत्मसमर्पण किया और हैदराबाद भारत में शामिल हुआ।
- मणिपुर के महाराजा बोधचंद्र सिंह ने पहले भारत के साथ सहमति–पत्र किया।
- जून 1948 में मणिपुर में सार्वभौम वयस्क मताधिकार के आधार पर चुनाव हुए।
- मणिपुर विधानसभा में विलय के प्रश्न पर मतभेद मौजूद थे।
- सितंबर 1949 में मणिपुर के महाराजा ने भारतीय संघ में शामिल होने के समझौते पर हस्ताक्षर किए।

राज्यों का पुनर्गठन

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. भाषाई आधार पर राज्यों के पुनर्गठन के सिद्धांत को कांग्रेस ने किस अधिवेशन के बाद स्वीकार किया?
(अ) नागपुर अधिवेशन, 1920
(ब) संविधान सभा
(स) माउंटबेटन योजना
(द) राज्य पुनर्गठन आयोग **(अ)**

2. 'विशाल आंध्र आंदोलन' की प्रमुख माँग क्या थी?

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

(अ) अलग आंध्र प्रदेश राज्य
(ब) अलग महाराष्ट्र राज्य
(स) अलग गुजरात राज्य
(द) अलग पंजाब राज्य **(अ)**

3. राज्य पुनर्गठन अधिनियम किस वर्ष पास हुआ?
(अ) 1952 (ब) 1953
(स) 1956 (द) 1960 **(स)**

4. भारत में 'राज्य पुनर्गठन आयोग' की स्थापना/गठन कब हुआ? *(RBSE-2022, RBSE-2026)*
(अ) 1950 (ब) 1953
(स) 1956 (द) 1959 **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. सन् 1920 में कांग्रेस का ..... अधिवेशन हुआ था।
उत्तर : नागपुर

2. सन् 1960 में द्विभाषी बंबई राज्य से ..... और ..... राज्य बनाए गए।
उत्तर : महाराष्ट्र और गुजरात

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. सन् 2000 में भारत में कौन–से तीन नए राज्य बने? **(RBSE-2026)**
उत्तर : छत्तीसगढ़, उत्तराखंड और झारखंड।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. आजादी के बाद केंद्रीय नेतृत्व ने भाषाई राज्यों की माँग को प्रारंभ में क्यों स्थगित किया?
उत्तर :
- नेतृत्व को भाषाई राज्यों से अव्यवस्था फैलने की चिंता थी।
- देश के टूटने का खतरा महसूस किया जा रहा था।
- भाषाई प्रश्न से सामाजिक–आर्थिक चुनौतियों से ध्यान भटकने की आशंका थी।
- रजवाड़ों का प्रश्न अभी पूरी तरह हल नहीं हुआ था।
- विभाजन की यादें अभी ताजा थीं।

2. विशाल आंध्र आंदोलन की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।
उत्तर :
- आंदोलन ने तेलुगु–भाषी क्षेत्रों के लिए अलग आंध्र प्रदेश की माँग की।
- तेलुगु–भाषी क्षेत्र की लगभग सभी राजनीतिक शक्तियाँ पुनर्गठन के पक्ष में थीं।
- पोट्टी श्रीरामुलु ने अनिश्चितकालीन भूख–हड़ताल शुरू की।
- 56 दिनों के बाद उनकी मृत्यु से आंदोलन और तेज हुआ।
- दिसंबर 1952 में प्रधानमंत्री ने अलग आंध्र प्रदेश बनाने की घोषणा की।

3. राज्य पुनर्गठन आयोग का कार्य और प्रमुख सिफारिश बताइए।
उत्तर :
- केंद्र सरकार ने 1953 में राज्य पुनर्गठन आयोग बनाया।
- आयोग का काम राज्यों के सीमांकन के प्रश्न पर विचार करना था।
- आयोग ने राज्यों की सीमाओं के निर्धारण का अध्ययन किया।
- उसने भाषा को सीमांकन का आधार स्वीकार किया।
- उसकी रिपोर्ट के आधार पर 1956 में राज्य पुनर्गठन अधिनियम पास हुआ।

4. भाषाई राज्यों के निर्माण को लोकतांत्रिक कदम क्यों माना गया?
उत्तर :
- इससे क्षेत्रीय और भाषाई माँगों को मान्यता मिली।
- विभिन्न क्षेत्रों की पहचान को स्वीकार किया गया।
- लोगों की माँगों के प्रति राजनीतिक नेतृत्व ने प्रतिक्रिया दी।
- राजनीति और सत्ता में अधिक लोगों की भागीदारी का रास्ता खुला।
- लोकतंत्र में विभिन्नताओं को पहचानने और स्वीकार करने की भावना मजबूत हुई।

5. भाषावार राज्यों के पुनर्गठन का राष्ट्रीय एकता पर क्या प्रभाव पड़ा?
उत्तर :
- आशंका के विपरीत देश का विभाजन नहीं हुआ।
- देश की एकता और अधिक मजबूत हुई।
- राज्यों के सीमांकन के लिए समरूप आधार मिला।
- भाषाई और क्षेत्रीय विविधताओं को स्वीकार किया गया।
- अलगाववाद के खतरे को कम करने में सहायता मिली।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. आंध्र प्रदेश के गठन के लिए चले आंदोलन का वर्णन कीजिए।
उत्तर :
- पुराने मद्रास प्रांत में बड़ी संख्या में तेलुगु–भाषी क्षेत्र थे।
- विशाल आंध्र आंदोलन ने अलग आंध्र प्रदेश की माँग की।
- तेलुगु–भाषी क्षेत्र की लगभग सभी राजनीतिक शक्तियाँ इस माँग के पक्ष में थीं।
- कांग्रेस नेता और गाँधीवादी पोट्टी श्रीरामुलु अनिश्चितकालीन भूख–हड़ताल पर बैठे।
- 56 दिनों की भूख–हड़ताल के बाद उनकी मृत्यु हो गई।
- उनकी मृत्यु के बाद बड़े पैमाने पर आंदोलन और हिंसक घटनाएँ हुईं।
- दिसंबर 1952 में प्रधानमंत्री ने अलग आंध्र प्रदेश राज्य बनाने की घोषणा की।

2. राज्य पुनर्गठन आयोग और 1956 के राज्य पुनर्गठन अधिनियम का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- आंध्र प्रदेश के गठन के बाद अन्य क्षेत्रों में भी भाषाई राज्यों की माँग तेज हुई।
- इन संघर्षों के कारण केंद्र सरकार ने 1953 में राज्य पुनर्गठन आयोग बनाया।
- आयोग का कार्य राज्यों के सीमांकन के प्रश्न पर विचार करना था।
- आयोग ने भाषा के आधार पर सीमाओं के निर्धारण को स्वीकार किया।
- आयोग की रिपोर्ट के आधार पर 1956 में राज्य पुनर्गठन अधिनियम पारित हुआ।
- इस अधिनियम के आधार पर 14 राज्य बनाए गए।
- इसके साथ 6 केंद्र–शासित प्रदेश भी बनाए गए।

3. भाषावार राज्यों के पुनर्गठन ने भारतीय लोकतंत्र और राष्ट्रीय एकता को किस प्रकार प्रभावित किया?

उत्तर :
- भाषाई माँगों को स्वीकार करना एक लोकतांत्रिक कदम माना गया।
- क्षेत्रीय और भाषाई पहचान को राजनीतिक व्यवस्था में स्थान मिला।
- इससे अलगाववाद और विभाजन की आशंकाओं में कमी आई।
- देश की एकता टूटने के बजाय और मजबूत हुई।
- राजनीति और सत्ता में भागीदारी का रास्ता अधिक लोगों के लिए खुला।
- राज्यों के सीमांकन के लिए एक समरूप आधार मिला।
- विभिन्नताओं को पहचानने और स्वीकार करने की लोकतांत्रिक धारणा मजबूत हुई।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. भाषाई आधार पर राज्यों के पुनर्गठन की पृष्ठभूमि और प्रक्रिया का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- औपनिवेशिक शासन में प्रांतों की सीमाएँ मुख्यतः प्रशासनिक सुविधा के आधार पर तय थीं।
- राष्ट्रीय आंदोलन ने इस सीमांकन को बनावटी माना।
- सन् 1920 के नागपुर अधिवेशन के बाद कांग्रेस ने भाषाई राज्यों का सिद्धांत स्वीकार किया।
- आजादी और विभाजन के बाद नेतृत्व ने इस प्रश्न को कुछ समय के लिए स्थगित किया।
- देश की एकता टूटने और अव्यवस्था फैलने की आशंका थी।
- तेलुगु क्षेत्रों में विशाल आंध्र आंदोलन ने अलग राज्य की माँग की।
- पोट्टी श्रीरामुलु की मृत्यु के बाद दिसंबर 1952 में आंध्र प्रदेश बनाने की घोषणा हुई।
- 1953 में राज्य पुनर्गठन आयोग गठित हुआ।
- उसकी रिपोर्ट के आधार पर 1956 में राज्य पुनर्गठन अधिनियम पारित हुआ।

2. 1956 के बाद भारत में नए राज्यों के निर्माण की प्रमुख घटनाओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- भाषाई आधार पर पुनर्गठन के बावजूद सभी राज्यों का गठन तत्काल नहीं हुआ।
- द्विभाषी बंबई राज्य से 1960 में महाराष्ट्र और गुजरात बनाए गए।
- 1966 में पंजाबी–भाषी क्षेत्र को पंजाब राज्य का दर्जा मिला।
- वृहत्तर पंजाब से हरियाणा और हिमाचल प्रदेश अलग किए गए।
- 1972 में असम से अलग करके मेघालय बनाया गया।
- इसी वर्ष मणिपुर और त्रिपुरा भी अलग राज्य बने।
- मिजोरम और अरुणाचल प्रदेश 1987 में अस्तित्व में आए।
- नगालैंड 1963 में राज्य बन चुका था।
- सन् 2000 में छत्तीसगढ़, उत्तराखंड और झारखंड तथा 2 जून 2014 को तेलंगाना नया राज्य बना।

3. भाषावार राज्यों के पुनर्गठन के लोकतांत्रिक और राष्ट्रीय महत्त्व का विवेचन कीजिए।

उत्तर :
- प्रारंभ में आशंका थी कि भाषाई राज्य अलगाववाद को बढ़ावा देंगे।
- नेतृत्व को नव–निर्मित भारतीय राष्ट्र पर दबाव बढ़ने की चिंता थी।
- जनता के दबाव में भाषाई और क्षेत्रीय दावों को स्वीकार किया गया।
- इन माँगों को मानना एक लोकतांत्रिक कदम माना गया।
- राजनीतिक और सत्ता संबंधी भागीदारी का रास्ता अंग्रेजीभाषी अभिजात वर्ग से बाहर भी खुला।
- राज्यों के सीमांकन के लिए एक समरूप आधार मिला।
- आशंका के विपरीत देश नहीं टूटा।
- बल्कि राष्ट्रीय एकता और मजबूत हुई।
- भाषावार पुनर्गठन से भारत में विभिन्नता के सिद्धांत को स्पष्ट स्वीकृति मिली।

पढ़ना नहीं, जहाँ चाहें जैसे चाहें!

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

2 एक दल के प्रभुत्व का दौर

लोकतंत्र स्थापित करने की चुनौती

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. भारत के प्रथम चुनाव आयुक्त कौन थे? *(RBSE-2022)*
(अ) सुकुमार सेन (ब) के.वी.के. सुन्दरम
(स) डॉ. नगेन्द्र सिंह (द) टी.एन. शेषन **(अ)**

2. भारत के चुनाव आयोग का गठन कब हुआ?
(अ) जनवरी 1950 (ब) अक्टूबर 1951
(स) फरवरी 1952 (द) जनवरी 1949 **(अ)**

3. पहले आम चुनाव में लोकसभा के लिए कितने सांसद चुने जाने थे?
(अ) 3200 (ब) 494
(स) 489 (द) 364 **(स)**

4. प्रथम आम चुनाव कब आयोजित किए गए?
(अ) जनवरी 1950 से जनवरी 1951
(ब) अक्टूबर 1951 से फरवरी 1952
(स) मार्च 1957 से मई 1957
(द) जनवरी 1952 से जनवरी 1953 **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. भारतीय संविधान को ..... को अंगीकृत किया गया।
उत्तर : 26 नवम्बर 1949

2. भारतीय संविधान पर ..... को हस्ताक्षर हुए।
उत्तर : 24 जनवरी 1950

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. E.V.M- का पूरा नाम लिखिए। *(RBSE-2025)*
उत्तर : Electronic Voting Machine.

2. प्रथम आम चुनाव निर्वाचन आयोग के लिए चुनौतीपूर्ण क्यों था? *(RBSE-2025)*
उत्तर : देश का विशाल आकार, बड़ी मतदाता–सूची, कम साक्षरता और व्यापक चुनावी व्यवस्था के कारण।

3. स्वतंत्र भारत के नेताओं ने शासन के लिए कौन–सा रास्ता चुना?
उत्तर : लोकतांत्रिक राजनीति का रास्ता।

4. प्रथम आम चुनाव को सामान्यतः किस वर्ष का चुनाव कहा जाता है?
उत्तर : 1952 का चुनाव।

5. प्रथम आम चुनाव में मतदान करने वाले मतदाताओं का अनुपात कैसा था?
उत्तर : कुल मतदाताओं में आधे से अधिक ने मतदान किया।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. प्रथम आम चुनाव को सफल बनाने के लिए चुनाव आयोग के दो कार्य बताइए। *(Model Paper-2023)*
उत्तर :
- चुनाव क्षेत्रों का सीमांकन किया गया।
- मतदाता–सूची तैयार की गई।
- मतदाता–सूची की त्रुटियों का पुनरावलोकन किया गया।
- चुनाव संचालन के लिए अधिकारियों और चुनावकर्मियों को प्रशिक्षित किया गया।

2. स्वतंत्र भारत के नेताओं ने लोकतंत्र को क्यों अपनाया?
उत्तर :
- स्वतंत्रता–संग्राम की लोकतंत्र के प्रति गहरी प्रतिबद्धता थी।
- नेताओं ने राजनीति को समस्या नहीं, बल्कि समस्या के समाधान का उपाय माना।
- समाज में विभिन्न समूहों की अलग–अलग आकांक्षाएँ थीं।
- लोकतांत्रिक राजनीति को हितों के आपसी टकराव से निपटने का माध्यम माना गया।
- राजनीतिक गतिविधि का उद्देश्य जनहित का निर्णय और उस पर अमल करना माना गया।

3. प्रथम आम चुनाव कराने में चुनाव आयोग के सामने प्रमुख कठिनाइयाँ क्या थीं?
उत्तर :
- देश का विशाल आकार बड़ी चुनौती था।
- चुनाव क्षेत्रों का सीमांकन करना था।
- करोड़ों लोगों की मतदाता–सूची तैयार करनी थी।
- मतदाताओं में केवल लगभग 15 प्रतिशत साक्षर थे।
- बड़े पैमाने पर अधिकारियों और चुनावकर्मियों का प्रशिक्षण आवश्यक था।

4. मतदाता–सूची में महिलाओं के नामों से संबंधित समस्या क्या थी?
उत्तर :
- लगभग 40 लाख महिलाओं के नाम उचित रूप से दर्ज नहीं हुए थे।
- उन्हें किसी की बेटी या पत्नी के रूप में दर्ज किया गया था।

मिशन ज्ञान
कहाँ चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

- चुनाव आयोग ने ऐसी प्रविष्टियों को स्वीकार करने से इनकार किया।
- संभव होने पर उनका पुनरावलोकन करने का निर्णय लिया गया।
- आवश्यक होने पर ऐसी प्रविष्टियों को हटाने का निर्देश दिया गया।

5. 1952 के प्रथम आम चुनाव की सफलता का क्या महत्त्व था?

उत्तर :
- लोगों ने चुनाव में बढ़–चढ़कर भागीदारी की।
- आधे से अधिक मतदाताओं ने मतदान किया।
- हारने वाले उम्मीदवारों ने भी परिणामों को निष्पक्ष माना।
- सार्वभौम मताधिकार को लेकर उठे संदेह दूर हुए।
- इससे सिद्ध हुआ कि गरीबी और अशिक्षा के बीच भी लोकतंत्र पर अमल किया जा सकता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. स्वतंत्रता से अब तक मतदान के तरीकों में आए बदलावों को समझाइए। *(RBSE-2023)*

उत्तर :
- प्रथम आम चुनाव में प्रत्येक उम्मीदवार के लिए अलग मतपेटी रखी जाती थी।
- मतपेटी पर संबंधित उम्मीदवार का चुनाव–चिह्न अंकित होता था।
- मतदाता अपना मतपत्र पसंद के उम्मीदवार की मतपेटी में डालता था।
- शुरुआती दो चुनावों के बाद सभी उम्मीदवारों के नाम और चुनाव–चिह्न एक ही मतपत्र पर अंकित होने लगे।
- मतदाता पसंद के उम्मीदवार के नाम पर मुहर लगाता था।
- 1990 के दशक के अंत में इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन का उपयोग शुरू हुआ।
- 2004 तक पूरे देश में ईवीएम का इस्तेमाल चालू हो गया।

2. प्रथम आम चुनाव के आयोजन के पैमाने और व्यवस्था का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- देश में लगभग 17 करोड़ मतदाता थे।
- मतदाताओं को 3200 विधायक और लोकसभा के लिए 489 सांसद चुनने थे।
- मतदाताओं में केवल लगभग 15 प्रतिशत साक्षर थे।
- चुनाव क्षेत्रों का सीमांकन और मतदाता–सूची तैयार करना आवश्यक था।
- चुनाव आयोग ने 3 लाख से अधिक अधिकारियों और चुनावकर्मियों को प्रशिक्षित किया।
- मतदान के लिए लगभग 20 लाख स्टील की मतपेटियों का उपयोग किया गया।
- चुनाव अभियान, मतदान और मतगणना की प्रक्रिया में लगभग छः महीने लगे।

3. सार्वभौम मताधिकार को लेकर व्यक्त आशंकाओं और चुनाव परिणामों का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- भारत में सार्वभौम मताधिकार का प्रयोग उस समय जोखिम भरा प्रयोग माना गया।
- गरीब और अनपढ़ मतदाताओं की क्षमता को लेकर संदेह व्यक्त किए गए।
- कुछ आलोचकों ने सार्वभौम मताधिकार के असफल होने की आशंका जताई।
- इसके बावजूद लोगों ने चुनावों में बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया।
- आधे से अधिक मतदाताओं ने अपना मत डाला।
- पराजित उम्मीदवारों ने भी चुनाव परिणामों को निष्पक्ष माना।
- चुनाव की सफलता ने सिद्ध किया कि गरीबी और अशिक्षा लोकतांत्रिक चुनावों में बाधा नहीं हैं।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. स्वतंत्र भारत में लोकतंत्र स्थापित करने की चुनौती का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- स्वतंत्र भारत के सामने शुरुआत से ही राष्ट्र–निर्माण की गंभीर चुनौती थी।
- कई नवस्वतंत्र देशों में राष्ट्रीय एकता के नाम पर अलोकतांत्रिक शासन स्थापित हुआ।
- भारत के नेताओं ने इसके विपरीत लोकतांत्रिक रास्ता चुना।
- स्वतंत्रता–संग्राम की लोकतंत्र के प्रति प्रतिबद्धता इस निर्णय का आधार थी।
- नेताओं ने राजनीति को समस्या के समाधान का उपाय माना।
- संविधान को 26 नवम्बर 1949 को अंगीकृत किया गया और वह 26 जनवरी 1950 से लागू हुआ।
- लोकतांत्रिक शासन के लिए स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव कराना आवश्यक था।
- चुनाव आयोग को विशाल मतदाता–सूची, सीमांकन और कम साक्षरता जैसी व्यावहारिक चुनौतियों से निपटना पड़ा।
- प्रथम आम चुनाव की सफलता ने भारत में लोकतांत्रिक व्यवस्था की व्यवहारिकता सिद्ध कर दी।

2. प्रथम आम चुनाव की सफलता भारतीय लोकतंत्र के लिए किस प्रकार निर्णायक सिद्ध हुई?

पहले सब चाहें, फिर कोई चाहे!

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

उत्तर :
- चुनावों ने सार्वभौम मताधिकार को व्यवहार में लागू किया।
- गरीब और कम साक्षर मतदाताओं ने भी लोकतांत्रिक प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी की।
- आधे से अधिक मतदाताओं ने मतदान करके लोकतंत्र में विश्वास व्यक्त किया।
- उम्मीदवारों के बीच वास्तविक चुनावी प्रतिस्पर्धा हुई।
- चुनाव परिणामों को हारने वाले उम्मीदवारों ने भी निष्पक्ष माना।
- सार्वभौम मताधिकार को लेकर की गई आलोचनाएँ गलत सिद्ध हुईं।
- देश से बाहर के पर्यवेक्षकों ने भी चुनाव की सफलता को महत्त्वपूर्ण उपलब्धि माना।
- यह सिद्ध हुआ कि लोकतंत्र केवल धनी और साक्षर समाजों तक सीमित नहीं है।
- 1952 का आम चुनाव विश्व के लोकतांत्रिक इतिहास में मील का पत्थर सिद्ध हुआ।

पहले तीन चुनावों में कांग्रेस का प्रभुत्व

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. भारत में सर्वप्रथम गैर–कांग्रेसी सरकार किस राज्य में बनी? *(Model Paper-2024)*

(अ) पश्चिम बंगाल (ब) राजस्थान
(स) तमिलनाडु (द) केरल **(द)**

2. प्रथम आम चुनाव में कांग्रेस ने लोकसभा की कितनी सीटें जीतीं?

(अ) 364 (ब) 371
(स) 361 (द) 489 **(अ)**

3. प्रथम आम चुनाव में कांग्रेस के बाद दूसरे स्थान पर कौन–सी पार्टी रही?

(अ) सोशलिस्ट पार्टी (ब) भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी
(स) जनसंघ (द) स्वतंत्र पार्टी **(ब)**

4. तीसरा आम चुनाव किस वर्ष हुआ?

(अ) 1951 (ब) 1957
(स) 1962 (द) 1964 **(स)**

रिक्तस्थान –

1. 1957 में ..... राज्य में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की अगुवाई में सरकार बनी। *(Model Paper-2023)*

उत्तर : केरल

2. प्रथम आम चुनाव में कांग्रेस ने लोकसभा की कुल 489 सीटों में से ..... सीटें जीतीं।

उत्तर : 364

3. प्रथम आम चुनाव में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी को ..... सीटें मिलीं।

उत्तर : 16

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. भारत में प्रथम तीन आम चुनावों में किस दल का प्रभुत्व रहा? *(RBSE-2022)*

उत्तर : भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस।

2. लोकतांत्रिक चुनावों के जरिए कम्युनिस्ट पार्टी की सर्वप्रथम सरकार किस राज्य में और कब बनी? *(Model Paper-2026)*

उत्तर : केरल में, 1957 में।

3. प्रथम आम चुनाव में कांग्रेस ने कितनी लोकसभा सीटें जीतीं?

उत्तर : 364 सीटें।

4. प्रथम आम चुनाव में सबसे बड़ी विपक्षी पार्टी कौन–सी बनी?

उत्तर : भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी।

5. दूसरे आम चुनाव में कांग्रेस ने कितनी लोकसभा सीटें जीतीं?

उत्तर : 371 सीटें।

6. तीसरे आम चुनाव में कांग्रेस ने कितनी लोकसभा सीटें जीतीं?

उत्तर : 361 सीटें।

7. 1957 में केरल के मुख्यमंत्री कौन बने?

उत्तर : ई.एम.एस. नम्बूदरीपाद।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. पहले आम चुनाव में कांग्रेस की सफलता के प्रमुख कारण बताइए।

उत्तर :
- कांग्रेस को स्वाधीनता–संग्राम की विरासत प्राप्त थी।
- उसका संगठन पूरे देश में फैला हुआ था।
- जवाहरलाल नेहरू कांग्रेस के लोकप्रिय और करिश्माई नेता थे।
- नेहरू ने पूरे देश में कांग्रेस के चुनाव अभियान की अगुवाई की।
- कांग्रेस अन्य दलों की तुलना में पहले से अधिक सुसंगठित थी।

2. 1952 के चुनाव में कांग्रेस की सीटों की संख्या उसके मत प्रतिशत से अधिक क्यों थी?

उत्तर :
- देश में 'सर्वाधिक वोट पाने वाले की जीत' की चुनाव–पद्धति अपनाई गई थी।
- कांग्रेस को लगभग 45 प्रतिशत वोट मिले।
- इसके बावजूद उसे लगभग 74 प्रतिशत सीटें मिलीं।
- गैर–कांग्रेसी वोट कई प्रतिस्पर्धी दलों और उम्मीदवारों में बँट गए।

- इससे कांग्रेस अनेक सीटों पर दूसरे दलों से आगे निकल गई।

3. पहले तीन आम चुनावों में कांग्रेस के प्रभुत्व की स्थिति स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- 1952 में कांग्रेस ने 364 लोकसभा सीटें जीतीं।
- 1957 में उसने 371 सीटें प्राप्त कीं।
- 1962 में कांग्रेस को 361 सीटें मिलीं।
- दूसरे और तीसरे चुनाव में कांग्रेस ने लगभग तीन–चौथाई सीटें प्राप्त कीं।
- कोई भी विपक्षी पार्टी कांग्रेस की जीती सीटों के दशांश तक नहीं पहुँच सकी।

4. 1957 के केरल विधानसभा चुनाव का महत्त्व बताइए।

उत्तर :
- केरल में कांग्रेस को हार का सामना करना पड़ा।
- कम्युनिस्ट पार्टी को 126 में से 60 सीटें मिलीं।
- उसे पाँच स्वतंत्र उम्मीदवारों का समर्थन मिला।
- ई.एम.एस. नम्बूदरीपाद को सरकार बनाने का न्यौता मिला।
- लोकतांत्रिक चुनावों के जरिए कम्युनिस्ट पार्टी की सरकार बनने का यह महत्त्वपूर्ण उदाहरण था।

5. प्रथम तीन चुनावों के दौरान राज्यों में कांग्रेस की स्थिति कैसी थी?

उत्तर :
- विधानसभा चुनावों में भी कांग्रेस ने व्यापक सफलता प्राप्त की।
- अधिकांश राज्यों में कांग्रेस को बहुमत मिला।
- केंद्र और प्रांतीय स्तर पर कांग्रेस का व्यापक नियंत्रण कायम हुआ।
- कुछ राज्यों में कांग्रेस को बहुमत न मिलने के अपवाद भी थे।
- केरल इसका एक महत्त्वपूर्ण उदाहरण था।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. पहले तीन आम चुनावों में कांग्रेस के प्रभुत्व का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- प्रथम आम चुनाव में कांग्रेस ने 489 में से 364 सीटें जीतीं।
- दूसरे स्थान पर भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी केवल 16 सीटों के साथ रही।
- 1957 के दूसरे चुनाव में कांग्रेस ने 371 सीटें जीतीं।
- 1962 के तीसरे चुनाव में कांग्रेस ने 361 सीटें प्राप्त कीं।
- दूसरे और तीसरे चुनाव में भी कांग्रेस ने लगभग तीन–चौथाई सीटें बनाए रखीं।
- किसी भी विपक्षी पार्टी ने कांग्रेस की सीटों के दशांश जितनी सीटें भी नहीं जीतीं।
- इस प्रकार केंद्र और अधिकांश राज्यों में कांग्रेस का व्यापक प्रभुत्व कायम रहा।

2. चुनाव–प्रणाली ने कांग्रेस के प्रभुत्व को किस प्रकार बढ़ाया?

उत्तर :
- भारत में 'सर्वाधिक वोट पाने वाले की जीत' वाली चुनाव–पद्धति अपनाई गई।
- 1952 में कांग्रेस को केवल लगभग 45 प्रतिशत वोट मिले।
- इसके बावजूद कांग्रेस ने लगभग 74 प्रतिशत सीटें जीत लीं।
- सोशलिस्ट पार्टी को लगभग 10 प्रतिशत वोट मिलने पर भी 3 प्रतिशत सीटें नहीं मिलीं।
- गैर–कांग्रेसी मत अनेक दलों और उम्मीदवारों में विभाजित हो गए।
- कांग्रेस अन्य दलों की तुलना में थोड़ा आगे रहकर भी अधिक सीटें जीत सकी।
- इसलिए चुनाव–पद्धति के कारण कांग्रेस की जीत का आँकड़ा और दायरा बढ़ा हुआ दिखाई दिया।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. पहले तीन आम चुनावों में कांग्रेस की चुनावी सफलता का विस्तृत विश्लेषण कीजिए।

उत्तर :
- कांग्रेस को स्वाधीनता–संग्राम की विरासत प्राप्त थी।
- स्वतंत्रता के समय यह देश की सबसे अधिक सुसंगठित और व्यापक पार्टी थी।
- जवाहरलाल नेहरू जैसे लोकप्रिय नेता कांग्रेस के साथ थे।
- प्रथम चुनाव में कांग्रेस ने 489 में से 364 सीटें जीतीं।
- दूसरे चुनाव 1957 में उसे 371 सीटें प्राप्त हुईं।
- तीसरे चुनाव 1962 में कांग्रेस ने 361 सीटें जीतीं।
- कांग्रेस को चुनाव–पद्धति में विपक्षी मतों के विभाजन का लाभ मिला।
- अधिकांश राज्यों में भी कांग्रेस ने अपना प्रभुत्व बनाए रखा।
- इस प्रकार पहले तीन आम चुनावों में कांग्रेस राष्ट्रीय राजनीति की प्रमुख शासक पार्टी बनी रही।

2. कांग्रेस के प्रभुत्व और भारतीय चुनाव–प्रणाली के संबंध को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- भारतीय चुनाव–प्रणाली में सर्वाधिक वोट पाने वाले उम्मीदवार की जीत होती है।
- किसी पार्टी को सीट जीतने के लिए कुल वोटों का बहुमत प्राप्त करना आवश्यक नहीं होता।
- 1952 में कांग्रेस को लगभग 45 प्रतिशत मत मिले।
- इन मतों से कांग्रेस ने लगभग 74 प्रतिशत सीटें जीत लीं।

पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

- दूसरी ओर सोशलिस्ट पार्टी को लगभग 10 प्रतिशत मत मिले, पर बहुत कम सीटें प्राप्त हुईं।
- गैर–कांग्रेसी मत कई प्रतिस्पर्धी दलों में बँटे हुए थे।
- इन सभी गैर–कांग्रेसी मतों का योग कांग्रेस के मतों से अधिक हो सकता था।
- लेकिन अलग–अलग चुनाव क्षेत्रों में कांग्रेस अन्य उम्मीदवारों से आगे रही।
- इस प्रकार चुनाव–प्रणाली ने कांग्रेस की चुनावी सफलता को अधिक व्यापक रूप दिया।

कांग्रेस के प्रभुत्व की प्रकृति

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. भारत में कांग्रेस का प्रभुत्व किस परिस्थिति में कायम हुआ?
(अ) सैन्य शासन में
(ब) एक–दलीय संविधान के अंतर्गत
(स) लोकतांत्रिक स्थितियों में
(द) चुनावों के अभाव में **(स)**

2. कांग्रेस की असाधारण सफलता की जड़ें किसमें थीं?
(अ) सैन्य शक्ति में
(ब) स्वाधीनता–संग्राम की विरासत में
(स) एक–दलीय संविधान में
(द) कानूनी प्रतिबंधों में **(ब)**

3. आजादी के समय तक कांग्रेस किस प्रकार का सामाजिक गठबंधन बन चुकी थी?
(अ) सीमित गठबंधन
(ब) सतरंगा सामाजिक गठबंधन
(स) सैन्य गठबंधन
(द) केवल शहरी गठबंधन **(ब)**

4. कांग्रेस में मौजूद विभिन्न समूह क्या कहलाते थे?
(अ) आयोग (ब) गुट
(स) निर्वाचन क्षेत्र (द) संगठन **(ब)**

5. कांग्रेस की गठबंधनी प्रकृति की प्रमुख विशेषता क्या थी?
(अ) मतभेदों का निषेध
(ब) केवल एक विचारधारा
(स) सर्व–समावेशी स्वभाव
(द) विपक्ष पर प्रतिबंध **(स)**

6. चुनावी प्रतिस्पर्धा के पहले दशक की व्यवस्था को क्या कहा गया?
(अ) कम्युनिस्ट प्रणाली (ब) कांग्रेस–प्रणाली
(स) जनसंघ प्रणाली (द) सैन्य प्रणाली **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. भारत में एक पार्टी का प्रभुत्व ..... स्थितियों में कायम हुआ।
उत्तर : लोकतांत्रिक

2. भारतीय राजनीति के प्रारंभिक कालखंड को ..... कहा गया।
उत्तर : कांग्रेस–प्रणाली

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. भारत में कांग्रेस का प्रभुत्व किस प्रकार की राजनीतिक परिस्थितियों में स्थापित हुआ?
उत्तर : लोकतांत्रिक परिस्थितियों में।

2. कांग्रेस को किस आंदोलन का वारिस माना गया?
उत्तर : राष्ट्रीय आंदोलन का।

3. कांग्रेस के गठबंधनी स्वभाव की एक प्रमुख विशेषता बताइए।
उत्तर : सर्व–समावेशी होना।

4. प्रारंभिक भारतीय राजनीतिक व्यवस्था के लिए कौन–सा शब्द प्रयुक्त किया गया?
उत्तर : कांग्रेस–प्रणाली।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. कांग्रेस को सामाजिक और विचारधारात्मक गठबंधन क्यों कहा जाता है? *(RBSE-2022)*
उत्तर :
- कांग्रेस में विभिन्न वर्ग, जाति, धर्म और भाषा के लोग शामिल थे।
- इसमें किसान, उद्योगपति, मजदूर और मालिक सभी को स्थान मिला।
- ग्रामीण और शहरी दोनों प्रकार के सामाजिक समूह कांग्रेस में मौजूद थे।
- इसमें दक्षिणपंथी, वामपंथी और मध्यमार्गी विचारधाराएँ शामिल थीं।
- इस प्रकार कांग्रेस भारत की सामाजिक और विचारधारात्मक विविधता का प्रतिनिधित्व करती थी।

2. भारत में कांग्रेस का प्रभुत्व अन्य एक–दलीय व्यवस्थाओं से कैसे अलग था?
उत्तर :
- भारत में प्रभुत्व लोकतांत्रिक परिस्थितियों में स्थापित हुआ।
- अनेक राजनीतिक दलों को चुनाव लड़ने की स्वतंत्रता थी।
- चुनाव मुक्त और निष्पक्ष वातावरण में हुए।
- विभिन्न दलों के बीच वास्तविक चुनावी होड़ मौजूद थी।
- इसके बावजूद कांग्रेस लगातार चुनावों में सफल होती रही।

3. स्वाधीनता–संग्राम की विरासत ने कांग्रेस को किस प्रकार लाभ पहुँचाया?

उत्तर :
- कांग्रेस को राष्ट्रीय आंदोलन का वारिस माना गया।
- स्वतंत्रता आंदोलन के कई प्रमुख नेता कांग्रेस के उम्मीदवार बने।
- कांग्रेस पहले से एक सुसंगठित पार्टी थी।
- उसका संगठन स्थानीय स्तर तक फैला हुआ था।
- उसे 'अव्वल और इकलौती' होने का लाभ मिला।

4. कांग्रेस के गठबंधनी स्वभाव की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर :
- कांग्रेस विभिन्न समूहों को अपने अंदर समाहित करती थी।
- उसे अतिवादी रुख से बचकर संतुलन साधना पड़ता था।
- सुलह–समझौता उसकी प्रमुख विशेषता थी।
- वह विभिन्न विचारों के प्रति सहनशील थी।
- इससे अलग–अलग नेताओं और समूहों की महत्त्वाकांक्षाओं को जगह मिलती थी।

5. कांग्रेस के भीतर गुटबंदी उसकी ताकत कैसे बनी?

उत्तर :
- कांग्रेस विभिन्न गुटों के प्रति सहनशील थी।
- अनेक हितों और विचारधाराओं को पार्टी के अंदर प्रतिनिधित्व मिलता था।
- विभिन्न गुटों के बीच आंतरिक प्रतिस्पर्धा की गुंजाइश थी।
- असंतुष्ट समूह पार्टी छोड़ने के बजाय भीतर ही संघर्ष करते थे।
- इस कारण गुटबंदी शासक दल के भीतर संतुलन का औजार बनी।

6. कांग्रेस–प्रणाली से क्या अभिप्राय है?

उत्तर :
- कांग्रेस एक भारी–भरकम मध्यमार्गी पार्टी के रूप में उभरी।
- विभिन्न विचारों की राजनीतिक होड़ काफी हद तक कांग्रेस के भीतर होती थी।
- अन्य दल कांग्रेस के विभिन्न गुटों को प्रभावित करने का प्रयास करते थे।
- कांग्रेस ने शासक–दल और विपक्ष दोनों जैसी भूमिकाएँ निभाईं।
- इसी विशेष व्यवस्था को 'कांग्रेस–प्रणाली' कहा गया।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. क्या आजादी के समय कांग्रेस एक सतरंगे सामाजिक गठबंधन का रूप ले चुकी थी? तर्क दीजिए।

(Model Paper-2024)

उत्तर :
- कांग्रेस ने 20वीं सदी में जनांदोलन का रूप ग्रहण किया।
- इसमें किसान और उद्योगपति दोनों शामिल हुए।
- शहर और गाँव के निवासियों को कांग्रेस में स्थान मिला।
- मजदूर और मालिक, दोनों कांग्रेस के सामाजिक आधार का हिस्सा थे।
- इसमें मध्य, निम्न और उच्च वर्ग तथा जातियों के लोग शामिल थे।
- नेतृत्व में खेती–किसानी और ग्रामीण पृष्ठभूमि वाले नेता भी उभरे।
- इसलिए कांग्रेस भारत की वर्ग, जाति, धर्म, भाषा और हितों की विविधता का प्रतिनिधित्व करने वाला सतरंगा सामाजिक गठबंधन बनी।

2. कांग्रेस के प्रभुत्व की लोकतांत्रिक प्रकृति स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- अन्य कई देशों में एक पार्टी का प्रभुत्व लोकतंत्र की कीमत पर स्थापित हुआ था।
- भारत में कांग्रेस का प्रभुत्व लोकतांत्रिक स्थितियों में विकसित हुआ।
- देश में अनेक राजनीतिक दलों को कार्य करने की स्वतंत्रता थी।
- विभिन्न पार्टियों ने मुक्त और निष्पक्ष चुनावों में भाग लिया।
- कांग्रेस को अन्य दलों के साथ वास्तविक चुनावी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ा।
- इसके बावजूद कांग्रेस ने लगातार चुनाव जीते।
- इस प्रकार उसका प्रभुत्व किसी कानूनी या सैन्य प्रतिबंध के बजाय लोकतांत्रिक समर्थन पर आधारित था।

3. कांग्रेस के सामाजिक और विचारधारात्मक गठबंधन का स्वरूप समझाइए।

उत्तर :
- कांग्रेस ने परस्पर विरोधी हितों वाले अनेक सामाजिक समूहों को जोड़ा।
- किसान, उद्योगपति, मजदूर, मालिक, शहरी और ग्रामीण सभी को इसमें स्थान मिला।
- विभिन्न वर्ग, जाति, धर्म और भाषा के लोग कांग्रेस में शामिल हुए।
- कांग्रेस का नेतृत्व धीरे–धीरे अधिक व्यापक हुआ।
- कांग्रेस ने क्रांतिकारी और शांतिवादी दोनों धाराओं को समाहित किया।
- इसमें दक्षिणपंथी, वामपंथी और मध्यमार्गी विचारों के लोग थे।
- इसलिए कांग्रेस सामाजिक ही नहीं बल्कि एक विचारधारात्मक गठबंधन भी थी।

पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

निबंधात्मक प्रश्न –

1. कांग्रेस के प्रभुत्व की प्रकृति का विस्तार से वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- भारत में कांग्रेस का प्रभुत्व लोकतांत्रिक परिस्थितियों में कायम हुआ।
- अन्य दलों को मुक्त और निष्पक्ष चुनावों में प्रतिस्पर्धा का अवसर प्राप्त था।
- कांग्रेस को स्वाधीनता–संग्राम की विरासत का लाभ मिला।
- वह पहले से देशभर में फैली एक सुसंगठित पार्टी थी।
- कांग्रेस का स्थानीय स्तर तक व्यापक संगठनात्मक नेटवर्क था।
- वह विभिन्न वर्गों, जातियों, धर्मों और भाषाओं का सामाजिक गठबंधन थी।
- इसमें दक्षिणपंथी, वामपंथी और मध्यमार्गी धाराओं का विचारधारात्मक समावेश था।
- पार्टी के विभिन्न गुटों ने आंतरिक प्रतिस्पर्धा और संतुलन को संभव बनाया।
- इस कारण प्रारंभिक भारतीय राजनीतिक व्यवस्था को 'कांग्रेस–प्रणाली' कहा गया।

2. 'कांग्रेस–प्रणाली' की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- कांग्रेस की प्रांतीय इकाइयाँ अनेक गुटों से मिलकर बनी थीं।
- विभिन्न गुट अलग–अलग विचारधारात्मक रुख अपनाते थे।
- कांग्रेस एक बड़ी मध्यमार्गी पार्टी के रूप में कार्य करती थी।
- अन्य राजनीतिक दल कांग्रेस के किसी न किसी गुट को प्रभावित करने का प्रयास करते थे।
- विपक्षी दल सत्ता से बाहर रहते हुए भी नीतियों को अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित कर सकते थे।
- कांग्रेस के भीतर विभिन्न गुटों की मौजूदगी संतुलन साधने के औजार की तरह काम करती थी।
- वास्तविक राजनीतिक होड़ का बड़ा हिस्सा कांग्रेस के अंदर चलता था।
- कांग्रेस एक ओर शासक–दल की भूमिका निभाती थी।
- दूसरी ओर उसके भीतर मौजूद प्रतिस्पर्धा के कारण वह विपक्ष जैसी भूमिका भी निभाती थी; इसी व्यवस्था को 'कांग्रेस–प्रणाली' कहा गया।

विपक्षी पार्टियों का उद्‌भव

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. भारतीय जनसंघ का गठन कब हुआ?
(Model Paper-2025, RBSE-2026)

(अ) 1950 (ब) 1951
(स) 1952 (द) 1953 **(ब)**

2. कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी का गठन कब हुआ था?

(अ) 1934 (ब) 1941
(स) 1948 (द) 1951 **(अ)**

3. कांग्रेस के समाजवादियों ने अलग होकर सोशलिस्ट पार्टी कब बनाई?

(अ) 1934 (ब) 1948
(स) 1951 (द) 1955 **(ब)**

4. भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का बड़ा विभाजन किस वर्ष हुआ?

(अ) 1951 (ब) 1957
(स) 1962 (द) 1964 **(द)**

5. भारतीय जनसंघ के संस्थापक–अध्यक्ष कौन थे?

(अ) दीनदयाल उपाध्याय
(ब) श्यामा प्रसाद मुखर्जी
(स) बलराज मधोक
(द) राममनोहर लोहिया **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी का गठन ..... में हुआ।
उत्तर : 1934

2. समाजवादियों ने कांग्रेस से अलग होकर ..... में सोशलिस्ट पार्टी बनाई।
उत्तर : 1948

3. भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने ..... में हिंसक क्रांति का रास्ता छोड़ दिया।
उत्तर : 1951

4. भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का बड़ा विभाजन ..... में हुआ।
उत्तर : 1964

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया का विभाजन किस आधार पर हुआ? *(RBSE-2022)*
उत्तर : चीन और सोवियत संघ के बीच विचारधारात्मक अंतर के आधार पर।

2. सोशलिस्ट पार्टी किस विचारधारा में विश्वास करती थी?
उत्तर : लोकतांत्रिक समाजवाद।

3. भारतीय जनसंघ ने किस मूल विचार पर जोर दिया?
उत्तर : 'एक देश, एक संस्कृति और एक राष्ट्र'।

पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. जनसंघ ने किस विचारधारा पर जोर दिया?

(RBSE-2025, Model Paper-2026)

उत्तर :
- जनसंघ ने 'एक देश, एक संस्कृति और एक राष्ट्र' के विचार पर जोर दिया।
- उसने भारतीय संस्कृति और परंपरा को आधार माना।
- उसका लक्ष्य भारत को आधुनिक, प्रगतिशील और ताकतवर बनाना था।
- उसने भारत और पाकिस्तान को मिलाकर 'अखंड भारत' बनाने की बात कही।
- पार्टी ने हिंदी को राजभाषा बनाने के आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई।

2. सोशलिस्ट पार्टी की उत्पत्ति कैसे हुई?

उत्तर :
- कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी 1934 में कांग्रेस के भीतर बनाई गई।
- युवा नेता कांग्रेस को अधिक परिवर्तनकामी और समतावादी बनाना चाहते थे।
- 1948 में कांग्रेस ने दोहरी सदस्यता रोकने के लिए संविधान बदला।
- इसके कारण समाजवादियों को कांग्रेस से अलग होना पड़ा।
- 1948 में उन्होंने अलग होकर सोशलिस्ट पार्टी बनाई।

3. भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने आजादी के बाद अपनी रणनीति में क्या परिवर्तन किया?

उत्तर :
- प्रारंभ में पार्टी ने 1947 के सत्ता–हस्तांतरण को सच्ची आजादी नहीं माना।
- उसने तेलंगाना में हिंसक विद्रोह को बढ़ावा दिया।
- उसे अपनी नीति के लिए पर्याप्त जनसमर्थन नहीं मिला।
- पार्टी को अपने रुख पर पुनर्विचार करना पड़ा।
- 1951 में उसने हिंसक क्रांति छोड़कर आम चुनावों में भाग लेने का निर्णय किया।

4. प्रारंभिक विपक्षी दलों की लोकतंत्र में क्या भूमिका थी?

उत्तर :
- विपक्षी दलों ने शासन–व्यवस्था के लोकतांत्रिक चरित्र को बनाए रखने में भूमिका निभाई।
- उन्होंने कांग्रेस की नीतियों और व्यवहार की सुचिंतित आलोचना की।
- उन्होंने शासक दल पर अंकुश रखा।
- उन्होंने लोकतांत्रिक राजनीतिक विकल्प की संभावना जीवित रखी।
- उन्होंने व्यवस्थाजन्य रोष को लोकतंत्र–विरोधी बनने से रोका।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. सोशलिस्ट पार्टी पर लेख लिखिए। *(Model Paper-2025)*

उत्तर :
- कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी का गठन 1934 में कांग्रेस के भीतर युवा नेताओं ने किया।
- इसका उद्देश्य कांग्रेस को अधिक परिवर्तनकामी और समतावादी बनाना था।
- 1948 में कांग्रेस द्वारा दोहरी सदस्यता रोकने के बाद समाजवादी अलग होकर सोशलिस्ट पार्टी बने।
- समाजवादी लोकतांत्रिक समाजवाद की विचारधारा में विश्वास करते थे।
- वे कांग्रेस पर पूँजीपतियों और जमींदारों का पक्ष लेने तथा मजदूर–किसानों की उपेक्षा करने का आरोप लगाते थे।
- पार्टी को चुनावों में केवल छिटपुट सफलता मिली।
- बाद में किसान मजदूर प्रजा पार्टी, प्रजा सोशलिस्ट पार्टी और संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी जैसे समाजवादी दल बने।

2. 'भारतीय जनसंघ पार्टी' पर विस्तारपूर्वक लेख लिखिए। *(Model Paper-2025)*

उत्तर :
- भारतीय जनसंघ का गठन 1951 में हुआ।
- श्यामा प्रसाद मुखर्जी इसके संस्थापक–अध्यक्ष थे।
- जनसंघ ने 'एक देश, एक संस्कृति और एक राष्ट्र' के विचार पर जोर दिया।
- वह भारतीय संस्कृति और परंपरा के आधार पर आधुनिक, प्रगतिशील और ताकतवर भारत बनाना चाहता था।
- उसने भारत–पाकिस्तान को मिलाकर 'अखंड भारत' बनाने की बात कही।
- उसने हिंदी को राजभाषा बनाने के आंदोलन का समर्थन किया और अल्पसंख्यकों को रियायत देने का विरोध किया।
- 1950 के दशक में उसका चुनावी आधार सीमित रहा, लेकिन भारतीय जनता पार्टी की जड़ें इसी जनसंघ में बताई गई हैं।

3. भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के विकास और रणनीतिक परिवर्तन का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- 1920 के दशक के प्रारंभ में भारत के विभिन्न हिस्सों में कम्युनिस्ट समूह उभरे।
- ये समूह रूस की बोल्शेविक क्रांति से प्रेरित थे।
- 1935 से साम्यवादियों ने मुख्यतः कांग्रेस के दायरे में रहकर काम किया।
- दिसंबर 1941 में साम्यवादी कांग्रेस से अलग हुए।

पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

- स्वतंत्रता के बाद पार्टी ने तेलंगाना में हिंसक विद्रोह को बढ़ावा दिया।
- पर्याप्त जनसमर्थन न मिलने के बाद 1951 में पार्टी ने हिंसक क्रांति का रास्ता छोड़ दिया।
- प्रथम आम चुनाव में उसने 16 सीटें जीतकर सबसे बड़ी विपक्षी पार्टी का स्थान प्राप्त किया।

4. विपक्षी दलों ने भारतीय लोकतंत्र को मजबूत करने में क्या भूमिका निभाई?

उत्तर :
- विपक्षी दलों को संसद और विधानसभाओं में सीमित प्रतिनिधित्व मिला था।
- इसके बावजूद उन्होंने लोकतांत्रिक शासन के चरित्र को बनाए रखने में भूमिका निभाई।
- उन्होंने कांग्रेस की नीतियों और व्यवहार की सिद्धांतपूर्ण आलोचना की।
- उन्होंने शासक दल पर राजनीतिक अंकुश रखा।
- कई बार विपक्ष की गतिविधियों से कांग्रेस के भीतर शक्ति–संतुलन भी बदला।
- विपक्ष ने लोकतांत्रिक राजनीतिक विकल्प की संभावना जीवित रखी।
- इन दलों ने ऐसे नेता तैयार किए जिन्होंने आगे चलकर देश की राजनीति में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. स्वतंत्र भारत में विपक्षी पार्टियों के उद्भव और उनकी भूमिका का विस्तार से वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- स्वतंत्रता के प्रारंभिक दौर में कांग्रेस के अलावा अनेक विपक्षी पार्टियाँ भी मौजूद थीं।
- कई विपक्षी दलों की स्थापना 1952 के आम चुनाव से पहले हो चुकी थी।
- इनमें सोशलिस्ट पार्टी, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी और भारतीय जनसंघ जैसे महत्त्वपूर्ण दल शामिल थे।
- संसद और विधानसभाओं में इन दलों का प्रतिनिधित्व सीमित था।
- उन्होंने कांग्रेस की नीतियों की सुचिंतित और सिद्धांतपूर्ण आलोचना की।
- विपक्षी दलों ने शासक पार्टी पर अंकुश रखने का कार्य किया।
- उन्होंने राजनीतिक असंतोष के लिए लोकतांत्रिक माध्यम उपलब्ध कराया।
- इन दलों ने लोकतांत्रिक राजनीतिक विकल्प की संभावना को जीवित रखा।
- आगे चलकर इन दलों से जुड़े कई नेताओं ने भारतीय राजनीति में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

2. प्रारंभिक दौर की विपक्षी राजनीति ने भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था को किस प्रकार प्रभावित किया?

उत्तर :
- विपक्षी दलों ने कांग्रेस के व्यापक प्रभुत्व के बावजूद राजनीतिक प्रतिस्पर्धा बनाए रखी।
- उन्होंने नीतियों और सरकारी व्यवहार की संगठित आलोचना की।
- उनकी आलोचना में केवल सत्ता–विरोध नहीं बल्कि सिद्धांतों का बल भी था।
- विपक्ष ने शासक दल की शक्ति पर अंकुश रखा।
- विपक्षी गतिविधियों ने कांग्रेस के अंदर भी कई बार शक्ति–संतुलन को प्रभावित किया।
- उन्होंने नागरिकों के असंतोष को लोकतांत्रिक राजनीति के भीतर अभिव्यक्ति दी।
- इससे व्यवस्थाजन्य रोष को लोकतंत्र–विरोधी दिशा में जाने से रोका गया।
- विपक्षी दलों ने भविष्य के लिए राजनीतिक विकल्प और नेतृत्व तैयार किया।
- इस प्रकार सीमित चुनावी शक्ति के बावजूद उनकी भूमिका भारतीय लोकतंत्र के सुदृढ़ीकरण में निर्णायक रही।



3 नियोजित विकास की राजनीति

राजनीतिक फैसले और विकास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. आजादी के बाद भारत के विकास का अर्थ किससे जोड़ा गया था?
(अ) केवल औद्योगीकरण
(ब) केवल कृषि विकास
(स) आर्थिक संवृद्धि और आर्थिक–सामाजिक न्याय
(द) केवल निजी निवेश **(स)**

2. विकास संबंधी फैसलों में अंतिम निर्णय किस प्रकार का होना चाहिए?
(अ) केवल आर्थिक (ब) केवल विशेषज्ञों का
(स) राजनीतिक (द) केवल उद्योगपतियों का **(स)**

3. 'खुली प्रतिस्पर्धा और बाजारमूलक अर्थव्यवस्था' की समर्थक विचारधारा है– *(RBSE-2023)*
(अ) वामपंथ (ब) दक्षिणपंथ
(स) कट्टरपंथ (द) पंथनिरपेक्ष **(ब)**

4. उदारवादी पूँजीवादी विकास मॉडल का समर्थक देश हैकृ *(RBSE-2026)*
(अ) रूस (ब) चीन
(स) अमेरिका (द) उत्तरी कोरिया **(स)**

रिक्तस्थान –

1. कुछ नेता औद्योगीकरण को उचित रास्ता मानते थे, जबकि कुछ ..... के विकास को अधिक जरूरी मानते थे।
उत्तर : कृषि

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. लोकतंत्र में विकास संबंधी अंतिम फैसले किसे लेने चाहिए?
उत्तर : जन–प्रतिनिधियों को।

2. आजादी के आंदोलन के दौरान सरकार की आर्थिक भूमिका के संबंध में क्या सहमति बनी थी?
उत्तर : गरीबी मिटाने और सामाजिक–आर्थिक पुनर्वितरण का मुख्य जिम्मा सरकार का होगा।

3. वामपंथ से क्या अभिप्राय है? *(RBSE-2024)*
उत्तर : अर्थव्यवस्था के राज्य नियंत्रण और मुक्त प्रतिस्पर्धा पर राज्य विनियमन को प्राथमिकता देने वाली विचारधारा।

4. आजादी के समय भारत के सामने विकास के दो मॉडल कौन–से थे? *(RBSE-2025)*
उत्तर : उदारवादी–पूँजीवादी मॉडल और समाजवादी मॉडल।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. विकास संबंधी निर्णय राजनीतिक क्यों होते हैं?
उत्तर :
- अलग–अलग सामाजिक समूहों के हितों को तौलना पड़ता है।
- मौजूदा और आने वाली पीढ़ियों के हितों का विचार करना पड़ता है।
- विशेषज्ञों की राय महत्वपूर्ण है, पर अंतिम निर्णय केवल तकनीकी नहीं होता।
- जन–प्रतिनिधि जनता की भावनाओं को समझते हैं और निर्णय लेते हैं।

2. आजादी के बाद विकास के प्रश्न पर प्रमुख सहमति क्या थी?
उत्तर :
- विकास में आर्थिक संवृद्धि जरूरी मानी गई।
- साथ ही आर्थिक–सामाजिक न्याय आवश्यक माना गया।
- विकास का काम पूरी तरह निजी हाथों पर नहीं छोड़ा जाना था।
- सरकार को विकास में प्रमुख भूमिका निभानी थी।

3. विकास की धारणा अलग–अलग सामाजिक समूहों के लिए अलग क्यों होती है?
उत्तर :
- प्रत्येक समूह के हित और जरूरतें अलग होती हैं।
- उद्योगपति विकास को औद्योगिक विस्तार से जोड़ सकता है।
- शहरी उपभोक्ता की आवश्यकताएँ अलग हो सकती हैं।
- प्रस्तावित औद्योगिक क्षेत्र के आदिवासी के लिए जीविका और विस्थापन महत्वपूर्ण हो सकते हैं।

4. आजादी के बाद विकास के रास्ते को लेकर कौन–से प्रमुख मतभेद थे?
उत्तर :
- सरकार की अर्थव्यवस्था में भूमिका के स्तर पर मतभेद थे।
- औद्योगीकरण और कृषि विकास की प्राथमिकता पर मतभेद थे।
- सामाजिक न्याय और आर्थिक संवृद्धि के बीच संतुलन पर बहस थी।
- सरकार द्वारा महत्वपूर्ण उद्योग चलाने के प्रश्न पर भी मतभेद थे।

मिशन ज्ञान जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें
RECORDED VIDEOS | LIVE CLASSES | PDF NOTES | e-BOOKS | QUIZ | TEST SERIES

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. स्वतंत्रता के समय भारत में विकास की धारणाओं पर हुई बहस को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- विकास को लंबे समय तक पश्चिमी देशों के अनुभव से जोड़ा गया।
- आधुनिकता को संवृद्धि, भौतिक प्रगति और वैज्ञानिक तर्कबुद्धि से जोड़ा गया।
- भारत के सामने उदारवादी–पूँजीवादी मॉडल उपलब्ध था।
- दूसरा विकल्प समाजवादी मॉडल था।
- अनेक भारतीय नेता सोवियत विकास मॉडल से प्रभावित थे।
- साथ ही कृषि विकास और औद्योगीकरण की प्राथमिकता पर बहस बनी रही।

2. स्वतंत्र भारत में सरकार की विकास संबंधी भूमिका पर बनी सहमति और मतभेद स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- सभी विकास के लिए आर्थिक संवृद्धि चाहते थे।
- साथ ही आर्थिक–सामाजिक न्याय को आवश्यक माना गया।
- विकास को केवल व्यवसायियों, उद्योगपतियों और किसानों पर नहीं छोड़ा गया।
- सरकार की प्रमुख भूमिका पर व्यापक सहमति थी।
- सरकार की भूमिका की सीमा और स्वरूप पर मतभेद थे।
- औद्योगीकरण, कृषि और सामाजिक न्याय की प्राथमिकताओं पर राजनीतिक विवाद हुए।

3. 'भारत में निजी क्षेत्र बनाम सार्वजनिक क्षेत्र में मध्यम मार्ग अपनाया गया।' इस कथन पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

(Model Paper-2024)

उत्तर :
- भारत में विकास का काम पूरी तरह निजी हाथों में नहीं छोड़ा गया।
- सरकार को आर्थिक विकास में प्रमुख भूमिका दी गई।
- महत्वपूर्ण उद्योगों में सार्वजनिक क्षेत्र को सक्रिय किया गया।
- साथ ही निजी उद्योगों को भी कार्य करने का अवसर मिला।
- संरक्षण की नीति से निजी और सार्वजनिक दोनों क्षेत्रों के उद्योगों को बढ़ने में सहायता मिली।
- इस प्रकार विकास में राज्य की सक्रिय भूमिका के साथ निजी क्षेत्र भी बना रहा।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. विकास, सामाजिक हित और राजनीतिक निर्णय के आपसी संबंध की व्याख्या कीजिए।

उत्तर :
- विकास के अर्थ विभिन्न सामाजिक समूहों के लिए अलग–अलग हो सकते हैं।
- औद्योगिक विकास से पूँजी निवेश और रोजगार के अवसर उत्पन्न हो सकते हैं।
- उसी प्रक्रिया से स्थानीय लोगों को विस्थापन का खतरा हो सकता है।
- औद्योगिक और खनन गतिविधियों से पर्यावरणीय चिंता उत्पन्न हो सकती है।
- एक समूह के लाभ को दूसरे समूह के नुकसान से तौलना आवश्यक होता है।
- वर्तमान के साथ आने वाली पीढ़ियों के हितों पर भी विचार करना पड़ता है।
- विशेषज्ञों की सलाह जरूरी है, पर वह अंतिम निर्णय का स्थान नहीं लेती।
- लोकतंत्र में अंतिम फैसला राजनीतिक और जनता के प्रति उत्तरदायी होना चाहिए।

2. आजादी के समय भारत के सामने उपलब्ध विकास मॉडल और उनसे जुड़ी बहसों का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- भारत के सामने पहला विकल्प उदारवादी–पूँजीवादी मॉडल था।
- यह मॉडल यूरोप के अधिकतर हिस्सों और संयुक्त राज्य अमेरिका में अपनाया गया था।
- दूसरा विकल्प समाजवादी मॉडल था।
- समाजवादी मॉडल सोवियत संघ द्वारा अपनाया गया था।
- भारत में अनेक लोग सोवियत मॉडल से प्रभावित थे।
- अमेरिकी तर्ज के पूँजीवादी विकास के पैरोकार अपेक्षाकृत कम थे।
- कुछ नेता औद्योगीकरण को विकास का प्रमुख रास्ता मानते थे।
- कुछ कृषि विकास और ग्रामीण गरीबी दूर करने को अधिक जरूरी मानते थे।

योजना आयोग वत नियोजन

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. योजना आयोग की प्रकृति क्या थी?

(अ) संवैधानिक न्यायालय
(ब) सलाहकार संस्था
(स) राजनीतिक दल
(द) निजी संगठन **(ब)**

पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें!

2. योजना आयोग का अध्यक्ष कौन बना?
(अ) राष्ट्रपति (ब) प्रधानमंत्री
(स) वित्त मंत्री (द) राज्यपाल **(ब)**

3. योजना आयोग की सिफारिशें कब प्रभावकारी होती थीं?
(अ) संसद की बहस के बाद
(ब) मंत्रिमंडल की मंजूरी के बाद
(स) न्यायालय की अनुमति के बाद
(द) राज्य सरकार की अनुमति के बाद **(ब)**

4. पंचवर्षीय योजना का एक प्रमुख लाभ क्या था?
(अ) केवल वार्षिक व्यय तय करना
(ब) अर्थव्यवस्था में लंबी अवधि का हस्तक्षेप करना
(स) निजी निवेश समाप्त करना
(द) केवल कृषि पर खर्च करना **(ब)**

5. पंचवर्षीय योजना के अनुसार सरकारी बजट किन दो हिस्सों में बाँटा गया?
(अ) केंद्रीय और राज्य
(ब) योजना–व्यय और गैरयोजना–व्यय
(स) कृषि और उद्योग
(द) सार्वजनिक और निजी **(ब)**

6. 1944 के उद्योगपतियों के प्रस्ताव का नाम था– *(RBSE-2026)*
(अ) दिल्ली प्लान (ब) कोलकाता प्लान
(स) मद्रास प्लान (द) बॉम्बे प्लान **(द)**

रिक्तस्थान –

1. योजना आयोग की सिफारिशें ..... की मंजूरी के बाद प्रभावकारी होती थीं।
उत्तर : मंत्रिमंडल

2. भारत का ..... योजना आयोग का अध्यक्ष बना।
उत्तर : प्रधानमंत्री

3. दैनंदिन मदों पर सालाना खर्च को ..... व्यय कहा गया।
उत्तर : गैरयोजना

4. पंचवर्षीय योजना में अगले ..... सालों की आमदनी और खर्च की योजना बनाई जाती थी।
उत्तर : पाँच

5. 1987 से 1991 के बीच केरल सरकार ने ..... नाम से अभियान चलाया।
उत्तर : नव लोकतांत्रिक पहल

6. उद्योगपतियों के नियोजित अर्थव्यवस्था प्रस्ताव को ..... कहा जाता है। *(RBSE-2023)*
उत्तर : बॉम्बे प्लान

7. योजना आयोग की स्थापना सन् ..... में हुई। *(RBSE-2025)*
उत्तर : 1950

8. केरल में विकास और नियोजन के लिए जो रास्ता चुना गया उसे ..... मॉडल कहा जाता है। *(Model Paper-2026)*
उत्तर : केरल

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. योजना आयोग किस प्रकार की भूमिका निभाता था?
उत्तर : सलाहकार भूमिका।

2. योजना–व्यय किस आधार पर किया जाता था?
उत्तर : योजना में तय प्राथमिकताओं के अनुसार पाँच वर्षों में।

3. पंचवर्षीय योजनाओं का प्रमुख लाभ क्या था?
उत्तर : अर्थव्यवस्था की बड़ी तस्वीर देखकर लंबी अवधि का हस्तक्षेप संभव होता था।

4. केरल मॉडल में नियोजन की एक प्रमुख विशेषता क्या थी?
उत्तर : विकास की गतिविधियों में लोगों की प्रत्यक्ष भागीदारी।

5. भारत ने पंचवर्षीय योजना का विकल्प कहाँ से लिया? *(RBSE-2025)*
उत्तर : सोवियत संघ से।

6. योजना आयोग के स्थान पर कौन–सी संस्था बनाई गई? *(Model Paper-2026)*
उत्तर : नीति आयोग।

7. नियोजन से क्या समझते हैं? *(Model Paper-2024)*
उत्तर : सरकार द्वारा विकास का खाका अथवा योजना तैयार करना।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. योजना आयोग की स्थापना और प्रकृति स्पष्ट कीजिए।
उत्तर :
- इसकी स्थापना मार्च 1950 में भारत सरकार ने की।
- स्थापना एक सीधे–सादे सरकारी प्रस्ताव से हुई।
- यह संविधान द्वारा स्थापित निकाय नहीं था।
- इसकी भूमिका मुख्यतः सलाहकार थी।

2. पंचवर्षीय योजना की व्यवस्था किस प्रकार काम करती थी?
उत्तर :
- सरकार अगले पाँच वर्षों की आमदनी और खर्च का दस्तावेज बनाती थी।
- बजट को योजना–व्यय और गैरयोजना–व्यय में बाँटा जाता था।
- योजना–व्यय निर्धारित प्राथमिकताओं के अनुसार किया जाता था।
- इससे अर्थव्यवस्था में दीर्घकालीन हस्तक्षेप संभव था।

3. योजना–व्यय और गैरयोजना–व्यय में अंतर बताइए।
उत्तर :
- गैरयोजना–व्यय दैनंदिन मदों पर सालाना खर्च था।
- योजना–व्यय पंचवर्षीय प्राथमिकताओं से जुड़ा था।
- गैरयोजना व्यय नियमित प्रशासनिक जरूरतों से संबंधित था।
- योजना–व्यय पाँच वर्षों में निर्धारित उद्देश्यों पर किया जाता था।

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

4. केरल में विकेंद्रित नियोजन में जनभागीदारी किस प्रकार बढ़ाई गई?

उत्तर :
- लोगों को स्वयंसेवी नागरिक संगठनों के माध्यम से शामिल किया गया।
- विकास संबंधी अभियान चलाए गए।
- पंचायत स्तर की योजनाओं में लोगों को भागीदारी दी गई।
- प्रखंड और जिला स्तर की योजना–प्रक्रिया में भी लोगों को शामिल किया गया।

5. बॉम्बे प्लान की मूल अवधारणा क्या थी? *(RBSE-2024)*

उत्तर :
- इसे 1944 में उद्योगपतियों के एक समूह ने तैयार किया।
- इसमें नियोजित अर्थव्यवस्था का समर्थन किया गया।
- सरकार से औद्योगिक क्षेत्र में बड़े कदम उठाने की अपेक्षा थी।
- सरकार द्वारा अन्य आर्थिक निवेश में भी सक्रिय भूमिका की मंशा थी।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. भारत में नियोजित अर्थव्यवस्था की स्वीकृति के प्रमुख आधार स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- विकास को पूरी तरह निजी हाथों में छोड़ने के विरुद्ध सहमति थी।
- विश्व में 1940–1950 के दशकों में नियोजन को व्यापक समर्थन मिला।
- महामंदी और युद्धोत्तर पुनर्निर्माण के अनुभव महत्वपूर्ण थे।
- सोवियत संघ की आर्थिक प्रगति ने भी नियोजन को बल दिया।
- 1944 का बॉम्बे प्लान उद्योगपतियों के नियोजन समर्थन का उदाहरण था।
- वामपंथी और दक्षिणपंथी दोनों नियोजित अर्थव्यवस्था की राह के पक्ष में थे।

2. केरल में नियोजन के लोकतांत्रिक और विकेंद्रित स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- केरल में विकास के रास्ते को केरल मॉडल कहा गया।
- शिक्षा, स्वास्थ्य और भूमि–सुधार को महत्व मिला।
- खाद्य–वितरण और गरीबी–उन्मूलन पर जोर रहा।
- 1987–1991 में नव लोकतांत्रिक पहल अभियान चलाया गया।
- स्वयंसेवी नागरिक संगठनों के माध्यम से लोगों को विकास में शामिल किया गया।
- पंचायत, प्रखंड और जिला स्तर की योजना–प्रक्रिया में जनभागीदारी बढ़ाई गई।

3. केरल मॉडल से क्या अभिप्राय है? *(RBSE-2026)*

उत्तर :
- यह केरल में अपनाया गया विकास और नियोजन का रास्ता था।
- इसमें शिक्षा और स्वास्थ्य को विशेष महत्व दिया गया।
- भूमि–सुधार पर जोर दिया गया।
- कारगर खाद्य–वितरण को प्राथमिकता मिली।
- गरीबी–उन्मूलन पर बल दिया गया।
- स्थानीय योजनाओं में लोगों की प्रत्यक्ष भागीदारी बढ़ाने का प्रयास हुआ।

4. योजना आयोग को कार्य करते समय किन बातों का ध्यान रखना था? *(RBSE-2026)*

उत्तर :
- लोगों की भलाई के लिए सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय की भावना को महत्व देना था।
- स्त्री और पुरुष को आजीविका के पर्याप्त साधनों का बराबर अधिकार सुनिश्चित करना था।
- समुदाय के भौतिक संसाधनों का नियंत्रण सर्वसामान्य की भलाई के अनुरूप रखना था।
- धन और उत्पादन के साधनों के संकेंद्रण को रोकना था।
- विकास की योजना और रणनीति तैयार करने में केंद्रीय भूमिका निभानी थी।
- आयोग की सिफारिशों को मंत्रिमंडल की स्वीकृति के अधीन कार्यान्वित किया जाना था।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. भारत में नियोजन की आवश्यकता और उसके विकास का विस्तार से वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- विकास का काम पूरी तरह निजी हाथों में न छोड़ने पर सहमति थी।
- सरकार द्वारा विकास का खाका अथवा योजना तैयार करना आवश्यक माना गया।
- 1940 और 1950 के दशक में विश्व में नियोजन को व्यापक समर्थन मिला।
- यूरोप की महामंदी के अनुभव ने नियोजन के महत्व को बढ़ाया।
- जापान और जर्मनी के पुनर्निर्माण ने भी नियोजन की उपयोगिता दिखाई।
- सोवियत संघ की आर्थिक प्रगति ने नियोजन के पक्ष को मजबूत किया।
- भारत में उद्योगपतियों के बॉम्बे प्लान ने भी नियोजन का समर्थन किया।
- स्वतंत्रता के बाद योजना आयोग ने विकास की रणनीति तय करने में केंद्रीय भूमिका निभाई।

पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें जैसे चाहें!

2. योजना आयोग के उद्देश्यों और कार्यप्रणाली की विवेचना कीजिए।

उत्तर :
- आयोग की स्थापना मार्च 1950 में सरकारी प्रस्ताव से हुई।
- यह एक सलाहकार संस्था थी।
- प्रधानमंत्री इसके अध्यक्ष बने।
- इसकी सिफारिशों के लिए मंत्रिमंडल की मंजूरी आवश्यक थी।
- सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय को महत्व दिया गया।
- आजीविका के पर्याप्त साधनों में समान अधिकार की भावना रखी गई।
- संसाधनों का नियंत्रण सर्वसामान्य की भलाई के लिए होना था।
- धन और उत्पादन के साधनों के अत्यधिक संकेंद्रण को रोकना उद्देश्य था।

3. केंद्रीकृत नियोजन से अलग केरल के विकेंद्रित नियोजन की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- हर प्रकार का नियोजन केंद्रीकृत होना आवश्यक नहीं माना गया।
- केरल का रास्ता केरल मॉडल के नाम से जाना गया।
- शिक्षा और स्वास्थ्य को प्रमुखता दी गई।
- भूमि–सुधार और कारगर खाद्य–वितरण पर जोर रहा।
- गरीबी–उन्मूलन को विकास की महत्वपूर्ण प्राथमिकता बनाया गया।
- नव लोकतांत्रिक पहल के माध्यम से विकास अभियान चलाए गए।
- स्वयंसेवी नागरिक संगठनों के माध्यम से लोगों को सीधे शामिल किया गया।
- पंचायत, प्रखंड और जिला स्तर पर जनभागीदारी आधारित नियोजन को बढ़ावा दिया गया।

प्रथम पंचवर्षीय योजना (1951–1956)

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. प्रथम पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत किस क्षेत्र में निवेश किया गया?
(अ) बाँध और सिंचाई (ब) केवल संचार
(स) केवल मशीनरी (द) केवल खनन **(अ)**

2. प्रथम पंचवर्षीय योजना में किस विशाल परियोजना के लिए बड़ी धनराशि आबंटित की गई?
(अ) भाखड़ा–नांगल (ब) पोस्को
(स) बॉम्बे प्लान (द) नीति आयोग **(अ)**

3. प्रथम पंचवर्षीय योजना में देश के विकास की बुनियादी चीज किसे माना गया?
(अ) भूमि–सुधार (ब) विदेशी व्यापार
(स) निजी निवेश (द) आयात **(अ)**

4. के.एन. राज की दलील क्या थी?
(अ) विकास की गति अत्यंत तेज हो
(ब) अगले दो दशक भारत अपनी चाल धीमी रखे
(स) कृषि को समाप्त किया जाए
(द) नियोजन बंद किया जाए **(ब)**

5. प्रथम पंचवर्षीय योजना से जुड़े प्रमुख अर्थशास्त्री कौन थे? *(RBSE-2025)*
(अ) जे. सी. कुमारप्पा (ब) चरण सिंह
(स) वर्गीज कुरियन (द) के. एन. राज **(द)**

6. प्रथम पंचवर्षीय योजना (1951–1956) में किस क्षेत्र के विकास को प्रमुखता प्रदान की गई थी? *(Model Paper-2026)*
(अ) उद्योग (ब) सहकारिता
(स) कृषि (द) रक्षा क्षेत्र **(स)**

रिक्तस्थान –

1. प्रथम पंचवर्षीय योजना की कोशिश देश को ..... के मकड़जाल से निकालने की थी।
उत्तर : गरीबी

2. प्रथम पंचवर्षीय योजना में ..... जैसी विशाल परियोजना के लिए बड़ी धनराशि आबंटित की गई।
उत्तर : भाखड़ा–नांगल

3. योजनाकारों का बुनियादी लक्ष्य ..... के स्तर को ऊँचा करना था।
उत्तर : राष्ट्रीय आय

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. प्रथम योजना में कृषि को विशेष प्राथमिकता क्यों दी गई?
उत्तर : विभाजन के कारण कृषि–क्षेत्र को गहरी मार लगी थी।

2. प्रथम पंचवर्षीय योजना कब शुरू हुई? *(RBSE-2023)*
उत्तर : 1951 में।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. प्रथम पंचवर्षीय योजना में कृषि को प्राथमिकता देने के कारण बताइए।

उत्तर :
- विभाजन से कृषि–क्षेत्र को गहरी मार लगी थी।
- कृषि पर तत्काल ध्यान देना आवश्यक था।
- बाँध और सिंचाई में निवेश किया गया।
- कृषि विकास के लिए भूमि–सुधार को जरूरी माना गया।

2. प्रथम पंचवर्षीय योजना में भूमि–सुधार को महत्व क्यों दिया गया?

पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

उत्तर :
- भूमि वितरण का मौजूदा ढर्रा कृषि विकास में बाधा था।
- इसे कृषि की सबसे बड़ी बाधाओं में माना गया।
- योजना में भूमि–सुधार पर स्पष्ट जोर दिया गया।
- भूमि–सुधार को देश के विकास की बुनियादी चीज माना गया।

3. राष्ट्रीय आय और बचत के संबंध में प्रथम योजना की सोच स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- योजनाकार राष्ट्रीय आय का स्तर ऊँचा करना चाहते थे।
- इसके लिए बचत का खर्च से ज्यादा होना आवश्यक था।
- 1950 के दशक में खर्च का स्तर पहले से बहुत नीचे था।
- इसलिए योजनाकारों ने बचत बढ़ाने का प्रयास किया।

4. प्रथम पंचवर्षीय योजना में बाँध और सिंचाई का क्या महत्व था?

उत्तर :
- योजना में कृषि–क्षेत्र पर जोर था।
- कृषि विकास के लिए सिंचाई आवश्यक मानी गई।
- बाँध और सिंचाई में निवेश किया गया।
- भाखड़ा–नांगल जैसी परियोजनाओं को बड़ी धनराशि दी गई।

5. के.एन. राज की विकास रणनीति संबंधी धारणा स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- के.एन. राज प्रथम योजना से जुड़े युवा अर्थशास्त्री थे।
- उन्होंने भारत को अपनी चाल धीमी रखने की सलाह दी।
- यह नीति अगले दो दशक के लिए सुझाई गई थी।
- उनका तर्क था कि अत्यधिक तेज विकास से अर्थव्यवस्था को नुकसान हो सकता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. प्रथम पंचवर्षीय योजना में कृषि, सिंचाई और भूमि–सुधार के महत्व को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- योजना की कोशिश देश को गरीबी के मकड़जाल से निकालने की थी।
- विभाजन से प्रभावित होने के कारण कृषि को प्राथमिकता मिली।
- बाँध और सिंचाई के क्षेत्र में निवेश किया गया।
- भाखड़ा–नांगल जैसी परियोजनाओं को बड़ी धनराशि मिली।
- भूमि वितरण के ढर्रे को कृषि विकास की बड़ी बाधा माना गया।
- इसलिए भूमि–सुधार को विकास की बुनियादी चीज माना गया।

2. प्रथम पंचवर्षीय योजना में राष्ट्रीय आय और बचत बढ़ाने की रणनीति समझाइए।

उत्तर :
- बुनियादी लक्ष्य राष्ट्रीय आय के स्तर को ऊँचा करना था।
- इसके लिए लोगों की बचत खर्च से अधिक होना जरूरी था।
- खर्च का स्तर पहले से बहुत कम होने के कारण उसे और घटाना कठिन था।
- इसलिए योजनाकारों ने बचत बढ़ाने का प्रयास किया।
- देश का मौजूदा पूँजी–भंडार रोजगार योग्य लोगों की तुलना में कम था।
- तीसरी योजना तक बचत बढ़ी, पर वह प्रारंभिक उम्मीद के अनुरूप नहीं थी।

3. प्रथम पंचवर्षीय योजना की विकास रणनीति में के.एन. राज के विचारों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर :
- के.एन. राज प्रथम योजना तैयार करने वाले विशेषज्ञों में थे।
- वे एक युवा अर्थशास्त्री थे।
- उन्होंने विकास की गति को संयमित रखने का तर्क दिया।
- उनके अनुसार अगले दो दशक भारत को अपनी चाल धीमी रखनी चाहिए।
- तेज रफ्तार विकास से अर्थव्यवस्था को नुकसान होने की आशंका थी।
- इस योजना का सामान्य रुझान भी कृषि और क्रमिक विकास पर केंद्रित था।

4. प्रथम पंचवर्षीय योजना पर विचार व्यक्त कीजिए।

(RBSE-2022)

उत्तर :
- प्रथम पंचवर्षीय योजना की अवधि 1951द्1956 थी।
- इसका उद्देश्य देश को गरीबी के मकड़जाल से निकालना था।
- योजना में कृषि क्षेत्र को प्रमुखता दी गई।
- बाँध और सिंचाई के क्षेत्र में निवेश किया गया।
- भूमि–सुधार को देश के विकास की बुनियादी चीज माना गया।
- राष्ट्रीय आय और लोगों की बचत बढ़ाना भी महत्वपूर्ण लक्ष्य था।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. प्रथम पंचवर्षीय योजना में कृषि, सिंचाई और भूमि–सुधार की परस्पर भूमिका का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- प्रथम योजना का प्रमुख उद्देश्य देश को गरीबी के मकड़जाल से बाहर निकालना था।
- विभाजन ने कृषि क्षेत्र को गहरी क्षति पहुँचाई थी।

- इसलिए योजना में कृषि को प्रमुख प्राथमिकता दी गई।
- कृषि उत्पादन के लिए सिंचाई सुविधाओं को आवश्यक माना गया।
- बाँध और सिंचाई परियोजनाओं में बड़े पैमाने पर निवेश हुआ।
- भाखड़ा–नांगल जैसी विशाल परियोजनाओं को धनराशि दी गई।
- भूमि वितरण के मौजूदा ढर्रे को कृषि विकास की बाधा माना गया।
- इसलिए भूमि–सुधार को विकास की बुनियादी आवश्यकता माना गया।

2. प्रथम पंचवर्षीय योजना में राष्ट्रीय आय, बचत और पूँजी की समस्या का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर :
- योजनाकारों का बुनियादी लक्ष्य राष्ट्रीय आय बढ़ाना था।
- राष्ट्रीय आय बढ़ाने के लिए बचत को खर्च से अधिक होना जरूरी था।
- 1950 के दशक में लोगों का खर्च पहले से बहुत नीचे था।
- इसलिए खर्च को और घटाकर बचत बढ़ाना कठिन था।
- योजनाकारों ने लोगों को बचत बढ़ाने के लिए प्रेरित किया।
- रोजगार योग्य लोगों की तुलना में देश का पूँजी–भंडार कम था।
- तीसरी पंचवर्षीय योजना तक बचत में वृद्धि हुई।
- लेकिन बचत की मात्रा शुरुआती अपेक्षाओं के अनुरूप नहीं रही।

3. प्रथम पंचवर्षीय योजना द्वारा गरीबी के मकड़जाल से निकलने के लिए अपनाए गए प्रमुख उपायों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर :
- योजना का प्रत्यक्ष लक्ष्य देश को गरीबी के मकड़जाल से बाहर निकालना था।
- कृषि क्षेत्र को विकास की मुख्य प्राथमिकता बनाया गया।
- बाँधों और सिंचाई में निवेश किया गया।
- भाखड़ा–नांगल जैसी बड़ी परियोजनाओं को प्रोत्साहन मिला।
- कृषि विकास के लिए भूमि–सुधार पर जोर दिया गया।
- राष्ट्रीय आय का स्तर ऊँचा करने का लक्ष्य रखा गया।
- लोगों की बचत बढ़ाने का प्रयास किया गया।
- विकास की गति में धैर्य और क्रमिक प्रगति की रणनीति अपनाई गई।

दूसरी पंचवर्षीय योजना

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. दूसरी पंचवर्षीय योजना में किस क्षेत्र के विकास पर विशेष जोर दिया गया?
(अ) भारी उद्योग (ब) केवल कृषि
(स) केवल शिक्षा (द) केवल स्वास्थ्य **(अ)**

2. दूसरी पंचवर्षीय योजना की कोशिश क्या थी?
(अ) विकास की गति धीमी रखना
(ब) तेज गति से संरचनात्मक बदलाव करना
(स) नियोजन समाप्त करना
(द) केवल भूमि–सुधार करना **(ब)**

3. देसी उद्योगों को संरक्षण देने के लिए सरकार ने क्या किया?
(अ) आयात पर भारी शुल्क लगाया
(ब) निर्यात बंद किया
(स) सिंचाई समाप्त की
(द) उद्योगों पर प्रतिबंध लगाया **(अ)**

4. दूसरी पंचवर्षीय योजना के योजनाकार कौन थे? *(RBSE-2024)*
(अ) जे. सी. कुमारप्पा
(ब) पी. सी. महालनोबिस
(स) वर्गीज कुरियन
(द) चरण सिंह **(ब)**

5. द्वितीय पंचवर्षीय योजना कब प्रारंभ हुई? *(RBSE-2025)*
(अ) 1956 (ब) 1955
(स) 1957 (द) 1952 **(अ)**

रिक्तस्थान –

1. दूसरी पंचवर्षीय योजना में ..... उद्योगों के विकास पर जोर दिया गया।
उत्तर : भारी

2. भारत को विश्व बाजार से प्रौद्योगिकी खरीदने में बहुमूल्य ..... खर्च करनी पड़ी।
उत्तर : विदेशी मुद्रा

3. उद्योगों ने कृषि की अपेक्षा ..... को ज्यादा आकर्षित किया।
उत्तर : निवेश

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. दूसरी योजना की विकास गति का प्रमुख स्वरूप क्या था?
उत्तर : तेज गति से संरचनात्मक बदलाव।

2. देसी उद्योगों को संरक्षण किस उपाय से दिया गया?
उत्तर : आयात पर भारी शुल्क लगाकर।

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

3. दूसरी योजना में किन दो क्षेत्रों के बीच संतुलन कठिन था?

उत्तर : उद्योग और कृषि के बीच।

4. विदेशी प्रौद्योगिकी खरीदने से किस संसाधन पर दबाव पड़ा?

उत्तर : विदेशी मुद्रा पर।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. दूसरी पंचवर्षीय योजना के प्रमुख उद्देश्य बताइए।

उत्तर :
- भारी उद्योगों के विकास पर जोर दिया गया।
- तेज गति से संरचनात्मक बदलाव का लक्ष्य था।
- विभिन्न दिशाओं में आर्थिक बदलाव की योजना बनाई गई।
- औद्योगीकरण को भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास का महत्वपूर्ण आधार बनाया गया।

2. दूसरी योजना में देसी उद्योगों को संरक्षण किस प्रकार दिया गया?

उत्तर :
- सरकार ने आयात पर भारी शुल्क लगाया।
- इसका उद्देश्य देसी उद्योगों की रक्षा करना था।
- संरक्षण से निजी क्षेत्र के उद्योगों को आगे बढ़ने में मदद मिली।
- सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योगों को भी विकास का अवसर मिला।

3. दूसरी पंचवर्षीय योजना में सार्वजनिक क्षेत्र की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- बचत और निवेश दोनों में वृद्धि हो रही थी।
- बिजली जैसे उद्योग सार्वजनिक क्षेत्र में विकसित किए गए।
- रेलवे, इस्पात और मशीनरी को भी महत्व मिला।
- संचार सहित महत्वपूर्ण उद्योगों में सार्वजनिक क्षेत्र सक्रिय रहा।

4. दूसरी पंचवर्षीय योजना के सामने प्रमुख समस्याएँ क्या थीं?

उत्तर :
- भारत प्रौद्योगिकी के लिहाज से पिछड़ा था।
- विदेशी तकनीक खरीदने में विदेशी मुद्रा खर्च हुई।
- उद्योगों ने कृषि से ज्यादा निवेश आकर्षित किया।
- इससे खाद्यान्न–संकट की आशंका और कृषि–उद्योग संतुलन की कठिनाई बढ़ी।

5. दूसरी योजना में कृषि और उद्योग के बीच संतुलन कठिन क्यों हुआ?

उत्तर :
- भारी उद्योगों को प्रमुख प्राथमिकता दी गई।
- उद्योगों ने कृषि की अपेक्षा अधिक निवेश आकर्षित किया।
- इससे खाद्यान्न–संकट की आशंका उत्पन्न हुई।
- योजनाकारों को कृषि और उद्योग के बीच संतुलन साधने में कठिनाई हुई।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. दूसरी पंचवर्षीय योजना की औद्योगीकरण रणनीति स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- योजना में भारी उद्योगों के विकास को प्राथमिकता मिली।
- इसका उद्देश्य तेज गति से संरचनात्मक बदलाव करना था।
- देसी उद्योगों की रक्षा के लिए आयात पर भारी शुल्क लगाया गया।
- इससे निजी और सार्वजनिक दोनों क्षेत्रों को बढ़ने में मदद मिली।
- बिजली, रेलवे, इस्पात, मशीनरी और संचार को सार्वजनिक क्षेत्र में विकसित किया गया।
- औद्योगीकरण के इस जोर ने भारतीय अर्थव्यवस्था को नया आयाम दिया।

2. दूसरी पंचवर्षीय योजना में निजी और सार्वजनिक उद्योगों के विकास में संरक्षण नीति की भूमिका समझाइए।

उत्तर :
- सरकार ने देसी उद्योगों को संरक्षण देने की नीति अपनाई।
- आयात पर भारी शुल्क लगाया गया।
- इससे विदेशी प्रतिस्पर्धा के मुकाबले घरेलू उद्योगों को अवसर मिला।
- निजी क्षेत्र के उद्योगों को आगे बढ़ने में सहायता हुई।
- सार्वजनिक क्षेत्र के महत्वपूर्ण उद्योग भी विकसित किए गए।
- इस प्रकार संरक्षण नीति ने दोनों क्षेत्रों के औद्योगिक विकास को गति दी।

3. दूसरी पंचवर्षीय योजना से जुड़ी प्रमुख कठिनाइयों का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- भारत प्रौद्योगिकी के मामले में पिछड़ा हुआ था।
- तकनीक खरीदने में बहुमूल्य विदेशी मुद्रा खर्च हुई।
- उद्योगों ने कृषि की तुलना में अधिक निवेश आकर्षित किया।
- इससे कृषि के लिए अपेक्षाकृत कम निवेश की स्थिति बनी।
- खाद्यान्न–संकट की आशंका उत्पन्न हुई।
- योजनाकारों को कृषि और उद्योग के बीच संतुलन साधने में कठिनाई हुई।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. प्रथम और दूसरी पंचवर्षीय योजना की विकास रणनीतियों की तुलना कीजिए।

उत्तर :
- प्रथम योजना की प्रमुख कोशिश देश को गरीबी के मकड़जाल से निकालना थी।
- प्रथम योजना में कृषि को मुख्य प्राथमिकता दी गई।
- बाँध, सिंचाई और भूमि–सुधार पर विशेष जोर था।
- प्रथम योजना की रणनीति अपेक्षाकृत धीमी और धैर्यपूर्ण थी।
- दूसरी योजना में भारी उद्योगों को प्रमुखता दी गई।
- दूसरी योजना का लक्ष्य तेज गति से संरचनात्मक बदलाव था।
- दूसरी योजना में महत्वपूर्ण उद्योगों को सार्वजनिक क्षेत्र में विकसित किया गया।
- इस प्रकार पहली योजना कृषि–केंद्रित और दूसरी योजना तीव्र औद्योगीकरण–केंद्रित थी।

2. दूसरी पंचवर्षीय योजना में औद्योगीकरण ने भारतीय अर्थव्यवस्था को किस प्रकार नया आयाम दिया?

उत्तर :
- दूसरी योजना में भारी उद्योगों को विकास का प्रमुख आधार बनाया गया।
- तेज गति से संरचनात्मक परिवर्तन की कोशिश की गई।
- आयात पर भारी शुल्क लगाकर देसी उद्योगों को संरक्षण दिया गया।
- इससे निजी और सार्वजनिक दोनों क्षेत्रों को आगे बढ़ने का अवसर मिला।
- बढ़ती बचत और निवेश ने औद्योगिक विस्तार को सहायता दी।
- बिजली और रेलवे जैसे आधारभूत क्षेत्रों का विकास किया गया।
- इस्पात, मशीनरी और संचार जैसे उद्योगों को महत्व मिला।
- इस औद्योगिक विस्तार ने अर्थव्यवस्था के विकास को नया आयाम प्रदान किया।

3. दूसरी पंचवर्षीय योजना की उपलब्ध औद्योगिक रणनीति और उससे उत्पन्न समस्याओं का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर :
- योजना ने भारी औद्योगीकरण को प्रमुखता दी।
- सार्वजनिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण उद्योगों के विकास का प्रयास हुआ।
- आयात शुल्क से घरेलू उद्योगों को संरक्षण मिला।
- औद्योगीकरण ने भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास को नया आयाम दिया।
- पर भारत प्रौद्योगिकी के लिहाज से पिछड़ा हुआ था।
- विदेशी तकनीक के लिए बहुमूल्य विदेशी मुद्रा खर्च करनी पड़ी।
- उद्योगों ने कृषि की तुलना में ज्यादा निवेश आकर्षित किया।
- परिणामस्वरूप खाद्यान्न–संकट की आशंका और कृषि–उद्योग संतुलन की समस्या सामने आई।



For better experience
DOWNLOAD APP
mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER
www.MISSIONGYAN.com

4 भारत के विदेश संबंध

अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ और गुटनिरपेक्षता की नीति

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. बांडुंग सम्मेलन कब हुआ? *(RBSE-2023)*
(अ) 1951 (ब) 1952
(स) 1954 (द) 1955 **(द)**

2. भारत के प्रथम विदेश मंत्री कौन थे? *(RBSE-2025)*
(अ) सुभाष चन्द्र बोस
(ब) दीनदयाल उपाध्याय
(स) जवाहरलाल नेहरू
(द) बी. आर. अम्बेडकर **(स)**

3. 1956 में स्वेज नहर को लेकर ब्रिटेन ने किस देश पर हमला किया? *(RBSE-2026, Model Paper-2023)*
(अ) भारत (ब) यूगोस्लाविया
(स) हंगरी (द) मिस्र **(द)**

4. भारतीय संविधान के अनुच्छेद 51 में किसके बढ़ावे की बात कही गई है?
(अ) अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा
(ब) सैन्य गुटों के विस्तार
(स) औपनिवेशिक शासन
(द) परमाणु आयुधों की बढ़ोतरी **(अ)**

5. नेहरू की विदेश नीति के उद्देश्यों में निम्न में से कौन–सा शामिल नहीं था?
(अ) संप्रभुता को बचाए रखना
(ब) क्षेत्रीय अखंडता बनाए रखना
(स) तेज रफ्तार से आर्थिक विकास करना
(द) किसी सैन्य गुट में शामिल होना **(द)**

6. भारत ने एशियाई संबंध सम्मेलन का आयोजन कब किया?
(अ) 1947 (ब) 1949
(स) 1955 (द) 1961 **(अ)**

8. अमेरिका के नेतृत्व वाला सैन्य गठबंधन कौन–सा था?
(अ) NATO
(ब) वारसा पैक्ट
(स) गुटनिरपेक्ष आंदोलन
(द) संयुक्त राष्ट्र संघ **(अ)**

रिक्तस्थान –

1. गुटनिरपेक्ष आंदोलन का पहला सम्मेलन सन् .....में हुआ। *(RBSE-2026)*
उत्तर : 1961

2. नेहरू ने प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री के रूप में ..... से 1964 तक भारत की विदेश नीति पर गहरा प्रभाव डाला।
उत्तर : 1946

3. शीतयुद्ध के समय सोवियत संघ ने ..... नामक संधि संगठन बनाया था।
उत्तर : वारसा पैक्ट

4. भारत ने अपनी विदेश नीति में ..... विश्व का सपना सामने रखा।
उत्तर : शांतिपूर्ण

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. गुटनिरपेक्ष आंदोलन का पहला सम्मेलन कहाँ हुआ? *(RBSE-2023)*
उत्तर : बेलग्रेड में।

2. नेहरू की विदेश नीति के तीन प्रमुख उद्देश्य क्या थे?
उत्तर : संप्रभुता की रक्षा, क्षेत्रीय अखंडता बनाए रखना और तेज आर्थिक विकास।

3. भारत शीतयुद्ध के दौरान किस नीति के माध्यम से दोनों सैन्य खेमों से दूर रहा?
उत्तर : गुटनिरपेक्षता की नीति।

4. शीतयुद्ध में अमेरिका द्वारा बनाए गए सैन्य गठबंधन का नाम क्या था?
उत्तर : उत्तर अटलांटिक संधि संगठन (NATO)।

5. 1950 के दशक में भारत–अमेरिका संबंधों में खटास का एक प्रमुख कारण क्या था?
उत्तर : पाकिस्तान का अमेरिकी नेतृत्व वाले सैन्य–गठबंधन में शामिल होना।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. गुटनिरपेक्षता ने भारत के हित कैसे साधे? कोई दो तर्क दीजिए। *(RBSE-2022)*
उत्तर :
- स्वतंत्र विदेश नीतिरू भारत किसी एक महाशक्ति के निर्देशों पर निर्भर नहीं रहा।
- भारत अंतर्राष्ट्रीय मामलों में स्वतंत्र रवैया अपना सका।

- भारत ने अमेरिकी और सोवियत, दोनों खेमों से संबंध बनाए रखे।
- दोनों खेमों के देशों से भारत को सहायता और अनुदान प्राप्त हुए।

2. नेहरू विदेश नीति को स्वतंत्रता का अनिवार्य संकेतक क्यों मानते थे? *(Model Paper-2024)*

उत्तर :
- नेहरू के अनुसार विदेश संबंधों पर स्वतंत्र नियंत्रण वास्तविक आजादी का आधार था।
- विदेश संबंध दूसरे के हाथ में जाने पर राष्ट्र की स्वतंत्र निर्णय–क्षमता कम हो जाती है।
- स्वतंत्र विदेश नीति से राष्ट्र अपनी संप्रभुता बनाए रख सकता है।
- इसलिए विदेश नीति का स्वतंत्र संचालन राष्ट्रीय स्वतंत्रता की कसौटी था।

3. स्वतंत्रता के समय भारत की विदेश नीति किन अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों में बनी?

उत्तर :
- दुनिया द्वितीय विश्वयुद्ध की तबाही से बाहर निकल रही थी।
- विश्व के सामने पुनर्निर्माण का प्रश्न प्रमुख था।
- एक नई अंतर्राष्ट्रीय संस्था बनाने के प्रयास हो रहे थे।
- उपनिवेशवाद की समाप्ति से नए राष्ट्र अस्तित्व में आ रहे थे।
- शीतयुद्ध शुरू हो चुका था और विश्व तेजी से दो खेमों में बँट रहा था।

4. भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का भारत की विदेश नीति पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर :
- भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद–विरोधी संघर्ष का हिस्सा था।
- भारतीय नेताओं के अन्य उपनिवेशों के मुक्ति–संग्राम के नेताओं से संपर्क थे।
- आंदोलन ने एशिया और अफ्रीका के अनेक मुक्ति आंदोलनों को प्रभावित किया।
- स्वतंत्रता आंदोलन के उदात्त विचारों का विदेश नीति पर प्रभाव पड़ा।
- भारत ने आगे चलकर अनौपनिवेशीकरण का समर्थन किया।

5. संविधान के अनुच्छेद 51 में विदेश संबंधों से जुड़े कौन–से सिद्धांत दिए गए हैं?

उत्तर :
- अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा की अभिवृद्धि करना।
- राष्ट्रों के बीच न्यायसंगत और सम्मानपूर्ण संबंध बनाए रखना।
- अंतर्राष्ट्रीय विधि और संधि–बाध्यताओं के प्रति आदर बढ़ाना।
- अंतर्राष्ट्रीय विवादों के माध्यस्थम् द्वारा निपटारे को प्रोत्साहित करना।

6. नियोजित विकास की रणनीति ने भारत के बाहरी आर्थिक संबंधों को किस प्रकार प्रभावित किया?

उत्तर :
- नीति में आयात कम करने पर जोर था।
- देश में संसाधन–आधार तैयार करने को प्राथमिकता दी गई।
- निर्यात के क्षेत्र में प्रगति सीमित रही।
- इसके परिणामस्वरूप बाहरी दुनिया से भारत का आर्थिक लेन–देन सीमित रहा।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. अफ्रीका–एशियाई एकता को बढ़ावा देने के लिए भारत द्वारा किए गए प्रयासों का उल्लेख करें। *(Model Paper-2023)*

उत्तर :
- नेहरू ने एशियाई एकता की जोरदार पैरोकारी की।
- भारत ने मार्च 1947 में एशियाई संबंध सम्मेलन आयोजित किया।
- भारत ने इंडोनेशिया की स्वतंत्रता के लिए भरपूर प्रयास किए।
- 1949 में इंडोनेशिया के स्वतंत्रता–संग्राम के समर्थन में अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया।
- भारत ने अनौपनिवेशीकरण की प्रक्रिया का प्रबल समर्थन किया।
- भारत ने नस्लवाद और दक्षिण अफ्रीका के रंगभेद का विरोध किया।
- 1955 के बांडुंग सम्मेलन में भारत की सक्रिय भूमिका रही, जहाँ गुटनिरपेक्ष आंदोलन की नींव पड़ी।

2. भारतीय विदेश नीति में गुट–निरपेक्षता का महत्व तथा वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में गुट–निरपेक्षता की प्रासंगिकता बताइए। *(Model Paper-2026)*

उत्तर :
- गुटनिरपेक्षता ने भारत को सैन्य गुटों से स्वतंत्र रहने का अवसर दिया।
- भारत अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों पर स्वतंत्र रूप से विचार कर सका।
- इससे भारत अपने राष्ट्रीय हितों के अनुसार निर्णय ले सका।
- भारत ने दोनों खेमों के साथ दोस्ताना संबंध बनाए रखने का प्रयास किया।
- 1977 की जनता सरकार ने सच्ची गुटनिरपेक्ष नीति अपनाने की घोषणा की।
- बाद की सरकारों ने बदलती विश्व राजनीति के अनुसार चीन और अमेरिका से बेहतर संबंध बनाने की पहल की।

पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

3. भारत की विदेश नीति की रचना में जवाहरलाल नेहरू की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- जवाहरलाल नेहरू भारत के पहले प्रधानमंत्री थे और विदेश मंत्री भी रहे।
- 1946 से 1964 तक उन्होंने विदेश नीति की रचना और क्रियान्वयन पर गहरा प्रभाव डाला।
- उनका पहला लक्ष्य कठिन संघर्ष से प्राप्त संप्रभुता की रक्षा था।
- दूसरा लक्ष्य क्षेत्रीय अखंडता बनाए रखना था।
- तीसरा लक्ष्य तेज गति से आर्थिक विकास करना था।
- इन उद्देश्यों को वे गुटनिरपेक्षता की नीति से प्राप्त करना चाहते थे।
- विदेश नीति के निर्माण में उन्हें अन्य राजनीतिक धाराओं की तुलना में खासी बढ़त प्राप्त थी।

4. शीतयुद्ध और विकासशील देशों की परिस्थितियों ने भारत की विदेश नीति को किस प्रकार प्रभावित किया?

उत्तर :
- विकासशील देशों के पास अपने हित पूरे करने के लिए पर्याप्त संसाधनों का अभाव था।
- उनका जोर पड़ोस में अमन–चैन और विकास बनाए रखने पर था।
- वे आर्थिक और सुरक्षा की दृष्टि से शक्तिशाली देशों पर निर्भर थे।
- द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद विश्व अमेरिकी और सोवियत खेमों में बँट गया।
- अनेक देशों ने सहायता और कर्ज के कारण शक्तिशाली देशों की मर्जी को ध्यान में रखा।
- भारत ने इसके विपरीत गुटनिरपेक्षता का मार्ग चुना।
- भारत ने दोनों खेमों से दूरी रखते हुए अपने राष्ट्रीय हितों और स्वतंत्र निर्णय पर जोर दिया।

5. 1956 की अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं ने भारत की गुटनिरपेक्ष नीति की कठिनाइयों को कैसे दिखाया?

उत्तर :
- 1956 में ब्रिटेन ने स्वेज नहर के प्रश्न पर मिस्र पर आक्रमण किया।
- भारत ने इस नव–औपनिवेशिक हमले के विरुद्ध विश्वव्यापी विरोध की अगुआई की।
- उसी वर्ष सोवियत संघ ने हंगरी पर आक्रमण किया।
- भारत ने सोवियत संघ के इस कदम की सार्वजनिक निंदा नहीं की।
- इससे दोनों खेमों के बीच संतुलन साधने की कठिनाई स्पष्ट हुई।
- इसके बावजूद भारत ने कमोबेश अंतर्राष्ट्रीय मामलों में स्वतंत्र रवैया बनाए रखा।
- दोनों खेमों के देशों ने भारत को सहायता और अनुदान भी दिए।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. भारत की गुटनिरपेक्षता नीति की विवेचना कीजिए।

(RBSE-2024)

उत्तर :
- स्वतंत्र भारत की विदेश नीति में शांतिपूर्ण विश्व का सपना प्रमुख था।
- भारत ने अमेरिकी और सोवियत नेतृत्व वाले सैन्य गठबंधनों से दूरी रखी।
- भारत ने गुटनिरपेक्षता की नीति को आदर्श माना।
- उसने शीतयुद्ध से उत्पन्न तनाव को कम करने का प्रयास किया।
- भारत ने संयुक्त राष्ट्र के शांति–अभियानों में अपनी सेना भेजी।
- भारत अंतर्राष्ट्रीय मामलों में स्वतंत्र रवैया अपनाना चाहता था।
- भारत ने दोनों खेमों के साथ दोस्ताना संबंध बनाए रखने का प्रयास किया।
- दोनों खेमों के देशों से भारत को सहायता और अनुदान प्राप्त हुए।
- नेहरू ने संप्रभुता, क्षेत्रीय अखंडता और आर्थिक विकास को गुटनिरपेक्ष नीति के माध्यम से सुरक्षित करना चाहा।

2. स्वतंत्रता के समय भारत की विदेश नीति को प्रभावित करने वाले घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय कारकों का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर :
- भारत का जन्म विश्वयुद्ध की पृष्ठभूमि में हुआ।
- दुनिया के सामने युद्ध के बाद पुनर्निर्माण की चुनौती थी।
- उपनिवेशवाद की समाप्ति से अनेक नए राष्ट्र अस्तित्व में आ रहे थे।
- नए देशों के सामने लोकतंत्र और जनकल्याण की दोहरी चुनौती थी।
- अंग्रेजी शासन भारत के लिए अनेक अंतर्राष्ट्रीय विवादों की विरासत छोड़ गया था।
- बँटवारे ने भारत के सामने अतिरिक्त दबाव पैदा किए।
- देश के सामने गरीबी मिटाने और आर्थिक विकास की चुनौती थी।
- शीतयुद्ध शुरू हो चुका था और दुनिया दो महाशक्ति खेमों में बँट रही थी।
- इन परिस्थितियों में भारत ने संप्रभुता, शांति और सुरक्षा को अपनी विदेश नीति का आधार बनाया।

3. भारत द्वारा अमेरिका और सोवियत संघ के बीच संतुलन बनाए रखने के प्रयासों का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- भारत ने किसी एक महाशक्ति खेमे में शामिल होने के बजाय स्वतंत्र नीति अपनाई।
- अमेरिकी नेतृत्व वाले NATO और सोवियत वारसा पैक्ट से दूरी रखी।
- भारत दोनों महाशक्तियों के साथ दोस्ताना संबंध रखना चाहता था।
- उसने अंतर्राष्ट्रीय मसलों पर यथासंभव स्वतंत्र निर्णय लेने का प्रयास किया।
- स्वेज संकट में भारत ने ब्रिटिश कार्रवाई का विरोध किया।
- हंगरी के प्रश्न पर भारत ने सोवियत संघ की सार्वजनिक निंदा नहीं की।
- दोनों महाशक्तियों का भारत के रुख पर समय–समय पर संदेह बना रहा।
- इसके बावजूद दोनों खेमों से भारत को सहायता और अनुदान प्राप्त हुए।
- इस संतुलन का आधार भारत के राष्ट्रीय हित और गुटनिरपेक्षता थे।

चीन के साथ शांति और संघर्ष

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. भारत–चीन युद्ध कब हुआ? *(Model Paper-2024)*

(अ) 1961 (ब) 1962
(स) 1963 (द) 1964 **(ब)**

2. पंचशील की घोषणा नेहरू और चाऊ एन लाई ने संयुक्त रूप से कब की?

(अ) 29 अप्रैल 1954 (ब) 1950
(स) 1956 (द) 1959 **(अ)**

3. दलाई लामा ने भारत से शरण कब माँगी?

(अ) 1950 (ब) 1954
(स) 1959 (द) 1962 **(स)**

4. भारत और चीन के बीच पूर्ण राजनयिक संबंध कब बहाल हुए?

(अ) 1964 (ब) 1971
(स) 1976 (द) 1979 **(स)**

5. शीर्ष नेता के रूप में 1979 में चीन की यात्रा करने वाले भारतीय विदेश मंत्री कौन थे?

(अ) जवाहरलाल नेहरू
(ब) वी. के. कृष्णमेनन
(स) अटल बिहारी वाजपेयी
(द) राजीव गांधी **(स)**

6. चीन ने अक्साई–चीन इलाके पर किस अवधि में कब्जा कर रणनीतिक सड़क बनाई?

(अ) 1947–1949 (ब) 1957–1959
(स) 1962–1964 (द) 1976–1979 **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. पंचशील की घोषणा भारत के प्रधानमंत्री नेहरू और चीन के प्रमुख ..... ने की।

उत्तर : चाऊ एन लाई

2. अरुणाचल प्रदेश को उस समय ..... कहा जाता था।

उत्तर : नेफा / उत्तर–पूर्वी सीमांत

3. 1962 के भारत–चीन युद्ध के बाद रक्षा मंत्री ..... ने इस्तीफा दिया।

उत्तर : वी. के. कृष्णमेनन

4. अटल बिहारी वाजपेयी विदेश मंत्री के रूप में ..... में चीन के दौरे पर गए।

उत्तर : 1979

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. भारत और चीन के बीच पूर्ण राजनयिक संबंध किस वर्ष बहाल हुए?

उत्तर : 1976 में।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. भारत–चीन संबंध खराब होने के दो कारण बताइए। *(RBSE-2023)*

उत्तर :
- पहला प्रमुख कारण तिब्बत का प्रश्न था।
- चीन द्वारा 1950 में तिब्बत पर नियंत्रण से दोनों देशों के बीच पुराना मध्यवर्ती क्षेत्र समाप्त हो गया।
- दूसरा प्रमुख कारण भारत–चीन सीमा विवाद था।
- अक्साई–चीन और अरुणाचल प्रदेश के प्रश्न पर दोनों देशों के दावे परस्पर विरोधी थे।

2. पंचशील ने भारत–चीन संबंधों को किस प्रकार प्रभावित किया?

उत्तर :
- पंचशील की घोषणा 29 अप्रैल 1954 को की गई।
- इसकी घोषणा नेहरू और चाऊ एन लाई ने संयुक्त रूप से की।
- इसमें शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के पाँच सिद्धांत शामिल थे।
- दोनों देशों ने एक–दूसरे की क्षेत्रीय संप्रभुता का सम्मान करने की बात स्वीकार की।
- इसे भारत–चीन के मजबूत संबंधों की दिशा में अगला कदम माना गया।

3. भारत–चीन सीमा विवाद के प्रमुख बिंदु लिखिए।

उत्तर :
- भारत का मानना था कि सीमा का प्रश्न अंग्रेजी शासन के समय सुलझाया जा चुका था।

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

- चीन ने अंग्रेजी शासन के समय के फैसले को मानने से इनकार किया।
- पश्चिमी क्षेत्र में विवाद अक्साई–चीन को लेकर था।
- पूर्वी क्षेत्र में चीन ने अरुणाचल प्रदेश के अधिकांश हिस्सों पर दावा किया।
- 1957–1959 के बीच चीन ने अक्साई–चीन में सड़क बनाकर रणनीतिक बढ़त हासिल की।

4. 1962 के युद्ध का भारतीय राजनीति पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर :
- युद्ध से नेहरू की छवि धूमिल हुई।
- सैन्य तैयारी न होने को लेकर नेहरू की आलोचना हुई।
- रक्षा मंत्री वी. के. कृष्णमेनन को मंत्रिमंडल छोड़ना पड़ा।
- नेहरू सरकार के खिलाफ पहली बार अविश्वास प्रस्ताव लाया गया।
- कांग्रेस को कुछ महत्वपूर्ण उप–चुनावों में पराजय का सामना करना पड़ा।

5. चीन युद्ध के बाद पूर्वोत्तर क्षेत्र के संबंध में क्या कदम उठाए गए?

उत्तर :
- युद्ध ने पूर्वोत्तर की डाँवाडोल स्थिति की ओर ध्यान आकर्षित किया।
- क्षेत्र की पिछड़ी और अलग–थलग दशा को चुनौती माना गया।
- युद्ध के बाद क्षेत्र को नई तरतीब में ढालने की कोशिश हुई।
- नागालैंड को प्रांत का दर्जा दिया गया।
- मणिपुर और त्रिपुरा को अपनी विधानसभा के निर्वाचन का अधिकार मिला।

6. 1962 के बाद भारत–चीन संबंधों में सुधार की प्रक्रिया बताइए।

उत्तर :
- संबंध सामान्य होने में लगभग दस वर्ष लगे।
- 1976 में दोनों देशों के बीच पूर्ण राजनयिक संबंध बहाल हुए।
- 1979 में विदेश मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी चीन गए।
- बाद में प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने चीन का दौरा किया।
- इसके बाद संबंधों में व्यापारिक मसलों पर अधिक जोर दिया गया।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. भारत–चीन संबंधों पर टिप्पणी लिखिए।

(RBSE-2024, RBSE-2025, Model Paper-2026)

उत्तर :
- स्वतंत्रता के बाद भारत और चीन के संबंधों की शुरुआत मैत्रीपूर्ण ढंग से हुई।
- भारत चीन की कम्युनिस्ट सरकार को मान्यता देने वाले शुरुआती देशों में था।
- 1954 में दोनों देशों ने पंचशील के सिद्धांतों की घोषणा की।
- चीन द्वारा तिब्बत पर नियंत्रण और दलाई लामा को भारत में शरण मिलने से तनाव बढ़ा।
- अक्साई–चीन और अरुणाचल प्रदेश को लेकर सीमा विवाद गहरा गया।
- अक्टूबर 1962 में चीन ने विवादित क्षेत्रों पर व्यापक सैन्य हमला किया।
- 1976 के बाद राजनयिक संबंध बहाल हुए और आगे संबंधों में व्यापारिक मुद्दों पर जोर बढ़ा।

2. 1962 के भारत–चीन युद्ध की प्रमुख घटनाओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- भारत और चीन के बीच सीमा प्रश्न पर लंबे समय तक बातचीत विफल रही।
- दोनों देशों की सेनाओं के बीच सीमा पर कई बार झड़पें हुईं।
- अक्टूबर 1962 में चीन ने दोनों विवादित क्षेत्रों पर व्यापक हमला किया।
- पहले चरण में चीनी सेना ने अरुणाचल प्रदेश के कुछ महत्वपूर्ण इलाकों पर कब्जा किया।
- नवंबर में युद्ध का दूसरा दौर शुरू हुआ।
- पश्चिमी मोर्चे पर भारतीय सेना ने चीन की बढ़त रोकी, पर पूर्व में चीनी सेना असम के प्रवेशद्वार तक पहुँची।
- अंततः चीन ने एकतरफा युद्धविराम घोषित कर सेनाएँ हमले से पहले की स्थिति तक वापस कर लीं।

3. 1962 के युद्ध के प्रमुख राजनीतिक और राष्ट्रीय परिणाम लिखिए।

उत्तर :
- भारत की देश और विदेश की छवि को धक्का लगा।
- भारत को अमेरिका और ब्रिटेन से सैन्य सहायता माँगनी पड़ी।
- भारतीय राष्ट्रीय स्वाभिमान को चोट पहुँची।
- साथ ही देश में राष्ट्र–भावना बलवती हुई।
- प्रमुख सैन्य अधिकारियों तथा रक्षा मंत्री वी. के. कृष्णमेनन पर प्रभाव पड़ा।
- नेहरू की छवि कमजोर हुई और उनकी सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव आया।
- युद्ध ने पूर्वोत्तर की स्थिति और राष्ट्रीय एकता–अखंडता की चुनौतियों की ओर ध्यान आकर्षित किया।

4. 1962 के बाद भारत–चीन संबंधों के सामान्यीकरण की प्रक्रिया स्पष्ट कीजिए।

पढ़ेंगे तभी, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

उत्तर :
- युद्ध के बाद संबंधों को सामान्य होने में लगभग दस वर्ष लगे।
- 1976 में पूर्ण राजनयिक संबंध बहाल हुए।
- 1979 में विदेश मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी चीन गए।
- नेहरू के बाद प्रधानमंत्री के रूप में राजीव गांधी ने चीन की यात्रा की।
- दोनों देशों ने राजनीतिक तनाव के बावजूद संवाद की प्रक्रिया आगे बढ़ाई।
- आगे के संबंधों में पुराने संघर्षों की तुलना में व्यापारिक मसलों को अधिक महत्व मिला।
- इस प्रकार संबंध धीरे–धीरे सैन्य संघर्ष से राजनयिक और व्यापारिक संपर्क की दिशा में बढ़े।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. भारत–चीन संबंधों की मैत्री से संघर्ष तक की यात्रा का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- आजादी के बाद भारत ने चीन के साथ संबंधों की शुरुआत दोस्ताना ढंग से की।
- भारत चीन की नई कम्युनिस्ट सरकार को मान्यता देने वाले पहले देशों में एक था।
- नेहरू ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर चीन की सरकार को सहयोग दिया।
- 1954 में दोनों देशों ने पंचशील की घोषणा की।
- चीन द्वारा 1950 में तिब्बत पर नियंत्रण से दोनों देशों के बीच मध्यवर्ती क्षेत्र समाप्त हुआ।
- दलाई लामा को 1959 में भारत द्वारा शरण दिए जाने पर चीन ने कड़ा विरोध किया।
- अक्साई–चीन और अरुणाचल प्रदेश को लेकर सीमा विवाद बढ़ा।
- अक्टूबर 1962 में चीन ने विवादित क्षेत्रों में सैन्य आक्रमण किया।
- इस युद्ध के बाद लंबे समय तक संबंध तनावपूर्ण रहे और 1976 में पूर्ण राजनयिक संबंध बहाल हुए।

2. 1962 के भारत–चीन युद्ध के कारण और परिणामों का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर :
- चीन द्वारा तिब्बत पर नियंत्रण ने दोनों देशों के संबंधों में अविश्वास पैदा किया।
- दलाई लामा को भारत द्वारा शरण देने से चीन की नाराजगी बढ़ी।
- अक्साई–चीन और अरुणाचल प्रदेश को लेकर सीमा विवाद तीखा हुआ।
- शीर्ष नेताओं की लंबी बातचीत के बावजूद सीमा विवाद का समाधान नहीं हो सका।
- अक्टूबर 1962 में चीन ने विवादित क्षेत्रों पर व्यापक हमला किया।
- युद्ध से भारत की अंतर्राष्ट्रीय और घरेलू छवि को धक्का लगा।
- नेहरू और रक्षा मंत्री वी. के. कृष्णमेनन की आलोचना हुई।
- युद्ध से भारतीय राष्ट्रीय स्वाभिमान को चोट, पर राष्ट्र–भावना को बल मिला।
- इसके बाद पूर्वोत्तर क्षेत्र और रक्षा तैयारियों पर अधिक ध्यान दिया गया।

3. भारत–चीन संघर्ष का भारतीय राजनीति और कम्युनिस्ट आंदोलन पर प्रभाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- युद्ध के बाद नेहरू की राजनीतिक छवि कमजोर हुई।
- उनकी सरकार के खिलाफ पहली बार अविश्वास प्रस्ताव लाया गया।
- कांग्रेस को कुछ महत्वपूर्ण उप–चुनावों में हार मिली।
- रक्षा मंत्री वी. के. कृष्णमेनन को पद छोड़ना पड़ा।
- चीन–सोवियत मतभेदों और युद्ध से भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी में संघर्ष बढ़ा।
- सोवियत समर्थक खेमा भाकपा में रहा और उसने कांग्रेस से नजदीकी बढ़ाई।
- चीन समर्थक खेमा कांग्रेस से नजदीकी के विरुद्ध था।
- 1964 में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी विभाजित हो गई।
- चीन समर्थक धारा ने मार्क्सवादी भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी बनाई।

पाकिस्तान के साथ युद्ध और शांति

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. लालबहादुर शास्त्री और अयूब खान के बीच 1966 में कौन–सा समझौता हुआ? *(Model Paper-2025)*

(अ) ताशकंद समझौता
(ब) शिमला समझौता
(स) कारगिल समझौता
(द) इनमें से कोई नहीं **(अ)**

2. भारत–पाक कारगिल संघर्ष कब हुआ? *(Model Paper-2024)*

(अ) 1971 (ब) 1999
(स) 1947 (द) 1962 **(ब)**

3. 1965 में पाकिस्तान ने सबसे पहले किस भारतीय क्षेत्र में सैनिक हमला किया?

(अ) कच्छ का रन (ब) लद्दाख
(स) द्रास (द) धर्मशाला **(अ)**

4. 1971 के संकट में पूर्वी पाकिस्तान में किस पार्टी को जोरदार सफलता मिली?

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

(अ) अवामी लीग (ब) भारतीय जनसंघ
(स) स्वतंत्र पार्टी (द) सोशलिस्ट पार्टी **(अ)**

5. 1971 में भारत ने सोवियत संघ के साथ कितने वर्षों की शांति और मित्रता की संधि की?
(अ) 10 वर्ष (ब) 20 वर्ष
(स) 30 वर्ष (द) 50 वर्ष **(ब)**

6. 1971 के युद्ध में लगभग कितने पाकिस्तानी सैनिकों को आत्मसमर्पण करना पड़ा?
(अ) 80 लाख (ब) 90,000
(स) 20,000 (द) 25,000 **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. 1960 में भारत–पाकिस्तान ने ..... संधि पर हस्ताक्षर किए। *(RBSE-2022, RBSE-2025)*

उत्तर : सिंधु नदी जल संधि

2. पाकिस्तान ने अप्रैल 1965 में गुजरात के ..... क्षेत्र में सैनिक हमला किया।

उत्तर : कच्छ के रन

3. भारत और सोवियत संघ ने 1971 में ..... वर्ष की शांति और मित्रता की संधि की।

उत्तर : 20

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. शिमला समझौता कब और किनके बीच हुआ? *(RBSE-2026)*

उत्तर : 3 जुलाई 1972 को इंदिरा गांधी और जुल्फिकार अली भुट्टो के बीच।

2. सिंधु नदी जल विवाद को सुलझाने में किस संस्था ने मध्यस्थता की?

उत्तर : विश्व बैंक।

3. 1965 के भारत–पाक युद्ध का अंत किसके हस्तक्षेप से हुआ?

उत्तर : संयुक्त राष्ट्र संघ के हस्तक्षेप से।

4. पूर्वी पाकिस्तान में अवामी लीग के नेता कौन थे?

उत्तर : मुजीबुर्रहमान।

5. भारत ने बांग्लादेश के किस संघर्ष को समर्थन दिया?

उत्तर : बांग्लादेश के मुक्ति संग्राम को।

6. कारगिल संघर्ष में कब्जा किए गए चार प्रमुख ठिकानों के नाम लिखिए।

उत्तर : द्रास, मश्कोह, काकसर और बतालिक।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. भारत–पाकिस्तान के बीच तनाव के दो कारण लिखिए। *(RBSE-2022)*

उत्तर :
- पहला प्रमुख कारण जम्मू–कश्मीर का विवाद था।
- इसी प्रश्न को लेकर 1947 में दोनों देशों की सेनाओं के बीच छाया–युद्ध हुआ।
- दूसरा कारण समय–समय पर होने वाले सैन्य हमले और संघर्ष थे।
- 1965 के हमलों तथा 1999 के कारगिल कब्जों ने दोनों देशों के बीच तनाव बढ़ाया।

2. कश्मीर विवाद के बावजूद भारत और पाकिस्तान के बीच सहयोग के उदाहरण लिखिए।

उत्तर :
- दोनों देशों ने बँटवारे के समय अपहृत महिलाओं को परिवारों तक वापस पहुँचाने में सहयोग किया।
- नदी जल के विवाद को विश्व बैंक की मध्यस्थता से सुलझाया गया।
- 1960 में सिंधु नदी जल संधि पर हस्ताक्षर हुए।
- संबंधों में उतार–चढ़ाव के बावजूद इस संधि पर ठीक–ठाक अमल होता रहा।

3. 1965 के भारत–पाक सैन्य संघर्ष की प्रमुख घटनाएँ लिखिए।

उत्तर :
- अप्रैल 1965 में पाकिस्तान ने कच्छ के रन में हमला किया।
- अगस्त–सितंबर में पाकिस्तान ने जम्मू–कश्मीर में बड़े पैमाने पर हमला किया।
- प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री ने पंजाब सीमा से जवाबी हमला करने का आदेश दिया।
- भारतीय सेना आगे बढ़ते हुए लाहौर के निकट पहुँच गई।
- संयुक्त राष्ट्र के हस्तक्षेप से युद्ध समाप्त हुआ और बाद में ताशकंद समझौता हुआ।

4. 1970–71 में पूर्वी पाकिस्तान के राजनीतिक संकट के कारण लिखिए।

उत्तर :
- पाकिस्तान के पहले आम चुनाव में खंडित जनादेश आया।
- पश्चिमी पाकिस्तान में भुट्टो की पार्टी और पूर्व में अवामी लीग विजयी हुई।
- पूर्वी पाकिस्तान की बंगाली जनता अपने साथ हुए दोयम दर्जे के व्यवहार से नाराज थी।
- पाकिस्तानी शासकों ने चुनावी जनादेश स्वीकार नहीं किया।
- अवामी लीग की परिसंघ की माँग भी स्वीकार नहीं की गई।

5. बांग्लादेश के मुक्ति संग्राम में भारत की भूमिका बताइए।

उत्तर :
- भारत ने पूर्वी पाकिस्तान से आए लगभग 80 लाख शरणार्थियों का बोझ उठाया।
- भारत ने बांग्लादेश के मुक्ति संग्राम को नैतिक समर्थन दिया।

- भारत ने आंदोलन को भौतिक सहायता भी दी।
- दिसंबर 1971 में भारत ने पाकिस्तान के हमलों के जवाब में सैन्य कार्रवाई की।
- भारतीय सेना की सफलता के बाद बांग्लादेश स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में उभरा।

6. कारगिल संघर्ष की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर :
- 1999 में नियंत्रण रेखा के द्रास, मश्कोह, काकसर और बतालिक में कब्जा किया गया।
- भारतीय सेना ने पाकिस्तानी सेना की मिलीभगत जानकर कार्रवाई की।
- संघर्ष मई–जून 1999 में जारी रहा।
- 26 जुलाई तक भारत अधिकतर ठिकानों पर पुनः अधिकार कर चुका था।
- युद्ध कारगिल क्षेत्र तक सीमित रहा, लेकिन उसने पूरे विश्व का ध्यान खींचा।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

7. 1965 के भारत–पाक युद्ध और ताशकंद समझौते का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- अप्रैल 1965 में पाकिस्तान ने गुजरात के कच्छ के रन में सैनिक हमला किया।
- अगस्त–सितंबर में पाकिस्तान ने जम्मू–कश्मीर में बड़े पैमाने पर हमला किया।
- पाकिस्तानी नेतृत्व को स्थानीय जनता के समर्थन की उम्मीद थी, लेकिन ऐसा नहीं हुआ।
- लालबहादुर शास्त्री ने पंजाब सीमा से जवाबी कार्रवाई का आदेश दिया।
- भारतीय सेना लड़ते हुए लाहौर के निकट पहुँच गई।
- संयुक्त राष्ट्र संघ के हस्तक्षेप से युद्ध समाप्त हुआ।
- 1966 में शास्त्री और अयूब खान के बीच सोवियत मध्यस्थता से ताशकंद समझौता हुआ।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. स्वतंत्रता से शिमला समझौते तक भारत–पाकिस्तान संबंधों का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- बँटवारे के तुरंत बाद जम्मू–कश्मीर विवाद के कारण दोनों देशों में संघर्ष शुरू हुआ।
- 1947 में जम्मू–कश्मीर में दोनों देशों की सेनाओं के बीच छाया–युद्ध हुआ।
- संघर्ष के बावजूद दोनों देशों ने कुछ मानवीय मामलों में सहयोग किया।
- 1960 में विश्व बैंक की मध्यस्थता से सिंधु नदी जल संधि हुई।
- 1965 में पाकिस्तान के हमलों से दोनों देशों के बीच गंभीर सैन्य संघर्ष हुआ।
- युद्ध के बाद 1966 में ताशकंद समझौता हुआ।
- 1971 में पूर्वी पाकिस्तान के संकट और बांग्लादेश मुक्ति संग्राम के कारण पूर्णव्यापी युद्ध हुआ।
- इस युद्ध के परिणामस्वरूप बांग्लादेश स्वतंत्र राष्ट्र बना।
- 3 जुलाई 1972 को शिमला समझौते से शांति की बहाली का प्रयास हुआ।

2. 1971 के बांग्लादेश संकट के कारण, भारत की भूमिका और परिणामों का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर :
- पाकिस्तान के आम चुनाव में पूर्वी पाकिस्तान में अवामी लीग की भारी सफलता हुई।
- पाकिस्तानी शासकों ने इस जनादेश को स्वीकार नहीं किया।
- शेख मुजीब को गिरफ्तार कर पूर्वी पाकिस्तान की जनता पर दमन किया गया।
- बंगाली जनता ने बांग्लादेश को मुक्त कराने के लिए मुक्ति संग्राम शुरू किया।
- लगभग 80 लाख शरणार्थियों के भारत आने से भारत पर भारी दबाव पड़ा।
- भारत ने मुक्ति संग्राम को नैतिक और भौतिक सहायता दी।
- दिसंबर 1971 में युद्ध शुरू हुआ और भारतीय सेना ने ढाका को घेर लिया।
- लगभग 90,000 पाकिस्तानी सैनिकों ने आत्मसमर्पण किया और बांग्लादेश स्वतंत्र हुआ।
- 1972 के शिमला समझौते से अमन की बहाली का प्रयास किया गया।

3. भारत–पाक संबंधों में संघर्ष और शांति के प्रयासों का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- दोनों देशों के बीच सबसे पुराना विवाद जम्मू–कश्मीर रहा।
- 1947, 1965 और 1971 में दोनों देशों के बीच अलग–अलग स्तर पर सैन्य संघर्ष हुए।
- इसके बावजूद मानवीय प्रश्नों पर दोनों देशों ने सहयोग भी किया।
- 1960 की सिंधु नदी जल संधि सहयोग का महत्वपूर्ण उदाहरण थी।
- 1966 का ताशकंद समझौता युद्ध के बाद शांति का प्रयास था।
- 1972 का शिमला समझौता अमन की बहाली की दिशा में महत्वपूर्ण कदम था।

पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

- 1990 के बाद दोनों देशों ने सांस्कृतिक आदान–प्रदान और नागरिक आवाजाही बढ़ाने का प्रयास किया।
- रेल और बस सेवा संबंध सामान्य बनाने की महत्वपूर्ण उपलब्धि रही।
- 1999 के कारगिल संघर्ष से शांति प्रयासों को धक्का लगा, फिर भी स्थायी अमन के प्रयास जारी रहे।

भारत की परमाणु नीति

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. भारत के परमाणु कार्यक्रम की शुरुआत किसके निर्देशन में हुई?
(अ) होमी जहाँगीर भाभा
(ब) जवाहरलाल नेहरू
(स) चाऊ एन लाई
(द) वी. के. कृष्णमेनन **(अ)**

2. भारत ने किस संधि को भेदभावपूर्ण माना?
(अ) परमाणु अप्रसार संधि
(ब) सिंधु नदी जल संधि
(स) ताशकंद समझौता
(द) शिमला समझौता **(अ)**

3. भारत की परमाणु नीति में परमाणु हथियारों के प्रयोग के संबंध में कौन–सा सिद्धांत स्वीकार किया गया है?
(अ) प्रयोग पहले नहीं
(ब) लगातार प्रयोग
(स) सैन्य गुट के निर्देश पर प्रयोग
(द) केवल विदेशी नियंत्रण में प्रयोग **(अ)**

रिक्तस्थान –

1. भारत ने सन् ..... में पहला परमाणु परीक्षण किया। *(Model Paper-2023)*

उत्तर : 1974

2. परमाणु अप्रसार संधि ..... में हुई। *(Model Paper-2024)*

उत्तर : 1968

3. भारत के परमाणु कार्यक्रम की शुरुआत 1940 के दशक के अंतिम वर्षों में ..... के निर्देशन में हुई।

उत्तर : होमी जहाँगीर भाभा

4. 1995 में परमाणु अप्रसार संधि को ..... के लिए बढ़ा दिया गया।

उत्तर : अनियतकाल

5. भारत ने मई ..... में पुनः परमाणु परीक्षण किए।

उत्तर : 1998

6. भारत ने परमाणु हथियारों के संबंध में '.....' की नीति स्वीकार की है।

उत्तर : प्रयोग पहले नहीं

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. भारत ने 1998 के परमाणु परीक्षणों से क्या प्रदर्शित किया?

उत्तर : सैन्य उद्देश्यों के लिए अणुशक्ति के इस्तेमाल की क्षमता।

2. भारत परमाणु हथियारों के प्रथम प्रयोग के बारे में क्या नीति रखता है?

उत्तर : 'प्रयोग पहले नहीं' की नीति।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. परमाणु शक्ति के संबंध में नेहरू के विचार लिखिए।

उत्तर :
- नेहरू का विज्ञान और प्रौद्योगिकी में गहरा विश्वास था।
- परमाणु कार्यक्रम उनकी औद्योगीकरण की नीति का महत्वपूर्ण घटक था।
- भारत परमाणु ऊर्जा का उपयोग शांतिपूर्ण उद्देश्यों के लिए करना चाहता था।
- नेहरू परमाणु हथियारों के खिलाफ थे।
- उन्होंने महाशक्तियों पर व्यापक परमाणु निशस्त्रीकरण के लिए जोर दिया।

2. भारत ने परमाणु अप्रसार संधि का विरोध क्यों किया?

उत्तर :
- भारत ने NPT को भेदभावपूर्ण माना।
- यह संधि मुख्यतः उन देशों पर लागू होनी थी जो परमाणु शक्ति से हीन थे।
- इससे परमाणु हथियारों से लैस देशों का परमाणु शक्ति पर एकाधिकार वैध बनता था।
- भारत ने इसी कारण संधि पर हस्ताक्षर करने से इनकार किया।
- 1995 में NPT के अनियतकालीन विस्तार का भी भारत ने विरोध किया।

3. 1974 के भारतीय परमाणु परीक्षण की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर :
- भारत ने मई 1974 में परमाणु परीक्षण किया।
- भारत ने इसे शांतिपूर्ण परीक्षण करार दिया।
- भारत ने परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण उपयोग की नीति दोहराई।
- भारत पहले से ही परमाणु हथियारों की बढ़ोतरी और असमान व्यवस्था को लेकर चिंतित था।
- परीक्षण भारत के लंबे समय से चल रहे परमाणु कार्यक्रम का महत्वपूर्ण चरण था।

4. 1998 के परमाणु परीक्षणों के बाद क्या परिस्थितियाँ बनीं?

उत्तर :
- भारत ने मई 1998 में परमाणु परीक्षण किए।
- भारत ने सैन्य उद्देश्यों के लिए अणुशक्ति उपयोग की क्षमता प्रदर्शित की।

- इसके तुरंत बाद पाकिस्तान ने भी परमाणु परीक्षण किए।
- क्षेत्र में परमाणु युद्ध की आशंका को बल मिला।
- अंतर्राष्ट्रीय बिरादरी ने भारत और पाकिस्तान पर प्रतिबंध लगाए, जिन्हें बाद में हटा लिया गया।

5. भारत की 'प्रयोग पहले नहीं' और निशस्त्रीकरण संबंधी नीति स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- भारत ने अपनी रक्षा के लिए परमाणु हथियार रखने की बात स्वीकार की।
- परमाणु हथियारों का 'प्रयोग पहले नहीं' करने का सिद्धांत अपनाया।
- भारत वैश्विक स्तर पर लागू परमाणु निशस्त्रीकरण का समर्थक है।
- भारत का जोर भेदभावहीन निशस्त्रीकरण पर है।
- अंतिम उद्देश्य परमाणु हथियारों से मुक्त विश्व की रचना है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. NPT और CTBT के संबंध में भारत के दृष्टिकोण को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- 1968 की परमाणु अप्रसार संधि को भारत ने भेदभावपूर्ण माना।
- भारत का मानना था कि ऐसी संधियाँ मुख्यतः परमाणु शक्ति–विहीन देशों पर लागू होती हैं।
- इससे परमाणु हथियार रखने वाले देशों के एकाधिकार को वैधता मिलती थी।
- भारत ने NPT पर हस्ताक्षर करने से इनकार किया।
- 1995 में NPT के अनियतकालीन विस्तार का भी विरोध किया।
- भारत ने व्यापक परमाणु परीक्षण प्रतिबंध संधि (CTBT) पर भी हस्ताक्षर नहीं किए।
- भारत ने इसके स्थान पर भेदभावहीन वैश्विक परमाणु निशस्त्रीकरण की वचनबद्धता दोहराई।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. भारत की परमाणु नीति की विवेचना कीजिए।

(RBSE-2024)

उत्तर :
- भारत का परमाणु कार्यक्रम आधुनिक विकास के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर विश्वास से जुड़ा था।
- इसकी शुरुआत 1940 के दशक के अंतिम वर्षों में होमी जहाँगीर भाभा के निर्देशन में हुई।
- भारत परमाणु ऊर्जा का उपयोग शांतिपूर्ण उद्देश्यों के लिए करना चाहता था।
- नेहरू परमाणु हथियारों के विरोधी और व्यापक निशस्त्रीकरण के समर्थक थे।
- भारत ने 1968 की परमाणु अप्रसार संधि को भेदभावपूर्ण मानकर हस्ताक्षर नहीं किए।
- मई 1974 में भारत ने पहला परमाणु परीक्षण किया और इसे शांतिपूर्ण परीक्षण कहा।
- भारत ने 1995 में NPT के अनियतकालीन विस्तार और CTBT पर हस्ताक्षर करने से इनकार किया।
- मई 1998 के परीक्षणों के बाद भारत ने रक्षा के लिए परमाणु हथियार रखने लेकिन 'प्रयोग पहले नहीं' करने की नीति स्वीकार की।
- भारत भेदभावहीन वैश्विक परमाणु निशस्त्रीकरण और परमाणु हथियारों से मुक्त विश्व के प्रति वचनबद्ध है।

2. भारत के परमाणु कार्यक्रम में विज्ञान, शांतिपूर्ण उपयोग और निशस्त्रीकरण की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- नेहरू ने आधुनिक भारत के निर्माण में विज्ञान और प्रौद्योगिकी को महत्वपूर्ण माना।
- परमाणु कार्यक्रम भारत की औद्योगीकरण नीति का महत्वपूर्ण अंग बना।
- कार्यक्रम की शुरुआत होमी जहाँगीर भाभा के निर्देशन में हुई।
- भारत ने अणु ऊर्जा को मुख्यतः शांतिपूर्ण उद्देश्यों में उपयोग करने की बात कही।
- नेहरू स्वयं परमाणु हथियारों के खिलाफ थे।
- उन्होंने महाशक्तियों से व्यापक परमाणु निशस्त्रीकरण की माँग की।
- 1974 के परीक्षण को भारत ने शांतिपूर्ण परीक्षण कहा।
- भारत ने भेदभावपूर्ण परमाणु संधियों के बजाय समान और भेदभावहीन निशस्त्रीकरण पर जोर दिया।
- भारत का घोषित लक्ष्य परमाणु हथियारों से मुक्त विश्व की रचना है।

3. परमाणु अप्रसार व्यवस्था के प्रति भारत के विरोध के कारणों की विवेचना कीजिए।

उत्तर :
- परमाणु शक्ति संपन्न देशों ने 1968 की परमाणु अप्रसार संधि को अन्य देशों पर लागू करना चाहा।
- भारत ने इस संधि को शुरू से भेदभावपूर्ण माना।
- ऐसी संधियाँ मुख्यतः परमाणु शक्ति से हीन देशों पर लागू होनी थीं।
- इनसे परमाणु हथियार रखने वाले देशों का परमाणु शक्ति पर एकाधिकार वैध होता था।
- इसी कारण भारत ने NPT पर हस्ताक्षर नहीं किए।
- 1995 में NPT के अनियतकालीन विस्तार का भारत ने विरोध किया।
- भारत ने CTBT पर भी हस्ताक्षर करने से इनकार किया।
- भारत ने परमाणु हथियारों के लिए असमान व्यवस्था की जगह भेदभावहीन निशस्त्रीकरण का समर्थन किया।

पढ़ेगा भारत तो बढ़ेगा भारत

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

5 कांग्रेस प्रणाली: चुनौतियाँ और पुनर्स्थापना

राजनीतिक उत्तराधिकार की चुनौती

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. 'जय जवान–जय किसान' का नारा किसने दिया? *(Model Paper-2025)*

(अ) जवाहरलाल नेहरू
(ब) लाल बहादुर शास्त्री
(स) सरदार वल्लभ भाई पटेल
(द) इंदिरा गाँधी **(ब)**

2. नेहरू की मृत्यु के बाद कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष कौन थे, जिन्होंने नेताओं और सांसदों से सलाह–मशविरा किया?

(अ) एस. निजलिंगप्पा (ब) के. कामराज
(स) मोरारजी देसाई (द) अतुल्य घोष **(ब)**

3. लालबहादुर शास्त्री का अचानक देहान्त कहाँ हुआ?

(अ) मद्रास (ब) बंबई
(स) ताशकंद (द) चंडीगढ़ **(स)**

4. शास्त्री की मृत्यु के बाद प्रधानमंत्री के चयन का फैसला किस प्रक्रिया से हुआ?

(अ) राष्ट्रपति के मनोनयन से
(ब) गुप्त मतदान से
(स) आम चुनाव से
(द) संयुक्त विधायक दल से **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. जवाहरलाल नेहरू के राजनीतिक उत्तराधिकारी ..... थे। *(Model Paper-2024)*

उत्तर : लालबहादुर शास्त्री

2. लालबहादुर शास्त्री का देहान्त ..... को हुआ।

उत्तर : 11 जनवरी 1966

3. प्रधानमंत्री के चयन में इंदिरा गाँधी को कांग्रेस पार्टी के ..... से अधिक सांसदों ने मत दिया।

उत्तर : दो–तिहाई

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. लालबहादुर शास्त्री की मृत्यु के बाद प्रधानमंत्री पद के लिए किनके बीच मुकाबला हुआ? *(RBSE-2023)*

उत्तर : मोरारजी देसाई और इंदिरा गाँधी के बीच।

2. नेहरू की मृत्यु के बाद शास्त्री के चयन में किसने प्रमुख भूमिका निभाई?

उत्तर : कांग्रेस अध्यक्ष के. कामराज ने।

3. लालबहादुर शास्त्री ने रेलमंत्री के पद से इस्तीफा क्यों दिया था?

उत्तर : एक बड़ी रेल दुर्घटना की नैतिक जिम्मेवारी स्वीकार करते हुए।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. लालबहादुर शास्त्री के सामने दो प्रमुख चुनौतियाँ बताइए। *(RBSE-2023)*

उत्तर :
- भारत चीन युद्ध से पैदा आर्थिक कठिनाइयों से उबर रहा था।
- मानसून की असफलता से सूखे की स्थिति पैदा हुई।
- कई स्थानों पर गंभीर खाद्यान्न संकट था।
- 1965 में भारत को पाकिस्तान के साथ युद्ध करना पड़ा।

2. 1960 के दशक को 'खतरनाक दशक' क्यों कहा गया? *(Model Paper-2023)*

उत्तर :
- देश में गरीबी की समस्या अनसुलझी थी।
- गैर–बराबरी गंभीर चुनौती बनी हुई थी।
- सांप्रदायिक और क्षेत्रीय विभाजन मौजूद थे।
- इन कठिनाइयों से लोकतंत्र और देश की एकता के भविष्य को लेकर आशंकाएँ थीं।

3. नेहरू के बाद लालबहादुर शास्त्री का चयन किस प्रकार हुआ?

उत्तर :
- नेहरू की मृत्यु के बाद राजनीतिक उत्तराधिकारी का प्रश्न उठा।
- कांग्रेस अध्यक्ष के. कामराज ने नेताओं और सांसदों से सलाह की।
- उन्होंने पाया कि सभी लालबहादुर शास्त्री के पक्ष में थे।
- शास्त्री कांग्रेस संसदीय दल के निर्विरोध नेता चुने गए।

4. लालबहादुर शास्त्री की प्रमुख व्यक्तिगत एवं राजनीतिक विशेषताएँ बताइए।

उत्तर :
- वे उत्तर प्रदेश से थे और नेहरू मंत्रिमंडल में कई वर्षों तक मंत्री रहे।
- उनको लेकर किसी प्रकार का बड़ा विवाद नहीं उठा।
- वे सादगी और सिद्धांत निष्ठा के लिए प्रसिद्ध थे।

- उन्होंने रेल दुर्घटना की नैतिक जिम्मेवारी लेते हुए इस्तीफा दिया था।

5. शास्त्री के बाद इंदिरा गाँधी प्रधानमंत्री कैसे बनीं?

उत्तर :
- शास्त्री की मृत्यु के बाद पुनः राजनीतिक उत्तराधिकार का प्रश्न उठा।
- मुकाबला मोरारजी देसाई और इंदिरा गाँधी के बीच था।
- कांग्रेस सांसदों ने फैसले के लिए गुप्त मतदान किया।
- इंदिरा गाँधी को दो–तिहाई से अधिक सांसदों का मत मिला और वे विजयी हुईं।

6. कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं ने इंदिरा गाँधी का समर्थन क्यों किया?

उत्तर :
- इंदिरा गाँधी लंबे समय से राजनीति में सक्रिय थीं।
- वे कांग्रेस की अध्यक्ष रह चुकी थीं।
- शास्त्री मंत्रिमंडल में वे अपेक्षाकृत कम समय से मंत्री थीं।
- वरिष्ठ नेताओं को लगा कि प्रशासनिक अनुभव कम होने के कारण वे उनके समर्थन और दिशा–निर्देशन पर निर्भर रहेंगी।

7. नेहरू और शास्त्री के बाद सत्ता–हस्तांतरण का लोकतांत्रिक महत्व बताइए।

उत्तर :
- दोनों अवसरों पर राजनीतिक उत्तराधिकार का प्रश्न संवैधानिक व्यवस्था के भीतर हल हुआ।
- शास्त्री का चयन निर्विरोध हुआ।
- इंदिरा गाँधी का चयन गुप्त मतदान से हुआ।
- सत्ता का शांतिपूर्ण हस्तांतरण भारतीय लोकतंत्र की परिपक्वता का प्रमाण माना गया।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. नेहरू की मृत्यु के बाद उत्पन्न राजनीतिक आशंकाओं और उत्तराधिकार के समाधान का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- मई 1964 में नेहरू की मृत्यु के बाद उनके राजनीतिक उत्तराधिकारी को लेकर आशंकाएँ पैदा हुईं।
- भारत के बाहर भी यह संदेह था कि नेहरू के बाद लोकतंत्र कायम रह पाएगा या नहीं।
- राजनीतिक उत्तराधिकार लोकतांत्रिक ढंग से हल न होने पर सेना की राजनीतिक भूमिका की आशंका व्यक्त की गई।
- गरीबी, गैर–बराबरी तथा सांप्रदायिक और क्षेत्रीय विभाजन के कारण दशक को 'खतरनाक दशक' कहा गया।
- कांग्रेस अध्यक्ष के. कामराज ने नेताओं और सांसदों से सलाह–मशविरा किया।
- लालबहादुर शास्त्री के निर्विरोध चयन से उत्तराधिकार का प्रश्न शांतिपूर्ण ढंग से हल हो गया।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. 1964 से 1966 के बीच राजनीतिक उत्तराधिकार की चुनौती का विस्तार से वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- मई 1964 में नेहरू की मृत्यु से राजनीतिक उत्तराधिकारी का प्रश्न सामने आया।
- देश और विदेश में भारतीय लोकतंत्र के भविष्य को लेकर आशंकाएँ थीं।
- गरीबी, गैर–बराबरी तथा सांप्रदायिक और क्षेत्रीय विभाजन ने इन आशंकाओं को बढ़ाया।
- कांग्रेस अध्यक्ष के. कामराज ने परामर्श के आधार पर शास्त्री के लिए सहमति बनाई।
- लालबहादुर शास्त्री कांग्रेस संसदीय दल के निर्विरोध नेता बने।
- शास्त्री की मृत्यु के बाद मुकाबला इंदिरा गाँधी और मोरारजी देसाई के बीच हुआ।
- गुप्त मतदान में इंदिरा गाँधी को दो–तिहाई से अधिक सांसदों का समर्थन मिला।
- दोनों सत्ता–हस्तांतरणों की शांति और वैधानिकता को भारतीय लोकतंत्र की परिपक्वता माना गया।

2. लालबहादुर शास्त्री के राजनीतिक जीवन और प्रधानमंत्री काल का मूल्यांकन Chapter Content के आधार पर कीजिए।

उत्तर :
- शास्त्री ने स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया था।
- वे उत्तर प्रदेश मंत्रिमंडल तथा केंद्रीय मंत्रिमंडल में मंत्री रहे।
- रेल दुर्घटना की नैतिक जिम्मेवारी लेते हुए उन्होंने रेलमंत्री पद से इस्तीफा दिया।
- वे अपनी सादगी और सिद्धांत निष्ठा के लिए प्रसिद्ध थे।
- प्रधानमंत्री के रूप में उन्हें आर्थिक संकट, सूखा और खाद्यान्न संकट का सामना करना पड़ा।
- 1965 में देश को पाकिस्तान के साथ युद्ध करना पड़ा।
- उन्होंने 'जय जवान–जय किसान' का नारा दिया।
- ताशकंद में समझौते के सिलसिले में गए शास्त्री का 11 जनवरी 1966 को देहान्त हो गया।

3. नेहरू से इंदिरा गाँधी तक सत्ता–हस्तांतरण ने भारतीय लोकतंत्र की परिपक्वता को किस प्रकार प्रदर्शित किया?

उत्तर :
- नेहरू की मृत्यु के बाद लोकतंत्र के भविष्य को लेकर गंभीर संदेह व्यक्त किए गए।
- उत्तराधिकार का प्रश्न कांग्रेस के भीतर सलाह–मशविरे से हल हुआ।
- लालबहादुर शास्त्री का चयन निर्विरोध किया गया।

पढ़ें सब कहीं, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

- शास्त्री की आकस्मिक मृत्यु के बाद फिर नेतृत्व का प्रश्न उठा।
- मोरारजी देसाई और इंदिरा गाँधी के बीच प्रतिस्पर्धा हुई।
- फैसला कांग्रेस सांसदों के गुप्त मतदान द्वारा हुआ।
- इंदिरा गाँधी को बहुमत का समर्थन मिला और सत्ता का शांतिपूर्ण हस्तांतरण हुआ।
- इस पूरी प्रक्रिया को भारतीय लोकतंत्र की परिपक्वता के रूप में देखा गया।

चौथा आम चुनाव, 1967

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. भारत में चौथा आम चुनाव कब हुआ? *(RBSE-2025)*

(अ) 1965 (ब) 1966
(स) 1967 (द) 1968 **(स)**

2. गैर–कांग्रेसवाद के रणनीतिकार कौन थे? *(RBSE-2026)*

(अ) के. कामराज
(ब) सी. नटराजन अन्नादुरई
(स) राम मनोहर लोहिया
(द) एस. निजलिंगप्पा **(स)**

3. 'आया राम गया राम' राजनीतिक जुमले में उल्लिखित विधायक गया लाल का सम्बन्ध कौन–से राज्य से था? *(Model Paper-2026)*

(अ) पंजाब (ब) हरियाणा
(स) राजस्थान (द) हिमाचल प्रदेश **(ब)**

4. बिहार में गैर–कांग्रेसी गठबंधन सरकार को क्या कहा गया?

(अ) ग्रैंड अलायंस
(ब) संयुक्त विधायक दल की सरकार
(स) कांग्रेस (आर)
(द) कांग्रेस (ओ) **(ब)**

5. पंजाब की संयुक्त विधायक दल की सरकार को क्या कहा गया?

(अ) पॉपुलर यूनाइटेड फ्रंट
(ब) ग्रैंड अलायंस
(स) कांग्रेस संसदीय दल
(द) कांग्रेस कार्यसमिति **(अ)**

रिक्तस्थान –

1. दो अन्य राज्यों में ..... के कारण कांग्रेस सरकार नहीं बना सकी।

उत्तर : दल–बदल

2. मद्रास में ..... पूर्ण बहुमत के साथ सत्ता में आई।

उत्तर : द्रविड़ मुनेत्र कषगम (डीएमके)

3. अनेक गैर–कांग्रेसी पार्टियों द्वारा बनाया गया समूह ..... कहलाया।

उत्तर : संयुक्त विधायक दल

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. 1967 के चुनाव परिणामों को 'राजनीतिक भूकंप' क्यों कहा गया? *(Model Paper-2025)*

उत्तर : कांग्रेस की सीटों और मत–प्रतिशत में भारी गिरावट तथा अनेक राज्यों में सत्ता खोने के कारण।

2. 1967 में किसी गैर–कांग्रेसी दल को पहली बार पूर्ण बहुमत कहाँ मिला?

उत्तर : मद्रास में द्रविड़ मुनेत्र कषगम (डीएमके) को।

3. गैर–कांग्रेसी गठबंधन सरकारों के विधायकों के समूह को क्या कहा गया?

उत्तर : संयुक्त विधायक दल।

4. 1967 में कांग्रेस के मत और सीटों की स्थिति में क्या परिवर्तन आया?

उत्तर : उसके मत–प्रतिशत और सीटों की संख्या में भारी गिरावट आई।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. गैर–कांग्रेसवाद क्या था? *(Model Paper-2024)*

उत्तर :
- विपक्षी दलों ने कांग्रेस के विरुद्ध एकजुट होने की रणनीति अपनाई।
- अलग–अलग विचारधाराओं के दलों ने कांग्रेस–विरोधी मोर्चे बनाए।
- कई राज्यों में सीटों को लेकर चुनावी तालमेल किया गया।
- राममनोहर लोहिया ने इस रणनीति को 'गैर–कांग्रेसवाद' का नाम दिया।

2. भारतीय राजनीति में 'दल–बदल' से आप क्या समझते हैं? *(Model Paper-2023)*

उत्तर :
- कोई जनप्रतिनिधि किसी दल के चुनाव चिह्न पर चुनाव लड़ता है।
- वह उसी दल के टिकट पर चुनाव जीतता है।
- चुनाव के बाद वह उस दल को छोड़ देता है।
- दूसरे दल में शामिल होने की इस प्रक्रिया को दल–बदल कहा जाता है।

3. 'आया राम–गया राम' पर टिप्पणी कीजिए। *(RBSE-2025)*

उत्तर :
- यह जुमला हरियाणा के विधायक गया लाल से जुड़ा था।

- उन्होंने एक पखवाड़े में तीन बार पार्टी बदली।
- वे कांग्रेस और यूनाइटेड फ्रंट के बीच बार–बार दल बदलते रहे।
- इसी राजनीतिक निष्ठा–परिवर्तन से 'आया राम–गया राम' प्रसिद्ध हुआ।

4. 1967 से पहले देश की आर्थिक स्थिति विकट होने के प्रमुख कारण बताइए।

उत्तर :
- मानसून की असफलता और व्यापक सूखा पड़ा।
- खेती की पैदावार में गिरावट तथा गंभीर खाद्य संकट उत्पन्न हुआ।
- विदेशी मुद्रा–भंडार, औद्योगिक उत्पादन और निर्यात में गिरावट आई।
- सैन्य खर्च में भारी बढ़ोतरी से विकास के संसाधन प्रभावित हुए।

5. आर्थिक संकट के कारण जनता में किस प्रकार का विरोध पैदा हुआ?

उत्तर :
- आवश्यक वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि हुई।
- खाद्यान्न की कमी और बेरोजगारी बढ़ी।
- देश में अक्सर बंद और हड़ताल होने लगे।
- सरकार के रवैये से जन–नाराजगी और विरोध अधिक उग्र हुआ।

6. 1967 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस की स्थिति बताइए।

उत्तर :
- कांग्रेस को लोकसभा में किसी तरह बहुमत मिल गया।
- उसके मत–प्रतिशत में भारी गिरावट आई।
- उसकी सीटों की संख्या भी काफी कम हुई।
- इंदिरा गाँधी के मंत्रिमंडल के लगभग आधे मंत्री चुनाव हार गए।

7. 1967 में राज्यों की राजनीति में आए बदलाव बताइए।

उत्तर :
- कांग्रेस को सात राज्यों में बहुमत नहीं मिला।
- दो अन्य राज्यों में दल–बदल के कारण वह सरकार नहीं बना सकी।
- कुल नौ राज्यों में कांग्रेस के हाथ से सत्ता निकल गई।
- मद्रास में डीएमके ने पूर्ण बहुमत प्राप्त किया।

8. 1967 के बाद बनी गठबंधन सरकारों की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर :
- किसी एक दल को बहुमत न मिलने से कई दल एकजुट हुए।
- उन्होंने संयुक्त विधायक दल बनाए।
- गठबंधन में वैचारिक रूप से अलग–अलग दल शामिल थे।
- बिहार और पंजाब में ऐसे विविध दलों की गठबंधन सरकारें बनीं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. कांग्रेस ने 1967 का आम चुनाव किन परिस्थितियों में लड़ा और क्या जनादेश मिला? *(RBSE-2022)*

उत्तर :
- दो प्रधानमंत्रियों की जल्दी–जल्दी मृत्यु से नेतृत्व परिवर्तन हुआ था।
- देश गंभीर आर्थिक संकट, सूखे और खाद्यान्न की कमी से जूझ रहा था।
- कीमतों में वृद्धि और बेरोजगारी के कारण व्यापक जन–असंतोष था।
- विपक्षी दलों ने गैर–कांग्रेसवाद के आधार पर एकजुटता बढ़ाई।
- कांग्रेस लोकसभा में बहुमत में रही, लेकिन उसके मत और सीटें घट गईं।
- अनेक राज्यों में कांग्रेस सत्ता से बाहर हो गई और उसका राजनीतिक प्रभुत्व कमजोर हुआ।

2. 1967 के चुनावों के राष्ट्रीय स्तर के परिणामों का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- फरवरी 1967 में लोकसभा और विधानसभाओं के लिए चौथे आम चुनाव हुए।
- कांग्रेस पहली बार नेहरू के बिना मतदाताओं के सामने थी।
- कांग्रेस को लोकसभा में बहुमत मिला, पर उसका मत–प्रतिशत घटा।
- उसकी सीटों की संख्या में भी भारी कमी आई।
- मंत्रिमंडल के आधे मंत्री और कई प्रमुख कांग्रेसी नेता हार गए।
- इसलिए चुनाव परिणामों को तत्कालीन पर्यवेक्षकों ने 'राजनीतिक भूकंप' कहा।

3. 1967 के बाद राज्यों में कांग्रेस की स्थिति में क्या बदलाव आया?

उत्तर :
- कांग्रेस को सात राज्यों में स्पष्ट बहुमत नहीं मिला।
- दो अन्य राज्यों में दल–बदल के कारण वह सरकार नहीं बना सकी।
- कुल नौ राज्यों में कांग्रेस सत्ता से बाहर हुई।
- मद्रास में डीएमके ने पूर्ण बहुमत प्राप्त कर सरकार बनाई।
- अन्य आठ राज्यों में विभिन्न गैर–कांग्रेसी दलों की गठबंधन सरकारें बनीं।
- इससे कांग्रेस के लंबे समय से चले आ रहे राजनीतिक दबदबे को चुनौती मिली।

4. 1967 के बाद गठबंधन की परिघटना का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- कई राज्यों में किसी एक दल को बहुमत नहीं मिला।

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

- गैर–कांग्रेसी पार्टियों ने मिलकर संयुक्त विधायक दल बनाया।
- इन दलों की विचारधाराएँ अक्सर एक–दूसरे से भिन्न थीं।
- बिहार की सरकार में समाजवादी, वामपंथी तथा जनसंघ तक शामिल था।
- पंजाब की सरकार को पॉपुलर यूनाइटेड फ्रंट कहा गया।
- इस प्रकार 1967 के चुनावों ने भारतीय राजनीति में गठबंधन राजनीति को प्रमुख बनाया।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. 1967 के चौथे आम चुनाव को भारतीय राजनीति का महत्वपूर्ण पड़ाव क्यों माना जाता है?

उत्तर :
- 1952 से चले आ रहे कांग्रेस के राजनीतिक दबदबे में बड़ा बदलाव आया।
- देश आर्थिक संकट, महँगाई और खाद्य संकट से गुजर रहा था।
- विपक्षी दल गैर–कांग्रेसवाद के आधार पर एकजुट हुए।
- कांग्रेस का मत–प्रतिशत और सीटों की संख्या तेजी से घटी।
- कई प्रमुख कांग्रेसी नेता और मंत्री चुनाव हार गए।
- नौ राज्यों में कांग्रेस सत्ता से बाहर हुई।
- कई राज्यों में गठबंधन सरकारें बनीं और दल–बदल बढ़ा।
- इन परिवर्तनों ने सिद्ध किया कि कांग्रेस को भी चुनावों में हराया जा सकता है।

2. 1967 के चुनावों से पहले आर्थिक संकट और जन–असंतोष की स्थिति का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- मानसून की असफलता से व्यापक सूखा पड़ा।
- खेती की पैदावार में गिरावट हुई।
- देश में गंभीर खाद्यान्न संकट पैदा हुआ।
- विदेशी मुद्रा–भंडार, औद्योगिक उत्पादन और निर्यात में कमी आई।
- सैन्य खर्च में भारी वृद्धि हुई और विकास के संसाधन सैन्य मद में लगाए गए।
- रुपये का अवमूल्यन किया गया और एक डॉलर की कीमत 5 से 7 रुपये हो गई।
- महँगाई, बेरोजगारी और आवश्यक वस्तुओं की कमी से बंद और हड़तालें हुईं।
- सरकार द्वारा इसे कानून–व्यवस्था की समस्या मानने से जन–विरोध और उग्र हुआ।

कांग्रेस में विभाजन

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. कांग्रेस 'सिंडिकेट' के प्रमुख अगुवा कौन थे?
(अ) के. कामराज
(ब) वी.वी. गिरि
(स) राममनोहर लोहिया
(द) मोरारजी देसाई **(अ)**

2. 1968–71 के दौरान कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष कौन थे?
(अ) एस. निजलिंगप्पा (ब) अतुल्य घोष
(स) एस.के. पाटिल (द) एन. संजीव रेड्डी **(अ)**

3. विभाजन के बाद सिंडिकेट से जुड़े कांग्रेसी किस दल में रहे?
(अ) कांग्रेस (आर) (ब) कांग्रेस (ओ)
(स) डीएमके (द) सीपीआई **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. कांग्रेस के प्रभावशाली संगठनात्मक नेताओं के समूह को ..... कहा जाता था।

उत्तर : सिंडिकेट

2. इंदिरा गाँधी की अगुवाई वाले खेमे को कांग्रेस ..... कहा गया।

उत्तर : (रिक्विजिशनिस्ट) / (आर)

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. सिंडिकेट के किन्हीं दो नेताओं के नाम लिखिए। *(RBSE-2026)*

उत्तर : के. कामराज और एस. निजलिंगप्पा।

2. 'सिंडिकेट' क्या था?

उत्तर : कांग्रेस के भीतर ताकतवर और प्रभावशाली नेताओं का समूह।

3. इंदिरा गाँधी के सामने पार्टी के भीतर मुख्य चुनौती क्या थी?

उत्तर : सिंडिकेट के प्रभाव से स्वतंत्र अपना मुकाम बनाना।

4. दस–सूत्री कार्यक्रम का कोई एक प्रावधान लिखिए।

उत्तर : बैंकों पर सामाजिक नियंत्रण।

5. इंदिरा गाँधी ने सत्ता–संघर्ष को किस रूप में प्रस्तुत किया?

उत्तर : एक विचारधारात्मक संघर्ष के रूप में।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. प्रिवी पर्स से क्या अभिप्राय है? *(RBSE-2022, RBSE-2025)*

उत्तर :
- रियासतों के विलय से पहले शासक परिवारों को कुछ निजी संपदा रखने का अधिकार दिया गया।

पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें

- सरकार की ओर से उन्हें कुछ विशेष भत्ते भी दिए जाते थे।
- इनका निर्धारण राज्य के विस्तार, राजस्व और क्षमता के आधार पर होता था।
- इसी व्यवस्था को 'प्रिवी पर्स' कहा गया।

2. सिंडिकेट से क्या समझते हैं? *(Model Paper-2025)*

उत्तर :
- यह कांग्रेस के भीतर ताकतवर और प्रभावशाली नेताओं का समूह था।
- पार्टी संगठन पर इस समूह का बड़ा नियंत्रण था।
- इसके प्रमुख अगुवा के. कामराज थे।
- शास्त्री और इंदिरा गाँधी को प्रधानमंत्री बनाने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका थी।

3. इंदिरा गाँधी और सिंडिकेट के बीच संबंधों में तनाव कैसे बढ़ा?

उत्तर :
- सिंडिकेट ने इंदिरा गाँधी को प्रधानमंत्री बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।
- उसे उम्मीद थी कि इंदिरा गाँधी उसकी सलाहों पर अमल करेंगी।
- इंदिरा गाँधी ने सरकार और पार्टी में अपना स्वतंत्र मुकाम बनाना शुरू किया।
- उन्होंने धीरे–धीरे सिंडिकेट को हाशिए पर ला खड़ा किया।

4. दस–सूत्री कार्यक्रम की प्रमुख बातें बताइए।

उत्तर :
- बैंकों पर सामाजिक नियंत्रण का प्रस्ताव था।
- आम बीमा के राष्ट्रीयकरण की बात थी।
- शहरी संपदा और आय के परिसीमन पर जोर था।
- खाद्यान्न के सरकारी वितरण, भूमि सुधार और ग्रामीण गरीबों के लिए आवासीय भूखंड का प्रावधान था।

5. इंदिरा गाँधी ने सिंडिकेट के विरुद्ध अपनी राजनीतिक रणनीति किस प्रकार बदली?

उत्तर :
- उन्होंने साधारण सत्ता–संघर्ष को विचारधारात्मक संघर्ष में बदला।
- सरकार की नीतियों को वामपंथी रंग देने का प्रयास किया।
- कांग्रेस कार्यसमिति से दस–सूत्री कार्यक्रम अपनवाया।
- इससे उन्होंने अपनी अलग राजनीतिक और नेतृत्वकारी पहचान मजबूत की।

6. कांग्रेस के विभाजन के बाद दोनों खेमों की पहचान किस प्रकार बनी?

उत्तर :
- सिंडिकेट की अगुवाई वाले खेमे को कांग्रेस (ऑर्गनाइजेशन) कहा गया।
- इसका संक्षिप्त नाम कांग्रेस (ओ) था।
- इंदिरा गाँधी के खेमे को कांग्रेस (रिक्विजिशनिस्ट) कहा गया।
- इन दोनों को क्रमशः 'पुरानी कांग्रेस' और 'नयी कांग्रेस' भी कहा गया।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. कांग्रेस 'सिंडिकेट' की संरचना और भूमिका का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- 'सिंडिकेट' कांग्रेस के प्रभावशाली और ताकतवर संगठनात्मक नेताओं का समूह था।
- इसके प्रमुख अगुवा के. कामराज थे।
- इसमें एस.के. पाटिल, एस. निजलिंगप्पा, एन. संजीव रेड्डी और अतुल्य घोष जैसे नेता थे।
- पार्टी संगठन पर इस समूह का प्रभावी नियंत्रण था।
- शास्त्री और इंदिरा गाँधी को प्रधानमंत्री बनाने में इसने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- कांग्रेस के विभाजन के बाद इसके नेता कांग्रेस (ओ) में रहे और बाद में उनका प्रभाव घट गया।

2. इंदिरा गाँधी ने सिंडिकेट का मुकाबला करने के लिए कौन–सी रणनीति अपनाई?

उत्तर :
- उन्होंने पार्टी के भीतर अपना स्वतंत्र राजनीतिक मुकाम बनाना शुरू किया।
- अपने सलाहकारों और विश्वस्तों में पार्टी से बाहर के लोगों को भी स्थान दिया।
- उन्होंने सिंडिकेट को धीरे–धीरे हाशिए पर किया।
- सत्ता–संघर्ष को उन्होंने विचारधारात्मक संघर्ष का रूप दिया।
- सरकार की नीतियों को वामपंथी रंग देने के कदम उठाए।
- दस–सूत्री कार्यक्रम के माध्यम से सामाजिक नियंत्रण, राष्ट्रीयकरण और भूमि सुधार जैसे मुद्दे सामने रखे।

3. कांग्रेस के विभाजन की पृष्ठभूमि स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- 1967 के बाद कांग्रेस केंद्र में सत्ता में रही, पर उसका बहुमत घट गया।
- इंदिरा गाँधी और पार्टी के प्रभावशाली सिंडिकेट के बीच संघर्ष बढ़ा।

पढ़ें सब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

- इंदिरा गाँधी ने स्वतंत्र नेतृत्व और वामपंथी नीतियों की ओर कदम बढ़ाए।
- बैंक राष्ट्रीयकरण और प्रिवी पर्स जैसे मुद्दों पर मतभेद बढ़े।
- राष्ट्रपति चुनाव में सिंडिकेट और इंदिरा गाँधी अलग–अलग उम्मीदवारों के पक्ष में आ गए।
- आधिकारिक उम्मीदवार की हार के बाद कांग्रेस कांग्रेस (ओ) और कांग्रेस (आर) में विभाजित हो गई।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. इंदिरा गाँधी और सिंडिकेट के संघर्ष का विस्तार से वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- सिंडिकेट कांग्रेस के संगठन पर प्रभाव रखने वाला शक्तिशाली समूह था।
- इसी समूह ने इंदिरा गाँधी को प्रधानमंत्री बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- सिंडिकेट को उम्मीद थी कि इंदिरा गाँधी उसकी सलाह पर निर्भर रहेंगी।
- इंदिरा गाँधी ने धीरे–धीरे अपना स्वतंत्र नेतृत्व स्थापित करना शुरू किया।
- उन्होंने पार्टी से बाहर के लोगों को भी अपने सलाहकार समूह में रखा।
- 1967 में कांग्रेस की खोई जमीन वापस पाना उनकी दूसरी बड़ी चुनौती थी।
- उन्होंने दस–सूत्री कार्यक्रम और वामपंथी नीतियों से संघर्ष को विचारधारात्मक स्वरूप दिया।
- अंततः यह संघर्ष 1969 में कांग्रेस के विभाजन तक पहुँच गया।

2. कांग्रेस के विभाजन में विचारधारात्मक और संगठनात्मक संघर्ष की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- कांग्रेस में इंदिरा गाँधी और सिंडिकेट के बीच संगठनात्मक सत्ता–संघर्ष था।
- सिंडिकेट पार्टी संगठन पर अपना पुराना नियंत्रण बनाए रखना चाहता था।
- इंदिरा गाँधी अपना स्वतंत्र राजनीतिक मुकाम बनाना चाहती थीं।
- उन्होंने संघर्ष को केवल नेतृत्व का प्रश्न न रखकर विचारधारात्मक लड़ाई बनाया।
- दस–सूत्री कार्यक्रम द्वारा नीतियों को वामपंथी दिशा देने का प्रयास हुआ।
- बैंक राष्ट्रीयकरण और प्रिवी पर्स जैसे मुद्दों पर मतभेद सामने आए।
- 1969 का राष्ट्रपति चुनाव दोनों गुटों के बीच खुली शक्ति–परीक्षा बन गया।
- इसके परिणामस्वरूप कांग्रेस दो अलग खेमोंकृकांग्रेस (ओ) और कांग्रेस (आर) में बँट गई।

3. कांग्रेस के विभाजन के बाद बने दोनों खेमों की स्थिति का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- सिंडिकेट की अगुवाई वाला खेमा कांग्रेस (ऑर्गनाइजेशन) कहलाया।
- इसका संक्षिप्त नाम कांग्रेस (ओ) था।
- इंदिरा गाँधी के नेतृत्व वाला खेमा कांग्रेस (रिक्विजिशनिस्ट) कहलाया।
- इसका संक्षिप्त नाम कांग्रेस (आर) था।
- दोनों को क्रमशः पुरानी कांग्रेस और नयी कांग्रेस भी कहा गया।
- सिंडिकेट के प्रमुख नेता कांग्रेस (ओ) में बने रहे।
- कांग्रेस (आर) ने बाद में लोकप्रियता की कसौटी पर सफलता प्राप्त की।
- 1971 के बाद सिंडिकेट के बड़े नेताओं का राजनीतिक प्रभाव कम हो गया।

राष्ट्रपति पद का चुनाव, 1969

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. 1969 में राष्ट्रपति का पद किसकी मृत्यु से खाली हुआ?
(अ) जाकिर हुसैन
(ब) वी.वी. गिरि
(स) एन. संजीव रेड्डी
(द) एस. निजलिंगप्पा **(अ)**

2. सिंडिकेट ने राष्ट्रपति पद के लिए कांग्रेस का आधिकारिक उम्मीदवार किसे बनाया?
(अ) वी.वी. गिरि (ब) एन. संजीव रेड्डी
(स) मोरारजी देसाई (द) के. कामराज **(ब)**

3. स्वतंत्र उम्मीदवार के रूप में राष्ट्रपति पद का चुनाव किसने लड़ा?
(अ) एन. संजीव रेड्डी (ब) वी.वी. गिरि
(स) एस. निजलिंगप्पा (द) अतुल्य घोष **(ब)**

4. कांग्रेस सांसदों और विधायकों के लिए 'व्हिप' किसने जारी किया?
(अ) के. कामराज (ब) मोरारजी देसाई
(स) एस. निजलिंगप्पा (द) इंदिरा गाँधी **(स)**

5. 1969 के राष्ट्रपति चुनाव में कौन विजयी हुआ?
(अ) एन. संजीव रेड्डी (ब) वी.वी. गिरि
(स) मोरारजी देसाई (द) एस.के. पाटिल **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. नवंबर 1969 तक दोनों खेमे कांग्रेस (ओ) और कांग्रेस ..... कहलाने लगे।

उत्तर : (आर)

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. 'अंतरात्मा की आवाज पर वोट' देने का क्या अर्थ था?

उत्तर : कांग्रेस सांसद और विधायक अपनी मनमर्जी से किसी भी उम्मीदवार को वोट दे सकते थे।

2. मोरारजी देसाई ने सरकार से किनारा क्यों किया?

उत्तर : बैंक राष्ट्रीयकरण और प्रिवी पर्स के मुद्दों पर प्रधानमंत्री से मतभेद के कारण।

3. इंदिरा गाँधी ने छुपे तौर पर किस उम्मीदवार का समर्थन किया?

उत्तर : वी.वी. गिरि का।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. 1969 के राष्ट्रपति चुनाव ने कांग्रेस की गुटबाजी को कैसे उजागर किया?

उत्तर :
- सिंडिकेट ने एन. संजीव रेड्डी को आधिकारिक उम्मीदवार बनाया।
- इंदिरा गाँधी इस निर्णय से सहमत नहीं थीं।
- उन्होंने वी.वी. गिरि को स्वतंत्र उम्मीदवार बनने के लिए प्रोत्साहित किया।
- इस चुनाव में दोनों गुटों के बीच संघर्ष खुलकर सामने आ गया।

2. राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार को लेकर इंदिरा गाँधी और सिंडिकेट में क्या मतभेद था?

उत्तर :
- सिंडिकेट ने एन. संजीव रेड्डी को कांग्रेस का आधिकारिक उम्मीदवार बनाया।
- यह फैसला इंदिरा गाँधी की असहमति के बावजूद हुआ।
- इंदिरा गाँधी ने वी.वी. गिरि को स्वतंत्र रूप से नामांकन करने को बढ़ावा दिया।
- इस प्रकार चुनाव नेतृत्व के दोनों गुटों की शक्ति–परीक्षा बन गया।

3. मोरारजी देसाई और इंदिरा गाँधी में किन मुद्दों पर मतभेद उभरे?

उत्तर :
- इंदिरा गाँधी ने चौदह अग्रणी बैंकों के राष्ट्रीयकरण की घोषणा की।
- उन्होंने प्रिवी पर्स की समाप्ति का समर्थन किया।
- मोरारजी देसाई इन मुद्दों पर प्रधानमंत्री से असहमत थे।
- गहरे मतभेदों के कारण मोरारजी देसाई ने सरकार से किनारा कर लिया।

4. राष्ट्रपति चुनाव के परिणाम ने कांग्रेस के विभाजन को कैसे जन्म दिया?

उत्तर :
- स्वतंत्र उम्मीदवार वी.वी. गिरि राष्ट्रपति चुनाव जीत गए।
- कांग्रेस के आधिकारिक उम्मीदवार एन. संजीव रेड्डी हार गए।
- कांग्रेस अध्यक्ष ने इंदिरा गाँधी को पार्टी से निष्कासित कर दिया।
- इसके बाद पार्टी कांग्रेस (ओ) और कांग्रेस (आर) में बँट गई।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. 1969 के राष्ट्रपति चुनाव की प्रमुख घटनाओं का क्रमबद्ध वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- राष्ट्रपति जाकिर हुसैन की मृत्यु से राष्ट्रपति पद खाली हुआ।
- सिंडिकेट ने एन. संजीव रेड्डी को कांग्रेस का आधिकारिक उम्मीदवार बनाया।
- इंदिरा गाँधी ने वी.वी. गिरि को स्वतंत्र उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ने को बढ़ावा दिया।
- निजलिंगप्पा ने रेड्डी के पक्ष में कांग्रेसी सांसदों और विधायकों को व्हिप जारी किया।
- इंदिरा गाँधी ने सदस्यों से अंतरात्मा की आवाज पर वोट देने को कहा।
- अंततः वी.वी. गिरि विजयी हुए और कांग्रेस का आंतरिक संघर्ष विभाजन में बदल गया।

2. राष्ट्रपति चुनाव में इंदिरा गाँधी की रणनीति स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- इंदिरा गाँधी ने सिंडिकेट के आधिकारिक उम्मीदवार से असहमति व्यक्त की।
- उन्होंने उपराष्ट्रपति वी.वी. गिरि को स्वतंत्र उम्मीदवार के रूप में प्रोत्साहित किया।
- अपने समर्थकों के माध्यम से अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की विशेष बैठक की माँग करवाई।
- माँग अस्वीकार होने पर उन्होंने खुलकर अंतरात्मा की आवाज पर वोट देने की अपील की।
- इससे पार्टी के सदस्यों को व्हिप से अलग अपनी पसंद का उम्मीदवार चुनने का संकेत मिला।
- वी.वी. गिरि की जीत ने इंदिरा गाँधी की राजनीतिक स्थिति को मजबूत किया।

3. 1969 का राष्ट्रपति चुनाव कांग्रेस के विभाजन का कारण कैसे बना?

पढ़ना चाहें, जहाँ चाहें जैसे चाहें!

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

उत्तर :
- इंदिरा गाँधी और सिंडिकेट के बीच पहले से राजनीतिक संघर्ष था।
- राष्ट्रपति उम्मीदवार के चयन पर यह संघर्ष खुलकर सामने आया।
- सिंडिकेट ने रेड्डी और इंदिरा गाँधी ने वी.वी. गिरि का समर्थन किया।
- व्हिप और अंतरात्मा की आवाज की अपील ने पार्टी में दो स्पष्ट खेमे बना दिए।
- वी.वी. गिरि की जीत से कांग्रेस का आधिकारिक उम्मीदवार पराजित हुआ।
- इसके बाद निष्कासन और अलग खेमों के निर्माण से कांग्रेस का औपचारिक विभाजन हो गया।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. 1969 का राष्ट्रपति चुनाव इंदिरा गाँधी और सिंडिकेट के संघर्ष का निर्णायक मोड़ कैसे बना?

उत्तर :
- सिंडिकेट और इंदिरा गाँधी के बीच पहले से नेतृत्व–संघर्ष चल रहा था।
- राष्ट्रपति जाकिर हुसैन की मृत्यु से नया राष्ट्रपति चुनने का अवसर आया।
- सिंडिकेट ने इंदिरा गाँधी की असहमति के बावजूद एन. संजीव रेड्डी को उम्मीदवार बनाया।
- इंदिरा गाँधी ने वी.वी. गिरि को स्वतंत्र उम्मीदवार बनने के लिए प्रोत्साहित किया।
- कांग्रेस अध्यक्ष ने रेड्डी के लिए व्हिप जारी किया।
- इंदिरा गाँधी ने इसके विपरीत अंतरात्मा की आवाज पर वोट देने को कहा।
- वी.वी. गिरि की जीत से सिंडिकेट के आधिकारिक उम्मीदवार की हार हुई।
- इसके बाद संघर्ष कांग्रेस के औपचारिक विभाजन में बदल गया।

1971 का चुनाव और कांग्रेस का पुनर्स्थापन

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. 'गरीबी हटाओ' का नारा किसने दिया? *(RBSE-2022, Model Paper-2024)*

(अ) जवाहरलाल नेहरू
(ब) लाल बहादुर शास्त्री
(स) इंदिरा गाँधी
(द) मोरारजी देसाई **(स)**

2. 1971 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस (आर) को कितनी सीटें मिलीं? *(RBSE-2023)*

(अ) 352 (ब) 258
(स) 345 (द) 313 **(अ)**

3. 1971 में बड़ी गैर–साम्यवादी और गैर–कांग्रेसी पार्टियों के गठबंधन को क्या कहा गया?

(अ) संयुक्त विधायक दल
(ब) ग्रैंड अलायंस
(स) कांग्रेस (आर)
(द) पॉपुलर यूनाइटेड फ्रंट **(ब)**

4. कांग्रेस (आर) ने 1971 के चुनाव में किस दल के साथ गठजोड़ किया?

(अ) सीपीआई (ब) जनसंघ
(स) स्वतंत्र पार्टी (द) पीएसपी **(अ)**

रिक्तस्थान –

1. इंदिरा गाँधी की सरकार ने दिसंबर 1970 में .....भंग करने की सिफारिश की।
उत्तर : लोकसभा

2. विपक्षी चुनावी गठबंधन को ..... कहा गया।
उत्तर : ग्रैंड अलायंस

3. विपक्षी गठबंधन का प्रमुख चुनावी संदेश .....था।
उत्तर : 'इंदिरा हटाओ'

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. अल्पमत सरकार को किन दलों से मुद्दा–आधारित समर्थन मिला?

उत्तर : डीएमके और भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी समेत कुछ अन्य दलों से।

2. 'गरीबी हटाओ' के माध्यम से इंदिरा गाँधी किन वर्गों में समर्थन बढ़ाना चाहती थीं?

उत्तर : भूमिहीन किसान, दलित, आदिवासी, अल्पसंख्यक, महिला और बेरोजगार नौजवानों में।

3. 1971 में विपक्ष और इंदिरा गाँधी के मुख्य चुनावी नारों में क्या अंतर था?

उत्तर : विपक्ष का संदेश 'इंदिरा हटाओ', जबकि इंदिरा गाँधी का कार्यक्रम 'गरीबी हटाओ' था।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. कांग्रेस (आर) की अल्पमत सरकार सत्ता में कैसे बनी रही?

उत्तर :
- कांग्रेस के विभाजन के बाद सरकार अल्पमत में आ गई थी।
- उसे डीएमके का मुद्दा–आधारित समर्थन मिला।
- भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी सहित अन्य दलों का भी समर्थन मिला।
- इस समर्थन के आधार पर इंदिरा गाँधी की सरकार सत्ता में बनी रही।

पढ़ें जहाँ चाहे, जैसे चाहे!

2. 'ग्रैंड अलायंस' में कौन–कौन से प्रमुख दल शामिल थे?

उत्तर :
- संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी (एसएसपी) इसमें शामिल थी।
- प्रजा सोशलिस्ट पार्टी (पीएसपी) इसका हिस्सा थी।
- भारतीय जनसंघ और स्वतंत्र पार्टी इसमें शामिल थे।
- भारतीय क्रांतिदल (बीकेडी) भी इस गठबंधन का हिस्सा था।

3. 'गरीबी हटाओ' कार्यक्रम की प्रमुख बातें बताइए।

उत्तर :
- सार्वजनिक क्षेत्र की संवृद्धि पर जोर दिया गया।
- ग्रामीण भू–स्वामित्व और शहरी संपदा के परिसीमन की बात थी।
- आय और अवसरों की असमानता समाप्त करने पर जोर था।
- प्रिवी पर्स की समाप्ति को चुनावी कार्यक्रम में प्रमुख स्थान मिला।

4. 1971 के लोकसभा चुनावों के मुख्य परिणाम बताइए।

उत्तर :
- कांग्रेस (आर)–सीपीआई गठबंधन ने 375 सीटें जीतीं।
- गठबंधन को कुल 48.4 प्रतिशत वोट मिले।
- अकेले कांग्रेस (आर) ने 352 सीटें और 44 प्रतिशत वोट पाए।
- कांग्रेस (ओ) को केवल 16 सीटें मिलीं और ग्रैंड अलायंस 60 से कम सीटों पर रहा।

5. पुनर्स्थापित कांग्रेस की प्रकृति पुरानी कांग्रेस से किस प्रकार भिन्न थी?

उत्तर :
- नयी कांग्रेस सर्वोच्च नेता की लोकप्रियता पर अधिक आश्रित थी।
- उसका सांगठनिक ढाँचा अपेक्षाकृत कमजोर था।
- पार्टी के भीतर पहले जैसी विविध गुटीय संरचना नहीं थी।
- वह गरीब, महिला, दलित, आदिवासी और अल्पसंख्यकों जैसे कुछ सामाजिक वर्गों पर अधिक निर्भर थी।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. 1971 का चुनाव कांग्रेस की पुनर्स्थापना का चुनाव कैसे बना? *(RBSE-2022)*

उत्तर :
- कांग्रेस के विभाजन के बाद इंदिरा गाँधी की सरकार अल्पमत में थी।
- उन्होंने 'गरीबी हटाओ' के माध्यम से सकारात्मक कार्यक्रम प्रस्तुत किया।
- विपक्षी ग्रैंड अलायंस का प्रमुख कार्यक्रम 'इंदिरा हटाओ' था।
- कांग्रेस ने अकेले 352 सीटें और 44 प्रतिशत वोट प्राप्त किए।
- कांग्रेस (आर)–सीपीआई गठबंधन ने 375 सीटें हासिल कीं।
- इस जीत से कांग्रेस (आर) ने 'असली कांग्रेस' होने का दावा सिद्ध कर भारतीय राजनीति में अपना प्रभुत्व पुनर्स्थापित किया।

2. 1971 के चुनाव में कांग्रेस (आर) और ग्रैंड अलायंस की चुनावी रणनीतियों की तुलना कीजिए।

उत्तर :
- ग्रैंड अलायंस में बड़ी गैर–साम्यवादी और गैर–कांग्रेसी विपक्षी पार्टियाँ शामिल थीं।
- उसका साझा चुनावी संदेश मुख्यतः 'इंदिरा हटाओ' था।
- ग्रैंड अलायंस के पास सुसंगत राजनीतिक कार्यक्रम का अभाव था।
- कांग्रेस (आर) ने 'गरीबी हटाओ' को सकारात्मक कार्यक्रम के रूप में पेश किया।
- उसने सार्वजनिक क्षेत्र, असमानता की समाप्ति और प्रिवी पर्स जैसे मुद्दे उठाए।
- इससे कांग्रेस (आर) ने वंचित वर्गों के बीच व्यापक राजनीतिक समर्थन जुटाने का प्रयास किया।

3. 1971 के बाद पुनर्स्थापित कांग्रेस प्रणाली की प्रकृति स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- कांग्रेस को शुरुआती दौर जैसी लोकप्रियता फिर प्राप्त हुई।
- लेकिन यह पुरानी कांग्रेस से अलग प्रकार की नयी कांग्रेस थी।
- पार्टी सर्वोच्च नेता की लोकप्रियता पर निर्भर थी।
- उसका सांगठनिक ढाँचा अपेक्षाकृत कमजोर हो गया था।
- पार्टी में पहले की तरह अनेक गुट और विविध हितों का समाहार नहीं था।
- इंदिरा गाँधी ने कांग्रेस प्रणाली का पुनर्स्थापन किया, लेकिन उसकी प्रकृति बदल गई।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. 'गरीबी हटाओ' को इंदिरा गाँधी की राजनीतिक रणनीति के रूप में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- कांग्रेस के विभाजन के बाद इंदिरा गाँधी को अपना अलग राजनीतिक आधार मजबूत करना था।

पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

- उन्होंने सरकार की छवि को सचेत रूप से समाजवादी रंग में प्रस्तुत किया।
- भूमि सुधार और भू–परिसीमन के कानूनों के क्रियान्वयन पर जोर दिया।
- चुनाव में विपक्ष के 'इंदिरा हटाओ' के मुकाबले 'गरीबी हटाओ' प्रस्तुत किया।
- इसमें सार्वजनिक क्षेत्र की संवृद्धि और संपदा के परिसीमन पर बल था।
- आय और अवसरों की असमानता समाप्त करने की बात की गई।
- भूमिहीन किसान, दलित, आदिवासी, अल्पसंख्यक, महिला और बेरोजगार युवाओं को समर्थन आधार बनाने का प्रयास हुआ।
- इस नारे के माध्यम से इंदिरा गाँधी ने देशव्यापी राजनीतिक समर्थन की बुनियाद तैयार करने की कोशिश की।

2. 1971 के चुनावों के बाद इंदिरा गाँधी और कांग्रेस के राजनीतिक प्रभुत्व के सुदृढ़ होने का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- 1971 में कांग्रेस (आर)–सीपीआई गठबंधन को भारी चुनावी जीत मिली।
- कांग्रेस (आर) ने 352 सीटें जीतकर अपने को 'असली कांग्रेस' सिद्ध किया।
- विपक्षी ग्रैंड अलायंस धराशायी हो गया।
- 1971 के बाद पूर्वी पाकिस्तान के संकट और युद्ध से इंदिरा गाँधी की लोकप्रियता बढ़ी।
- विपक्षी नेताओं ने भी उनके राज्यकौशल की प्रशंसा की।
- 1972 के राज्य विधानसभा चुनावों में कांग्रेस को व्यापक सफलता मिली।
- कांग्रेस लोकसभा और राज्यों – दोनों स्तरों पर फिर से प्रमुख शक्ति बन गई।
- इन लगातार जीतों से कांग्रेस का दबदबा पुनः कायम हुआ।

3. कांग्रेस प्रणाली के पुनर्स्थापन के बाद 'नयी कांग्रेस' की सामाजिक और सांगठनिक प्रकृति का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- नयी कांग्रेस को लोकप्रियता के लिहाज से शुरुआती कांग्रेस जैसा स्थान मिला।
- फिर भी वह पुरानी कांग्रेस से अलग किस्म की पार्टी थी।
- वह सर्वोच्च नेता की व्यक्तिगत लोकप्रियता पर अधिक निर्भर थी।
- उसका सांगठनिक ढाँचा अपेक्षाकृत कमजोर था।
- उसमें पहले की तरह अनेक गुट और विभिन्न मतों–हितों का समाहार नहीं था।
- चुनावी सफलता के लिए वह गरीब, महिला, दलित, आदिवासी और अल्पसंख्यकों पर अधिक निर्भर थी।
- पुरानी कांग्रेस की तनाव और संघर्ष को अपने भीतर समाहित करने की क्षमता कमजोर हो गई।
- इस प्रकार कांग्रेस प्रणाली पुनर्स्थापित हुई, लेकिन उसकी प्रकृति बदल चुकी थी।



6 लोकतांत्रिक व्यवस्था का संकट

आपातकाल की पृष्ठभूमि

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. 1974 में 'सम्पूर्ण क्रांति' का आह्वान किसने किया?
(RBSE-2023, RBSE-2025)

(अ) मोरारजी देसाई (ब) जयप्रकाश नारायण
(स) जॉर्ज फर्नांडिस (द) चारु मजूमदार **(ब)**

2. 1974 की रेल हड़ताल का नेतृत्व किसने किया?
(RBSE-2024)

(अ) राम मनोहर लोहिया
(ब) जयप्रकाश नारायण
(स) मोरारजी देसाई
(द) जॉर्ज फर्नांडिस **(द)**

3. 1975 के संसद–मार्च का नेतृत्व किसने किया?
(Model Paper-2026)

(अ) राम मनोहर लोहिया
(ब) जयप्रकाश नारायण
(स) जॉर्ज फर्नांडिस
(द) चौधरी चरण सिंह **(ब)**

4. गुजरात में छात्र आंदोलन किस माह में शुरू हुआ?
(अ) जनवरी 1974 (ब) मार्च 1974
(स) मई 1974 (द) जून 1975 **(अ)**

5. बिहार में छात्र आंदोलन किस माह में शुरू हुआ?
(अ) जनवरी 1974 (ब) मार्च 1974
(स) मई 1974 (द) जनवरी 1975 **(ब)**

6. 1973 में तीन वरिष्ठ न्यायाधीशों की अनदेखी कर किसे भारत का मुख्य न्यायाधीश नियुक्त किया गया?
(अ) न्यायमूर्ति जगमोहन लाल सिन्हा
(ब) न्यायमूर्ति ए.एन. रे
(स) राजनारायण
(द) जयप्रकाश नारायण **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. 1974 की रेलवे हड़ताल ..... के नेतृत्व में हुई।
(Model Paper-2026)

उत्तर : जॉर्ज फर्नांडिस

2. ..... मुकदमे में सर्वोच्च न्यायालय ने फैसला सुनाया था कि संविधान का एक बुनियादी ढाँचा है।
(Model Paper-2023)

उत्तर : केशवानंद भारती

3. 1972–73 में खाद्यान्न का उत्पादन ..... प्रतिशत कम हो गया था।

उत्तर : 8

4. गुजरात में छात्र आंदोलन के बाद ..... शासन लगा दिया गया।

उत्तर : राष्ट्रपति

5. कांग्रेस (ओ) के प्रमुख नेता ..... ने गुजरात में नए चुनाव की माँग को लेकर भूख–हड़ताल की चेतावनी दी।

उत्तर : मोरारजी देसाई

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. 1974 में चीज़ों की कीमतों में कितने प्रतिशत की वृद्धि हुई थी?

उत्तर : 30 प्रतिशत।

2. जयप्रकाश नारायण ने बिहार छात्र आंदोलन का नेतृत्व स्वीकार करते समय क्या प्रमुख शर्त रखी थी?

उत्तर : आंदोलन अहिंसक रहे और केवल बिहार तक सीमित न रहे।

3. गुजरात आंदोलन के दौरान किस नेता ने अनिश्चितकालीन भूख–हड़ताल की चेतावनी दी थी?

उत्तर : मोरारजी देसाई।

4. सरकार ने 1974 की रेल हड़ताल को किस प्रकार की हड़ताल घोषित किया?

उत्तर : अवैधानिक।

5. 1973 में भारत का मुख्य न्यायाधीश किसे नियुक्त किया गया था?

उत्तर : न्यायमूर्ति ए.एन. रे।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. गुजरात छात्र आंदोलन के दो कारण बताइए।
(RBSE-2024, RBSE-2025)

उत्तर :
- खाद्यान्न एवं खाद्य तेल सहित आवश्यक वस्तुओं की कीमतें बढ़ रही थीं।
- छात्रों में बढ़ती महँगाई को लेकर असंतोष था।
- उच्च पदों पर जारी भ्रष्टाचार आंदोलन का दूसरा प्रमुख कारण था।
- इन्हीं कारणों से जनवरी 1974 में गुजरात में छात्र आंदोलन शुरू हुआ।

फल चाहें, नहीं पेड़ लगाने पड़ें!

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

2. 1974 में बिहार के छात्रों ने आन्दोलन क्यों किया? संक्षेप लिखिए। *(Model Paper-2024, Model Paper-2026)*

उत्तर :
- आवश्यक वस्तुओं की बढ़ती कीमतों से असंतोष था।
- राज्य में खाद्यान्न का अभाव था।
- बेरोज़गारी एक महत्वपूर्ण समस्या बन चुकी थी।
- छात्रों ने भ्रष्टाचार के विरुद्ध भी आंदोलन किया।

3. 1971–72 के बाद देश की आर्थिक स्थिति में असंतोष बढ़ने के प्रमुख कारण बताइए।

उत्तर :
- बांग्लादेश संकट से भारतीय अर्थव्यवस्था पर भारी बोझ पड़ा।
- युद्ध के बाद अमेरिका ने भारत को सहायता देना बंद कर दिया।
- अंतर्राष्ट्रीय बाजार में तेल की कीमतें कई गुना बढ़ीं।
- महँगाई और बेरोज़गारी में तेज़ वृद्धि हुई।
- 1972–73 के असफल मानसून से कृषि उत्पादन में गिरावट आई।

4. गुजरात आंदोलन ने राज्य की राजनीति को किस प्रकार प्रभावित किया?

उत्तर :
- छात्र आंदोलन ने बड़ी राजनीतिक पार्टियों को भी अपने साथ जोड़ लिया।
- आंदोलन के विकराल होने पर गुजरात में राष्ट्रपति शासन लगाया गया।
- विपक्ष ने विधानसभा के नए चुनावों की माँग की।
- आंदोलन के दबाव में जून 1975 में विधानसभा चुनाव हुए।
- इन चुनावों में कांग्रेस हार गई।

5. बिहार छात्र आंदोलन ने राजनीतिक स्वरूप कैसे ग्रहण किया?

उत्तर :
- छात्रों ने आंदोलन के नेतृत्व के लिए जयप्रकाश नारायण को आमंत्रित किया।
- जेपी ने आंदोलन को अहिंसक रखने की शर्त रखी।
- उन्होंने आंदोलन को केवल बिहार तक सीमित न रखने की बात कही।
- जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के लोग आंदोलन से जुड़ते गए।
- जेपी ने 'सम्पूर्ण क्रांति' का आह्वान किया।

6. 1974 की रेल हड़ताल के दौरान सरकार ने क्या कदम उठाए?

उत्तर :
- सरकार ने रेल हड़ताल को अवैधानिक घोषित किया।
- कर्मचारियों की माँगें स्वीकार करने से इनकार किया गया।
- हड़ताल के कई नेताओं को गिरफ्तार किया गया।
- रेल लाइनों की सुरक्षा में सेना तैनात की गई।
- 20 दिन बाद हड़ताल बिना समझौते के वापस ले ली गई।

7. सरकार और न्यायपालिका के बीच तनाव के प्रमुख संवैधानिक मुद्दे क्या थे?

उत्तर :
- विवाद था कि संसद मौलिक अधिकारों में कटौती कर सकती है या नहीं।
- संपत्ति के अधिकार में संवैधानिक संशोधन द्वारा कटौती का प्रश्न उठा।
- नीति–निर्देशक सिद्धांतों के लिए मौलिक अधिकारों में कमी का मुद्दा उठा।
- सर्वोच्च न्यायालय ने संविधान के बुनियादी ढाँचे की अवधारणा दी।
- इससे सरकार और न्यायपालिका के संबंधों में तनाव बढ़ा।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. 1975 में आपातकाल से पहले हुए घटनाक्रम की विवेचना कीजिए। *(RBSE-2023)*

उत्तर :
- देश में महँगाई, बेरोज़गारी और आर्थिक संकट के कारण व्यापक असंतोष था।
- गुजरात में 1974 में छात्रों ने महँगाई और भ्रष्टाचार के विरुद्ध आंदोलन किया।
- बिहार में छात्रों ने खाद्यान्न अभाव, बेरोज़गारी और भ्रष्टाचार के खिलाफ आंदोलन किया।
- जयप्रकाश नारायण ने 'सम्पूर्ण क्रांति' का आह्वान किया।
- जॉर्ज फर्नांडिस के नेतृत्व में 1974 में राष्ट्रव्यापी रेल हड़ताल हुई।
- सरकार और न्यायपालिका के बीच संवैधानिक विवाद तेज़ हो गया।
- इलाहाबाद उच्च न्यायालय के फैसले और विपक्ष के सत्याग्रह ने राजनीतिक संकट को और गहरा कर दिया।

2. नक्सलवादी आंदोलन क्या था? *(Model Paper-2025)*

उत्तर :
- कुछ मार्क्सवादी समूह संसदीय राजनीति में विश्वास नहीं रखते थे।
- उनका लक्ष्य मौजूदा राजनीतिक प्रणाली को समाप्त करना था।
- वे पूँजीवादी व्यवस्था को भी खत्म करना चाहते थे।
- इसके लिए इन समूहों ने हथियार उठाए।
- उन्होंने राज्यविरोधी तकनीकों का सहारा लिया।
- ये समूह मार्क्सवादी–लेनिनवादी, माओवादी अथवा नक्सलवादी कहलाए।
- ये पश्चिम बंगाल में अधिक सक्रिय थे और सरकार ने इन्हें दबाने के लिए कठोर कदम उठाए।

पढ़ना वहीं, जहाँ चाहें जैसे चाहें!

3. 1971–74 के आर्थिक संकट की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- बांग्लादेश संकट के कारण लगभग 80 लाख लोग भारत आए, जिससे अर्थव्यवस्था पर बोझ बढ़ा।
- पाकिस्तान के साथ युद्ध के कारण आर्थिक दबाव बढ़ा।
- अमेरिका ने भारत को दी जाने वाली सहायता बंद कर दी।
- अंतर्राष्ट्रीय बाजार में तेल की कीमतों में कई गुना वृद्धि हुई।
- 1973 में कीमतें 23 प्रतिशत और 1974 में 30 प्रतिशत बढ़ीं।
- औद्योगिक विकास की दर कम और बेरोज़गारी बहुत अधिक थी।
- असफल मानसून से कृषि उत्पादन घटा और खाद्यान्न उत्पादन 8 प्रतिशत कम हुआ।

4. सरकार और न्यायपालिका के बीच संघर्ष का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- सर्वोच्च न्यायालय ने सरकार की कई पहलकदमियों को संविधान के विरुद्ध माना।
- संसद की मौलिक अधिकारों में कटौती की शक्ति विवाद का विषय बनी।
- संपत्ति के अधिकार में संशोधन को लेकर भी मतभेद हुआ।
- नीति–निर्देशक सिद्धांतों के लिए मौलिक अधिकारों में कमी के प्रावधान को न्यायालय ने निरस्त किया।
- केशवानंद भारती मामले में संविधान के बुनियादी ढाँचे का सिद्धांत सामने आया।
- तीन वरिष्ठ न्यायाधीशों की अनदेखी कर ए.एन. रे को मुख्य न्यायाधीश बनाया गया।
- अंततः एक उच्च न्यायालय द्वारा इंदिरा गांधी का निर्वाचन अवैध घोषित करने से संघर्ष चरम पर पहुँचा।

5. जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व वाले आंदोलन के राष्ट्रीय प्रभाव को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- बिहार के छात्रों ने आंदोलन का नेतृत्व करने के लिए जयप्रकाश नारायण को आमंत्रित किया।
- जेपी ने आंदोलन को अहिंसक और व्यापक बनाने की शर्त रखी।
- उन्होंने सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्रों में 'सम्पूर्ण क्रांति' का आह्वान किया।
- आंदोलन में जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के लोग शामिल हुए।
- बिहार सरकार के विरुद्ध घेराव, बंद और हड़तालें हुईं।
- आंदोलन को भारतीय जनसंघ, कांग्रेस (ओ), भारतीय लोकदल और सोशलिस्ट पार्टी का समर्थन मिला।
- 1975 में जेपी ने जनता के संसद–मार्च का नेतृत्व किया।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. 1974 के गुजरात और बिहार आंदोलनों की विवेचना कीजिए।

(RBSE-2026)

उत्तर :
- गुजरात में जनवरी 1974 में छात्र आंदोलन शुरू हुआ।
- इसका कारण आवश्यक वस्तुओं की बढ़ती कीमतें और भ्रष्टाचार था।
- आंदोलन में बड़ी राजनीतिक पार्टियाँ शामिल हुईं और गुजरात में राष्ट्रपति शासन लगा।
- जून 1975 में विधानसभा चुनाव हुए और कांग्रेस हार गई।
- बिहार में मार्च 1974 में छात्रों ने महँगाई, खाद्यान्न अभाव, बेरोज़गारी और भ्रष्टाचार के विरुद्ध आंदोलन किया।
- छात्रों ने जयप्रकाश नारायण को नेतृत्व के लिए आमंत्रित किया।
- जेपी ने आंदोलन को अहिंसक रखने और बिहार तक सीमित न रखने की शर्त रखी।
- उन्होंने सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्र में 'सम्पूर्ण क्रांति' का आह्वान किया।
- बिहार आंदोलन ने व्यापक राष्ट्रीय राजनीतिक प्रभाव पैदा किया।

2. आपातकाल की पृष्ठभूमि में आर्थिक संकट और जन–असंतोष की भूमिका का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर :
- 1971–72 के बाद भी देश की सामाजिक–आर्थिक दशा में खास सुधार नहीं हुआ।
- बांग्लादेश संकट और युद्ध ने अर्थव्यवस्था पर भारी बोझ डाला।
- अमेरिका द्वारा सहायता रोकने से आर्थिक कठिनाइयाँ और बढ़ीं।
- अंतर्राष्ट्रीय तेल कीमतों की वृद्धि ने देश में मूल्यवृद्धि को तेज़ किया।
- औद्योगिक विकास की दर कम रही और बेरोज़गारी बढ़ी।
- असफल मानसून से कृषि उत्पादन और खाद्यान्न उत्पादन में गिरावट आई।
- सरकारी कर्मचारियों के वेतन रोकने से उनमें असंतोष बढ़ा।

पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

- गुजरात और बिहार के छात्र आंदोलनों ने असंतोष को राजनीतिक स्वरूप दिया।
- गैर–कांग्रेसी दलों ने इस जन–असंतोष की प्रभावी अगुवाई की।

3. सरकार और न्यायपालिका के बीच बढ़ते संघर्ष की क्रमिक विवेचना कीजिए।

उत्तर :
- सर्वोच्च न्यायालय ने सरकार की कई पहलकदमियों को संविधान–विरुद्ध माना।
- कांग्रेस ने न्यायालय पर गरीबों के लिए कल्याणकारी कार्यक्रमों में बाधा डालने का आरोप लगाया।
- संसद की मौलिक अधिकारों को सीमित करने की शक्ति पर संवैधानिक विवाद हुआ।
- संपत्ति के अधिकार में संशोधन के प्रश्न पर भी सरकार और न्यायपालिका आमने–सामने आए।
- केशवानंद भारती मामले में सर्वोच्च न्यायालय ने संविधान के बुनियादी ढाँचे का सिद्धांत दिया।
- सरकार ने तीन वरिष्ठ न्यायाधीशों की अनदेखी कर ए.एन. रे को मुख्य न्यायाधीश बनाया।
- इसके बाद 'प्रतिबद्ध न्यायपालिका' और 'प्रतिबद्ध नौकरशाही' की चर्चा होने लगी।
- संविधान की व्याख्या और राजनीतिक विचारधारा का घालमेल बढ़ा।
- इलाहाबाद उच्च न्यायालय द्वारा इंदिरा गांधी का निर्वाचन अवैध घोषित करने पर यह संघर्ष चरमबिंदु पर पहुँचा।

4. जयप्रकाश नारायण की राजनीतिक यात्रा और आपातकाल–पूर्व भूमिका का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- युवावस्था में जयप्रकाश नारायण मार्क्सवादी विचारों से प्रभावित थे।
- वे कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी और सोशलिस्ट पार्टी के संस्थापक महासचिव रहे।
- वे 1942 के भारत–छोड़ो आंदोलन के नायक थे।
- 1955 के बाद उन्होंने सक्रिय राजनीति छोड़कर गांधीवादी गतिविधियों में भाग लिया।
- वे भूदान आंदोलन और विभिन्न शांति प्रयासों में सक्रिय रहे।
- बिहार छात्र आंदोलन के आग्रह पर उन्होंने फिर राजनीतिक आंदोलन में सक्रिय भूमिका स्वीकार की।
- उन्होंने सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्र में 'सम्पूर्ण क्रांति' का आह्वान किया।
- उनके नेतृत्व में आंदोलन को विभिन्न गैर–कांग्रेसी दलों का समर्थन मिला।
- बाद में वे आपातकाल के विरोध के प्रतीक और जनता पार्टी के गठन के प्रेरणास्रोत बने।

आपातकाल की घोषणा

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. भारत में आपातकाल की घोषणा कब हुई? *(RBSE-2025)*
(अ) 22 जून 1974 (ब) 26 जून 1973
(स) 21 जून 1972 (द) 25 जून 1975 **(द)**

2. 25 जून 1975 को आपातकाल की घोषणा किस राष्ट्रपति ने की? *(Model Paper-2026)*
(अ) फखरुद्दीन अली अहमद
(ब) वी. वी. गिरि
(स) नीलम संजीव रेड्डी
(द) जाकिर हुसैन **(अ)**

3. 12 जून 1975 को इंदिरा गाँधी का निर्वाचन किस न्यायालय ने अवैध घोषित किया? *(RBSE-2026)*
(अ) बॉम्बे उच्च न्यायालय
(ब) दिल्ली उच्च न्यायालय
(स) इलाहाबाद उच्च न्यायालय
(द) गुवाहाटी उच्च न्यायालय **(स)**

4. इंदिरा गांधी के निर्वाचन को चुनौती देने वाली चुनाव याचिका किसने दायर की थी?
(अ) जयप्रकाश नारायण
(ब) राजनारायण
(स) मोरारजी देसाई
(द) जॉर्ज फर्नांडिस **(ब)**

5. सर्वोच्च न्यायालय ने इलाहाबाद उच्च न्यायालय के फैसले पर आंशिक स्थगनादेश कब दिया?
(अ) 12 जून 1975 (ब) 24 जून 1975
(स) 25 जून 1975 (द) 26 जून 1975 **(ब)**

6. 25 जून 1975 को विपक्षी दलों का विशाल प्रदर्शन कहाँ हुआ था?
(अ) संसद (ब) रामलीला मैदान
(स) गुजरात (द) बिहार **(ब)**

7. आपातकाल लागू होने पर शक्तियों के बँटवारे का कौन–सा ढाँचा व्यावहारिक रूप से निष्प्रभावी हो जाता है?
(अ) न्यायिक ढाँचा (ब) दलीय ढाँचा
(स) संघीय ढाँचा (द) सामाजिक ढाँचा **(स)**

8. आपातकाल के दौरान समाचार प्रकाशित करने से पहले अनुमति लेने की व्यवस्था क्या कहलाती थी?
(अ) निवारक नज़रबंदी
(ब) प्रेस सेंसरशिप
(स) सत्याग्रह
(द) राष्ट्रपति शासन **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. ..... वें संविधान संशोधन द्वारा लोकसभा का कार्यकाल 5 से बढ़ाकर 6 वर्ष किया गया। *(RBSE-2025)*

उत्तर : 42वें

2. समाचार प्रकाशित करने से पहले सरकारी अनुमति लेने की व्यवस्था को ..... कहा गया।

उत्तर : प्रेस सेंसरशिप

3. अपराध करने की आशंका के आधार पर गिरफ्तारी की व्यवस्था को ..... कहा जाता है।

उत्तर : निवारक नज़रबंदी

4. अप्रैल 1976 में सर्वोच्च न्यायालय की ..... पीठ ने उच्च न्यायालयों के फैसले को उलट दिया।

उत्तर : संवैधानिक

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. आपातकाल संविधान के किस अनुच्छेद के अंतर्गत लागू किया गया? *(RBSE-2023)*

उत्तर : अनुच्छेद 352।

2. 12 जून 1975 का फैसला किस न्यायाधीश ने सुनाया था?

उत्तर : न्यायाधीश जगमोहन लाल सिन्हा।

3. 25 जून 1975 को जयप्रकाश नारायण ने किस आंदोलन की घोषणा की?

उत्तर : राष्ट्रव्यापी सत्याग्रह।

4. आपातकाल के दौरान किन दो संगठनों पर प्रतिबंध लगाया गया?

उत्तर : राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और जमात–ए–इस्लामी।

5. गिरफ्तार राजनीतिक कार्यकर्ता अपनी गिरफ्तारी को चुनौती देने के लिए किस याचिका का सहारा नहीं ले सकते थे?

उत्तर : बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. आपातकाल के कोई दो सबक बताइए। *(RBSE-2024)*

उत्तर :
- भारत से लोकतंत्र को समाप्त करना बहुत कठिन सिद्ध हुआ।
- आपातकाल के बाद लोकतांत्रिक कामकाज फिर से बहाल हुआ।
- नागरिक अपने अधिकारों के प्रति अधिक सचेत हुए।
- न्यायपालिका नागरिक अधिकारों की रक्षा में अधिक सक्रिय हुई।

2. प्रेस सेंसरशिप क्या है? *(Model Paper-2025)*

उत्तर :
- सरकार ने प्रेस की आज़ादी पर रोक लगाई।
- समाचारपत्रों को कुछ भी छापने से पहले अनुमति लेना आवश्यक था।
- प्रकाशन पर यह सरकारी नियंत्रण प्रेस सेंसरशिप कहलाया।
- इससे समाचार माध्यमों के सामान्य कामकाज पर प्रतिबंध लगा।

3. इलाहाबाद उच्च न्यायालय के 12 जून 1975 के फैसले का राजनीतिक प्रभाव क्या था?

उत्तर :
- इंदिरा गांधी का लोकसभा निर्वाचन अवैधानिक घोषित किया गया।
- कानूनन वे तत्कालीन स्थिति में सांसद नहीं रहीं।
- छह महीने में दोबारा सांसद न बनने पर प्रधानमंत्री पद पर बने रहने का प्रश्न खड़ा हुआ।
- विपक्ष ने उनके इस्तीफ़े की माँग तेज़ कर दी।
- इससे देश में गंभीर राजनीतिक संघर्ष की स्थिति बनी।

4. आपातकाल लागू होने पर नागरिक अधिकारों पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर :
- सरकार को मौलिक अधिकारों पर रोक या कटौती करने की शक्ति मिली।
- नागरिकों के अनेक मौलिक अधिकार निष्प्रभावी हो गए।
- धरना, प्रदर्शन और हड़ताल की अनुमति नहीं रही।
- नागरिक मौलिक अधिकारों की बहाली के लिए अदालत नहीं जा सकते थे।
- गिरफ्तार राजनीतिक कार्यकर्ताओं के लिए बंदी प्रत्यक्षीकरण का रास्ता भी बंद हुआ।

5. निवारक नज़रबंदी का आपातकाल में किस प्रकार प्रयोग किया गया?

उत्तर :
- गिरफ्तारी किसी किए गए अपराध के बजाय अपराध की आशंका के आधार पर की जाती थी।
- सरकार ने निवारक नज़रबंदी कानूनों का बड़े पैमाने पर प्रयोग किया।
- अनेक राजनीतिक कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार किया गया।
- गिरफ्तार लोगों को गिरफ्तारी का कारण बताना सरकार आवश्यक नहीं मानती थी।
- उनकी गिरफ्तारी को न्यायालय में चुनौती देने की क्षमता भी सीमित हो गई।

6. प्रेस सेंसरशिप का विरोध किस प्रकार किया गया?

उत्तर :
- इंडियन एक्सप्रेस और स्टेट्समैन ने सेंसरशिप का विरोध किया।
- रोके गए समाचारों की जगह अखबारों ने खाली स्थान छोड़ा।
- सेमिनार और मेनस्ट्रीम ने बंद होना उचित समझा।

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

- गुप्त रूप से अनेक न्यूज़लेटर और लीफलेट्स निकाले गए।
- कुछ लेखकों ने लोकतंत्र के दमन के विरोध में अपनी पदवियाँ वापस कर दीं।

7. आपातकाल के बाद नागरिक अधिकारों की रक्षा में क्या परिवर्तन आया?

उत्तर :
- नागरिक अपने अधिकारों के प्रति अधिक सचेत हुए।
- न्यायपालिका ने नागरिक अधिकारों की रक्षा में अधिक सक्रिय भूमिका अपनाई।
- आपातकाल में न्यायपालिका की सीमाओं को गंभीरता से महसूस किया गया।
- नागरिक अधिकारों की रक्षा के लिए कई संगठन अस्तित्व में आए।
- लोकतांत्रिक अधिकारों के महत्व को अधिक व्यापक स्वीकृति मिली।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. क्या जून 1975 में घोषित आपातकाल से हमें कोई सबक लेना चाहिए? यदि हाँ तो अपने विचार व्यक्त कीजिए। *(Model Paper-2024)*

उत्तर :
- आपातकाल ने भारतीय लोकतंत्र की ताकत और कमजोरियों दोनों को उजागर किया।
- भारत से लोकतंत्र को पूरी तरह विदा कर पाना कठिन सिद्ध हुआ।
- आपातकालीन प्रावधानों की अर्थगत उलझनों को बाद में सुधारा गया।
- अब अंदरूनी आपातकाल केवल सशस्त्र विद्रोह की स्थिति में लगाया जा सकता है।
- आपातकाल की सलाह मंत्रिमंडल द्वारा राष्ट्रपति को लिखित रूप में देना आवश्यक किया गया।
- नागरिकों में अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ी।
- न्यायपालिका नागरिक अधिकारों की रक्षा में अधिक तत्पर हुई।

2. 1975 में राष्ट्रीय आपातकाल की घोषणा करते हुए सरकार ने इसके क्या कारण बताए थे? *(Model Paper-2025)*

उत्तर :
- सरकार ने कहा कि देश में गड़बड़ी की आशंका उत्पन्न हो गई थी।
- राजनीतिक संघर्ष के कारण स्थिति को गंभीर संकट के रूप में प्रस्तुत किया गया।
- विपक्ष इंदिरा गांधी से इस्तीफ़े की माँग कर रहा था।
- जयप्रकाश नारायण ने राष्ट्रव्यापी सत्याग्रह की घोषणा की थी।
- सेना, पुलिस और सरकारी कर्मचारियों से अवैधानिक आदेश न मानने का आह्वान किया गया था।
- सरकार को अपने कामकाज के ठप्प होने का अंदेशा था।
- इन परिस्थितियों के आधार पर संविधान के अनुच्छेद 352 के अंतर्गत आपातकाल लागू किया गया।

3. आपातकाल के प्रमुख परिणामों का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- विरोध आंदोलन और हड़तालें रोक दी गईं।
- अनेक विपक्षी नेताओं और कार्यकर्ताओं को जेल में डाल दिया गया।
- प्रेस की स्वतंत्रता पर रोक लगाकर प्रेस सेंसरशिप लागू की गई।
- आरएसएस और जमात–ए–इस्लामी जैसे संगठनों पर प्रतिबंध लगा।
- नागरिकों के अनेक मौलिक अधिकार निष्प्रभावी हो गए।
- निवारक नज़रबंदी का बड़े पैमाने पर प्रयोग किया गया।
- नागरिकों के लिए अपनी गिरफ्तारी और अधिकारों की रक्षा हेतु अदालत तक पहुँच सीमित हो गई।

4. आपातकाल के दौरान किए गए प्रमुख संवैधानिक परिवर्तनों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर :
- प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति के निर्वाचन को अदालत में चुनौती न देने का प्रावधान किया गया।
- आपातकाल के दौरान 42वाँ संविधान संशोधन पारित हुआ।
- विधायिका के कार्यकाल को 5 वर्ष से बढ़ाकर 6 वर्ष किया गया।
- यह व्यवस्था केवल आपातकाल की अवधि तक सीमित नहीं रखी गई थी।
- आपातकाल में चुनाव को एक वर्ष के लिए स्थगित किया जा सकता था।
- इसके अनुसार 1976 में होने वाले चुनावों को 1978 तक टाला जा सकता था।
- इन परिवर्तनों ने संविधान और लोकतांत्रिक संस्थाओं के सामने नई चुनौतियाँ उत्पन्न कीं।

5. आपातकाल के दौरान न्यायपालिका, पुलिस और प्रशासन की भूमिका का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- अनेक उच्च न्यायालयों ने बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिकाएँ सुनने की बात स्वीकार की।
- अप्रैल 1976 में सर्वोच्च न्यायालय ने उच्च न्यायालयों के निर्णय को उलट दिया।
- सर्वोच्च न्यायालय ने आपातकाल में सरकार की दलील को स्वीकार कर लिया।

पढ़ना चाहे, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

- इससे नागरिकों के लिए अदालत के दरवाज़े बंद हो गए।
- आपातकाल का वास्तविक क्रियान्वयन पुलिस और प्रशासन के जरिए हुआ।
- ये संस्थाएँ स्वतंत्र रूप से काम नहीं कर सकीं और राजनीतिक दबाव में आईं।
- शाह कमीशन के अनुसार पुलिस और प्रशासन को शासक दल ने राजनीतिक औज़ार की तरह इस्तेमाल किया।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. आपातकाल का नागरिक अधिकारों, जनसंचार माध्यमों, न्यायपालिका तथा राजनीतिक गतिविधियों पर पड़े प्रभाव की विवेचना कीजिए।

उत्तर :
- आपातकाल के बाद विरोध–आंदोलन और हड़तालें रोक दी गईं।
- अनेक विपक्षी नेताओं और कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार कर जेल भेजा गया।
- समाचारपत्रों पर प्रेस सेंसरशिप लागू की गई।
- धरना, प्रदर्शन और राजनीतिक विरोध की स्वतंत्रता सीमित कर दी गई।
- नागरिकों के कई मौलिक अधिकार निष्प्रभावी हो गए।
- निवारक नज़रबंदी के अंतर्गत बड़े पैमाने पर गिरफ्तारियाँ हुईं।
- बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका द्वारा गिरफ्तारी को चुनौती देने का रास्ता सीमित हो गया।
- सर्वोच्च न्यायालय के 1976 के निर्णय ने नागरिकों के लिए अदालत के दरवाज़े बंद कर दिए।
- पुलिस और प्रशासन पर राजनीतिक दबाव बढ़ा और वे स्वतंत्र रूप से काम नहीं कर पाए।

2. आपातकाल के दौरान सरकारी नियंत्रण के विरुद्ध हुए प्रतिरोध का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- गिरफ्तारी से बच गए कई राजनीतिक कार्यकर्ता भूमिगत हो गए।
- इन कार्यकर्ताओं ने सरकार के विरुद्ध गुप्त रूप से मुहिम चलाई।
- इंडियन एक्सप्रेस और स्टेट्समैन ने प्रेस सेंसरशिप का विरोध किया।
- रोके गए समाचारों की जगह कुछ अखबारों ने खाली स्थान छोड़ा।
- सेमिनार और मेनस्ट्रीम जैसी पत्रिकाओं ने सेंसरशिप स्वीकार करने के बजाय बंद होना चुना।
- सेंसरशिप को चुनौती देते हुए गुप्त न्यूज़लेटर और लीफलेट्स निकाले गए।
- कन्नड़ लेखक शिवराम कारंत ने अपनी पदवी लौटा दी।
- हिंदी लेखक फणीश्वरनाथ 'रेणु' ने भी अपनी पदवी वापस कर दी।
- इन कार्रवाइयों ने लोकतंत्र के दमन के विरुद्ध प्रतिरोध को अभिव्यक्ति दी।

3. आपातकाल के दौरान संवैधानिक और लोकतांत्रिक संस्थाओं के सामने उत्पन्न चुनौतियों का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर :
- संघीय व्यवस्था का शक्तियों का बँटवारा व्यावहारिक रूप से निष्प्रभावी हो गया।
- सत्ता का बड़ा भाग केंद्र सरकार के हाथों में आ गया।
- मौलिक अधिकारों पर रोक और कटौती संभव हुई।
- प्रेस और राजनीतिक गतिविधियों पर व्यापक नियंत्रण लगाया गया।
- निवारक नज़रबंदी ने नागरिकों की व्यक्तिगत स्वतंत्रता को प्रभावित किया।
- सर्वोच्च न्यायालय का 1976 का निर्णय नागरिक अधिकारों की रक्षा के संदर्भ में विवादास्पद रहा।
- संविधान में संशोधन कर उच्च पदों के निर्वाचन को अदालत में चुनौती देने की व्यवस्था सीमित की गई।
- 42वें संशोधन द्वारा विधायिकाओं का कार्यकाल 5 से 6 वर्ष किया गया।
- आपातकाल ने भारतीय लोकतंत्र में संवैधानिक शक्तियों के दुरुपयोग की संभावना को स्पष्ट किया।

आपातकाल के बाद की राजनीति

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. 1977 के चुनाव से पहले विपक्षी दलों ने मिलकर किस नए दल का गठन किया?

(अ) कांग्रेस फॉर डेमोक्रेसी
(ब) जनता पार्टी
(स) भारतीय लोकदल
(द) कांग्रेस (ओ) **(ब)**

2. जनता पार्टी ने किसका नेतृत्व स्वीकार किया था?

(अ) मोरारजी देसाई
(ब) चरण सिंह
(स) जयप्रकाश नारायण
(द) जगजीवन राम **(स)**

3. 1977 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस को कितनी सीटें मिलीं?

(अ) 154 (ब) 295
(स) 330 (द) 353 **(अ)**

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

4. 1977 के लोकसभा चुनाव में जनता पार्टी अकेले कितनी सीटों पर जीती?

(अ) 154 (ब) 295

(स) 330 (द) 353 **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. कांग्रेस के कुछ नेताओं ने जगजीवन राम के नेतृत्व में ..... नाम की पार्टी बनाई।

उत्तर : कांग्रेस फॉर डेमोक्रेसी

2. पिछड़ी जातियों के प्रश्न पर केंद्र की जनता पार्टी सरकार ने ..... आयोग नियुक्त किया।

उत्तर : मंडल

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. 1977 के चुनाव में विपक्ष का प्रमुख नारा क्या था?

उत्तर : 'लोकतंत्र बचाओ'।

2. 1977 में भारत के प्रधानमंत्री कौन बने?

उत्तर : मोरारजी देसाई।

3. 1977 के चुनाव को जनता पार्टी ने किस रूप में प्रस्तुत किया?

उत्तर : आपातकाल पर जनमत–संग्रह के रूप में।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. जनता पार्टी का गठन किस प्रकार हुआ?

उत्तर :
- आपातकाल से पहले ही बड़ी विपक्षी पार्टियाँ एक–दूसरे के नज़दीक आने लगी थीं।
- चुनाव से ठीक पहले इन दलों ने एकजुट होकर जनता पार्टी बनाई।
- नई पार्टी ने जयप्रकाश नारायण का नेतृत्व स्वीकार किया।
- आपातकाल का विरोध करने वाले कांग्रेस के कुछ नेता भी इसमें शामिल हुए।
- बाद में कांग्रेस फॉर डेमोक्रेसी भी जनता पार्टी में शामिल हो गई।

2. 1977 के चुनाव में कांग्रेस की पराजय के प्रमुख कारण बताइए।

उत्तर :
- चुनाव आपातकाल के अनुभवों पर एक प्रकार का जनमत–संग्रह बन गया।
- विपक्ष ने 'लोकतंत्र बचाओ' के नारे पर चुनाव लड़ा।
- हजारों गिरफ्तारियों और प्रेस सेंसरशिप से जनता में असंतोष था।
- जनता पार्टी के गठन से गैर–कांग्रेसी वोटों का बिखराव कम हुआ।
- उत्तर भारत में आपातकाल की ज़्यादतियों का प्रभाव अधिक महसूस किया गया था।

3. 1977 के चुनाव परिणामों में उत्तर और दक्षिण भारत के बीच क्या अंतर दिखाई दिया?

उत्तर :
- उत्तर भारत में चुनावी माहौल कांग्रेस के खिलाफ था।
- बिहार, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा और पंजाब में कांग्रेस को एक भी सीट नहीं मिली।
- राजस्थान और मध्य प्रदेश में कांग्रेस को केवल एक–एक सीट मिली।
- महाराष्ट्र, गुजरात और उड़ीसा में कांग्रेस ने कई सीटें बरकरार रखीं।
- दक्षिण भारत में कांग्रेस को अपेक्षाकृत बड़ी चुनावी सफलता मिली।

4. आपातकाल के बाद कांग्रेस और विपक्षी राजनीति की प्रकृति में क्या बदलाव आया?

उत्तर :
- कांग्रेस का पुराना सबको समाहित करने वाला स्वभाव बदलने लगा।
- पार्टी ने स्वयं को एक विशेष विचारधारा से जोड़ना शुरू किया।
- कांग्रेस इंदिरा गांधी की लोकप्रियता पर अधिक निर्भर हुई।
- विपक्षी दलों ने गैर–कांग्रेसवाद की राजनीति की ओर रुख किया।
- गैर–कांग्रेसी वोटों को एकजुट रखने की आवश्यकता विपक्ष के लिए महत्वपूर्ण रणनीति बन गई।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. 1980 में मध्यावधि चुनाव क्यों करवाने पड़े?

(Model Paper-2023)

उत्तर :
- जनता पार्टी की सरकार में शुरू से ही आंतरिक तालमेल का अभाव था।
- प्रधानमंत्री पद और सत्ता को लेकर नेताओं में लगातार खींचतान रही।
- जनता पार्टी को किसी साझा दिशा और कार्यक्रम की कमी का सामना करना पड़ा।
- मोरारजी देसाई सरकार ने 28 माह में अपना बहुमत खो दिया।
- इसके बाद कांग्रेस के समर्थन से चरण सिंह की सरकार बनी।
- कांग्रेस ने बाद में अपना समर्थन वापस ले लिया।
- चरण सिंह सरकार केवल चार महीने चल सकी और जनवरी 1980 में नए चुनाव हुए।

2. 1977 के लोकसभा चुनाव के परिणामों और उनके महत्व का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- 1977 के चुनावों को आपातकाल पर एक प्रकार का जनमत–संग्रह माना गया।

पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

- आज़ादी के बाद पहली बार कांग्रेस लोकसभा चुनाव हार गई।
- कांग्रेस को केवल 154 सीटें और 35 प्रतिशत से कम वोट मिले।
- जनता पार्टी और उसके सहयोगियों को 330 सीटें मिलीं।
- जनता पार्टी अकेले 295 सीटें जीतकर स्पष्ट बहुमत में आई।
- उत्तर भारत में कांग्रेस को विशेष रूप से करारी हार का सामना करना पड़ा।
- इन परिणामों ने दिखाया कि मतदाता लोकतंत्र–विरोधी मानी गई सरकार को दंड दे सकते हैं।

3. जनता पार्टी सरकार के गठन से लेकर उसके पतन तक की घटनाओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- विपक्षी दलों ने चुनाव से पहले मिलकर जनता पार्टी का गठन किया।
- 1977 में पार्टी को स्पष्ट बहुमत मिला और मोरारजी देसाई प्रधानमंत्री बने।
- प्रधानमंत्री पद के लिए मोरारजी देसाई, चरण सिंह और जगजीवन राम में प्रतिस्पर्धा थी।
- सरकार बनने के बाद भी पार्टी के भीतर सत्ता संघर्ष जारी रहा।
- साझा दिशा और कार्यक्रम के अभाव में पार्टी की एकता कमजोर हुई।
- 28 माह में मोरारजी देसाई सरकार ने अपना बहुमत खो दिया।
- बाद में चरण सिंह की सरकार भी कांग्रेस का समर्थन हटने के कारण केवल चार महीने चल सकी।

4. आपातकाल के बाद भारतीय दलीय व्यवस्था में आए प्रमुख परिवर्तनों का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- 1969 के बाद कांग्रेस का समावेशी चरित्र बदलने लगा था।
- कांग्रेस ने स्वयं को समाजवादी और गरीबों की हिमायती पार्टी के रूप में प्रस्तुत करना शुरू किया।
- पार्टी की सफलता इंदिरा गांधी की व्यक्तिगत लोकप्रियता पर अधिक निर्भर हुई।
- विपक्षी दल गैर–कांग्रेसवाद की राजनीति की ओर बढ़े।
- गैर–कांग्रेसी मतों के एकीकरण ने 1977 के चुनाव में बड़ी भूमिका निभाई।
- 1977 के बाद पिछड़े वर्गों की राजनीतिक भूमिका अधिक महत्वपूर्ण हुई।
- जनता पार्टी सरकार ने पिछड़ी जातियों से जुड़े प्रश्न पर मंडल आयोग नियुक्त किया।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. आपातकाल के बाद 1977 के लोकसभा चुनाव और जनता पार्टी सरकार की विवेचना कीजिए। *(RBSE-2026)*

उत्तर :
- जनवरी 1977 में सरकार ने लोकसभा चुनाव कराने का फैसला किया।
- सभी प्रमुख नेताओं और राजनीतिक कार्यकर्ताओं को जेल से रिहा कर दिया गया।
- बड़ी विपक्षी पार्टियों ने एकजुट होकर जनता पार्टी का गठन किया।
- जनता पार्टी ने चुनाव को आपातकाल पर जनमत–संग्रह का स्वरूप दिया।
- कांग्रेस पहली बार केंद्र में लोकसभा का चुनाव हार गई।
- जनता पार्टी और उसके सहयोगियों को 330 सीटें मिलीं और जनता पार्टी अकेले 295 सीटों पर जीती।
- जनता सरकार में मोरारजी देसाई प्रधानमंत्री बने।
- पार्टी के भीतर सत्ता संघर्ष और साझा कार्यक्रम के अभाव से सरकार अस्थिर हुई।
- अंततः जनता पार्टी बिखर गई और आगे राजनीतिक अस्थिरता ने 1980 के चुनाव का रास्ता बनाया।

2. 1977 के चुनाव परिणामों के क्षेत्रीय स्वरूप और उसके कारणों की विवेचना कीजिए।

उत्तर :
- उत्तर भारत में चुनावी वातावरण कांग्रेस के पूरी तरह खिलाफ था।
- बिहार, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा और पंजाब में कांग्रेस को कोई सीट नहीं मिली।
- राजस्थान और मध्य प्रदेश में कांग्रेस केवल एक–एक सीट जीत सकी।
- इसके विपरीत महाराष्ट्र, गुजरात और उड़ीसा में कांग्रेस ने कई सीटें बचाए रखीं।
- दक्षिण भारत में कांग्रेस की चुनावी स्थिति अपेक्षाकृत मजबूत रही।
- इसका कारण था कि आपातकाल का प्रभाव सभी राज्यों में एकसमान नहीं पड़ा।
- जबरन उजाड़ने, विस्थापन और नसबंदी जैसी कार्रवाइयाँ उत्तर भारत में अधिक हुईं।
- उत्तर भारत का मध्यवर्ग कांग्रेस से दूर होकर जनता पार्टी से जुड़ा।
- इस प्रकार 1977 के चुनाव आपातकाल के साथ–साथ राजनीतिक प्रतिस्पर्धा में आए दूरगामी बदलावों का भी संकेत थे।

पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

3. आपातकाल के बाद भारतीय राजनीति की विरासत और दलीय व्यवस्था में हुए परिवर्तनों का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर :
- 1977 और 1980 के बीच भारतीय दलीय प्रणाली में महत्वपूर्ण बदलाव आए।
- कांग्रेस का पुराना विविध विचारधाराओं को समाहित करने वाला स्वभाव बदल गया।
- कांग्रेस ने स्वयं को समाजवादी और गरीबों की हिमायती पार्टी के रूप में प्रस्तुत किया।
- पार्टी इंदिरा गांधी की लोकप्रियता पर अधिक निर्भर हो गई।
- विपक्षी दलों ने गैर–कांग्रेसवाद की राजनीति को महत्व दिया।
- 1977 में गैर–कांग्रेसी वोटों को एक मंच पर लाने की रणनीति सफल रही।
- पिछड़ी जातियों के नेताओं की भूमिका विशेषकर उत्तर भारत में बढ़ी।
- जनता पार्टी सरकार ने पिछड़ी जातियों के सवाल पर मंडल आयोग नियुक्त किया।
- इस प्रकार आपातकाल के बाद चुनावों ने भारतीय राजनीति और दलीय व्यवस्था में नई प्रक्रियाओं की शुरुआत की।

4. 1977 से 1980 के राजनीतिक घटनाक्रम से भारतीय लोकतंत्र को मिले प्रमुख संकेतों की विवेचना कीजिए।

उत्तर :
- 1977 का चुनाव आपातकाल के अनुभवों पर जनमत–संग्रह के समान था।
- मतदाताओं ने लोकतंत्र–विरोधी मानी गई सरकार को भारी दंड दिया।
- पहली बार केंद्र में गैर–कांग्रेसी सरकार बनी।
- जनता पार्टी की सरकार ने दिखाया कि केवल विरोध के आधार पर बनी एकता लंबे समय तक स्थिर नहीं रहती।
- सत्ता संघर्ष और साझा कार्यक्रम के अभाव से जनता पार्टी बिखर गई।
- मोरारजी देसाई सरकार के बाद चरण सिंह सरकार भी अल्पकालिक रही।
- 1980 में मतदाताओं ने अस्थिर सरकार को भी कड़ा दंड दिया।
- कांग्रेस ने 353 सीटें जीतकर फिर सत्ता प्राप्त की।
- इस दौर ने स्पष्ट किया कि भारतीय मतदाता लोकतंत्र और राजनीतिक स्थिरता, दोनों को महत्व देते हैं।



7 क्षेत्रीय आकांक्षाएँ

क्षेत्र और राष्ट्र

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. लोकतंत्र किसे अपने आप में राष्ट्र–विरोधी नहीं मानता?

(अ) क्षेत्रीयता (ब) राजनीतिक संघर्ष
(स) नीति–निर्माण (द) चुनावी प्रक्रिया **(अ)**

रिक्तस्थान –

1. भारत द्वारा अपनायी गई ..... प्रणाली बहुत लचीली है।

उत्तर : संघीय

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. लोकतंत्र क्षेत्रीयता को किस रूप में नहीं देखता?

उत्तर : राष्ट्र–विरोधी के रूप में।

2. विवादों को बातचीत द्वारा किस दायरे में निपटाने का लक्ष्य रखा गया?

उत्तर : संविधान के दायरे में।

3. क्षेत्रों को राष्ट्रीय निर्णयों में उचित महत्त्व न मिलने से कौन–सा बोध पनपता है?

उत्तर : अन्याय और अलगाव का बोध।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. क्षेत्रवाद से निपटने के दो उपाय बताइए।

(RBSE-2024)

उत्तर :
- लोकतांत्रिक बातचीत द्वारा क्षेत्रीय आकांक्षाओं को सुना जाए।
- विवादों को संविधान के दायरे में सुलझाया जाए।
- क्षेत्रों को सत्ता और निर्णय–निर्माण में भागीदारी दी जाए।
- राष्ट्रीय निर्णयों में क्षेत्रीय हितों को उचित महत्त्व दिया जाए।

2. क्षेत्रीय आकांक्षाओं के प्रति भारत सरकार के दृष्टिकोण की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर :
- भारत ने एकता और विविधता के बीच संतुलन साधने का प्रयास किया।
- विभिन्न क्षेत्रों और भाषायी समूहों को अपनी संस्कृति बनाए रखने का अधिकार दिया गया।
- लोकतंत्र में क्षेत्रीय आकांक्षाओं की राजनीतिक अभिव्यक्ति स्वीकार की गई।
- क्षेत्रीयता को अपने आप में राष्ट्र–विरोधी नहीं माना गया।

3. लोकतांत्रिक राजनीति क्षेत्रीय आकांक्षाओं को अभिव्यक्ति कैसे देती है?

उत्तर :
- विभिन्न दल क्षेत्रीय पहचान और आकांक्षाओं को आधार बना सकते हैं।
- क्षेत्रीय समस्याओं पर लोगों की भावनाओं की नुमाइंदगी की जा सकती है।
- नीति–निर्माण में क्षेत्रीय मुद्दों को समुचित ध्यान मिल सकता है।
- क्षेत्रीय समूहों को राजनीतिक प्रक्रिया में भागीदारी मिलती है।

4. राष्ट्रीय एकता और क्षेत्रीय आकांक्षाओं के बीच तनाव क्यों उत्पन्न हो सकता है?

उत्तर :
- कभी राष्ट्रीय एकता के सरोकार क्षेत्रीय जरूरतों पर भारी पड़ सकते हैं।
- कभी क्षेत्रीय सरोकारों के कारण राष्ट्र की वृहत्तर आवश्यकताएँ उपेक्षित हो सकती हैं।
- क्षेत्रों के अधिकार और अलग अस्तित्व को लेकर राजनीतिक संघर्ष हो सकता है।
- विविधता और राष्ट्रीय एकता के बीच संतुलन बनाए रखना आवश्यक होता है।

5. क्षेत्रीय आर्थिक असंतुलन के राजनीतिक प्रभाव बताइए।

उत्तर :
- पिछड़े क्षेत्रों में भेदभाव की भावना उत्पन्न हो सकती है।
- वे अपने पिछड़ेपन को प्राथमिकता से दूर करने की माँग कर सकते हैं।
- राज्यों की असमान प्रगति से क्षेत्रीय असंतुलन बढ़ सकता है।
- इससे अंतर्प्रान्तीय अथवा अंतर्क्षेत्रीय आप्रवास भी बढ़ सकता है।

6. क्षेत्रीय आकांक्षाओं के समाधान में सत्ता की साझेदारी क्यों महत्त्वपूर्ण है?

उत्तर :
- केवल लोकतांत्रिक ढाँचा स्थापित करना पर्याप्त नहीं है।

मिशन ज्ञान
मंजिल नहीं चाहें, जहाँ चढ़ते पाँव हों!

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

- विभिन्न क्षेत्रों के दलों को केंद्रीय राजव्यवस्था में हिस्सेदार बनाना जरूरी है।
- राष्ट्रीय निर्णयों में क्षेत्रों की बातों को वजन दिया जाना चाहिए।
- भागीदारी के अभाव में अन्याय और अलगाव का बोध उत्पन्न हो सकता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. क्षेत्रीय आकांक्षाओं से भारतीय राजनीति को कौन–से सबक मिलते हैं? *(RBSE-2026)*

उत्तर :
- क्षेत्रीय आकांक्षाएँ लोकतांत्रिक राजनीति का अभिन्न अंग हैं।
- उन्हें दबाने के बजाय लोकतांत्रिक बातचीत का रास्ता अपनाना बेहतर है।
- विभिन्न क्षेत्रों को सत्ता की साझेदारी में उचित स्थान मिलना चाहिए।
- राष्ट्रीय निर्णयों में क्षेत्रों की बातों को महत्त्व दिया जाना चाहिए।
- आर्थिक विकास में क्षेत्रीय असंतुलन को कम करना आवश्यक है।
- भारत की लचीली संघीय व्यवस्था विविधताओं के समाहार में सहायक है।

2. 1980 के दशक में स्वायत्तता की माँग से जुड़े संघर्षों की प्रकृति स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- 1980 के दशक में कई हिस्सों से स्वायत्तता की माँग उठी।
- कुछ आंदोलनों ने संवैधानिक हदों को भी पार किया।
- कुछ समूहों ने अपनी माँगों के लिए हथियार उठाए।
- सरकार ने इनके विरुद्ध जवाबी कार्रवाई की।
- कई स्थानों पर राजनीतिक और चुनावी प्रक्रिया बाधित हुई।
- अंततः बातचीत और समझौतों के माध्यम से विवाद सुलझाने का प्रयास हुआ।

3. भारत में क्षेत्रीय आकांक्षाओं के संदर्भ में संघीय व्यवस्था की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- भारत की संघीय प्रणाली को लचीला बनाया गया है।
- विभिन्न क्षेत्रों को उनकी आवश्यकताओं के अनुसार स्वायत्तता देने की गुंजाइश है।
- कुछ क्षेत्रों के लिए विशेष प्रावधान किए गए।
- जनजातीय समुदायों की विशिष्टता को संरक्षित करने के लिए छठी अनुसूची में व्यवस्था है।
- इन प्रावधानों ने कई जटिल क्षेत्रीय समस्याओं को सुलझाने में सहायता की।
- इस लचीलेपन ने क्षेत्रीयता को लोकतांत्रिक राजनीति में समाहित करने में योगदान दिया।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. क्षेत्रीय आकांक्षाओं के विभिन्न उदाहरणों से मिलने वाले सबक की विवेचना कीजिए। *(RBSE-2023)*

उत्तर :
- क्षेत्रीय आकांक्षाएँ लोकतांत्रिक राजनीति का अभिन्न अंग हैं।
- क्षेत्रीय अभिव्यक्ति को अपने आप में राष्ट्र–विरोधी नहीं माना जाना चाहिए।
- आकांक्षाओं को दबाने के बजाय लोकतांत्रिक बातचीत अधिक प्रभावी है।
- राजनीतिक सुलह और समझौते तनाव को कम कर सकते हैं।
- क्षेत्रों और उनके दलों को सत्ता की साझेदारी में स्थान देना आवश्यक है।
- राष्ट्रीय फैसलों में क्षेत्रों को महत्त्व देने से अलगाव का बोध कम होता है।
- आर्थिक विकास में क्षेत्रीय असमानता को कम किया जाना चाहिए।
- भारत की लचीली और सर्वसमावेशी संघीय व्यवस्था क्षेत्रीय विविधताओं के समाहार में सहायक रही है।

2. भारतीय राष्ट्रवाद में एकता और विविधता के बीच संतुलन की व्याख्या कीजिए।

उत्तर :
- भारतीय राष्ट्रवाद ने एकता और विविधता दोनों को महत्त्व दिया।
- विभिन्न क्षेत्रों को अपनी संस्कृति बनाए रखने का अधिकार दिया गया।
- राष्ट्र का अर्थ क्षेत्रीय पहचान को नकारना नहीं माना गया।
- लोकतंत्र में क्षेत्रीय आकांक्षाओं की राजनीतिक अभिव्यक्ति स्वीकार की गई।
- क्षेत्रीयता को स्वतः राष्ट्र–विरोधी नहीं माना गया।
- क्षेत्रीय दलों को लोगों की भावनाओं की नुमाइंदगी का अवसर मिला।
- क्षेत्रीय मुद्दों को नीति–निर्माण में स्थान दिया गया।
- इस प्रकार विविधता को बनाए रखते हुए राष्ट्रीय एकता स्थापित करने का प्रयास हुआ।

3. क्षेत्रीय आकांक्षाओं के लोकतांत्रिक प्रबंधन में बातचीत, भागीदारी और आर्थिक संतुलन का महत्त्व स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- क्षेत्रीय आकांक्षाओं को दबाने की बजाय बातचीत आवश्यक है।
- बातचीत से विवादों को संविधान के दायरे में सुलझाया जा सकता है।
- क्षेत्रीय दलों को केंद्रीय राजव्यवस्था में हिस्सेदारी मिलनी चाहिए।

पहले सब चाहें, फिर चाहें सब पहले!

- राष्ट्रीय निर्णयों में क्षेत्रों की बातों को वजन दिया जाना चाहिए।
- इससे अन्याय और अलगाव की भावना कम होती है।
- आर्थिक रूप से पिछड़े इलाकों को प्राथमिकता देना आवश्यक है।
- क्षेत्रीय आर्थिक असंतुलन आप्रवास तथा असंतोष बढ़ा सकता है।
- लचीली संघीय व्यवस्था इन विविध आकांक्षाओं के समाहार में सहायक है।

जम्मू एवं कश्मीर

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. 1965 से पहले किस राज्य के मुखिया को प्रधानमंत्री कहा जाता था? *(RBSE-2026)*

(अ) जम्मू–कश्मीर (ब) मेघालय
(स) नागालैंड (द) मिजोरम **(अ)**

2. जम्मू–कश्मीर में क्षेत्रीय अभिलाषा के मुद्दे को क्या कहा गया है?

(अ) कश्मीरियत (ब) स्वर्णिम असम
(स) पंजाबी सूबा (द) क्षेत्रीय गौरव **(अ)**

3. महाराजा हरि सिंह अपनी रियासत के लिए क्या चाहते थे?

(अ) पाकिस्तान में विलय
(ब) स्वतंत्र दर्जा
(स) तत्काल राज्य पुनर्गठन
(द) अलग जनजातीय राज्य **(ब)**

4. अक्टूबर 1947 में कश्मीर में कबायली घुसपैठिए किस ओर से भेजे गए?

(अ) भारत (ब) पाकिस्तान
(स) मिजोरम (द) पंजाब **(ब)**

5. 1974 में शेख अब्दुल्ला का समझौता किससे हुआ?

(अ) राजीव गाँधी (ब) इंदिरा गाँधी
(स) फारूक अब्दुल्ला (द) गुलाम मोहम्मद सादिक **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. जम्मू–कश्मीर पुनर्गठन अधिनियम 2019 द्वारा अनुच्छेद ..... समाप्त किया गया। *(RBSE-2023, RBSE-2026)*

उत्तर : 370

2. जम्मू–कश्मीर पुनर्गठन अधिनियम वर्ष ..... में बना। *(Model Paper-2025)*

उत्तर : 2019

3. मार्च 1948 में ..... जम्मू और कश्मीर के प्रधानमंत्री बने।

उत्तर : शेख अब्दुल्ला

4. 1965 में राज्य के प्रधानमंत्री का पदनाम बदलकर ..... कर दिया गया।

उत्तर : मुख्यमंत्री

5. नेशनल कॉन्फ्रेंस ने ..... के विधानसभा चुनाव में बहुमत से जीत हासिल की।

उत्तर : 1977

6. ..... तक राज्य एक पृथक कश्मीरी राष्ट्र बनाने वाले उग्रवादी आंदोलन की गिरफ्त में आ गया।

उत्तर : 1989

7. जम्मू और कश्मीर में विधानसभा चुनाव पुनः ..... में हुए।

उत्तर : 1996

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. जम्मू–कश्मीर की प्रथम महिला मुख्यमंत्री कौन बनीं? *(Model Paper-2026)*

उत्तर : महबूबा मुफ्ती।

2. जम्मू और कश्मीर के तीन प्रमुख क्षेत्र कौन–से थे?

उत्तर : जम्मू, कश्मीर और लद्दाख।

3. 1965 में जम्मू–कश्मीर के पहले मुख्यमंत्री कौन बने?

उत्तर : गुलाम मोहम्मद सादिक।

4. 2002 में किस गठबंधन ने सरकार बनाई?

उत्तर : पीडीपी और कॉंग्रेस की मिली–जुली सरकार।

5. 2009 में किसके नेतृत्व में मिली–जुली सरकार सत्ता में आई?

उत्तर : उमर अब्दुल्ला के नेतृत्व में।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. जम्मू और कश्मीर की सामाजिक और राजनीतिक विविधता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- राज्य के तीन प्रमुख क्षेत्र जम्मू, कश्मीर और लद्दाख थे।
- जम्मू में पहाड़ी और मैदानी क्षेत्र तथा मुख्यतः हिन्दू आबादी थी।
- कश्मीर घाटी में अधिकांश निवासी कश्मीरी मुसलमान थे।
- लद्दाख पहाड़ी और कम आबादी वाला क्षेत्र था, जिसमें बौद्ध और मुसलमान प्रमुख थे।

2. कश्मीरियत और नेशनल कॉन्फ्रेंस की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- क्षेत्रीय अभिलाषा के प्रश्न को कश्मीरियत कहा गया।
- लोगों में सबसे पहले स्वयं को कश्मीरी मानने की भावना थी।
- शेख अब्दुल्ला के नेतृत्व में नेशनल कॉन्फ्रेंस ने महाराजा के विरुद्ध आंदोलन चलाया।
- नेशनल कॉन्फ्रेंस धर्मनिरपेक्ष संगठन था और पाकिस्तान में शामिल होने के विरुद्ध था।

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

3. संयुक्त राष्ट्र संघ की 21 अप्रैल 1948 की अनुशंसा के प्रमुख बिंदु बताइए।

उत्तर :
- पाकिस्तान को कश्मीर में घुसे अपने नागरिक वापस बुलाने थे।
- भारत को धीरे–धीरे अपनी फौज कम करनी थी।
- कानून–व्यवस्था बनाए रखने की व्यवस्था की जानी थी।
- अंत में स्वतंत्र और निष्पक्ष जनमत–संग्रह कराया जाना था।

4. कश्मीरियों की स्वायत्तता संबंधी प्रमुख शिकायतें क्या थीं?

उत्तर :
- विलय का मामला जनता के विचार के लिए देने का वायदा पूरा नहीं हुआ।
- इससे जनमत–संग्रह की माँग उठी।
- अनुच्छेद 370 से प्राप्त विशेष संघीय दर्जा व्यवहार में कम किया गया माना गया।
- राज्य में शेष भारत जैसा लोकतंत्र लागू न होने की शिकायत थी।

5. 1987 के चुनावों के बाद कश्मीर में राजनीतिक संकट क्यों गहरा गया?

उत्तर :
- चुनाव परिणामों को लोकप्रिय चयन की सही झलक नहीं माना गया।
- चुनाव प्रक्रिया में गड़बड़ी होने की व्यापक धारणा थी।
- अकुशल प्रशासन के विरुद्ध पहले से नाराजगी मौजूद थी।
- लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं के कमजोर होने की भावना से राजनीतिक संकट और उग्रवाद बढ़ा।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. जम्मू–कश्मीर के बाहरी और आंतरिक विवादों की प्रकृति स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- पाकिस्तान ने कश्मीर घाटी पर लगातार अपना दावा किया।
- 1947 के कबायली हमले के बाद राज्य का एक हिस्सा पाकिस्तानी नियंत्रण में गया।
- कश्मीर का प्रश्न भारत–पाकिस्तान के बीच प्रमुख द्वंद्व का मुद्दा बना।
- आंतरिक रूप से भारतीय संघ में कश्मीर के दर्जे पर विवाद रहा।
- एक वर्ग अनुच्छेद 370 के विशेष दर्जे को पूर्ण एकीकरण में बाधा मानता था।
- अधिकांश कश्मीरियों में अधिक स्वायत्तता और लोकतांत्रिक अधिकारों की माँग थी।

2. 1948 से 1982 तक जम्मू–कश्मीर की प्रमुख राजनीतिक घटनाओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- मार्च 1948 में शेख अब्दुल्ला प्रधानमंत्री बने।
- उन्होंने भूमि सुधार तथा अन्य जनहितकारी नीतियाँ शुरू कीं।
- केंद्र से मतभेद के बाद 1953 में उन्हें पदच्युत और कैद किया गया।
- 1953–1974 के बीच कांग्रेस ने राज्य की राजनीति पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव डाला।
- 1965 में प्रधानमंत्री का पदनाम बदलकर मुख्यमंत्री किया गया।
- 1974 में इंदिरा गाँधी–शेख अब्दुल्ला समझौता हुआ।
- 1977 में नेशनल कॉन्फ्रेंस जीती और 1982 के बाद नेतृत्व फारूक अब्दुल्ला के पास गया।

3. 1989 के बाद जम्मू–कश्मीर में उग्रवाद और राजनीतिक प्रक्रिया के विकास का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- 1989 तक एक पृथक कश्मीरी राष्ट्र की माँग वाला उग्रवादी आंदोलन उभरा।
- विद्रोहियों को पाकिस्तान से नैतिक, आर्थिक और फौजी समर्थन मिला।
- राज्य ने विद्रोह और सैन्य कार्रवाई के कारण असाधारण हिंसा झेली।
- कई वर्षों तक राज्य राष्ट्रपति शासन और सशस्त्र सेनाओं के प्रभाव में रहा।
- 1996 में फिर विधानसभा चुनाव हुए और नेशनल कॉन्फ्रेंस सत्ता में आई।
- 2002 में नेशनल कॉन्फ्रेंस बहुमत से वंचित रही और पीडीपी–कॉंग्रेस गठबंधन बना।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. 1947 में जम्मू–कश्मीर के भारत में विलय की परिस्थितियों और संयुक्त राष्ट्र की प्रक्रिया का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- 1947 से पहले जम्मू–कश्मीर एक राजसी रियासत थी।
- महाराजा हरि सिंह भारत या पाकिस्तान में शामिल होने के बजाय स्वतंत्र दर्जा चाहते थे।
- नेशनल कॉन्फ्रेंस पाकिस्तान में विलय के विरुद्ध और महाराजा के शासन से मुक्ति चाहती थी।
- अक्टूबर 1947 में पाकिस्तान ने कबायली घुसपैठिए भेजे।
- महाराजा ने भारतीय सैनिक सहायता माँगी और विलय प्रपत्र पर हस्ताक्षर किए।
- भारतीय सैनिकों ने कश्मीर घाटी से घुसपैठियों को पीछे खदेड़ा।
- मामला संयुक्त राष्ट्र में गया और 21 अप्रैल 1948 को तीन चरणों वाली प्रक्रिया सुझाई गई।
- प्रस्ताव में पाकिस्तानी नागरिकों की वापसी, भारतीय सेना में कमी और जनमत–संग्रह की बात थी, पर प्रगति नहीं हुई।

पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

2. 1953 से 1987 तक जम्मू–कश्मीर की राजनीति में केंद्र–राज्य संबंधों और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर :
- 1953 में शेख अब्दुल्ला को पदच्युत करके कैद किया गया।
- उनके बाद के नेतृत्व को केंद्र का समर्थन प्राप्त था।
- चुनावों में अनाचार और हेरफेर के आरोप लगाए गए।
- 1953–1974 के बीच कांग्रेस का राज्य की नीतियों पर प्रभाव रहा।
- 1974 के समझौते के बाद शेख अब्दुल्ला फिर मुख्यमंत्री बने।
- 1977 में नेशनल कॉन्फ्रेंस ने विधानसभा में बहुमत प्राप्त किया।
- फारूक अब्दुल्ला की सरकार की पदच्युति से केंद्र के हस्तक्षेप के प्रति नाराजगी बढ़ी।
- 1987 के चुनावों में गड़बड़ी की धारणा ने लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में विश्वास को कमजोर किया।

3. 2002 से 2019 तक जम्मू–कश्मीर की प्रमुख राजनीतिक घटनाओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- 2002 में पीडीपी और कॉंग्रेस की मिली–जुली सरकार बनी।
- गठबंधन के अनुसार मुफ्ती मोहम्मद पहले तीन वर्ष सरकार के मुखिया रहे।
- बाद में गुलामनबी आजाद मुखिया बने, पर 2008 के राष्ट्रपति शासन के कारण कार्यकाल पूरा नहीं हुआ।
- 2009 में उमर अब्दुल्ला के नेतृत्व में नेशनल कॉन्फ्रेंस–कॉंग्रेस गठबंधन सत्ता में आया।
- 2014 में पिछले 25 वर्षों का सबसे अधिक मतदान दर्ज हुआ।
- पीडीपी और बीजेपी की मिली–जुली सरकार बनी।
- अप्रैल 2016 में महबूबा मुफ्ती राज्य की पहली महिला मुख्यमंत्री बनीं।
- 5 अगस्त 2019 को अनुच्छेद 370 समाप्त कर राज्य को जम्मू–कश्मीर और लद्दाख दो केंद्र शासित प्रदेशों में पुनर्गठित किया गया।

पंजाब

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. 'ऑपरेशन ब्लू स्टार' का संबंध किस राज्य से है?

(Model Paper-2024)

(अ) दिल्ली (ब) गुजरात
(स) हरियाणा (द) पंजाब **(द)**

2. पंजाबी–भाषी प्रांत का निर्माण कब हुआ?

(अ) 1950 (ब) 1966
(स) 1973 (द) 1984 **(ब)**

3. आनंदपुर साहिब प्रस्ताव कब पारित हुआ?

(अ) 1966 (ब) 1973
(स) 1980 (द) 1985 **(ब)**

4. ऑपरेशन ब्लू स्टार कब चलाया गया?

(अ) जून 1984 (ब) जुलाई 1985
(स) अक्तूबर 1984 (द) 1992 **(अ)**

5. राजीव गाँधी–लोंगोवाल समझौता कब हुआ?

(अ) जून 1984 (ब) जुलाई 1985
(स) 1992 (द) 1997 **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. अकाली दल ने ..... के गठन के लिए आंदोलन चलाया।

उत्तर : पंजाबी सूबा

2. प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी की हत्या ..... को हुई।

उत्तर : 31 अक्तूबर 1984

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. 1984 की हिंसा से संबंधित जाँच आयोग का नाम क्या था?

उत्तर : न्यायमूर्ति नानावती जाँच आयोग।

2. 1985 के पंजाब समझौते के समय अकाली दल के अध्यक्ष कौन थे?

उत्तर : हरचंद सिंह लोंगोवाल।

3. 1997 में पंजाब में किस गठबंधन को बड़ी विजय मिली?

उत्तर : अकाली दल (बादल) और भाजपा गठबंधन।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. राजीव–लोंगोवाल समझौते के दो बिंदु बताइए।

(RBSE-2025)

उत्तर :
- चंडीगढ़ पंजाब को देने पर सहमति हुई।
- पंजाब–हरियाणा सीमा विवाद के लिए आयोग की व्यवस्था की गई।
- रावी–व्यास जल बँटवारे के लिए ट्रिब्यूनल बनाने का निर्णय हुआ।
- पंजाब में उग्रवाद से प्रभावित लोगों के मुआवजे और बेहतर सलूक पर सहमति हुई।

2. आनंदपुर साहिब प्रस्ताव के विवादास्पद होने के क्या कारण थे? कोई दो कारणों का उल्लेख कीजिए।

(Model Paper-2024)

उत्तर :
- प्रस्ताव में पंजाब के लिए क्षेत्रीय स्वायत्तता की माँग थी।
- इसमें केंद्र–राज्य संबंधों के पुनर्परिभाषण की बात थी।
- इसमें सिख 'कौम' की आकांक्षाओं पर जोर दिया गया।

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

- प्रस्ताव में सिखों के 'बोलबाला' का भी ऐलान किया गया।

3. पंजाब के पुनर्गठन के बाद अकाली दल की राजनीतिक स्थिति क्यों डांवाडोल रही?

उत्तर :
- अकाली सरकारों को केंद्र ने कार्यकाल पूरा होने से पहले बर्खास्त किया।
- अकाली दल को पंजाब के हिंदुओं में सीमित समर्थन था।
- सिख समुदाय स्वयं जाति और वर्ग के आधार पर विभाजित था।
- दलित सिखों और हिंदुओं में कांग्रेस का समर्थन अपेक्षाकृत अधिक था।

4. ऑपरेशन ब्लू स्टार के प्रमुख परिणाम बताइए।

उत्तर :
- सैन्य अभियान में उग्रवादियों को स्वर्णमंदिर से हटाया गया।
- ऐतिहासिक स्वर्णमंदिर को क्षति पहुँची।
- सिख समुदाय की धार्मिक भावनाओं को गहरी चोट लगी।
- इससे उग्रवादी और चरमपंथी समूहों को बल मिला।

5. 1984 की सिख–विरोधी हिंसा के प्रमुख प्रभाव बताइए।

उत्तर :
- दिल्ली सहित उत्तर भारत के कई हिस्सों में हिंसा फैली।
- दिल्ली में दो हजार से अधिक सिख मारे गए।
- कई परिवारों को गंभीर भावनात्मक आघात पहुँचा।
- परिवारों को भारी आर्थिक हानि उठानी पड़ी।
- सरकारी कार्रवाई में देरी और दोषियों पर प्रभावी दंड न होने से असंतोष बढ़ा।

6. पंजाब में सामान्य राजनीतिक प्रक्रिया की बहाली किन कठिनाइयों के बीच हुई?

उत्तर :
- उग्रवादी हिंसा और जवाबी कार्रवाई का चक्र लंबा चला।
- मानवाधिकारों का व्यापक उल्लंघन हुआ।
- अकाली दल राजनीतिक रूप से बिखर गया।
- राज्य में राष्ट्रपति शासन लागू करना पड़ा।
- 1992 के चुनाव में केवल 24 प्रतिशत मतदान हुआ।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. पंजाब में स्वायत्तता की माँग उठने की राजनीतिक पृष्ठभूमि स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- 1966 में पंजाबी–भाषी प्रांत का निर्माण हुआ।
- अकाली दल ने 1967 और 1977 में गठबंधन सरकारें बनाईं।
- अकाली सरकारों की समयपूर्व बर्खास्तगी से राजनीतिक अस्थिरता रही।
- पंजाब के हिंदुओं में अकाली दल का समर्थन सीमित था।
- सिख समुदाय जाति और वर्ग के आधार पर विभाजित था।
- इन परिस्थितियों में 1970 के दशक में पंजाब के लिए स्वायत्तता की माँग उठी।

2. पंजाब में उग्रवाद और हिंसा के चक्र का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- आंदोलन नरमपंथी अकालियों से निकलकर चरमपंथी तत्त्वों के हाथ में गया।
- आंदोलन ने सशस्त्र विद्रोह का रूप ले लिया।
- उग्रवादियों ने स्वर्णमंदिर को अपना मुख्यालय बनाया।
- जून 1984 में सरकार ने ऑपरेशन ब्लू स्टार चलाया।
- स्वर्णमंदिर की क्षति से सिख समुदाय में गहरी नाराजगी फैली।
- इंदिरा गाँधी की हत्या के बाद सिख–विरोधी हिंसा भड़की।
- उग्रवाद और जवाबी कार्रवाइयों का दौर लगभग एक दशक तक चला।

3. 1990 के दशक में पंजाब में शांति और राजनीतिक सामान्यीकरण की प्रक्रिया स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- सुरक्षा बलों ने अंततः उग्रवाद को दबा दिया।
- पंजाब की जनता ने हिंसा के दौर में भारी दुख और क्षति झेली।
- 1990 के दशक के मध्य में शांति बहाल हुई।
- 1997 में अकाली दल (बादल)–भाजपा गठबंधन को बड़ी विजय मिली।
- आर्थिक विकास और सामाजिक परिवर्तन के मुद्दे फिर प्रमुख हुए।
- राजनीति धीरे–धीरे धर्मनिरपेक्षता की राह पर लौट आई।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. पंजाब में 1980 के दशक की हिंसा और उसके राजनीतिक–सामाजिक प्रभावों की विवेचना कीजिए।

उत्तर :
- आंदोलन चरमपंथियों के हाथ में जाकर सशस्त्र विद्रोह में बदल गया।
- उग्रवादियों ने स्वर्णमंदिर को हथियारबंद मुख्यालय बनाया।
- जून 1984 में ऑपरेशन ब्लू स्टार चलाया गया।
- स्वर्णमंदिर को क्षति से सिखों की धार्मिक भावनाएँ आहत हुईं।
- 31 अक्तूबर 1984 को इंदिरा गाँधी की हत्या हुई।

- इसके बाद दिल्ली सहित कई क्षेत्रों में सिख–विरोधी हिंसा फैली।
- हजारों परिवारों को भावनात्मक और आर्थिक क्षति उठानी पड़ी।
- उग्रवादी हिंसा और जवाबी कार्रवाइयों से राजनीतिक प्रक्रिया तथा मानवाधिकार प्रभावित हुए।

पूर्वोत्तर

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. मेघालय राज्य का निर्माण कब हुआ? *(RBSE-2024)*

(अ) 1969 (ब) 1970
(स) 1971 (द) 1972 **(द)**

2. 'आसू' किस राज्य में सक्रिय है? *(RBSE-2024)*

(अ) असम (ब) मिजोरम
(स) गुजरात (द) मणिपुर **(अ)**

3. नगालैंड कब पूर्ण राज्य बना? *(RBSE-2025)*

(अ) 1961 (ब) 1962
(स) 1963 (द) 1964 **(स)**

4. असम आंदोलन में किस देश से आए लोगों का मुद्दा प्रमुख था? *(RBSE-2025)*

(अ) बांग्लादेश (ब) पाकिस्तान
(स) श्रीलंका (द) नेपाल **(अ)**

5. मिजो नेशनल फ्रंट के संस्थापक कौन थे? *(Model Paper-2025)*

(अ) लाल डेंगा (ब) फिजो
(स) खांगसरपा (द) इनमें से कोई नहीं **(अ)**

6. असम समझौता कब हुआ? *(Model Paper-2026)*

(अ) 1984 (ब) 1987
(स) 1985 (द) 1989 **(स)**

7. 'ईस्टर्न इंडिया ट्राइबल यूनियन' 1960 में किस संगठनमें बदल गया?

(अ) ऑल असम स्टूडेंटस् यूनियन
(ब) ऑल पार्टी हिल्स कांफ्रेंस
(स) मिजो नेशनल फ्रंट
(द) असम गण परिषद् **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. नागालैंड को राज्य का दर्जा सन् ..... में मिला। *(RBSE-2024)*

उत्तर : 1963

2. पूर्वोत्तर के राज्यों की राजनीति पर स्वायत्तता, अलगाव और ..... लोगों के विरोध के मुद्दे हावी रहे।

उत्तर : बाहरी

3. करबी और दिमसा समुदायों को ..... के अंतर्गत स्वायत्तता दी गई।

उत्तर : जिला–परिषद्

4. बोडो जनजाति को ..... परिषद् का दर्जा दिया गया।

उत्तर : स्वायत्त

5. 1986 में राजीव गाँधी और ..... के बीच शांति समझौता हुआ।

उत्तर : लालडेंगा

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. 'सात बहनों' का क्षेत्र किसे कहा जाता है? *(RBSE-2024)*

उत्तर : पूर्वोत्तर भारत।

2. आसू की कोई दो माँगें बताइए। *(Model Paper-2025)*

उत्तर : अवैध आप्रवासियों का विरोध तथा 1951 के बाद असम में बसे लोगों को बाहर भेजना।

3. पूर्वोत्तर को शेष भारत से जोड़ने वाली राहदारी कितनी लंबी है?

उत्तर : 22 किलोमीटर।

4. नगा अलगाववादी आंदोलन के प्रमुख नेता कौन थे?

उत्तर : अंगमी जापू फिजो।

5. किस संगठन ने मिजोरम में गुरिल्ला युद्ध किया?

उत्तर : मिजो नेशनल फ्रंट।

6. पूर्वोत्तर की राजनीति पर हावी तीन प्रमुख मुद्दे कौन–से हैं?

उत्तर : स्वायत्तता, अलगाववादी आंदोलन और बाहरी लोगों का विरोध।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. पूर्वोत्तर के राज्यों में राजनीति पर किन्हीं दो प्रमुख मुद्दों के बारे में बताइए। *(Model Paper-2023, Model Paper-2025)*

उत्तर :
- कई समुदायों ने अधिक स्वायत्तता की माँग की।
- कुछ समूहों ने अलग देश के लिए अलगाववादी आंदोलन चलाए।
- बड़े पैमाने पर आप्रवास के कारण 'बाहरी' लोगों का विरोध हुआ।
- इन मुद्दों ने पूर्वोत्तर की राजनीति को अत्यंत संवेदनशील बनाया।

2. 1986 में राजीव–लाल डेंगा समझौते की कोई दो शर्तें संक्षेप में लिखिए। *(Model Paper-2026)*

उत्तर :
- मिजोरम को पूर्ण राज्य का दर्जा दिया गया।
- मिजोरम को कुछ विशेष अधिकार दिए गए।
- मिजो नेशनल फ्रंट ने अलगाववादी संघर्ष छोड़ने पर सहमति दी।
- लालडेंगा नए मिजोरम के मुख्यमंत्री बने।

मिशन ज्ञान
पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

3. पूर्वोत्तर की राजनीति अधिक संवेदनशील क्यों रही?

उत्तर :
- क्षेत्र शेष भारत से काफी हद तक अलग–थलग रहा।
- यहाँ की सामाजिक संरचना अत्यंत जटिल है।
- क्षेत्र आर्थिक रूप से अपेक्षाकृत पिछड़ा रहा।
- शेष भारत के साथ संचार–व्यवस्था लचर थी।
- इसकी लंबी सीमाएँ कई पड़ोसी देशों से लगती हैं।

4. पूर्वोत्तर में स्वायत्तता की माँग किस प्रकार सामने आई?

उत्तर :
- गैर–असमी समूहों ने असमी भाषा थोपे जाने का विरोध किया।
- बड़े जनजातीय समुदाय असम से अलग होना चाहते थे।
- 'ईस्टर्न इंडिया ट्राइबल यूनियन' जैसे संगठन बनाए गए।
- बाद में कई अलग जनजातीय राज्यों का निर्माण किया गया।
- राज्य निर्माण के बाद भी कुछ समुदायों की स्वायत्तता की माँग जारी रही।

5. करबी, दिमसा और बोडो समुदायों की स्वायत्तता की माँग का समाधान कैसे किया गया?

उत्तर :
- लगातार छोटे राज्य बनाना संभव नहीं माना गया।
- संघीय राजव्यवस्था के दूसरे प्रावधानों का प्रयोग किया गया।
- करबी समुदाय को जिला–परिषद् के अंतर्गत स्वायत्तता मिली।
- दिमसा समुदाय को भी जिला–परिषद् की व्यवस्था मिली।
- बोडो जनजाति को स्वायत्त परिषद् का दर्जा दिया गया।

6. मिजो अलगाववादी आंदोलन को जनसमर्थन मिलने की पृष्ठभूमि बताइए।

उत्तर :
- मिजो पर्वतीय क्षेत्र असम के भीतर एक स्वायत्त जिला था।
- कुछ मिजो भारत संघ से अपने संबंध को स्वीकार नहीं करते थे।
- 1959 में इलाके में गंभीर अकाल पड़ा।
- असम सरकार अकाल में समुचित प्रबंध करने में नाकाम रही।
- इसके बाद लालडेंगा के नेतृत्व में अलगाववादी आंदोलन को जनसमर्थन बढ़ा।

7. असम आंदोलन की प्रमुख पृष्ठभूमि बताइए।

उत्तर :
- असमी लोगों में बांग्लादेश से आए लोगों के कारण जनसांख्यिकीय चिंता थी।
- स्थानीय जनता को अपने अल्पसंख्यक हो जाने का भय था।
- अवैध आप्रवास और मतदाता सूची में नामों को लेकर असंतोष था।
- तेल, चाय और कोयले जैसे संसाधनों के बावजूद व्यापक गरीबी थी।
- लोगों को लगा कि प्राकृतिक संसाधनों का लाभ असमी जनता को नहीं मिल रहा है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. आजादी के बाद पूर्वोत्तर के राजनीतिक पुनर्गठन का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- आजादी के समय मणिपुर और त्रिपुरा को छोड़कर अधिकांश क्षेत्र असम कहलाता था।
- गैर–असमी समुदायों ने असमी भाषा थोपने का विरोध किया।
- जनजातीय नेताओं ने अलग जनजातीय राज्य की माँग उठाई।
- नगालैंड को 1963 में राज्य बनाया गया।
- मणिपुर, त्रिपुरा और मेघालय को 1972 में राज्य का दर्जा मिला।
- मिजोरम और अरुणाचल प्रदेश 1987 में राज्य बने।
- शेष स्वायत्तता की माँगों के लिए जिला परिषदों और स्वायत्त परिषदों का सहारा लिया गया।

2. मिजो अलगाववादी आंदोलन और उसके शांतिपूर्ण समाधान का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- 1959 के अकाल के बाद अलगाववादी आंदोलन को जनसमर्थन मिलने लगा।
- लालडेंगा के नेतृत्व में मिजो नेशनल फ्रंट बनाया गया।
- 1966 में संगठन ने स्वतंत्रता की माँग के साथ सशस्त्र अभियान शुरू किया।
- भारतीय सेना और विद्रोहियों के बीच लगभग दो दशक संघर्ष चला।
- दोनों पक्षों ने अंततः बातचीत की आवश्यकता को स्वीकार किया।
- 1986 में राजीव गाँधी और लालडेंगा के बीच शांति समझौता हुआ।
- मिजोरम को पूर्ण राज्य का दर्जा मिला और ङछथ ने अलगाववादी संघर्ष छोड़ दिया।

3. 1979 से 1985 तक चले असम आंदोलन और असम समझौते का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- आंदोलन का मुख्य प्रश्न बाहरी लोगों और अवैध आप्रवास से जुड़ा था।
- 1979 में आसू ने विदेशियों के विरोध में आंदोलन शुरू किया।
- आंदोलन ने मतदाता सूची में आप्रवासियों के नाम और बाहरी दबदबे का विरोध किया।
- माँग थी कि 1951 के बाद आए लोगों को असम से बाहर भेजा जाए।

पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

- आंदोलन को असमी जनता के व्यापक हिस्से का समर्थन मिला।
- छह वर्ष की अस्थिरता के बाद 1985 में सरकार और आसू नेताओं में समझौता हुआ।
- आंदोलन के बाद असम गण परिषद् बनी और 1985 में सत्ता में आई।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. पूर्वोत्तर की क्षेत्रीय राजनीति को प्रभावित करने वाले भौगोलिक, सामाजिक और आर्थिक कारकों की विवेचना कीजिए।

उत्तर :
- पूर्वोत्तर शेष भारत से केवल लगभग 22 किलोमीटर लंबी राहदारी से जुड़ा है।
- क्षेत्र की सीमाएँ चीन, म्यांमार और बांग्लादेश से लगने के कारण इसका सामरिक स्थान विशिष्ट है।
- 1947 के विभाजन से क्षेत्र शेष भारत से अधिक अलग–थलग हो गया।
- अलगाव से क्षेत्र की अर्थव्यवस्था पर दुष्प्रभाव पड़ा।
- विकास पर पर्याप्त ध्यान न मिलने से आर्थिक पिछड़ापन बढ़ा।
- क्षेत्र की सामाजिक और जनजातीय संरचना अत्यंत जटिल रही।
- शरणार्थियों और आप्रवासियों से जनसंख्या संरचना में बदलाव आया।
- इन परिस्थितियों के कारण स्वायत्तता, अलगाव और बाहरी लोगों के विरोध जैसे राजनीतिक मुद्दे उभरे।

2. पूर्वोत्तर में स्वायत्तता की माँगों और उनके संघीय समाधान की व्याख्या कीजिए।

उत्तर :
- गैर–असमी समूहों ने असमी भाषा थोपे जाने का विरोध किया।
- जनजातीय नेताओं ने असम से अलग राज्य की माँग की।
- 'ईस्टर्न इंडिया ट्राइबल यूनियन' और बाद में ऑल पार्टी हिल्स कांफ्रेंस ने इन माँगों को उठाया।
- केंद्र ने असम का पुनर्गठन कर कई नए राज्यों का निर्माण किया।
- पुनर्गठन के बाद भी बोडो, करबी और दिमसा जैसे समुदायों की माँगें जारी रहीं।
- लगातार छोटे राज्य बनाना व्यावहारिक नहीं माना गया।
- करबी और दिमसा को जिला–परिषद् के माध्यम से स्वायत्तता मिली।
- बोडो समुदाय को स्वायत्त परिषद् देकर संघीय व्यवस्था के भीतर समाधान खोजा गया।

गोवा की मुक्ति

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. दिसम्बर 1961 से पूर्व तक संघ शासित प्रदेश गोवा में किस देश का शासन रहा? *(Model Paper-2026)*

(अ) फ्रांस (ब) स्पेन
(स) पुर्तगाल (द) ब्रिटेन **(स)**

2. भारत सरकार ने गोवा में सेना कब भेजी?

(अ) दिसंबर 1961 (ब) जनवरी 1967
(स) 1975 (द) 1987 **(अ)**

3. गोवा को महाराष्ट्र में मिलाने की माँग किस पार्टी ने की?

(अ) यूनाइटेड गोअन पार्टी
(ब) महाराष्ट्रवादी गोमांतक पार्टी
(स) असम गण परिषद्
(द) नेशनल कॉन्फ्रेंस **(ब)**

4. गोवा की स्वतंत्र पहचान बनाए रखने वाले पक्ष का नेतृत्व किसने किया?

(अ) यूनाइटेड गोअन पार्टी
(ब) अकाली दल
(स) मिजो नेशनल फ्रंट
(द) आसू **(अ)**

5. गोवा में विशेष जनमत सर्वेक्षण कब कराया गया?

(अ) दिसंबर 1961 (ब) जनवरी 1967
(स) अप्रैल 1975 (द) 1987 **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. मुक्ति के बाद गोवा, दमन और दीव ..... प्रदेश बने।

उत्तर : संघशासित

2. गोवा की स्वतंत्र सांस्कृतिक पहचान के समर्थकों को ..... भाषा के प्रति आग्रह था।

उत्तर : कोंकणी

3. गोवा भारत संघ का एक राज्य ..... में बना।

उत्तर : 1987

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. गोवा के साथ कौन–से दो अन्य क्षेत्र पुर्तगाली शासन से मुक्त हुए?

उत्तर : दमन और दीव।

2. पुर्तगाल को गोवा छोड़ने के लिए भारत सरकार ने प्रारंभ में कौन–सा तरीका अपनाया?

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

उत्तर : धैर्यपूर्वक उसे शासन हटाने के लिए रजामंद करने का प्रयास किया।

3. जनता की इच्छा जानने के लिए 1967 में कौन–सी प्रक्रिया अपनाई गई?

उत्तर : विशेष जनमत सर्वेक्षण।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. गोवा की मुक्ति के लिए भारत सरकार और जन आंदोलन की भूमिका बताइए।

उत्तर :
- भारत सरकार ने पहले पुर्तगाल को शांतिपूर्वक शासन हटाने के लिए रजामंद करने का प्रयास किया।
- गोवा में आजादी के लिए एक मजबूत जन आंदोलन चला।
- महाराष्ट्र के समाजवादी सत्याग्रहियों ने आंदोलन को बल दिया।
- अंततः दिसंबर 1961 में भारत सरकार ने सेना भेजने का निर्णय लिया।

2. दिसंबर 1961 में गोवा की मुक्ति कैसे हुई?

उत्तर :
- पुर्तगाल ने गोवा से शासन हटाने से इनकार कर दिया था।
- भारत सरकार ने दिसंबर 1961 में अपनी सेना भेजी।
- भारतीय सेना की कार्रवाई लगभग दो दिन चली।
- कार्रवाई के बाद गोवा पुर्तगाली शासन से मुक्त हो गया।

3. गोवा के महाराष्ट्र में विलय के प्रश्न पर दो प्रमुख पक्ष कौन–से थे?

उत्तर :
- महाराष्ट्रवादी गोमांतक पार्टी गोवा को महाराष्ट्र में मिलाना चाहती थी।
- इस पक्ष ने गोवा को मराठी–भाषी क्षेत्र माना।
- बहुत–से गोवावासी गोवानी पहचान और संस्कृति को अलग बनाए रखना चाहते थे।
- यूनाइटेड गोअन पार्टी ने अलग पहचान और कोंकणी भाषा के पक्ष का नेतृत्व किया।

4. 1967 के विशेष जनमत सर्वेक्षण का परिणाम क्या रहा?

उत्तर :
- केंद्र सरकार ने जनवरी 1967 में विशेष जनमत सर्वेक्षण कराया।
- जनता से महाराष्ट्र में शामिल होने या अलग बने रहने के बारे में पूछा गया।
- अधिकतर लोगों ने महाराष्ट्र से अलग रहने के पक्ष में मत दिया।
- परिणामस्वरूप गोवा संघशासित प्रदेश बना रहा।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. गोवा की मुक्ति और राज्य बनने की प्रक्रिया बताइए। *(RBSE-2026)*

उत्तर :
- 1947 के बाद भी पुर्तगाल ने गोवा से अपना शासन हटाने से इनकार किया।
- गोवा में आजादी के लिए मजबूत जन आंदोलन चला।
- भारत सरकार ने पहले पुर्तगाल को शांतिपूर्ण तरीके से रजामंद करने का प्रयास किया।
- दिसंबर 1961 में भारतीय सेना ने दो दिन की कार्रवाई में गोवा को मुक्त कराया।
- गोवा, दमन और दीव संघशासित प्रदेश बने।
- 1967 के जनमत सर्वेक्षण में जनता ने महाराष्ट्र से अलग रहने का निर्णय दिया।
- अंततः 1987 में गोवा भारत संघ का एक राज्य बना।

2. गोवा की मुक्ति की पृष्ठभूमि और कारणों का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- अंग्रेजी शासन समाप्त होने के बाद भी पुर्तगाल ने गोवा पर नियंत्रण बनाए रखा।
- यह क्षेत्र सोलहवीं सदी से औपनिवेशिक शासन में था।
- पुर्तगाली शासन ने स्थानीय जनता का दमन किया।
- लोगों को नागरिक अधिकारों से वंचित रखा गया।
- गोवा में स्वतंत्रता के लिए मजबूत जन आंदोलन उभरा।
- महाराष्ट्र के समाजवादी सत्याग्रहियों ने आंदोलन को समर्थन दिया।

3. गोवा के महाराष्ट्र में विलय के विवाद की व्याख्या कीजिए।

उत्तर :
- महाराष्ट्रवादी गोमांतक पार्टी ने गोवा को महाराष्ट्र में मिलाने की माँग की।
- उसका आधार गोवा को मराठी–भाषी क्षेत्र मानना था।
- दूसरी ओर अनेक गोवावासी अपनी गोवानी पहचान बनाए रखना चाहते थे।
- वे गोवा की स्वतंत्र संस्कृति को महत्त्व देते थे।
- उन्हें कोंकणी भाषा के प्रति विशेष आग्रह था।
- इस अलग पहचान वाले पक्ष का नेतृत्व यूनाइटेड गोअन पार्टी ने किया।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. पुर्तगाली शासन से गोवा की मुक्ति तक की प्रक्रिया की विवेचना कीजिए।

पहुँ जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

उत्तर :
- गोवा सोलहवीं सदी से पुर्तगाली औपनिवेशिक शासन के अधीन था।
- 1947 में भारत में अंग्रेजी शासन समाप्त हुआ, लेकिन पुर्तगाल ने गोवा छोड़ने से इनकार कर दिया।
- पुर्तगाली शासन ने स्थानीय जनता का दमन किया।
- लोगों को नागरिक अधिकारों से वंचित रखा गया और बलात् धर्म–परिवर्तन कराया गया।
- भारत सरकार ने धैर्यपूर्वक पुर्तगाल को शासन हटाने के लिए रजामंद करने का प्रयास किया।
- गोवा में मजबूत स्वतंत्रता आंदोलन चला।
- महाराष्ट्र के समाजवादी सत्याग्रहियों ने आंदोलन को बल दिया।
- दिसंबर 1961 में भारतीय सेना ने दो दिन की कार्रवाई कर गोवा को मुक्त करा लिया।

2. गोवा की क्षेत्रीय पहचान, भाषा और महाराष्ट्र में विलय के प्रश्न की विवेचना कीजिए।

उत्तर :
- मुक्ति के बाद गोवा के भविष्य को लेकर नया राजनीतिक प्रश्न उठा।
- महाराष्ट्रवादी गोमांतक पार्टी गोवा को महाराष्ट्र में मिलाना चाहती थी।
- उसका तर्क गोवा का मराठी–भाषी क्षेत्र होना था।
- दूसरी ओर बहुत–से गोवावासी अपनी गोवानी पहचान की स्वतंत्र अहमियत चाहते थे।
- वे गोवा की अलग संस्कृति को बनाए रखना चाहते थे।
- उनके मन में कोंकणी भाषा के लिए आग्रह था।
- अलग बने रहने वाले पक्ष का नेतृत्व यूनाइटेड गोअन पार्टी ने किया।
- अंततः जनता ने मतदान द्वारा महाराष्ट्र से अलग रहने के पक्ष को स्वीकार किया।

3. गोवा के राजनीतिक भविष्य के लोकतांत्रिक निर्धारण और राज्य बनने की प्रक्रिया स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- मुक्ति के बाद गोवा, दमन और दीव को संघशासित प्रदेश बनाया गया।
- गोवा को महाराष्ट्र में मिलाने की माँग उठी।
- दूसरी ओर स्वतंत्र गोवानी पहचान बनाए रखने का पक्ष सामने आया।
- केंद्र सरकार ने निर्णय जनता पर थोपने के बजाय जनता की इच्छा जानने का तरीका अपनाया।
- जनवरी 1967 में विशेष जनमत सर्वेक्षण कराया गया।
- अधिकतर लोगों ने महाराष्ट्र से अलग रहने के पक्ष में मतदान किया।
- इसके बाद गोवा संघशासित प्रदेश के रूप में बना रहा।
- अंततः 1987 में गोवा भारत संघ का एक राज्य बना।

पढ़ें 100% FREE!
जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!
DOWNLOAD MISSION GYAN APP!
Mission Gyan
SCAN NOW!
missiongyan®
DESH KA APNA SCHOOL
CBSE | RBSE | NEET | NDA | CDS | SSC | RAJASTHAN EXAMS
RECORDED COURSES | QUIZ | PDF | TEST SERIES

8 भारतीय राजनीति – नए बदलाव

1990 का दशक

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. 1984 में कांग्रेस ने लोकसभा की कितनी सीटें जीतीं? *(RBSE-2022)*

(अ) 313 (ब) 415
(स) 197 (द) 338 **(ब)**

2. मंडल आयोग के अध्यक्ष कौन थे? *(Model Paper-2023, Model Paper-2024)*

(अ) मोरारजी देसाई (ब) काका कालेलकर साहेब
(स) बी. पी. मंडल (द) अशोक मेहता **(स)**

3. बामसेफ का गठन कब हुआ? *(RBSE-2024, RBSE-2025)*

(अ) 1972 (ब) 1978
(स) 1979 (द) 1980 **(ब)**

4. 1990 में मंडल कमीशन द्वारा अन्य पिछड़ा वर्ग हेतु सरकारी नौकरियों में कितने प्रतिशत आरक्षण की सिफारिश की गई? *(Model Paper-2026)*

(अ) 12 (ब) 16
(स) 27 (द) 10 **(स)**

5. 1991 में कांग्रेस ने किसे प्रधानमंत्री चुना?

(अ) वी. पी. सिंह
(ब) चंद्रशेखर
(स) नरसिम्हा राव
(द) अटल बिहारी वाजपेयी **(स)**

6. नए आर्थिक सुधारों को किस अन्य नाम से जाना गया?

(अ) मंडल मुद्दा
(ब) ढाँचागत समायोजन कार्यक्रम
(स) कांग्रेस प्रणाली
(द) बहुदलीय शासन–प्रणाली **(ब)**

7. मंडल आयोग ने अपनी सिफारिशें किस वर्ष प्रस्तुत कीं?

(अ) 1978 (ब) 1980
(स) 1989 (द) 1992 **(ब)**

8. बहुजन समाज पार्टी की स्थापना किस वर्ष हुई?

(अ) 1978 (ब) 1980
(स) 1984 (द) 1989 **(स)**

रिक्तस्थान –

1. 1990 में राष्ट्रीय मोर्चा सरकार ने ..... आयोग की सिफारिशें लागू कीं। *(RBSE-2022)*

उत्तर : मंडल

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. 1984 में कांग्रेस ने लोकसभा की कितनी सीटें जीतीं? *(Model Paper-2024)*

उत्तर : 415 सीटें।

2. बहुजन समाज पार्टी के संस्थापक कौन थे? *(RBSE-2022)*

उत्तर : कांशीराम।

3. BAMCEF का प्रमुख उद्देश्य क्या था? *(RBSE-2022)*

उत्तर : 'बहुजन' की राजनीतिक सत्ता की जबरदस्त तरफ़दारी करना।

4. मंडल आयोग ने पिछड़ी जातियों के लिए क्या सिफारिश की? *(RBSE-2023)*

उत्तर : शिक्षा संस्थाओं तथा सरकारी नौकरियों में 27 प्रतिशत आरक्षण की सिफारिश।

5. 'बहुजन' से क्या अभिप्राय है? *(RBSE-2025)*

उत्तर : अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग और अल्पसंख्यक।

6. OBC आरक्षण की सिफारिश किस आयोग ने की? *(RBSE-2025)*

उत्तर : मंडल आयोग।

7. कर्पूरी ठाकुर किस राज्य के मुख्यमंत्री थे? *(RBSE-2025)*

उत्तर : बिहार।

8. 'मंडल मुद्दा' से क्या अभिप्राय है?

उत्तर : अन्य पिछड़ा वर्ग के आरक्षण के समर्थकों और विरोधियों के बीच चला विवाद।

9. 1989 में किस राजनीतिक परिघटना की समाप्ति हुई?

उत्तर : 'कांग्रेस प्रणाली' की।

10. मंडल आयोग को आधिकारिक रूप से क्या कहा गया?

उत्तर : दूसरा पिछड़ा वर्ग आयोग।

11. मंडल आयोग की सिफारिश लागू करने का निर्णय किस सरकार ने लिया?

उत्तर : राष्ट्रीय मोर्चा की सरकार ने।

12. मंडल आयोग के निर्णय से जुड़ा सर्वोच्च न्यायालय का प्रकरण किस नाम से प्रसिद्ध हुआ?

पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

उत्तर : इंदिरा साहनी केस।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. बामसेफ पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए। *(RBSE-2023)*

उत्तर :
- बामसेफ का गठन 1978 में हुआ।
- इसका पूरा स्वरूप बैकवर्ड एंड माइनॉरिटी कम्युनिटीज एम्पलाइज फेडरेशन था।
- इसने 'बहुजन' की राजनीतिक सत्ता की जबरदस्त तरफ़दारी की।
- इसके परवर्ती विकास से दलित–शोषित समाज संघर्ष समिति और बाद में बहुजन समाज पार्टी का उदय हुआ।

2. 1989 के चुनावों का भारतीय राजनीति पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर :
- 1989 में कांग्रेस की चुनावी हार हुई।
- कांग्रेस की सीटें 415 से घटकर 197 रह गईं।
- 'कांग्रेस प्रणाली' की समाप्ति हुई।
- दलीय व्यवस्था में कांग्रेस की पहले जैसी प्रमुखता समाप्त हो गई।

3. 'मंडल मुद्दे' के राजनीतिक महत्व को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- 1990 में मंडल आयोग की सिफारिश लागू की गई।
- केंद्र की नौकरियों में अन्य पिछड़ा वर्ग को आरक्षण दिया गया।
- इसके समर्थन और विरोध में तीखा राजनीतिक विवाद हुआ।
- इस मुद्दे ने 1989 के बाद की राजनीति में अहम भूमिका निभाई।

4. अन्य पिछड़ा वर्ग के राजनीतिक उदय के प्रमुख पक्ष बताइए।

उत्तर :
- पिछड़े वर्गों का कांग्रेस के प्रति समर्थन कम हुआ।
- गैर–कांग्रेसी दलों ने इस वर्ग का समर्थन हासिल किया।
- मंडल आयोग के क्रियान्वयन से उनकी राजनीति को सुगठित रूप मिला।
- सत्ता में समुचित प्रतिनिधित्व और हिस्सेदारी की माँग बढ़ी।

5. मंडल आयोग के गठन का उद्देश्य क्या था?

उत्तर :
- शैक्षिक और सामाजिक पिछड़ेपन की व्यापकता पता लगाना।
- पिछड़े वर्गों की पहचान के तरीके बताना।
- उनके पिछड़ेपन को दूर करने के उपाय सुझाना।
- शिक्षा और सरकारी नौकरियों में उनकी कम मौजूदगी का समाधान खोजना।

6. 1990 के दशक में दलित राजनीति के उदय को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- 1980 के दशक में दलित जातियों के राजनीतिक संगठन उभरे।
- बामसेफ ने बहुजन की राजनीतिक सत्ता की तरफ़दारी की।
- बाद में बहुजन समाज पार्टी का उदय हुआ।
- 1989 और 1991 के चुनावों में बसपा को उत्तर प्रदेश में सफलता मिली।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. मंडल आयोग की प्रमुख सिफारिशें बताइए।

(Model Paper-2023, RBSE-2024)

उत्तर :
- आयोग ने पिछड़े वर्गों की पहचान करने का प्रयास किया।
- उसने पिछड़ा वर्ग को पिछड़ी जाति के अर्थ में स्वीकार करने का सुझाव दिया।
- पिछड़ी जातियों की शिक्षा संस्थाओं में कम मौजूदगी का उल्लेख किया।
- सरकारी नौकरियों में भी उनकी कम मौजूदगी पाई गई।
- शिक्षा संस्थाओं तथा सरकारी नौकरियों में 27 प्रतिशत आरक्षण की सिफारिश की।
- अन्य पिछड़ा वर्ग की स्थिति सुधारने के लिए भूमि–सुधार सहित अन्य उपाय भी सुझाए।

2. मंडल आयोग की सिफारिशों के क्रियान्वयन के राजनीतिक परिणाम स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- अन्य पिछड़ा वर्ग की राजनीति को सुगठित रूप मिला।
- आरक्षण को लेकर तीखे वाद–विवाद हुए।
- अन्य पिछड़ा वर्ग अपनी राजनीतिक पहचान को लेकर अधिक सजग हुआ।
- कई दलों ने शिक्षा और रोजगार में बेहतर अवसर की माँग उठाई।
- सत्ता में अन्य पिछड़ा वर्ग की हिस्सेदारी का प्रश्न सामने आया।
- बड़े राजनीतिक दलों में OBC आरक्षण के प्रश्न पर सहमति बनी।

3. बहुजन समाज पार्टी के उदय की पृष्ठभूमि स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- 1978 में बामसेफ का गठन हुआ।
- इसने 'बहुजन' की राजनीतिक सत्ता की तरफ़दारी की।
- इसके बाद दलित–शोषित समाज संघर्ष समिति का विकास हुआ।
- इसी प्रक्रिया से बहुजन समाज पार्टी का उदय हुआ।
- बसपा की अगुआई कांशीराम ने की।
- 1989 और 1991 में इसे उत्तर प्रदेश में चुनावी सफलता मिली।

पढ़ना है तो कहीं भी पढ़ो, जैसे चाहे!

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

निबंधात्मक प्रश्न –

1. 1990 के दशक के आरंभ में भारतीय राजनीति में आए पाँच बड़े बदलावों का विवेचन कीजिए।

उत्तर :
- 1989 के चुनाव में कांग्रेस की हार एक महत्वपूर्ण बदलाव था।
- इसके साथ 'कांग्रेस प्रणाली' की समाप्ति हुई।
- राष्ट्रीय राजनीति में मंडल मुद्दे का उदय हुआ।
- अन्य पिछड़ा वर्ग के लिए आरक्षण महत्वपूर्ण राजनीतिक विषय बना।
- इस दौर में नयी आर्थिक नीतियों को बड़े पैमाने पर लागू किया गया।
- राम जन्मभूमि विषय ने धर्मनिरपेक्षता और लोकतंत्र के विमर्श को प्रभावित किया।
- मई 1991 में राजीव गाँधी की हत्या हुई।
- इसके बाद कांग्रेस ने नरसिम्हा राव को प्रधानमंत्री चुना।

2. दलित राजनीति और बसपा के उदय का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- 1980 के दशक में दलित जातियों के राजनीतिक संगठनों का उभार हुआ।
- 1978 में बामसेफ का गठन हुआ।
- बामसेफ ने 'बहुजन' की राजनीतिक सत्ता की तरफ़दारी की।
- इसके बाद दलित–शोषित समाज संघर्ष समिति विकसित हुई।
- इसी प्रक्रिया से बहुजन समाज पार्टी का उदय हुआ।
- बसपा की अगुआई कांशीराम ने की।
- 1989 और 1991 के चुनावों में बसपा को उत्तर प्रदेश में सफलता मिली।
- बाद में बसपा उत्तर प्रदेश में एक बड़ी राजनीतिक ताकत के रूप में उभरी।

गठबंधन का युग

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. भारत में गठबंधन राजनीति का दौर कब शुरू हुआ? *(Model Paper-2025)*

(अ) 1989 (ब) 1995
(स) 2004 (द) 2014 **(अ)**

2. 1989 में राष्ट्रीय मोर्चे को किन दो राजनीतिक समूहों का समर्थन मिला?

(अ) कांग्रेस और भाजपा
(ब) भाजपा और वाम मोर्चा
(स) कांग्रेस और वाम मोर्चा
(द) कांग्रेस और जनता दल **(ब)**

3. 1999 की राजग सरकार के प्रधानमंत्री कौन बने?

(अ) वी. पी. सिंह
(ब) नरसिम्हा राव
(स) अटल बिहारी वाजपेयी
(द) मनमोहन सिंह **(स)**

4. 1989 के बाद गठबंधन सरकार बनाने में किन दलों की भूमिका महत्वपूर्ण हुई?

(अ) केवल राष्ट्रीय दलों की
(ब) क्षेत्रीय पार्टियों की
(स) केवल वाम दलों की
(द) केवल कांग्रेस की **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. भाजपा के नेतृत्व वाले गठबंधन को ..... कहा जाता है।

उत्तर : राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन / राजग

2. 1989 के बाद केंद्र में ..... सरकारों का दौर शुरू हुआ।

उत्तर : गठबंधन

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. राजग का पूरा नाम लिखिए। *(Model Paper-2025)*

उत्तर : राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन।

2. 1989 के बाद भारत में किस प्रकार की शासन–प्रणाली का युग शुरू हुआ?

उत्तर : बहुदलीय शासन–प्रणाली का।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. भारत में गठबंधन राजनीति के दो प्रभाव बताइए। *(RBSE-2024)*

उत्तर :
- क्षेत्रीय पार्टियों की भूमिका बढ़ी।
- वे केंद्रीय सरकारों की महत्वपूर्ण साझेदार बनीं।
- बहुदलीय शासन–प्रणाली का विस्तार हुआ।
- सरकार बनाने के लिए विभिन्न दलों का सहयोग आवश्यक हुआ।

2. 1989 के बाद लगातार गठबंधन की राजनीति क्यों प्रभावी रही? संक्षेप में स्पष्ट कीजिए। *(RBSE-2025)*

उत्तर :
- किसी एक–दो दल को अधिकांश वोट या सीटें नहीं मिल पाती थीं।
- 2014 तक किसी एक दल को लोकसभा में पूर्ण बहुमत नहीं मिला।
- क्षेत्रीय दलों की राजनीतिक ताकत बढ़ी।
- सरकारें क्षेत्रीय दलों की साझेदारी अथवा समर्थन पर निर्भर हुईं।

3. भारत में 'गठबंधन की राजनीति' पर अपने विचार लिखिए। *(Model Paper-2025)*

पढ़ना चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

उत्तर :
- 1989 से गठबंधन राजनीति का लंबा दौर शुरू हुआ।
- अनेक दल सरकार बनाने में साझेदार बने।
- क्षेत्रीय दलों की केंद्रीय राजनीति में भूमिका बढ़ी।
- कई सरकारें गठबंधन अथवा दूसरे दलों के समर्थन पर टिकी अल्पमत सरकारें थीं।

4. संयुक्त मोर्चा सरकार की राजनीतिक स्थिति स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- संयुक्त मोर्चा में जनता दल और कई क्षेत्रीय दल थे।
- इस बार भाजपा ने सरकार को समर्थन नहीं दिया।
- सरकार को कांग्रेस का समर्थन प्राप्त था।
- वाम मोर्चे ने भी गैर–कांग्रेसी सरकार को अपना समर्थन जारी रखा।

5. गठबंधन राजनीति में क्षेत्रीय दलों का महत्व स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- क्षेत्रीय दल सरकार बनाने में निर्णायक बने।
- केंद्र में उनकी साझेदारी बढ़ी।
- राष्ट्रीय सरकारें उनके समर्थन पर निर्भर रहीं।
- उन्होंने देश की राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

6. 1996 के चुनावों के बाद भाजपा की स्थिति स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- भाजपा 1996 में सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी।
- उसे सरकार बनाने का न्यौता मिला।
- अधिकांश दल उसकी नीतियों के विरोध में थे।
- इसलिए भाजपा सरकार लोकसभा में बहुमत हासिल नहीं कर सकी।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. 1989 के बाद बहुदलीय शासन–प्रणाली के उदय को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- 1989 में कांग्रेस का पुराना दबदबा समाप्त हुआ।
- किसी अन्य एक पार्टी ने कांग्रेस की जगह प्रमुखता हासिल नहीं की।
- कई पार्टियाँ मजबूत राजनीतिक शक्ति के रूप में उभरीं।
- किसी एक–दो दल को अधिकांश सीटें प्राप्त करना कठिन हो गया।
- केंद्र में गठबंधन सरकारों का दौर शुरू हुआ।
- क्षेत्रीय पार्टियाँ सरकार गठन की महत्वपूर्ण साझेदार बनीं।

2. गठबंधन सरकारों के लंबे दौर की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर :
- इसका आरंभ 1989 के चुनावों से हुआ।
- कई सरकारें वास्तविक गठबंधन सरकारें थीं।
- कुछ सरकारें दूसरे दलों के समर्थन पर टिकी अल्पमत सरकारें थीं।
- क्षेत्रीय पार्टियों की साझेदारी आवश्यक बनी।
- राष्ट्रीय मोर्चा, संयुक्त मोर्चा, राजग और संप्रग इसके प्रमुख उदाहरण रहे।
- 2014 में एक दल को बहुमत मिलने के साथ इस प्रवृत्ति में परिवर्तन आया।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. नब्बे के दशक से गठबंधन राजनीति की विवेचना कीजिए। *(RBSE-2026)*

उत्तर :
- 1989 के चुनावों से भारत में गठबंधन की राजनीति का लंबा दौर शुरू हुआ।
- 1989 में राष्ट्रीय मोर्चा सरकार बनी।
- इसे भाजपा और वाम मोर्चे का बाहरी समर्थन प्राप्त था।
- 1996 और 1997 में संयुक्त मोर्चा सरकारें बनीं।
- 1998 और 1999 में राजग सत्ता में आया।
- 2004 और 2009 में संप्रग सरकारें बनीं।
- क्षेत्रीय दल केंद्रीय राजनीति के महत्वपूर्ण साझेदार बने।
- इस दौर में कई सरकारें गठबंधन अथवा दूसरे दलों के समर्थन पर टिकी अल्पमत सरकारें रहीं।

2. गठबंधन राजनीति में क्षेत्रीय पार्टियों की भूमिका का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर :
- क्षेत्रीय दलों की राजनीतिक ताकत बढ़ी।
- वे केंद्रीय सरकारों में साझीदार बने।
- अनेक सरकारें उनके समर्थन के बिना बनना कठिन थीं।
- 1989 के राष्ट्रीय मोर्चे में क्षेत्रीय दलों की भागीदारी रही।
- संयुक्त मोर्चे में भी कई क्षेत्रीय पार्टियाँ शामिल थीं।
- राजग और संप्रग में भी क्षेत्रीय दलों की भूमिका महत्वपूर्ण रही।
- प्रांतीय और राष्ट्रीय दलों का अंतर लगातार कम हुआ।
- इस प्रकार क्षेत्रीय दल राष्ट्रीय राजनीति के महत्वपूर्ण घटक बने।

1989 के बाद केंद्रीय सरकारें

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. 1989 की राष्ट्रीय मोर्चा सरकार के प्रधानमंत्री कौन थे? *(RBSE-2023, RBSE-2025)*

(अ) चौधरी चरण सिंह (ब) मोरारजी देसाई
(स) वी. पी. सिंह (द) चन्द्रशेखर **(स)**

2. मार्च 1998 की भाजपा–नीत राजग सरकार का नेतृत्व किसने किया? *(Model Paper-2026)*

(अ) अटल बिहारी वाजपेयी
(ब) लाल कृष्ण आडवाणी
(स) इन्द्र कुमार गुजराल
(द) एच. डी. देवगौड़ा **(अ)**

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

3. नवंबर 1990 से जून 1991 तक प्रधानमंत्री कौन रहे?
(अ) वी. पी. सिंह (ब) चंद्रशेखर
(स) नरसिम्हा राव (द) एच. डी. देवेगौड़ा **(ब)**

4. जून 1991 से मई 1996 तक प्रधानमंत्री कौन रहे?
(अ) नरसिम्हा राव (ब) इंद्रकुमार गुजराल
(स) मनमोहन सिंह (द) अटल बिहारी वाजपेयी **(अ)**

5. जून 1996 से अप्रैल 1997 तक किसने सरकार का नेतृत्व किया?
(अ) चंद्रशेखर (ब) एच. डी. देवेगौड़ा
(स) इंद्रकुमार गुजराल (द) मनमोहन सिंह **(ब)**

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. 1989 में सबसे बड़ी पार्टी होने के बावजूद विपक्ष में कौन–सी पार्टी बैठी?

उत्तर : कांग्रेस।

2. एच. डी. देवेगौड़ा की सरकार किस मोर्चे की सरकार थी?

उत्तर : संयुक्त मोर्चा की सरकार।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. चंद्रशेखर सरकार की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर :
- चंद्रशेखर की सरकार नवंबर 1990 में बनी।
- यह राष्ट्रीय मोर्चे के एक धड़े पर आधारित थी।
- इसका नेतृत्व समाजवादी जनता पार्टी ने किया।
- सरकार को कांग्रेस का समर्थन प्राप्त था।

2. अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व वाली सरकारों की स्थिति बताइए।

उत्तर :
- मई 1996 में भाजपा ने अल्पमत सरकार बनाई।
- मार्च 1998 में वाजपेयी के नेतृत्व में भाजपा–नीत राजग सरकार बनी।
- अक्तूबर 1999 में राजग ने फिर सत्ता प्राप्त की।
- 1999 की राजग सरकार ने अपना निर्धारित कार्यकाल पूरा किया।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. 1989 से 1998 तक केंद्रीय सरकारों के क्रम का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- दिसंबर 1989 में वी. पी. सिंह की राष्ट्रीय मोर्चा सरकार बनी।
- नवंबर 1990 में चंद्रशेखर प्रधानमंत्री बने।
- जून 1991 में पी. वी. नरसिम्हा राव ने सरकार संभाली।
- मई 1996 में अटल बिहारी वाजपेयी की अल्पमत सरकार बनी।
- जून 1996 में एच. डी. देवेगौड़ा की संयुक्त मोर्चा सरकार बनी।
- अप्रैल 1997 में इंद्रकुमार गुजराल ने संयुक्त मोर्चा सरकार का नेतृत्व किया।

2. 1989 के बाद की केंद्रीय सरकारों में बाहरी समर्थन की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- वी. पी. सिंह की राष्ट्रीय मोर्चा सरकार को भाजपा और वाम मोर्चे का समर्थन मिला।
- चंद्रशेखर सरकार को कांग्रेस का समर्थन मिला।
- एच. डी. देवेगौड़ा सरकार को कांग्रेस का समर्थन प्राप्त था।
- इंद्रकुमार गुजराल सरकार भी कांग्रेस के समर्थन पर टिकी थी।
- कई सरकारें दूसरे दलों के समर्थन पर टिकी अल्पमत सरकारें थीं।
- इससे गठबंधन दौर में दलों के बीच राजनीतिक निर्भरता स्पष्ट हुई।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. 1989 के बाद केंद्रीय राजनीति में गठबंधन और समर्थन आधारित सरकारों की प्रकृति स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- 1989 में किसी एक दल को स्पष्ट बहुमत नहीं मिला।
- राष्ट्रीय मोर्चे को बाहर से भाजपा और वाम मोर्चे का समर्थन मिला।
- चंद्रशेखर सरकार कांग्रेस समर्थन पर टिकी थी।
- संयुक्त मोर्चे की सरकारों को भी कांग्रेस का समर्थन मिला।
- 1998 से राजग गठबंधन महत्वपूर्ण शक्ति बना।
- 2004 से संप्रग गठबंधन केंद्र में आया।
- क्षेत्रीय दल गठबंधन सरकारों के महत्वपूर्ण साझेदार बने।
- इस प्रकार केंद्र की राजनीति में बहुदलीय सहयोग महत्वपूर्ण हुआ।

सांप्रदायिकता, धर्मनिरपेक्षता और लोकतंत्र

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. भारतीय जनता पार्टी का गठन किस वर्ष हुआ?
(अ) 1977 (ब) 1978
(स) 1980 (द) 1986 **(स)**

2. आरंभ में भाजपा ने किसके साथ सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को अपनी विचारधारा के रूप में अपनाया?
(अ) गांधीवादी समाजवाद
(ब) मंडल मुद्दा
(स) नई आर्थिक नीति
(द) कांग्रेस प्रणाली **(अ)**

3. सर्वोच्च न्यायालय ने शाहबानो प्रकरण में किसके पक्ष में निर्णय दिया?
(अ) केंद्र सरकार (ब) शाहबानो
(स) भाजपा (द) जनता पार्टी **(ब)**

4. अयोध्या विवाद पर सर्वोच्च न्यायालय की संवैधानिक पीठ का निर्णय कब आया?

(अ) 1992 (ब) 2004

(स) 2014 (द) 9 नवम्बर 2019 **(द)**

5. सर्वोच्च न्यायालय की संवैधानिक पीठ का अयोध्या निर्णय किस अनुपात में था?

(अ) 3–2 (ब) 4–1

(स) 5–0 (द) 2–1 **(स)**

रिक्तस्थान –

1. भाजपा ने गांधीवादी समाजवाद के साथ ..... को अपनी विचारधारा के रूप में अपनाया।

उत्तर : सांस्कृतिक राष्ट्रवाद

2. मुस्लिम महिला अधिनियम ..... में पारित हुआ।

उत्तर : 1986

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. तलाक से जुड़े अधिकारों के लिए मुस्लिम महिला अधिनियम कब पारित हुआ? *(Model Paper-2026)*

उत्तर : 1986 में।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. भाजपा के आरंभिक वैचारिक विकास को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- भाजपा का गठन 1980 में हुआ।
- उसने जनसंघ की अपेक्षा अधिक बड़ा राजनीतिक पटल अपनाया।
- उसने गांधीवादी समाजवाद को अपनाया।
- साथ ही सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को अपनी विचारधारा बनाया।

2. शाहबानो प्रकरण का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- शाहबानो एक तलाकशुदा मुस्लिम महिला थीं।
- उन्होंने अपने पूर्व पति से गुजारा भत्ता माँगा।
- सर्वोच्च न्यायालय ने उनके पक्ष में निर्णय दिया।
- बाद में सरकार ने मुस्लिम महिला अधिनियम, 1986 पारित किया।

3. हिन्दुत्व की अवधारणा के प्रमुख तत्व बताइए।

उत्तर :
- इसे विनायक दामोदर सावरकर ने लोकप्रिय किया।
- भारतभूमि को 'पितृभूमि' मानने पर बल दिया गया।
- भारतभूमि को 'पुण्यभूमि' भी स्वीकार करना आवश्यक बताया गया।
- सुदृढ़ राष्ट्र के लिए संगठित राष्ट्रीय संस्कृति पर बल दिया गया।

4. 1986 का अयोध्या संबंधी न्यायालय निर्णय क्यों महत्वपूर्ण था?

उत्तर :
- फैजाबाद जिला न्यायालय ने महत्वपूर्ण निर्णय दिया।
- तीन–गुम्बद ढाँचे का ताला खोल दिया गया।
- लोगों को वहाँ पूजा की अनुमति मिली।
- इसके बाद स्वामित्व के प्रश्न पर दोनों समुदायों में तनाव बढ़ा।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. शाहबानो प्रकरण और उसके राजनीतिक प्रभाव को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- शाहबानो ने अपने पूर्व पति से गुजारा भत्ता माँगा।
- सर्वोच्च न्यायालय ने शाहबानो के पक्ष में निर्णय दिया।
- कुछ पुरातनपंथी मुसलमानों ने इसे मुस्लिम पर्सनल लॉ में हस्तक्षेप माना।
- सरकार ने मुस्लिम महिला अधिनियम, 1986 पारित किया।
- कई महिला संगठनों, मुस्लिम समूहों और बुद्धिजीवियों ने इसका विरोध किया।
- भाजपा ने इसे अल्पसंख्यक समुदाय के तुष्टिकरण के रूप में आलोचित किया।

2. अयोध्या विवाद के अंतिम विधिक समाधान की प्रमुख बातें बताइए।

उत्तर :
- सर्वोच्च न्यायालय की संवैधानिक पीठ ने 9 नवम्बर 2019 को निर्णय दिया।
- निर्णय 5–0 से हुआ।
- विवादित स्थल श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट को आवंटित किया गया।
- वहाँ राम मंदिर निर्माण का मार्ग प्रशस्त हुआ।
- सरकार को सुन्नी सेंट्रल वक्फ बोर्ड को मस्जिद के लिए उपयुक्त भूमि देने का निर्देश मिला।
- निर्णय को लोकतांत्रिक और विधिक प्रक्रिया द्वारा संघर्ष समाधान के उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया गया।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. अयोध्या विवाद के विधिक एवं लोकतांत्रिक समाधान का वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- अयोध्या विषय लंबे समय से चला आ रहा स्वामित्व विवाद था।
- 1949 में न्यायिक प्रक्रिया के कारण ढाँचे को सील किया गया।
- 1986 में जिला न्यायालय ने उसका ताला खुलवाया।
- 1992 में ढाँचा ध्वस्त हुआ।
- इसके बाद लंबी विधिक प्रक्रिया चली।
- न्यायालयी सुनवाई, मध्यस्थता और अन्य लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं का सहारा लिया गया।
- 9 नवम्बर 2019 को सर्वोच्च न्यायालय की संवैधानिक पीठ ने 5–0 निर्णय दिया।
- निर्णय ने मंदिर के लिए स्थल और मस्जिद के लिए उपयुक्त भूमि आवंटित करने का मार्ग निर्धारित किया।

पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

एक नई सहमति का उदय

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. 2004 के चुनावों के बाद किस गठबंधन की सरकार बनी?

(अ) राष्ट्रीय मोर्चा (ब) संयुक्त मोर्चा

(स) संप्रग (द) जनता पार्टी **(स)**

रिक्तस्थान –

1. 2014 में भाजपा ने अपने दम पर ..... सीटें जीतीं।

उत्तर : 282

2. 2019 में भाजपा ने ..... लोकसभा सीटें जीतीं।

उत्तर : 303

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. 2004 की संप्रग सरकार का नेतृत्व किस पार्टी ने किया?

उत्तर : कांग्रेस ने।

2. राजनीतिक दलों के बीच उभरी सहमति में पिछड़ी जातियों के लिए किन दो क्षेत्रों में आरक्षण स्वीकार किया गया?

उत्तर : शिक्षा और रोजगार में।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. 2004 के बाद उभरी व्यापक सहमति के कोई दो मुद्दे बताइए। *(RBSE-2022)*

उत्तर :
- पहला मुद्दा नयी आर्थिक नीति की स्वीकृति था।
- अधिकतर दलों ने नई आर्थिक नीतियों का समर्थन किया।
- दूसरा मुद्दा पिछड़ी जातियों के राजनीतिक–सामाजिक दावों की स्वीकृति था।
- दल शिक्षा, रोजगार और सत्ता में OBC की समुचित हिस्सेदारी के पक्ष में आए।

2. पिछड़ी जातियों के दावों पर राजनीतिक सहमति किस प्रकार बनी?

उत्तर :
- दलों ने पिछड़ी जातियों के सामाजिक दावों को स्वीकार किया।
- उनके राजनीतिक दावों को भी मान्यता मिली।
- शिक्षा और रोजगार में आरक्षण का समर्थन किया गया।
- OBC की सत्ता में समुचित हिस्सेदारी स्वीकार की गई।

3. गठबंधन राजनीति में विचारधारा और कार्यसिद्धि के संबंध को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- दलों ने विचारधारागत अंतर के स्थान पर सत्ता में हिस्सेदारी पर जोर दिया।
- कई दल भाजपा की हिन्दुत्व विचारधारा से सहमत नहीं थे।
- इसके बावजूद वे भाजपा के साथ गठबंधन में शामिल हुए।
- ऐसे गठबंधन ने पाँच वर्ष तक सरकार चलाई।

4. 2004 और 2009 के चुनावों में कांग्रेस के प्रदर्शन को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- 2004 में कांग्रेस ने 145 सीटें जीतीं।
- कांग्रेस के नेतृत्व में संप्रग सरकार बनी।
- 2009 में कांग्रेस की सीटें बढ़कर 206 हो गईं।
- मनमोहन सिंह ने दूसरी बार प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ली।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. 2004 के बाद दलीय राजनीति में आए प्रमुख परिवर्तनों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- 2004 में कांग्रेस–नीत संप्रग सरकार बनी।
- संप्रग को प्रारंभ में वाम मोर्चे का समर्थन मिला।
- 2009 में कांग्रेस की चुनावी स्थिति और मजबूत हुई।
- 2014 में भाजपा ने स्पष्ट बहुमत प्राप्त किया।
- भाजपा ने बहुमत के बावजूद अपने सहयोगियों के साथ राजग सरकार बनाई।
- 2019 में भाजपा 303 सीटों के साथ फिर विजयी हुई।

2. राजनीतिक दलों के बीच उभरी नई सहमति की प्रकृति स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- नई आर्थिक नीति के पक्ष में व्यापक सहमति उभरी।
- पिछड़ी जातियों के सामाजिक और राजनीतिक दावों को स्वीकार किया गया।
- शिक्षा और रोजगार में आरक्षण का समर्थन बढ़ा।
- OBC की सत्ता में हिस्सेदारी स्वीकार की गई।
- शासन में प्रांतीय दलों की भूमिका को मान्यता मिली।
- विचारधारा से अधिक कार्यसिद्धि और राजनीतिक गठजोड़ पर जोर बढ़ा।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. '1989 के बाद महत्वपूर्ण मसलों पर अधिकतर दलों में व्यापक सहमति है।' चार बिंदु स्पष्ट कीजिए।

(RBSE-2026)

पढ़ना चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

उत्तर :
- पहली सहमति नयी आर्थिक नीति को लेकर उभरी।
- ज्यादातर राजनीतिक दलों ने इन आर्थिक नीतियों को स्वीकार किया।
- दूसरी सहमति पिछड़ी जातियों के सामाजिक और राजनीतिक दावों की स्वीकृति थी।
- शिक्षा, रोजगार तथा सत्ता में OBC की समुचित हिस्सेदारी स्वीकार की गई।
- तीसरी सहमति शासन में प्रांतीय दलों की भूमिका को लेकर बनी।
- प्रांतीय दल केंद्रीय सरकारों के महत्वपूर्ण साझीदार बने।
- चौथी सहमति में विचारधारा के स्थान पर कार्यसिद्धि को महत्व मिला।
- विचारधारागत सहमति के बिना भी राजनीतिक गठजोड़ किए जाने लगे।

2. नई सहमति के उदय ने भारतीय राजनीति को किस प्रकार प्रभावित किया? वर्णन कीजिए।

उत्तर :
- राजनीतिक प्रतिस्पर्धा के बावजूद कुछ मुद्दों पर व्यापक सहमति बनी।
- नई आर्थिक नीति को ज्यादातर दलों का समर्थन मिला।
- पिछड़ी जातियों के दावों को राजनीतिक मान्यता मिली।
- शिक्षा और रोजगार में उनके लिए आरक्षण स्वीकार किया गया।
- सत्ता में OBC की समुचित हिस्सेदारी पर सहमति बनी।
- प्रांतीय दलों की राष्ट्रीय राजनीति में भूमिका स्वीकार की गई।
- सत्ता में हिस्सेदारी के लिए विचारधारागत अंतर के बावजूद गठबंधन बने।
- इस प्रकार प्रतिस्पर्धी राजनीति के बीच कुछ मुद्दों पर साझा राजनीतिक समझ उभरी।

